जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा



आगम-सुत्त ग्रन्थमाला

ग्रन्थ-१

निग्गंथं पावयणं

मूल सुत्ताणि

दसवेआलियं

तह

उत्तरज्झयणाणि

वाचना प्रमुख

आचार्य तुलसी

सम्पादक

मुनि नथमल

(निकाय-सचिव)

प्रकाशक

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

(आगम-साहित्य प्रकाशन समिति)

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट

कलकत्ता-१

प्रबन्ध-व्यवस्थापक :

श्रीचन्द रामपुरिया, बी०कॉम०, बी०एल०
संयोजक,
आगम-साहित्य प्रकाशन समिति

प्रकाशक :

आदर्श साहित्य संघ
चूरू (राजस्थान)

अर्थ-सहायक :

सरावगी चेरिटेबल फण्ड
७, लोअर राऊडन स्ट्रीट,
कलकत्ता

प्रकाशन-तिथि :

मर्यादा-महोत्सव
माघ सुदी सप्तमी, सं० २०२३

प्रति-संख्या :
१,१००

पृष्ठ-संख्या :
७२

मूल्य :
१७.०० रु०

मुद्रक :
न्यू रोशन प्रिन्टिंग वर्क्स
३।१।१ रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-१

ग्रन्थानुक्रम

समर्पण

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाण पुव्वं ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ मे मेरे मन मे।
हेतुभूत श्रुत-सम्पादन मे,
कालुगणी को विमल भाव से ॥

विनयावनत

आचार्य तुलसी

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है, उस माली का जो अपने हाथो से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नो से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन-आगमो का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमे लगे। सकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य मे संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष मे मै उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति मे संविभागी रहे है। सक्षेप मे वह सविभाग इस प्रकार है :—

सम्पादक		: मुनि नथमल (निकाय-सचिव)
	सहयोगी	: मुनि दुलहराज
पाठ-सशोधन	,,	: मुनि सुदर्शन
	,,	: मुनि मधुकर
	,,	: मुनि हीरालाल
शब्दानुक्रम	,,	: मुनि श्रीचन्द्र
	,,	: मुनि हनुमानमल (सरदारशहर)
विषयानुक्रम	,,	: मुनि रूपचन्द्र

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिन ने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना सविभाग समर्पित किया है, उन सबको मै आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

—आचार्य तुलसी

प्रकाशकीय

परम श्रद्धास्पद पूज्य आचार्य श्री तुलसी की प्रकल्पित आगम-सम्पादन की रूपरेखा में छः ग्रन्थ-मालाओं की योजना है। योजना का रूप सम्पादकीय में दिया हुआ है। "आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला" इन ग्रन्थ-मालाओं में से एक है। इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के संशोधित मूलपाठ पाठान्तर सहित प्रस्तुत किये जायेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक उक्त ग्रन्थ-माला का प्रथम ग्रन्थ है। इसमे दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—इन दोनो मूल-सूत्रो के संशोधित पाठ-मात्र प्रकाशित हो रहे हैं। संशोधित पाठो के साथ-साथ नीचे पाद-टिप्पणो मे पाठान्तर दिये गये है।

प्रथम परिशिष्ट में दशवैकालिक शब्द-सूची एवं दूसरे परिशिष्ट मे उत्तराध्ययन शब्द-सूची विस्तृत रूप मे दी गई है।

उत्तराध्ययन मे प्रसंगवश उल्लिखित व्यक्ति, देश, नगर, पर्वत, समुद्र, नदी, उद्यान, सिक्का, आवास, शस्त्र, धातु, रत्न, वनस्पति, प्राणी आदि के नामों की सूची तीसरे परिशिष्ट के अन्तर्गत दी गई है।

अन्त मे तीन शुद्धि और आपूरक पत्र है, जिनमें मूलपाठ, पाठान्तर और शब्द-सूची विषयक मुद्रण की भूलो का संशोधन उपस्थित करते हुए तद्विषयक जो नई सामग्री प्राप्त हुई, वह दे दी गई है।

दोनो आगमो की पद-विभक्त विस्तृत विषय-सूची ग्रन्थों के महत्त्वपूर्ण विषयों को निकालने में सहायक होगी।

भूमिका और सम्पादकीय संक्षेप मे दोनो सूत्रो का सुन्दर परिचय दे देते हैं।

इस आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला का मूल उद्देश्य विद्वानों के सम्मुख मूल आगमो के संशोधित पाठ भावी शोध-खोज के लिए प्रस्तुत करना है। इसी दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ-माला का यह प्रथम ग्रन्थ आपके हाथों मे है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का भार समिति की ओर से सरदारशहर-निवासी श्रीमान् मदनचन्दजी गोठी को सौंपा गया था। निरन्तर अस्वस्थ रहने पर भी बड़ी

श्रद्धा और प्रेम के साथ उन्होंने इस कार्य-भार को ग्रहण किया, पर आकस्मिक निधन ने उस सम्पत्ति को हमसे छीन लिया। गोठीजी आगम-कार्य की योजना के एक महान् स्तम्भ रहे।

पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि :

इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि आदर्श साहित्य संघ, चुरू (राजस्थान) से प्राप्त हुई है, जिसके लिए हम उनके हृदय से कृतज्ञ हैं।

अर्थ-व्यवस्था

इस आगम का मुद्रण-खर्च श्री रामकुमारजी सरावगी की प्रेरणा से श्री सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता, जिसके सर्व श्री प्यारेलालजी सरावगी, गोविन्दलालजी सरावगी, सज्जनकुमारजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी ट्रस्टी हैं, ने वहन किया है।

श्री सरावगी चेरिटेबल फण्ड का यह आर्थिक अनुदान स्वर्गीय स्वनामधन्य श्रावक महादेवलालजी सरावगी एवं उनके सुयोग्य दिवगंत पुत्र पन्नालालजी सरावगी (सदस्य, भारतीय लोकसभा) की स्मृति मे प्राप्त हुआ है। स्वगीय महादेवलालजी सरावगी तेरापंथ-सम्प्रदाय के एक अग्रगण्य श्रावक थे और कलकत्ता के प्रसिद्ध अधिष्ठान महादेव रामकुमार से सम्बन्धित थे। स्व० पन्नालालजी सरावगी, महासभा एवं साहित्य प्रकाशन समिति के बडे उत्साही एवं प्राणवान् सदस्य रहे। आगम-प्रकाशन-योजना मे उनकी आरम्भ से अत्यन्त अभिरुचि रही।

उक्त योगदान के प्रति हम उक्त फण्ड के ट्रस्टीगण के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं।

इस ग्रन्थ के सम्पादन मे जिन-जिन विद्वान अथवा प्रकाशन-संस्थाओं के ग्रन्थ तथा प्रकाशनो का उपयोग हुआ है, उन सबके प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करते हैं।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति के सदस्य सर्व श्री मोहनलालजी बाँठिया 'चंचल', गोविन्दलालजी सरावगी एवं खेमचन्दजी सेठिया को भी मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिनका सहयोग मुझे हर समय प्राप्त होता रहा है।

जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा के अन्तर्गत गठित समिति के द्वारा आगम-साहित्य प्रकाशन का कार्य ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा है, त्यों-त्यों मेरे हृदय में आनन्द का पारावार नहीं है। मै तो अपने जीवन की एक साध ही पूरी होते हुए देख रहा हूँ।

आचार्य श्री एक युग-पुरुष हैं। जहाँ एक ओर जन-मानस की आध्यात्मिक और नैतिक चेतना की जागृति के व्यापक आन्दोलनों मे उनके अमूल्य जीवन-क्षण लग रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर भारतीय श्रमण-साहित्य और संस्कृति के मूल संदेश को जन-व्यापी बनाने का उनका उपक्रम भी अनन्य है। उनकी ओर से हो रही भारतीय साहित्य और संस्कृति की अमूल्य सेवाएँ हमारी कृतज्ञता को सहज स्फुरित करती है।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति
[जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा]
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता-१
दि० १ फरवरी, १९६७

श्रीचन्द रामपुरिया
संयोजक

सम्पादकीय

सम्पादन का कार्य सरल नही है—यह उन्हे सुविदित है, जिन्होने इस दिशा मे कोई प्रयत्न किया है। दो-ढाई हजार वर्ष पुराने ग्रन्थो के सम्पादन का कार्य और भी जटिल है, जिनकी भाषा और भाव-धारा आज की भाषा और भाव-धारा से बहुत व्यवधान पा चुकी है। इतिहास की यह अपवाद-शून्य गति है कि जो विचार या आचार जिस आकार मे आरब्ध होता है, वह उसी आकार मे स्थिर नही रहता। या तो वह वडा हो जाता है या छोटा। यह ह्रास और विकास की कहानी ही परिवर्तन की कहानी है। और कोई भी आकार ऐसा नही है, जो कृत है और परिवर्तनशील नही है। परिवर्तनशील घटनाओ, तथ्यो, विचारो और आचारो के प्रति अपरिवर्तनशीलता का आग्रह मनुष्य को असत्य की ओर ले जाता है। सत्य का केन्द्र-बिन्दु यह है कि जो कृत है, वह सब परिवर्तनशील है। कृत या शाश्वत भी ऐसा क्या है, जहाँ परिवर्तन का स्पर्श न हो। इस विश्व मे जो है, वह वही है जिसकी सत्ता शाश्वत और परिवर्तन की धारा से सर्वथा विभक्त नही है।

शब्द की परिधि मे बंधने वाला कोई भी सत्य क्या ऐसा हो सकता है, जो तीनो कालो मे समान रूप से प्रकाशित रह सके? शब्द के अर्थ का उत्कर्ष या अपकर्ष होता है—भाषा-शास्त्र के इस नियम को जानने वाला यह आग्रह नही रख सकता कि दो हजार वर्ष पुराने शब्द का आज वही अर्थ सही है, जो आज प्रचलित है। 'पाषण्ड' शब्द का जो अर्थ आगम-ग्रन्थो और अशोक के शिला-लेखो मे है, वह आज के श्रमण-साहित्य मे नही है। आज उसका अपकर्ष हो चुका है। आगम-साहित्य के सैकडो शब्दो की यही कहानी है कि वे आज अपने मौलिक अर्थ का प्रकाश नही दे रहे है। इस स्थिति मे हर चिन्तनशील

व्यक्ति अनुभव कर सकता है कि प्राचीन साहित्य के सम्पादन का काम कितना दुरूह है।

मनुष्य अपनी शक्ति मे विश्वास करता है और अपने पौरुष से खेलता है, अतः वह किसी भी कार्य को इसलिए नही छोड देता कि वह दुरूह है। यदि यह पलायन की प्रवृत्ति होती तो प्राप्य की सम्भावना नष्ट ही नही हो जाती किन्तु आज जो प्राप्त है, वह अतीत के किसी भी क्षण मे विलुप्त हो जाता। आज से हजार वर्ष पहले नवांगी टीकाकार (अभयदेव सूरि) के सामने अनेक कठिनाइयाँ थी। उन्होने उनकी चर्चा करते हुए लिखा है :

१. सत् सम्प्रदाय (अर्थ-बोध की सम्यक् गुरु-परम्परा) प्राप्त नही है।

२ सत् ऊह (अर्थ की आलोचनात्मक कृति या स्थिति) प्राप्त नही है।

३. अनेक वाचनाएँ (आगमिक अध्यापन की पद्धतियाँ) है।

४. पुस्तके अशुद्ध है।

५ कृतियाँ सूत्रात्मक होने के कारण बहुत गंभीर है।

६. अर्थ-विषयक मतभेद भी है।[1]

इन सारी कठिनाइयो के उपरान्त भी उन्होने अपना प्रयत्न नही छोडा और वे कुछ कर गए।

कठिनाइयाँ आज भी कम नही है। किन्तु उनके होते हुए भी आचार्य श्री तुलसी ने आगम-सम्पादन के कार्य को अपने हाथो मे ले लिया। उनके शक्ति-शाली हाथो का स्पर्श पा कर निष्प्राण भी प्राणवान् बन जाता है तो भला आगम-साहित्य जो स्वय प्राणवान् है, उसमे प्राण-सचार करना क्या बड़ी बात

१—स्थानाग वृत्ति, प्रशस्ति १,२

सत्सम्प्रदायहीनत्वात् सदूहस्य वियोगतः।
सर्वस्वपरशास्त्राणा- मदृष्टेरस्मृतेश्च मे ॥ १ ॥
वाचनानामनेकत्वात् पुस्तकानामशुद्धितः।
सूत्राणामतिगाम्भीर्याद् मतभेदाच्च कुत्रचित् ॥ २ ॥

है ? बडी बात यह है कि आचार्य श्री ने उसमे प्राण-सचार मेरी और मेरे सहयोगी साधु-साध्वियो की असमर्थ अगुलियो द्वारा कराने का प्रयत्न किया है। सम्पादन-कार्य मे हमे आचार्य श्री का आशीर्वाद ही प्राप्त नही है किन्तु मार्ग-दर्शन और सक्रिय योग भी प्राप्त हैं। आचार्यवर ने इस कार्य को प्राथमिकता दी है और इसकी परिपूर्णता के लिए अपना पर्याप्त समय दिया है। उनके मार्ग-दर्शन, चिन्तन और प्रोत्साहन का सवल पा हम अनेक दुस्तर धाराओ का पार पाने मे समर्थ हुए हैं।

आगम-सम्पादन की रूपरेखा

आगम साहित्य के अध्येता दोनो प्रकार के लोग है—विद्वद्-जन और साधारण-जन। दोनो को दृष्टि मे रख कर हमने इस कार्य को छह ग्रन्थ-मालाओ मे ग्रथित किया है। उसका आकार यह है :—

१ आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला—	इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि होगे।
२ आगम ग्रन्थ-माला—	इस ग्रन्थ माला मे आगमो के मूलपाठ, पाठान्तर, सस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम या सूत्रानुक्रम आदि होगे।
३ आगम-अनुसन्धान ग्रन्थ-माला—	इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के टिप्पण होगे।
४ आगम-अनुशीलन ग्रन्थ-माला—	इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के समीक्षात्मक अध्ययन होगे।
५ आगम-कथा ग्रन्थ-माला—	इस ग्रन्थ-माला मे आगमो से सम्बन्धित कथाओ का सकलन होगा।
६, वर्गीकृत आगम ग्रन्थ-माला—	इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के वर्गीकृत और सक्षिप्त सस्करण होगे।

शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा-शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है।

अध्ययन-१

स्थल	मूलपाठ	शब्दान्तर और रूपान्तर	प्रति
१।१	उक्किट्ठ	उक्कट्ठं	क,ग,घ,अचू
२।२	आवियइ	आवियती	अचू,जिचू
३।१	मुत्ता	मुक्का	अचू
३।२	साहुणो	साहवो	अचू
४।३	अहागडेसु	अहागडेहि	अचू
४।३	रीयंति	रीयते	घ,जिचू
४।४	पुप्फेसु	पुप्फेहिं	अचू,जिचू
४।४	भमरा	भमरो	ख
५।१	महु °	मधु °	अचू,जिचू

अध्ययन-२

स्थल	मूलपाठ	शब्दान्तर और रूपान्तर	प्रति
२।२	इत्थीओ	इत्थिओ	ख
२।४	चाइ	चागि	अचू
४।१	पेहाए	पेहाइ	क,ख
४।२	निस्सरई	नीसरई	अचू,जिचू
४।४	विणएज्ज	विणइज्ज	क,ख,ग
५।१	आयावयाही	आयावयाहि	अचू,जिचू
५।१	सोउमल्ल	सोगमल्ल, सोगुमल्ल	क,ख,ग,जिचू,घ
५।२	कमाही	कमाहि	जिचू,अचू
६।३	वन्तयं	वंतग	अचू
६।३	भोत्तुं	भुत्तु	ग
८।१	रायस्स	राइस्स	ग
९।२	दच्छसि	दिच्छसि, दिच्छिसि	क,ख,ग
१०।२	संजयाए	सजयाइ	ख,ग,घ

११।१	करेन्ति	करति, करिंति	ख,ग,क,घ
११।३	भोगेसु	भोगेहिं	अचू

अध्ययन-३

१।१	सुट्ठिअप्पाणं	सुट्ठितप्पाणं	अचू
२।३	राइभत्ते	रायभत्ते	ग,जिचू
४।१	नालीय	नालीए, णालीया	ख,अचू
४।३	पाणहा	पाहणा	ख,अचू,जिचू
५।३	निसेज्जा	निसज्जा	ख
६।३	तत्तानिव्वुड-भोइत्तं	तत्तअनिव्वुड-भोतीत	ख,अचू
९।१	धूवणेत्ति	धूवणित्ति	ख
९।२	वत्थीकम्म	बत्थीकम्म, पत्थीकम्म	ख, अचू
९।४	गायाभंग	गायब्भग	जिचू
१२।१	गिम्हेसु	गिम्हासु	अचू
१२।३	° संलीणा	° सल्लीणा	जिचू
१३।१	° रिऊ	° रिवू	अचू
१३।२	धुय °	धूअ °	ख,ग
१३।२	जिइंदिया	जियंदिया	ग
१४।२	दुस्सहाइ	दूसहाइ	जिचू
१४।३	इत्थ	एत्थ	क

अध्ययन-४

सू० ९	अभिक्कतं	पडिक्कतं अभिकत पडिकतं	ख
,, १०	दंड	डड	अचू,जिचू
,, १०	समारभेज्जा	समारभेज्जा	अचू,जिचू
,, १०	करंतं	करेतं	अचू
,, ११	गरिहामि	गरहामि	अचू
,, १६	राइ	रायं	क

सू० १८	किलिंचेण	कलिंचेण	ख,ग,घ,जिचू
,, १८	सलागाए व सलाग	सिलागाए व सिलाग	ख,ग
,, १९	ससिणिद्ध	ससणिद्ध ससिणद्ध	क, अचू,ख
,, २१	विहुयणेण	विहुवणेण	अचू, जिचू
,, २३	पिवीलियं	पिपीलिय	जिचू
,, २३	हत्थसि वा	हत्थेसि वा	अचू,पा
१०।४	नाहिइ	नाहीइ,नाही	ख,ग,घ
१२।१	याणाइ	याणेइ,याणइ	ग,अचू
१२।४	नाहिइ	नाहीइ, नाहीय	क,ख,घ,ग
१३।१	वियाणाइ	वियाणेइ,वियाणाइ	ग,अचू
१६।३	निव्विदए	निव्विदिय,निव्विदइ	क,ग,अचू
२५।४	हवइ	भवइ	क,घ
२६।३	पहोइस्स	पहोयस्स	ख
२६।२	° साइस्स	° सायस्स	ख
२६।४,२७।४	सुग्गइ	सुगइ, सोग्गइ	घ,अचू,जिचू
२७।३	जिण	जिणि	क,घ

अध्ययन-५(१)

३।३	वज्जतो	वज्जेंतो	क,ग,अचू, जिचू
४।१	ओवायं	उवायं	ख
४।२	विज्जलं	विजल	हाटी, जिचू
८।२	पडंतीए	पडतिए	अचू
१०।१	अणायणे	अणाययणे	अचू
१३।३	इंदियाणि	इंदियाइ, इदियायं	क,ग
१६।२	रहस्सा	रहसा	क,ख,ग,हाटी
२३।४	अयपिरो	अयपुरो	अचू
२५।३	वच्चस्स	वुच्चस्स	

२६।१	दग-मट्टिय	दग-मट्टी	ग
२७।२	आहरे	आहारे	क,ग,घ
२८।१	आहरंती	आहरेती	अचू
२८।३	देतिय	दितियं, दंतिय	क,ग,घ,ग
३३।१	ससिणिद्धे	ससणिद्धे	क
३४।२	कुक्कुस	कुक्कस	ग
४०।४	पुणट्ठए	पुणट्ठए	घ, अचू
४२।१	पिज्जेमाणी	पेज्जमाणी,पज्जेमाणी	जिचू,अचू
४५।१	दग-वारएण	दग-वारेण	क,हाटी
४६।१	उब्भिंदिया	उब्भिदियं	क,ख,ग,घ
५७।३	उम्मीसं	उम्मिसं	क,अचू,जिचू
६७।३	मंच	मच	क,ख,ग,घ,अचू
७१।३	सक्कुलि	संकुलि	ख
७३।२	अणिमिस	अणमिसं	ख,ग
७३।३	अत्थियं	अच्छियं	अचू, जिचू
७३।४	सिंबलिं	सबलिं, संबिल	घ,ख
७४।२	घम्मिए	घम्मए	घ
७७।३	भवेज्जा	हव्विज्जा	ख
७७।४	रोयए	रोइए, रोवए	ग,ख
७८।४	तण्हं	तण्ह	ख
८१।२	अचित्तं	अच्चित्तं	क, अचू
८५।१	निक्खिवे	निखिवे	क,ख,ग
६०।२	अव्वक्खित्तेण	अवक्खित्तेण	अचू
६६।२	एक्कओ	एगओ, इक्कओ	घ,ख,ग
६७।३	एय	एयं	अचू
६८।३	उल्ल	अल्लं	घ
१००।४	सोगइ	सोगइ, सुग्गइं	अचू,ख,ग

अध्ययन-५(२)

१।३	दुगंध	दुग्गंध	अचू
२।३	अयावयट्ठा	आयावयट्ठा	क,ख,ग
३।३	° उत्तेण	° वुत्तेण	अचू
५।२	पडिलेहसि	पडिलेहिसि	ख
५।४	गरिहसि	गिरिहसि,गिरिहिसि,गरहसि	ग,ख,अचू
७।३	त-उज्जुयं	त-ओजुय	ख,घ
१०।२	किविण	किवणं	ग
१३।२	नियत्तिए	नियत्तए	ख,ग
१३।४	व	वा	अचू
१४।३	सच्चित्त	सचित	घ,अचू,जिचू
२१।३	नीम	नियम	ख
२२।३	° पिन्नाग	° पन्नाग	ख
२४।३	विहेलग	विभेलग, विहेलग	अचू,ख
२५।४	ऊसढ	उस्सढ	अचू
२६।१	इत्थियं	इत्थि	अचू
३२।१	अत्तट्ठ	अत्तट्ठा	क,ख,ग,घ
३७।१	पिया	पियए	हाटी,जिचू
४६।१	वय	वई	अचू
४७।२	मूययं	मूयग	ख,ग,घ
५०।३	° हिंदिए	° हिंडदिए	क,घ,जिचू

अध्ययन-६

१३।३	मेत्त	मित्तं	क,ख,ग,घ
१८।१	लोभस्सेसो,अणुफासो	लोभस्सेसणुफासे, लोभस्सेसणफासो, लोभस्सेसणुफासो	क,घ,ग,ख

सम्पादकीय

			क,ग
२०।२	नाय ०	नाइ ०	क,ख,ग,घ
२०।४	इइ	इय	अचू
२४।३	दिया	दिवा	ग,अचू
३७।३	विइउ ०	वीउ ०, विनु ०	क,ख,अचू
५।१।२	० धोयण	० धावण	क,ख,ग,हाटी
५।१।३	छन्नंति	छिन्नति, छिण्णति	अचू
५।२।१	पच्छा ०	पच्छे ०	अचू
५।७।४	पलिओहो	पल्गिओहो, पल्लिओहो	क,ग,ख
६०।३	वीसन्तो	वुससता, वक्कन्तो	क,ख,घ
६१।२	भिलुगासु	भिलगासु	ख,ग,घ,हाटी
६१।४	० प्पिलावए	० पलावए, ० प्पलावए	क,ग
६३।२	० व्वट्ट ०	० वट्ट ०	क,घ,ग अचू
६४।१	नगिणस्स	निगणस्स, नगणस्स, नगणिस्स, णिगिणस्स	
६७।४	नवाइ पावाइं	नवाणि पावाणि	अचू
६८।३	उउप्पसन्ने	उडुपसण्णे	अचू

अध्ययन-७

२।३	उगाउन्ना	अणाउणा	अचू
५।४	पुण	पुणो,पुण	अचू,ख
८।१	कालम्मी	कालम्मि	ख
१२।२	पडगे त्ति	पडग त्ति पडगु त्ति	क,ग,घ
१२।३	गेगि त्ति	गेग त्ति	ग
१२।४	चोरे त्ति	चोर त्ति	घ
१३।१	वट्ठेण	अट्ठेण	क,ख,ग,घ
१४।२	वसुले त्ति	वसुल त्ति	घ
१४।३	दम्मए दुहए	दुम्मए दूहए	ख

१५।२	माउस्सिय	माउसिउ, माउसिय	क,ख,ग,घ
१५।४	नत्तुणिए	नत्तुणिय, नत्तुणइ, नत्तुणिइ	घ,क,ग,ख
१६।१	अन्नेत्ति	अन्नत्ति	ग
१८।३	भाइणोज्जति	भायणिज्जति	ख
१८।४	नत्तुणिय	नत्तुणइ, नत्तुणिइ	ग,ख
१९।१	हले त्ति	हल त्ति, हरे त्ति	ग,घ,अचू
२१।१	मणुस्सं	मणुस, मणस	क,ग,घ,ख
२२।२	सरीसिव	सरीसव	ख,ग
२३।१	परिवुड्ढे	परिवुड्ढ,परिवूढ	क,ग,ख,अचू,जिचू,हाटो
२४।३	° जोग त्ति	° जोगि त्ति	ख,ग,
२५।२	घेणु	घेणू	ख
२७।२	तोरणाण गिहाण	तोरणाणि गिहाणि	क,ग
३१।४	दरिसणि	दरिसण	ग,घ,ख
३२।१	फलाइ	फलाणि	अचू
३३।२	निवट्टिमा	निव्वडिमा,निव्वत्तिमा, निवट्टिमा	जिचू,अचू,ख
३३।४	रूव त्ति	रूवि त्ति	क,ख,ग
३६।४	सुतित्थ	सुतित्थे,सुत्तित्थि	ग,घ,ख
३९।१	° वाहडा	° पाहडा	अचू
४१।२	मडे	मते	अचू
४२।१	पयत्त	पयत्ति	क,घ
४२।१	पक्के त्ति	पक्क त्ति	क,ग,घ
४५।१	सुक्कीय	सुक्किय	ख
४७।१	तहेवासजय	तहेवऽसजत	अचू
४८।२	साहुणो	साघवो	अचू
५१।१	वाओ °	वाउ °	ख
५१।१	° वुट्ठ	° वुट्ठि	क,ख,ग

सम्पादकीय			
		अतलिक्ख, अतलिक्ख	घ,हाटी,जीचू,ख
५।३।१	अतलिक्खे		घ
५।६।३	धुन्न	धुत्त	
अध्ययन-८			ख
२।४	इय	इय	घ
५।१	निसिए	निसीए	जिचू
६।२	विहुयणेण	विहुवणेण	अचू
६।३	वीएज्ज	वीए	क,ख,ग,घ
६।४	पोग्गल	पुग्गल	अचू
१४।१	कयराइं	कतमाणि	अचू
१६।३	अप्पमत्तो	अप्पमत्ते	अचू
१८।३	पडिलेहित्ता	पडिलेहित्तु	अचू
१९।२	पाणट्ठा	पाणत्था	अचू
२०।४	मरिहइ	मरुहति	अचू
२३।२	अयपिरो	अयपुरो	अचू
२५।१	सतुट्ठे	सतुट्ठो	ख,घ
२५।२	सुहरे	सुभरे	क,ग
२६।१	अंतितिणे	अंतिंतणे	ख,ग,जिचू,हाटी
३५।१	पीलेइ	पीडेइ	अचू
३६।१	अणिग्गहीया	अणिग्गिहिया	ख,ग,हाटी
४०।१	राइणिए	रायणिए	अचू
४०।१	पउजे	पयुजे	क,ख,ग,घ,अचू
४०।३	कुम्मो	कुम्मु,कुम्मे	अचू
४१।३	मिहो	मिधु	अचू
४२।४	अट्ठं	अत्थ	अचू
४६।३	पिट्ठि	पिट्ठी	अचू
४८।३	अयपिर	अयपुर	

४९।३	वइ	वाय, वय	जिचू,ख
५३।२	विग्गहिओ	विग्गहओ	ख
५५।१	पडिच्छिन्नं	पलिच्छिन्नं	घ,अचू,जिचू
५८।१	मणुन्नेसु	मणुन्नेसुं	क,ख,ग,घ
५९।३	तण्हो	तिण्हो	क
५९।४	सीई	सीत	अचू
६२।३	जसि	जसे	अचू
६३।४	चंदिमा	चंदिमि	क,ख,जिचू

अध्ययन-९(१)

२।२	अप्पसुए	अप्पसुय	ख,ग
६।१	पावगं	पावक	अचू
१२।१	जस्सतिए	जस्सतिय	अचू
१२।२	तस्सतिए	तस्सतिय	अचू
१४।३	बुद्धिए	बुद्धीए	ख
१५।१	जुत्तो	जुत्ते	क,ग
१७।१	मेहावी	मेहावि	ख

अध्ययन-९(२)

२।३	सिग्घ	सग्घ	अचू
१५।३	सक्कारेति	सक्कारति	अचू
२०।२	हेउहि	हेऊहि	ख,ग
२३।१	वत्ति	वित्ति	क,ख,घ
२३।३	ओह °	ओघ °	क,ख,हाटी

अध्ययन-९(३)

३।१	राइ °	राय °	ख,ग
३।३	निय °	नीय °	घ,जिचू

ग

सम्पादकीय			
८।२	दुम्मणिय	दुम्मणय	क,ख,ग
१०।२	अपिसुणे	अपिस्सुणे	अचू
अध्ययन-९(४)			
२।४	०यट्ठिए	०यत्थीए	अचू
७	आरहतेहिं	आरुहतिहिं	क,ख,ग
अध्ययन-१०			
४।२	निस्सियाण	निसियाण	अचू
६।२	हवेज्ज	भवेज्ज	क,अचू
७।४	वय	वड	अचू
८।३	होही	होहिइ	अचू
१२।१	मसाणे	सुसाणे	अचू
१२।२	भायाए	भाए	ख
१८।१	वएज्जासि	वएज्जाहि	क,घ,ख,ग
१८।२	जेणन्नो	जेणन्नु, जेणन्न	
चूलिका-१			
मू०१स्थान२	इत्तरिया	उत्तिरिया	ख,अचू
,, ,, ६	पडियाइयण	पडिआयण, पडिआययण	जिचू,ख,ग,घ
,, ,, ९	वहाय	वहाए	अचू
,, ,, १८	वेयइत्ता	वेइत्ता	क,ख,गघ
,, ,, १८	अवेडयत्ता	अवेइत्ता	क,ख,ग,घ
२।१	जया	जहा	क
५।४	मेट्ठि०	मिट्ठि०	क,ख,ग,घ, हाटी
६।३	गल	गलि	ख,घ
६।२	गिलित्ता	गलित्ता	ख,ग
१०।४	०निग्य	०नरय	क,घ,हाटी
१०।४	सारिसो	सालिसो	क,ग

११।४	परियाय	परियाइ	ख
१४।८	मुल्मा	मुल्हा	क,ख,ग,घ
१५।२	कुहोवणी	कुहोविणी	क,ख,ग
१५।२	°वत्तिगो	°वित्तिगो	क,अचू
१७।२	पयन्तेंति	पयन्तंति	क,ख,ग,घ

चूलिका-२

४।२	पइ°	पय°	ख,ग,घ
७।३	ओसन्न	उसन्न	अचू
१०।३	एक्को	एक्को, एगो	अचू,क,ख,ग,घ
११।२	बीयं	बितियं	अचू
१३।१	पासइ	पस्सइ	अचू
१३।३	पासमाणो	पस्समाणो	अचू
१४।१	पासे	पस्से	अचू
१४।४	आइन्नओ	आइण्णो	अचू

दशवैकालिक के शब्दान्तर और रूपान्तरों की तालिका ऊपर दे दी गई है। उत्तराध्ययन के शब्दान्तर और रूपान्तरों की तालिका इस प्रकार है :

अध्ययन-१

२।८	विणीए	विणीइ	उ,ऋ
४।२	सूयरे	सूयरो	अ
१३।३	पकरेन्ति	पकरिन्ति	उ
		पकरन्ति	ऋ
१४।३	कुव्वेज्जा	कुविज्जा	उ
१५।८	परत्थ	परत्त	क्वचित्
१७।२	रहस्से	रहसे	उ,ऋ
१८।४	पडिस्सुणे	पडिसुणे	उ

सम्पादकीय			क्वचित्
२५।२	निरट्ठं	निरत्थ	उ
२६।३	एगित्यिए	एगत्थिए	ऋ
३६।१	मुकडे त्ति	मुक्कडि त्ति	उ
३६।३	मुल्लट्ठे त्ति	मुल्लट्ठि त्ति	चू,ऋ
४०।४	तोत्त	तुत्त	उ
४१।४	पुणोन्ति	पुणिन्ति	ऋ
		पुणन्ति	उ,ऋ
४२।४	गरह	गरिह	अ
४४।३	मूकय	मुक्कड	अ,उ
अध्ययन-२			
मू० ३	दिगिछा	डिगछा	उ,ऋ
८।१	उमिणपग्गियावेण	उणिणपग्गियावेण	उ,ऋ
२४।२	पडिमजले	पडणजले	अ,स,मु
अध्ययन-३			
३।४	आहाकम्मेहि	अहाकम्मेहि	उ
२०।४	सासए	सासवे	उ,क
अध्ययन-४			
३।२	किच्चइ	कच्चई	चू
५।२	परत्था	परत्थ	चू
६।२	वीससे	विस्सते	उ,ऋ,वृ
६।४	भारुण्ड	भारड	ऋ
१३।३	दुगुछमाणो	दुगछमाणो	उ
अध्ययन-५			
३।२	असढ	असय	उ,ऋ,वृ
८।४	भूयगाम	भूयगाम	अ,उ,ऋ
१६।४	वुत्ते व	वुत्ते वा	अ
२२।४	कमई	कम्मई	

अध्ययन-७

१८।१	सइ	सइ	अ
		सय	उ
१८।३	उम्मज्जा	उम्मग्गा	अ,उ,ऋ

अध्ययन-८

६।१	दुपरिच्चया	दुपरिच्चइया	अ,ऋ
१६।४	इइ	इय	अ,ऋ
२०।१	इइ	इय	अ,ऋ

अध्ययन-९

२४।२	वद्धमाण	वड्ढमाण	चू
५८।२	पेच्चा	पेच्छा	अ,
		पिच्चा	उ,ऋ
		पेच्च	स

अध्ययन-१०

१।१	पण्डुयए	पडुरए	अ
६।१	आउक्काय	आयक्काय	ऋ
८।१	वाउक्काय	वायक्काय	ऋ
१४।३	इक्किक्क	एगेग	वृ
		एकेक्क	अचू
१६।२	आरिअत्त	आयरिअत्त	अ,ऋ
१६।२	पुणरावि	पुणरवि	अ
१७।१	आरियत्तणं	आयरियत्तणं	अ,ऋ
२७।१	विसूइया	विसूचिया	ऋ
३२।३	विसोहिया	विसोहिउ	अचू
३५।२	अकलेवर	अकडेवर	चू,वृ

अध्ययन-११

१०।१	पन्नरसहिं	पन्नरसेहिं	अ,ऋ
१०।३	नीयावत्ती	नीयावित्ती	अ

अध्ययन-१२

१०।३	जाणाहि	जाणाह	अ
१४।३	विहूणा	विहीणा	ऋ
१५।१	तुब्भे	तुम्हे	अ
२१।४	जेणम्हि	जेणाम्हि	अ,उ,ऋ
२६।४	पगरेह	पकरेह	अ,उ,ऋ
४४।३	कम्म	कम्मे	अ,ऋ
४७।४	पत्त	पत्ति	अ,उ,ऋ

अध्ययन-१३

८।२	तुमे	तुब्मे	अ
२६।३	पचालराया	पचालरायं	उ
३१।१	तूरंति	तरंति	उ,ऋ

अध्ययन-१४

३।३	तहोसुयारो	तहेसुयारो	अ
१५।२	किच्च इमं	किच्चमिमं	अ,ऋ
२०।३	ओरुज्झमाणा	उ(अव)रुज्झमाणा	उ
२०।४	नेव	नेय	अ
२४।४	अफला	अहला	ऋ
२५।४	सफला	अहला	ऋ
२७।३	जाणे	जाणउ	उ,ऋ
२८।१	पडिवज्जयामो	पडिवज्जेयामो	उ
२९।२	भिक्खायरियाइ	भिक्खायरियाए	अ
		भिक्खायरियाय	ऋ
३०।१	विहूणो	विहीणो	ऋ
३२।२	पजहामि	पयहामि	उ
४३।४	रागदोस	रागदोस	अ,उ,ऋ,च

अध्ययन-१५

५।२	कुओ	कओ	उ,ऋ
६।१	जेण पुण	जेणं पुणो	अ
१२।४	वय-काय	वइ-काय	उ

अध्ययन-१६

सू० ३	वितिगिच्छा	विचिकिच्छा	ऋ
१।२	थी	इत्थी	अ
३।१	संथव थीहि	संथवित्थीहि	अ
१२।१	कुइयं रुइय	कुवियं रुदित	अ
१७।१	निअए	निइए	अ,आ,इ
१७।४	तहापरे	तहावरे	ऋ

अध्ययन-१८

३।१	छुभित्ता	छुब्भित्ता	उ
१३।३	राय	राय	स
१३।४	पेच्चत्थं	पिच्चत्थं	अ,उ,ऋ
२०।४	मणो	मणं	स
२७।२	मिच्छादिट्ठी	मिच्छदिट्ठी	बृ
३६।२	महिड्ढिओ	महड्ढिओ	स
४२।२	निसूरणो	निसूदणो	उ
		निसूअणो	ऋ
५३।४	हवइ	भवइ	अ
५३।४	नीरए	नीरइ	अ

अध्ययन-१९

६।२	अणिमिसाए	अणिमिसाइ	ऋ
१८।२	अपाहेओ	अपाहेज्जो	अ
		अपाहिओ	ऋ
		अपाहिज्जो	स

१८।४	तण्हाए	तिण्हाइ	उ
२०।२	सपाहेओ	सपाहेज्जो	अ
		समाहिज्जो	स
२०।४	तण्हा	तिण्हा	उ
२२।४	अवउज्झउ	अवयज्झउ	अ
२३।४	तुज्झेहि	तुहेहि	अ
२६।३	परिच्चाओ	परित्ताओ	उ
३५।२	महाभरो	महब्भरो	उ, ऋ
३५।३	गुरुओ	गरुओ	अ
३८।१	अही	अहे	अ
५२।२	सिम्बलि	सावलि	अ
५४।३	फालिओ	फाडिओ	अ, उ
७३।१	एगभूओ	एगब्भूओ	आ
८५।३	अम्म	अम्ब	उ

अध्ययन २०

३५।१	ततो हं	तोह	ऋ
३७।२	दुहाण	दुक्खाण	अ

अध्ययन-२१

४।२	पसवई	पसूयई	अ
१५।४	गरहं	गरिहं	उ

अध्ययन-२२

१३।२	उत्तिमाए	उत्तमाए	ऋ
४४।२	दिच्छसि	दच्छसि	क्वचित्
४८।२	मजयाए	मंजयाए	अ

अध्ययन-२७

३।२	विहम्माणो	विहिम्माणो	उ,ऋ
६।२	एगेऽत्थ	एगित्थ	उ
-		एगत्थ	ऋ

अध्ययन-२८

१६।२	आणारुई	आणरुई	उ,ऋ
३४।४	एवमब्भतरो	एमेवब्भतरो	अ
		एवमब्भितरो	उ,ऋ

अध्ययन-२९

सू० १	रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता	रोइत्ता फासित्ता पालित्ता	ऋ,स
सू० १	तीरइत्ता	तीरित्ता	इ
सू० १	आराहइत्ता	आराहित्ता	ऋ
सू० १	गरहणया	गरिहणया	उ
सू० ३	सिद्धिमग्गे	सिद्धिमग्ग	अ,उ,ऋ
सू० ५	विणइत्ता	विणयइत्ता	इ
सू० ६	मिच्छादसण	मिच्छादरिसण	अ
सू० ८	अपुरक्कार	अपुरेक्कार	अ
सू० १५	थवथुइ	थयथुइ	अ,उ,ऋ
सू० ३३	विणियट्टणयाए ण	विणिवट्टणयाए ण	अ,उ
सू० ७३	आणापाणु	आणापाण	ऋ
सू० ७३	वेयणिज्जं	वेयणिय	अ

अध्ययन-३०

१८।१	रच्छासु व	रत्थासु य	अ
२०।१	पोरुसीणं	पोरिसीण	अ

अध्ययन-३१

५।२	तेरिच्छ	तेरिक्ख	अ

अध्ययन-३२

१३।१	विराला	विडाला	वृ
१५।३	जोग्गं	जोगं	अ
		जुग्गं	उ
२५।२	तंसि क्खणे	तस्सि खणे	अ
		तणिंग खणे	उ
२६।१	परिग्गहे	परिग्गहंमि	उ,ऋ
२६।४	आययई	आइयई	ब
३१।४	समाययन्तो	समाइयन्तो	अ
३७।२	अकालियं	आकालियं	अ
३८।२	तंसि क्खणे	तम्हि खणे	अ
३८।४	अवरज्झइ	अवरज्झई	स
३९।१	रुइरंसि	रुइयंसि	अ
५१।२	तंसि क्खणे	तंसी खणे	अ
६५।२	अतालिसे	आयालिसे	अ
७६।४	गाहग्गहीए	गाहग्गिहीए	अ,ऋ
१०३।४	हिरिमे	हरिमे	उ,ऋ
१०८।३	दंसण	दरिसण	उ,ऋ

अध्ययन-३३

६।२	दंसणे	दरिसणे	उ,ऋ
११।४	अतोमुहुत्तं	अत मुहुत्त	म

अध्ययन-३४

७।१	हिंगुलुय	हिंगुलग	अ,ऋ
१६।२	सिरीसकुसुमाणं	सरीसकुसमाणं	ऊ,ऋ
३१।४	गुत्तिहिं	गुत्तिसु	उ,ऋ
३३।४	हुंति	हवति	उ,ऋ

३४।२	तेत्तीम	तित्तीसा	ऋ
६०।१	अंत	अतो	उ,ऋ

अ यण-३५

४।१	चित्तहर	चित्तधर	उ,ऋ
४।२	पडुफल्लोय	पडफल्लोय	अ
८।१	कुब्जा	कुब्विज्जा	उ,ऋ
२१।१	निम्ममो निरहकारो	निम्ममे निरहकारे	अ,आ,इ,म

अध्ययन-३६

११।१	पुहत्तेग	पुहुत्तेण	म
३६।१	गुरुए	गरुए	म
५५।२	योन्दि	बोंदि	अ
		वुंदि	उ
		वुदि	ऋ
६१।१	पण्डुरा	पण्डरा	अ
९९।३	मुसुण्ढो	मुसण्ढो	अ
१४६।४	ढिकुणे कुथुणे	ढिकुणे कुणणे	उ,ऋ
१४७।१	सिगिरीटी	सिगिरिडि	अ
१४७।२	नदावत्ते	नदापत्ते	अ
१४७।२	विंछिए	विच्छुए	उ
१४७।४	विरली	विरिली	ऋ
२०६।३	दिमा	दिसि	ऋ
२२८।४	चउदस	चोद्दस	अ
२२७।४	पणवीसई	पणवीसइ	इ,म
२४०।१	अउणतीस	अउणतीसं	म

प्रस्तुत पाठ

दशवैकालिक का जो पाठ हमने स्वीकार किया है, उसका मुख्य आधार 'ख' प्रति है। किन्तु पूर्णतः मुख्यता किसी की भी नही है। आदि से अन्त तक कोई भी प्रति शुद्ध नही मिलती। ५।२।१८ मे 'कुमुदुप्पल नालियं' यह पाठ अगस्त्यचूर्णि मे है। हमने वही स्वीकृत किया है। चूर्णि की भाषा में 'त' और 'ध' की बहुलता है। जैसे—इत्थितो (इत्थिओ २।२), सतणाणि (सयणाणि २।२), जति (जइ २।९)। 'त' का लोप प्रायः नही किया गया है।[1] ये प्रयोग प्राचीन अवश्य है पर हम लोग प्राकृत व्याकरण की सीमा मे घिरे हुए हैं, इसलिए वे हमारे लिए अपरिचित से हो गए है। 'ध' को 'ह' भी प्रायः नही किया गया है।[2] जैसे—मधुकार (महुकार १।५), साधीणे (साहीणे २।३)। सप्तमी विभक्ति के स्थान मे तृतीया का प्रयोग हुआ है। जैसे—अहागडेहिं (अहागडेसु १।४)।

उत्तराध्ययन का पाठ भी आदि से अन्त तक किसी एक प्रति के आधार पर स्वीकृत नही किया गया है। पाठ-संशोधन मे प्रयुक्त सभी आदर्शो में ३६।६५ का एक शब्द 'पुहत्तेण' है। अर्थ की दृष्टि से यहाँ 'पुहुत्तेण' होना चाहिए। बृहद्वृत्ति (पत्र ६८६) मे इसके तीन अर्थ किए गये है—महत्त्व, बहुत्व और सामस्त्य। ये तीनो 'पृथु' शब्द के अर्थ हो सकते है, 'पृथक्' शब्द के नही। अभिधान चिन्तामणि कोष (६।६५) मे पृथु शब्द के पर्यायवाची नामो मे 'महत्' और 'बहु'—दोनो शब्द है। बृहद्वृत्ति (पत्र ६८६) मे 'पृथक्त्वेन' मुद्रित हुआ है, वह सभवतः लिपि-दोष के कारण हुआ है। उसका मुद्रित मूल पाठ 'पुहुत्तेण' है। उक्त अर्थ के पर्यालोचन और उपलब्ध मुद्रित-पाठ के आधार पर हमने 'पुहुत्तेण' पाठ स्वीकृत किया है।

इस प्रकार और भी अनेक पाठ चूर्णि और बृहद्वृत्ति के अर्थालोचनपूर्वक स्वीकृत किए गए है।

१—हेमशब्दानुशासन, ८।१।१७७।

२—वही, ८।१।१८७।

चौतीसवें अध्ययन मे 'पद्मलेश्या' के लिए 'पम्हलेस्सा' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'पम्ह' शब्द संस्कृत 'पक्ष्म' का प्राकृत रूपान्तर है। 'पद्म' शब्द के दो प्राकृत रूप बनते है—'पउम' और 'पम्म'। किन्तु 'पम्ह' रूप नही बनता। गोम्मटसार के लेश्या मार्गणाधिकार मे पद्मलेश्या के लिए 'पम्म' और 'पउम'—दोनो शब्द प्रयुक्त हुए है।[1] हमने 'पम्ह' शब्द ही रखा है। क्योकि पाठ-संशोधन में प्रयुक्त या अन्य किसी भी आदर्श मे 'पम्म' या 'पउम' शब्द नही मिला।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन के उद्धृत पाठ

प्रारम्भ से ही दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनो सूत्र बहुचर्चित रहे है। अनेक आचार्यो ने अपनी-अपनी रचनाओ में स्थान-स्थान पर इन्हे उद्धृत किया है। ये उद्धृत पाठ शब्द और भाषा की दृष्टि से कुछ परिवर्तित रूप में प्राप्त होते है। यह भिन्नता क्षेत्र, काल और परम्परा के भेद के कारण हुई, ऐसा प्रतीत होता है। इन भिन्नताओं के कुछेक उदाहरण ये है :—

मूल पाठ—

वितहं पि तहामुत्ति जं गिरं भासए नरो।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं कि पुण जो मुसं वए ?॥ (दशवैकालिक ७।५)

बृहत्कल्प भाष्य, भाग २, पृष्ठ २६० पर उद्धृत पाठ—

वितहं पि तहामुत्ति, जो तहा भासए नरो।
सो वि ता पुट्ठो पावेणं, कि पुणं जो मुसं वए ?॥

मूल पाठ—

तिण्हमन्नयरागस्स निसेज्जा जस्स कप्पई।
जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो॥ (दशवैकालिक ६।५९)

बृहत्कल्प भाष्य, भाग २, पृष्ठ ३७८ पर उद्धृत पाठ—

तिण्हमन्नयरागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पई।
जराए अभिभूयस्स, वाहियस्सा तवस्सिणो॥

१—गोम्मटसार (जीवकाण्ड), गाथा ४९२, ५०२।

मूल पाठ—

[illegible] वा वि [illegible] [illegible] ।

[illegible] [illegible] किं [illegible] ? ॥ (उत्तराध्ययन [illegible])

मूलाराधना, आश्वास ४, श्लोक ३३३, विजयोदया टीका, पृष्ठ ५११ में उद्धृत पाठ—

[illegible] य [illegible] य, [illegible] य ।

[illegible] [illegible], किं [illegible] ? ॥

मूल पाठ—

[illegible] य जो [illegible] जो [illegible] [illegible] ।

[illegible] [illegible] [illegible] य [illegible] ॥

[illegible] [illegible] किं तु कारणं ? ।

[illegible] [illegible] [illegible] ! अहं [illegible] न [illegible] ? ॥ (उत्तराध्ययन [illegible])

मूलाराधना, आश्वास ४, श्लोक ३३३, विजयोदया टीका, पृष्ठ ५११ में उद्धृत पाठ—

[illegible] य जो [illegible], जो [illegible] [illegible] [illegible] ।

[illegible] [illegible], [illegible] य [illegible] ॥

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ।

[illegible] [illegible], अहं [illegible] [illegible] ॥

पाठान्तर की लम्बी परम्परा

आज हमें जो पाठान्तर उपलब्ध हो रहे हैं, उसके प्रधान कारण चार हैं—

(१) परम्परा-भेद

(२) लिपि-भेद

(३) मूल पाठ और व्याख्या का सम्मिश्रण

(४) व्याख्या का पाठ रूप में परिवर्तन

(१) परम्परा-भेद

वीर-निर्वाण की दसवीं शताब्दी में देवर्द्धिगणी ने आगमों को पुस्तकारूढ़ कि-

उस समय जो पाठान्तर प्रचलित थे, उन्हे संकलित कर लिया गया। वे आगमों की व्याख्याओ में अव भी सुरक्षित है।[1]

अगस्त्य चूर्णि के रचना-काल मे भी परम्परागत पाठ-भेद प्रचलित थे। वहाँ अनेक स्थलो में मतान्तरो का उल्लेख हुआ है।[2] जिनदास चूर्णि की भी यही स्थिति है। टीका-सम्मत पाठ तो इनसे वहुत भिन्न पड जाते है। दीपिकाकार टीका से भी आगे बढ जाते है। जिन श्लोको की व्याख्या टीका में नही है, उन्हे दीपिकाकार मूल सूत्र मान उनकी व्याख्या करते है।

चूर्णिकार और टीकाकार के वीच जो पाठ-भेद है, उसका कारण परम्परा-भेद है। किन्तु दीपिका मे जो पाठ-भेद है, उसका कारण परम्परा-भेद नही जान पडता। वह लिपिकर्त्ता से सम्वन्धित है। आदर्शों के लेखक प्राय मुनि रहे है। वे व्याख्यान भी देते थे। व्याख्यान-काल मे जो प्रासंगिक श्लोक और गाथाएँ कही जाती, वे उसी स्थान पर लिख ली जाती और आगे चल कर वे हीं लम्वे काल मे मूल मे घुस जाती। दशवैकालिक और उत्तराध्ययन के आदर्शों में ऐसा हुआ है। दशवैकालिक निर्युक्ति का निम्न श्लोक मूल के साथ लिखा गया है—

वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं।
पलियंकनिसेज्जा य, सिणाणं सोहवज्जणं॥ (हाटी, पत्र १९६)

इसी प्रकार उत्तराध्ययन २४।१२ के पश्चात् एक गाथा मूल आदर्श में लिखी हुई प्राप्त होती है। जैसे—

संकप्पो सरंभो, परितावकरो भवे समारभो।
आरंभो उद्दवओ, सुद्धनयाणं तु सव्वेसिं॥

ऐसे पाठान्तरो मे स्मृतिभ्रंश का भी योग रहा है। जो मुनि कण्ठस्थ-पाठ के आधार पर सूत्र-पाठ लिखते, उनके आदर्शो में स्मृति-दोष के कारण अक्षरो व

१—जिनदास चूर्णि, पृष्ठ २०४ :
नागज्जुण्णिया तु एवं पढंति—'एवं तु अगुणप्पेही अगुणाणं विवज्जए'।
२—देखो—दशवैकालिक, भाग २ मे ३।१३ ; ५।१।७; ६।५४ के टिप्पण।

कहीं-कहीं श्लोको का विपर्यय हो जाता। उसके उत्तरवर्ती लेखक भी उसी का अनुसरण करते और पाठ-भेद स्थिर हो जाता।

(२) लिपि-दोष

पाठ-भेद का सबसे प्रमुख कारण लिपि-दोष रहा है। कालक्रम से लिपि मे परिवर्तन होता रहा है। पूर्ववर्ती लिपि उत्तरवर्ती लोगो से ठीक-ठीक नही पढ़ी जाती और प्रतिलिपि करने वाले सभी विद्वान् नही होते। फलस्वरूप अक्षरो का विपर्यय हो जाता है। ऐसा वहुधा हुआ है।

(३) मूल पाठ और व्याख्या का सम्मिश्रण

जब आगमो को कण्ठस्थ रखने की परम्परा थी, तव उनकी व्याख्याएँ भी कण्ठस्थ रहती थी। कुछ सूत्र-स्पर्शी व्याख्याएँ पाठ के साथ-साथ चलती थी। वे कालक्रम से मूल के साथ जुड गई। यह निष्कर्ष अगस्त्य चूर्णि से सहजतया निकल आता है। उसके अनुसार दशवैकालिक चतुर्थ अध्ययन के त्रस-प्रकरण (सूत्रांक ६) मे 'जे य कीडपयगा, जा य कुन्थुपिवीलिया, सव्वे देवा'—ऐसा पाठ है। चूर्णिकार ने लिखा है कि यहाँ 'कीड' द्वीन्द्रिय जाति का प्रतीक है, इसलिए उसके द्वारा द्वीन्द्रिय जाति का ग्रहण कर लेना चाहिए। इसी प्रकार पतग और कुन्थु भी अपनी-अपनी जाति के प्रतिनिधि है। उनके द्वारा उनकी जाति का ग्रहण कर लेना चाहिए।[1] 'सव्वे बेइदिया, सव्वे तेइदिया, सव्वे चउरिंदिया, सव्वे पंचिंदिया'—ये व्याख्या के शब्द आगे चल कर मूल पाठ बन गए। इसलिये टीकाकार ने उन्हे मूल मानकर उनकी व्याख्या की है।[2]

१–अगस्त्य चूर्णि :

कीडग्गहणेण तज्जातीय गहणमिति सव्वे बेइंदिया घेप्पन्ति। पयंग गहणेण चउरिंदिया। कुंथु पिवीलियाभिहाणेण तिंदिया।

२–हारिभद्रीय टीका, पत्र १४२ :

ये च कीटपतङ्गा इत्यत्र कीटाः—कृमयः, 'एकग्रहणे तज्जातीयग्रहण'मिति द्वीन्द्रियाः शङ्खादयोऽपि गृह्यन्ते पतङ्गा—शलभा, अत्रापि पूर्ववच्चतुरिन्द्रिया सर्व एव गृह्यन्ते, अत एवाह—सर्वे द्वीन्द्रिया—कृम्यादयः सर्वे त्रीन्द्रियाः—कुन्थ्वादयः, सर्वे चतुरिन्द्रियाः—पतङ्गादयः। सर्वे पञ्चेन्द्रिया. सामान्यतः।

इसी प्रकार महाव्रतो के सूत्र-पाठ में भी कुछ सम्मिश्रण होने का उल्लेख मिलता है।[1]

(४) व्याख्या का पाठ रूप में परिवर्तन

उत्तराध्ययन २२।२४ में 'पचमुट्ठीहिं' ऐसा पाठ आया है। वास्तव में यह पाठ 'पंचट्ठा' था। 'अट्ठा' का अर्थ है 'मुष्टि'। पच अट्ठा अर्थात् पंचमुष्टि। पचट्ठा शब्द अपरिचित था। बृहद्वृत्ति (पत्र ४९२) मे पंचट्ठा का अर्थ पंचमुष्टि है। कालान्तर मे यह व्याख्यागत अर्थ ही मूल पाठ बन गया।

अन्य आगमो मे भी ऐसे अनेक उदाहरण हमे प्राप्त हुए है।

दशवैकालिक : प्रति परिचय

क : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति हमारे 'सघीय संग्रह' की है। इसके पृष्ठ १७ व पत्र ३४ हैं। प्रत्येक पत्र लगभग १०। इंच लम्बा व ४। इच चौडा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की पत्तिय। १२-१३ व प्रत्येक पक्ति में ४६ से ५३ तक अक्षर है। अवचूरी पाठ के चारो तरफ लिखी हुई है। प्रति काली स्याही से व गाथाओ की सख्या लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

> ।।१० दशवैकालिक समाप्तमिति ।।वा।। सवत् १५०३ वर्षे आपाढ़ मासें कृष्ण पक्षे चतुर्थी दिने शनिवारे ।। दशवैलिखितं ।। सुन्दरसवेगगणि योग्यं ।।

ख : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति भी हमारे 'सघीय सग्रह' की है। इसके पत्र १९ व पृष्ठ ३८ है। प्रत्येक पत्र लगभग १०। इंच लम्बा व ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ मे पाठ की पंक्तियाँ १३ व प्रत्येक पंक्ति मे ४४ से ४९ तक अक्षर है। अवचूरी पाठ के चारों

१—अगस्त्य चूर्णि :

केति सुत्तमियं पढन्ति, केति वृत्तिगतं विसेसिंति, जहा से तं पाणातिवाते चउव्विहे तं जहा दव्वतो, खेत्ततो, कालतो, भावतो।

प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

॥ इति षट्त्रिंशदुत्तराध्ययना नामवचूरि समाप्ताः॥ श्री रस्तु ॥

सं० १५३८ वर्षे विशाख सुदि १० रवि लिषितं ॥ चिर नंदतु ॥१॥१

आ : उत्तराध्ययन मूल पाठ (हस्त-लिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलाल दुघोड़िया के संग्रहालय की है। इसके पत्र ८९ व पृष्ठ १७८ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा व ४। इंच चौडा है। प्रत्येक पृष्ठ मे ११ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति मे अक्षर लगभग ३२ से ४० तक हैं। अक्षर बडे तथा पढने मे स्पष्ट हैं। प्रति काली स्याही से व लेखक की प्रशस्ति लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है :

॥ संवत् १५९१ वर्षे श्री पत्तनपुरवरे श्री जिनवल्लभ सूरि संताने श्री खरतर गच्छेश नभोगण दिनकर करणि सैद्धान्तिक सिरोमणि श्रीजिनभद्र सूरि श्री जिनचन्द्र सूरि तत्पट्ट प्रतिष्ठित श्री जिनभद्र सूरि पट्ट पूर्वाचल सहस्रकरावतार भाग्य सौभाग्य संगी सुभग भालस्थल भट्टारक प्रभु श्री श्री श्री जिनहस सूरि पट्टे श्री श्री श्री जिनमाणिक्य सूरिभिः सार्वभौमैः वा० आणद नदन गणाय प्रसादी कृतेयं प्रति।

इ : उत्तराध्ययन मूल (हस्तलिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलाल दुघोडिया के सग्रहालय की है। इसके पत्र ३८ व पृष्ठ ७६ है। प्रत्येक पत्र १० इच लम्बा व ४ इंच चौडा है। प्रत्येक पृष्ठ मे १७ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति में अक्षर लगभग ५०-५१ हैं। अक्षर बडे तथा पढने मे स्पष्ट है। प्रति काली स्याही से लिखी गई है। यह प्रति अनुमानतः १६ वी शताब्दी मे लिखी गई है। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति है :

॥ इति श्रीमदुत्तराध्ययन श्रुतस्कंधः समाप्तः ॥ परमाप्त प्रणीतः ॥ छ ॥ निर्युक्तिकार एतन्माहात्म्यमाह ॥ जे किर भवसिद्धीया। परित्त संसारियाय जे भव्वा। ते किर पढति एए छत्तीसं उत्तरज्झाए तम्हा जिण पन्नत्ते। अणंतगम पज्जवेहिं संजुत्ते। अज्झाए जह जोग। गुरुप्पसाया अहिज्जिज्जा॥२॥ जो ज्जागविहीइ वहित्ता एए जो लिहइ सुत्तं अच्छ व ॥ भासेइय भवियजणो

सो पालइ निज्जरा विउला ॥ ३ ॥ जस्साढत्ती एए कह विसमप्पति विग्घर-
हियस्स । सोलक्खिज्जइ भव्वो ॥ पुव्वरिसी एव भासंति ॥४ ॥छ॥ शुभं
भवतु ॥श्रीः॥

ङ : उत्तराध्ययन पाठ व अवचूरी सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारशहर की है। अनुमानतः सं० १५०० मे लिखी हुई है। इसके पत्र ५६ व पृष्ठ ११८ है। पत्र १० इच लम्बे और ४॥ इच चौड़े है। पत्र के दोनो तरफ। इंच का मार्जिन है। पाठ और अवचूरी काली स्याही से लिखे हुए है। श्लोकांक तथा मार्जिन की रेखाएँ लाल स्याही में है। दोनो तरफ के मार्जिन के मध्य भाग में पाठ और चारो तरफ अवचूरी है। प्रत्येक पृष्ठ मे पाठ की न्यूनतम ८ आर अधिकतम १५ पंक्तियाँ है। प्रति के अन्त मे निम्नलिखित प्रशस्ति है :

इति श्री उत्तराध्ययनावचूरिः समाप्ता ॥ छ ॥ श्री रस्तु ॥ छ ॥ ए प्रति भ० श्री विद्यासागर सूरि पूसरीया शिष्य गुयवाय कर्मसागरे प्रति लिधी कलकवल रहित सह।

श : उत्तराध्ययन पाठ व अवचूरी सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारशहर की है। विक्रमाब्द १५३५ में लिखी गई है। इसके पत्र ७६ व पृष्ठ १५८ है। प्रत्येक पत्र १०। इंच लम्बा और ४॥ इंच चौड़ा है। यह प्रति काली स्याही से स्पष्ट लिखित है। इसके श्लोकांक तथा दोनो तरफ का मार्जिन लाल स्याही में है। प्रत्येक पृष्ठ मे पाठ की न्यूनतम ६ और अधिकतम १३ पंक्तियाँ हैं। अवचूरी मार्जिन तथा पाठ के ऊपर और नीचे के भाग मे लिखी हुई है। अवचूरी के अक्षर से पाठ के अक्षर लगभग ड्योढे बडे है। प्रति के अंत मे निम्नलिखित प्रशस्ति है :

लिखिता श्री उत्तराध्ययनावचूरिः स्वपरोपकृत्यैः ॥ १ शुभं भवतु ॥१॥
सं० १५३५ वर्ष आसोज सुदि ५ भोमे अद्येह श्री।

स : उत्तराध्ययन सर्वार्थसिद्धि टीका सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलालजी दुधोड़िया के संग्रहालय की है।

इसके पत्र ३२३ और पृष्ठ ६४६ है किन्तु प्रारम्भ के १६ पत्र प्राप्त नहीं है। प्रति बहुत प्राचीन है। अनुमानतः १६ शताब्दी में लिखी हुई होनी चाहिए। पत्र इतने जीर्ण है कि कभी-कभी हाथ के स्पर्श से ही खिरने लगते है। प्रति प्रायः बहुत शुद्ध लिखी हुई है। प्रत्येक पत्र १०॥ इंच लम्बा व ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति मे लगभग ५३-५४ अक्षर है। टीका और पाठ समान अक्षर मे ही लिखा हुआ है।

सु : सुखबोधा टीका, नेमिचन्द्राचार्य कृत (मुद्रित)

प्रकाशक :—देवचन्द्र लालभाई।

बृ : बृहद्‌वृत्ति 'शान्त्याचार्य कृत' (मुद्रित-निर्णयसागर प्रेस, बम्बई)

प्रकाशक :—देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धारे-ग्रन्थांक ३३।

चू : चूर्णि (गोपालिक महत्तर शिष्य कृत)

श्रेष्ठि देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धारे, ग्रंथांक ३३।

मोहमयीपत्तने वीर सम्वत् २४४२।

कृतज्ञता-ज्ञापन

जैन-परम्परा मे वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएँ हो चुकी है। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल मे जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि मे बहुत ही अव्यवस्थित हो गए है। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्य श्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थ दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्य श्री तुलसी है। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति मे अध्यापन-कर्म के अनेक अंग है—पाठ का

अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियो मे आचार्य श्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य मे प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मै आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-सबल पा और अधिक भारी बनूँ।

प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन मे मुनि दुलहराजजी का अविकल योग रहा है।

पाठ-संपादन के कार्य मे मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी ने श्रम और निष्ठापूर्वक योग दिया है।

शब्दानुक्रम आदि कार्य मे मुनि श्रीचन्द्रजी 'कमल' अत्यन्त दत्तचित्तता से लगे रहे है। मुनि हनुमानमलजी (सरदारशहर) का भी उसमे उल्लेखनीय योग रहा है।

विषयानुक्रम मुनि रूपचन्द्रजी ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति मे इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मै इनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

इस कार्य मे स्वर्गीय श्री मदनचन्दजी गोठी, आगम-सम्पादन-समिति के सयोजक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया, आदर्श साहित्य संघ के संचालक व व्यवस्थापक श्री हनूतमलजी सुराणा और जयचन्दलालजी दफ्तरी का भी अविरल योग रहा है। आदर्श साहित्य संघ की सहयुक्त सामग्री ने इस दिशा मे महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालो की समप्रवृत्ति मे योग-दान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-पूर्ति मात्र है। वास्तव मे यह हम सबका पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

बीदासर (राजस्थान) —मुनि नथमल

१५, अगस्त, १९६६

भूमिका

भूमिका का विषयानुक्रम

भूमिका

१ : आगम-सूत्रों का वर्गीकरण

जैन आगमों का प्राचीनतम वर्गीकरण पूर्व और अंग के रूप में प्राप्त होता है। पूर्व संख्या में चौदह थे[1] और अंग बारह[2]।

दूसरा वर्गीकरण आगम-संकलन-कालीन है। उसमें आगमों को दो वर्गों में विभक्त किया गया है—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य।[3]

तीसरा वर्गीकरण इन दोनों का मध्यवर्ती है। उसमें आगम-साहित्य के चार वर्ग किए गए है—(१) चरण-करणानुयोग, (२) धर्मकथानुयोग, (३) गणितानुयोग और (४) द्रव्यानुयोग।

एक वर्गीकरण सबसे उत्तरवर्ती है। उसके अनुसार आगम चार वर्गों में विभक्त होते है—(१) अंग, (२) उपांग, (३) मूल और (४) छेद।

नंदी के वर्गीकरण में मूल और छेद का विभाग नहीं है। उपांग शब्द भी अर्वाचीन है। नंदी के वर्गीकरण में इस अर्थ का वाचक अनंग-प्रविष्ट या अंग-बाह्य शब्द है।

आगमों का एक वर्गीकरण अध्ययन-काल की दृष्टि से भी किया गया है। दिन और रात के प्रथम एवं अन्तिम प्रहर में पढ़े जाने वाले आगम 'कालिक' तथा दिन और रात के चारों प्रहरों में पढ़े जाने वाले आगम 'उत्कालिक' कहलाते है।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनों 'मूल-सूत्र' कहे जाते है।

१–समवायाङ्ग, समवाय १४ .

चउदस पुव्वा प० तं०—

उप्पायपुव्वमग्गेणियं च तइयं च वीरियं पुव्वं।
अत्थीनत्थिपवायं तत्तो नाणप्पवायं च॥
सच्चप्पवायपुव्वं तत्तो आयप्पवायपुव्वं च।
कम्मप्पवायपुव्वं पच्चक्खाणं भवे नवमं॥
विज्जाअणुप्पवायं अवंझपाणाउ बारसं पुव्वं।
तत्तो किरियविसालं पुव्वं तह बिंदुसारं च॥

२–वही, समवाय १३६ :

दुवालसंगे गणिपिडगे प० तं०—आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विवाहपन्नत्ती णायाधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवागसुए दिट्ठिवाए।

३–नंदी, सूत्र ४३ :

अहवा तं समासओ दुविहं पण्णत्तं तंजहा—अङ्गपविट्ठं अङ्गबाहिरं च।

२ : मूल-सूत्र

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन गणधर-कृत नही है, इसलिए अंग-बाह्य है। इन्हें 'मूल' क्यों माना गया, इसका कोई प्राचीन उल्लेख उपलब्ध नही है। अनेक विद्वानों ने 'मूल' शब्द की अनेक आनुमानिक व्याख्याएँ की हैं। "दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन" मे इनका उल्लेख हम कर चुके है।

प्रो० विन्टरनित्ज ने 'मूल' शब्द को 'मूल ग्रन्थ' के अर्थ में स्वीकृत किया है। उनका अभिप्राय यह है—इन सूत्रों पर अनेक टीकाएँ है। इनमें 'मूल ग्रन्थ' का भेद करने के लिए इन्हे 'मूल-सूत्र' कहा गया।[१] यह प्रामाणिक नही है। प्रो० विन्टरनित्ज ने पिण्डनिर्युक्ति को भी 'मूल-वर्ग' मे सम्मिलित किया है। किन्तु उसकी अनेक टीकाएँ नही हैं। यदि अनेक टीकाएँ होने के कारण ही 'मूल-सूत्र' की संज्ञा दी गई तो पिण्डनिर्युक्ति इस वर्ग मे नही आ सकती।

डॉ० सरपेन्टियर[२], डॉ० ग्यारीनो[३] और प्रो० पटवर्धन[४] ने 'मूल-सूत्र' का अर्थ 'भगवान् महावीर के मूल शब्दो का संग्रह' किया है। किन्तु यह भी संगत नहीं है।

१—ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर, भाग-२, पृ० ४६६, पाद-टिप्पणी-१ :

Why these texts are called "root-Sūtras" is not quite clear Generally the word mūla is used in the sense of "fundamental text" in contradistinction to the commentary Now as there are old and important commentaries in existence precisely in the case of these texts, they were probably termed "Mūla-texts"

२—दी उत्तराध्ययन सूत्र, भूमिका, पृ० ३२ :

In the Buddhist work Mahāvyutpatti 245. 1265 mūlagrantha seems to mean 'original text', i e the words of Buddha himself Consequently there can be no doubt whatsoever that the Jains too may have used mūla in the sense of 'original text', and perhaps not so much in opposition to the later abridgments and commentaries as merely to denote the actual words of Mahāvīra himself

३—ल रिलीजीयन द'जैन, पृ० ७९ .

The word Mūla-Sūtra is translated as "tratés originaux"

४—दी दशवैकालिक सूत्र : ए स्टडी, पृ० १६ :

We find however the word Mūla often used in the sense of "original text", and it is but reasonble to hold that the

भगवान् महावीर के मूल शब्दो के कारण ही किसी आगम को 'मूल' संज्ञा दी जाय तो वह आचारांग के प्रथम श्रुतस्कंध को ही दी जा सकती है। वह सबसे प्राचीन और महावीर के मूल शब्दो का संकलन है।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन मुनि की जीवन-चर्या के प्रारम्भ में मूलभूत सहायक बनते हैं तथा आगमो का अध्ययन इन्ही के पठन से प्रारम्भ होता है। इसीलिए इन्हें 'मूल-सूत्र' की मान्यता मिली, ऐसा प्रतीत होता है। डॉ० सुब्रिंग का अभिमत भी यही है।[1]

हमारा दूसरा अभिमत यह है कि इनमे मुनि के मूल गुणो—महाव्रत, समिति आदि का निरूपण है। इस दृष्टि से इन्हें 'मूल-सूत्र' की संज्ञा दी गई।

३ : मूलाचार और मूल-सूत्र

'मूलाचार' आचार्य वट्टकेर की रचना है।[2] उसमे भी उक्त अभिमत की पुष्टि होती है। मूलाचार में मुनि के मूल आचार का निरूपण है। उसमें उत्तराध्ययन के अनेक श्लोक संगृहीत हैं।[3]

---

word Mūla appearing in the expression Mūlasūtra has got the same sense Thus the term Mūlasūtra would mean "the original text, i e, 'the text containing the original words of Mahāvīra (as received directly from his mouth)'" And as a matter of fact we find, that the style of Mūlasūtras Nos 1 and 3 (उत्तराध्ययन and दशवैकालिक) as sufficiently ancient to justify the claim made in their favour by their original title, that they represent and preserve the original words of Mahāvīra

१—दसवेयालिय सुत्त, भूमिका, पृ० ३ :

Together with the Uttarajjhāyā (commonly called Uttarajjhayana Sutta) the Āvassaganijjuti and the Pindanijjutti it forms a small group of texts called Mūlasutta This designation seems to mean that these four works are intended to serve the Jain monks and nuns in the beginning (मूल) of their career

२—मुनि कल्याणविजयजी गणी ने 'श्रमण भगवान् महावीर' पृ० ३४३ पर 'मूलाचार' का रचना-काल विक्रम की सातवी शताब्दी के आस-पास माना है।

३—

मूलाचार, ४।६९	मिलाइए—उत्तराध्ययन, ३६।२५७
" ४।७०	" " ३६।२५८
" ४।७२	" " ३६।२६०
" ४।७३	" " ३६।२६१

दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आवश्यक तथा ओघनिर्युक्ति-पिण्डनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' वर्ग में स्थापित करने वाले आचार्य के मन में वही कल्पना रही है, जो कल्पना आचार्य वट्टकेर के मन में 'मूलाचार' के अधिकार-निर्माण में रही है। 'मूल-सूत्रों' की विषय-वस्तु से जो अधिकार तुलनीय है, वे ये है—

(१) मूल-गुणाधिकार	मिलाइए—दशवैकालिक, उत्तराध्ययन
(४) समाचाराधिकार	मिलाइए—ओघनिर्युक्ति
(६) पिण्ड-शुद्धि अधिकार	मिलाइए—पिण्डनिर्युक्ति
(७) षडावश्यकाधिकार	मिलाइए—आवश्यक

इस सादृश्य के आधार पर दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि को 'मूल-सूत्र' वर्ग में रखने का हेतु बुद्धिगम्य हो जाता है।

४ : मूल-सूत्र वर्ग की कल्पना और श्रुत-पुरुष

'मूल-सूत्र' वर्ग की कल्पना का एक कारण श्रुत-पुरुष (आगम-पुरुष) भी हो सकता है। नंदी-चूर्णि में श्रुत-पुरुष की कल्पना की गई है। पुरुष के शरीर में बारह अंग होते है—दो पैर, दो जंघाएँ, दो ऊरु, दो गात्रार्ध (उदर और पीठ), दो भुजाएँ, ग्रीवा और शिर। आगम-साहित्य मे जो बारह अंग है, वे ही श्रुत-पुरुष के बारह अंग है।[1] अंग-बाह्य श्रुत-पुरुष के उपांग स्थानीय है। यह परिकल्पना अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य—इन दो आगमिक वर्गों के आधार पर हुई है। इसमें 'मूल' और 'छेद' की कोई चर्चा नही है। हरिभद्रसूरि (विक्रम की ८ वी शताब्दी) और आचार्य मलयगिरि (विक्रम की १३ वी शताब्दी) के समय तक भी श्रुत-पुरुष की कल्पना में अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य—ये दो ही परिपार्श्व रहे है। इन दोनो आचार्यो ने चूर्णि का अनुसरण किया है। उसमें कोई नई बात नही जोडी है।[2] आचार्य मलयगिरि ने तो अग-प्रविष्ट तथा आचारांग आदि को भी 'मूल-भूत' कहा है।[3] श्रुत-पुरुष की प्राचीन रेखा-कृतियो में अंग-प्रविष्ट श्रुत की स्थापना इस प्रकार है —

१—नंदी चूर्णि, पृ० ४७ :

इच्चेतस्स सुतपुरिसस्स जं सुतं अंगभागठितं तं अंगपविट्ठं भण्णइ।

२—नंदी, हारिभद्रीय वृत्ति, पृ० ९०।

३—नंदी, मलयगिरीया वृत्ति, पत्र २०३ :

यद् गणधरदेवकृतं तदंगप्रविष्टं मूलभूतमित्यर्थः, गणधरदेवा हि मूलभूतमाचारादिकं श्रुतमुपरचयन्ति।

१—दायाँ पैर	=	आचारांग
२—वायाँ पैर	=	सूत्रकृताग
३—दाईं जंघा	=	स्थानांग
४—वाईं जंघा	=	समवायांग
५—दायाँ ऊरु	=	भगवती
६—वायाँ ऊरु	=	ज्ञाताधर्मकथा
७—उदर	=	उपासकदशा
८—पीठ	=	अन्तकृद्दशा
९—दाईं भुजा	=	अनुत्तरोपपातिकदशा
१०—वाईं भुजा	=	प्रश्नव्याकरण
११—ग्रीवा	=	विपाक
१२—शिर	=	दृष्टिवाद

इस स्थापना के अनुसार भी मूल-स्थानीय (चरण-स्थानीय) आचाराग और सूत्रकृताग है।[1]

श्रुत-पुरुष की अन्य रेखा-कृतियो में स्थापना भिन्न प्रकार से मिलती है। उनमें मूल-स्थानीय चार सूत्र है—आवश्यक, दशवैकालिक पिण्डनिर्युक्ति और उत्तराध्ययन। नदी और अनुयोगद्वार को व्याख्या-ग्रन्थो (या चूलिका-सूत्रों) के रूप में 'मूल' मे भी नीचे प्रदर्शित किया है।[2]

पैंतालीस आगमो को प्रदर्शित करने वाली श्रुत-पुरुष की रेखाकृति बहुत अर्वाचीन है। यदि इनकी कोई प्राचीन रेखाकृति प्राप्त हो तो प्रस्तुत विषय की प्रामाणिक जानकारी हो सकती है। जिस समय पैंतालीस आगमो की मान्यता स्थिर हुई, उसके आस-पास या उसी समय, संभव है श्रुत-पुरुष की स्थापना में भी परिवर्तन हुआ। चूर्णि-कालीन श्रुत-पुरुष के 'मूल-स्थान' (चरण-स्थान) मे आचाराग और सूत्रकृताग थे। उत्तर-कालीन श्रुत-पुरुष के 'मूल-स्थान' मे दशवैकालिक और उत्तराध्ययन आ गए। इन्हें 'मूल-सूत्र' मानने का यह सर्वाधिक संभावित हेतु है।

१–श्री आगम पुरुषनुं रहस्य, पृष्ठ ५० के सामने (श्री उदयपुर, मेवाड़ के हस्त-लिखित भण्डार से प्राप्त प्राचीन) श्री आगम पुरुष का चित्र।

२–वही, पृष्ठ १४ तथा ४९ के सामने वाला चित्र।

५ : अध्ययन-क्रम का परिवर्तन और मूल-सूत्र

आगमिक-अध्ययन के क्रम में जो परिवर्तन हुआ, उससे भी इसकी पुष्टि होती है। दशवैकालिक की रचना से पूर्व आचारांग के बाद उत्तराध्ययन पढा जाता था। दशवैकालिक की रचना होने के पश्चात् दशवैकालिक के बाद उत्तराध्ययन पढा जाने लगा।[१]

प्राचीन काल में आचारांग के प्रथम अध्ययन 'शस्त्र-परिज्ञा' का अध्ययन करा कर शैक्ष की उपस्थापना की जाती थी और फिर वह दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन 'षड्जीवनिका' का अध्ययन करा कर की जाने लगी।[२]

प्राचीन काल मे आचारांग के द्वितीय अध्ययन के पंचम उद्देशक के 'आमगन्ध' सूत्र का अध्ययन करने के बाद मुनि 'पिण्डकल्पी' होता था। फिर वह दशवैकालिक के पाँचवें अध्ययन 'पिण्डैषणा' के अध्ययन के पश्चात् 'पिण्डकल्पी' होने लगा।[३]

ये तीनो तथ्य इस बात के साक्षी है कि एक समय आचारांग का स्थान दशवैकालिक ने ले लिया। आचार की जानकारी के लिए आचारांग मूल-भूत था, वैसे ही दशवैकालिक भी आचार-ज्ञान के लिए मूल-भूत बन गया। संभव है आदि में पढे जाने के कारण तथा मुनि की अनेक मूल-भूत प्रवृत्तियो के उद्‌बोधक होने के कारण इन्हें 'मूल-सूत्र' की संज्ञा दी गई।

६ : मूल-सूत्रों की संख्या

१—उपाध्याय समयसुन्दर ने 'सामाचारी शतक' में (इसकी रचना विक्रम सं० १६७२ मे हुई थी) 'मूल-सूत्र' चार माने है—(१) दशवैकालिक, (२) ओघनिर्युक्ति, (३) पिण्डनिर्युक्ति और (४) उत्तराध्ययन।

१–व्यवहार भाष्य, उद्देशक ३, गाथा १७६ :

आयारस्स उ उवरिं, उत्तरज्झयणा उ आसि पुव्वं तु।
दसवेयालिय उवरिं, इयाणि किं ते न होती उ॥

२–वही, उद्देशक ३, गाथा १७४ :

पुव्वं सत्थपरिण्णा, अधीय पढियाइ होउ उवट्ठवणा।
इण्हिं छज्जीवणया, किं सा उ न होउ उवट्ठवणा॥

३–वही, उद्देशक ३, गाथा १७५ :

बितितंमि बंभचेरे, पंचमउद्देस आमगंधम्मि।
सुत्तंमि पिंडकप्पी, इइ पुण पिंडेसणाएओ॥

२—भावप्रभसूरि (१८ वी शताब्दी) ने भी 'मूल-सूत्र' चार माने है—(१) उत्तराध्ययन, (२) आवश्यक, (३) पिण्डनिर्युक्ति-ओघनिर्युक्ति और (४) दशवैकालिक ।[१] ये नाम उपाध्याय समयसुन्दर के नामो से भिन्न है । इसमें पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को एक मानकर 'आवश्यक' को भी 'मूल-सूत्र' माना गया है।

३—स्थानकवासी[२] और तेरापन्थ[३] सम्प्रदाय में उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नंदी और अनुयोगद्वार—इन चार सूत्रो को 'मूल' माना गया है ।

४—आधुनिक विद्वानो ने 'मूल सूत्रों' की संख्या और क्रम-व्यवस्था निम्न प्रकार मानी है

(क) प्रो० वेबर और प्रो० बूलर—उत्तराध्ययन, आवश्यक और दशवैकालिक को 'मूल-सूत्र' ठहराते है ।

(ख) डॉ० सरपेन्टियर, डॉ० विन्टरनित्ज और डॉ० ग्यारिनो—उत्तराध्ययन, आवश्यक, दशवैकालिक और पिण्डनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' मानते है ।

(ग) डॉ० सुब्रिंग—उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, आवश्यक, पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्रों' की संज्ञा देते है ।[४]

(घ) प्रो० हीरालाल कापडिया—आवश्यक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, दशवैकालिक चूलिकाएँ, पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' कहते है ।[५]

उक्त सब अभिमतो को संकलित करने पर 'मूल-सूत्रों' की संख्या आठ हो जाती है—आवश्यक, दशवैकालिक, दशवैकालिक-चूलिकाएँ, उत्तराध्ययन, पिण्डनिर्युक्ति, ओघनिर्युक्ति, अनुयोगद्वार और नंदी ।

आगमों के वर्गीकरण में आवश्यक का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है । अनंग-प्रविष्ट आगमों के दो विभाग किए गए है । उनमें पहला आवश्यक और दूसरा आवश्यक-व्यतिरिक्त है । दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि आगम दूसरे विभाग के अन्तर्गत है, जब कि आवश्यक का अपना स्वतंत्र स्थान है। इसलिए इसे 'मूल-सूत्रों' की संख्या में सम्मिलित करने का कोई हेतु प्रस्तुत नही है ।

१—जैनधर्मवरस्तोत्र, श्लोक ३० की स्वोपज्ञ वृत्ति—अथ उत्तराध्ययन-आवश्यक-पिण्डनिर्युक्ति तथा ओघनिर्युक्ति-दशवैकालिक—इति चत्वारि मूलसूत्राणि ।

२—श्री रत्नमुनि स्मृति ग्रन्थ, आगम और व्याख्या साहित्य, पृष्ठ २७।

३—श्रीमज्जयाचार्य कृत प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध, आगमाधिकार, पृ० ७३-७४ ।

४—ए हिस्ट्री ऑफ दी केनोनिकल लिटरेचर ऑफ दी जैन्स, पृष्ठ ४४-४५ ।

५—वही, पृ० ४८ ।

ओघनिर्युक्ति और पिण्डनिर्युक्ति—ये दोनो आगम नही है, किन्तु व्याख्या-ग्रन्थ है। पिण्डनिर्युक्ति दशवैकालिक के पॉचवें अध्ययन—पिण्डैषणा—की व्याख्या है। ओघनिर्युक्ति ओघ-समाचारी की व्याख्या है। यह आवश्यक निर्युक्ति का एक अंश है। विस्तृत कलेवर होने के कारण इसे पृथक्-ग्रन्थ का रूप दिया गया।[1] इसलिए इन्हे 'मूल-सूत्रो' की संख्या में सम्मिलित करने की अपेक्षा दशवैकालिक और आवश्यक के सहायक ग्रन्थो के रूप में स्वीकार करना अधिक संगत लगता है।

अनुयोगद्वार और नंदी—ये दोनो चूलिका-सूत्र है। इन्हें 'मूल-सूत्र' वर्ग मे रखने का कोई हेतु उपलब्ध नही है। सम्भव है बत्तीस सूत्रो की मान्यता के साथ (वि० १६ वी शताब्दी में) इन्हें 'मूल-सूत्र' वर्ग मे रखा गया। श्रीमज्जयाचार्य ने पूर्व प्रचलित परम्परा के अनुसार अनुयोगद्वार और नंदी को 'मूल-सूत्र' माना है। किन्तु इस पर उन्होने अपनी ओर से कोई मीमासा नही की है।

इस प्रकार 'मूल-सूत्र' की संख्या दो रह जाती है—दशवैकालिक और उत्तराध्ययन।

७ : मूल-सूत्रों का विभाजन-काल

दशवैकालिक की निर्युक्ति, चूर्णि और हारिभद्रीय वृत्ति में मूल-सूत्रो की कोई चर्चा नही है।

इसी प्रकार उत्तराध्ययन की निर्युक्ति, चूर्णि और शान्त्याचार्य कृत बृहद् वृत्ति मे भी उनकी कोई चर्चा नही है।

इससे यह स्पष्ट है कि विक्रम की ११ वी शताब्दी तक 'मूल-सूत्र' वर्ग की स्थापना नही हुई थी।

धनपाल का अस्तित्व-काल ग्यारहवी शताब्दी है। उन्होने 'श्रावक-विधि' मे पैंतालीस आगमो का उल्लेख किया है।[2] इससे यह अनुमान होता है कि धनपाल से पहले ही आगमो की संख्या पैंतालीस निर्धारित हो चुकी थी। प्रद्युम्नसूरि (वि० की १३ वी शताब्दी) कृत विचारसार-प्रकरण में भी आगमो की संख्या पैंतालीस है, किन्तु इनमें 'मूल-सूत्र' विभाग नही है। उसमे ग्यारह अग और चौतिस ग्रन्थो का उल्लेख मिलता है।[3]

१-आवश्यक निर्युक्ति, गाथा ६६५, वृत्ति पत्र ३४१ :

साम्प्रतमोघनिर्युक्तिर्वक्तव्या, सा च महत्वात् पृथग्ग्रन्थान्तररूपा कृता।

२-समयसुन्दर गणी विरचित श्री गाथासहस्री मे धनपाल कृत 'श्रावक विधि' का उद्धरण है। उसमे पाठ आता है—पणयालीसं आगम (श्लोक २९७, पृ० १८)।

३-विचारलेस, गाथा ३४४-३५१।

प्रभावक-चरित मे अंग, उपाग, मूल और छेद—आगमो के ये चार विभाग प्राप्त है।[1] यह विक्रम संवत् १३३४ की रचना है।

इससे यह फलित होता है कि 'मूल-सूत्र' वर्ग की स्थापना चौदहवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे हो चुकी थी। फिर उपाध्याय समयसुन्दर के सामाचारी शतक में इसका उल्लेख प्राप्त होता है।[2]

८ : दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान

जैन-आगमो में दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। श्वेताम्बर और दिगम्बर—दोनो परम्पराओ के आचार्यों ने इनका बार-बार उल्लेख किया है। दिगम्बर-साहित्य मे अंग-बाह्य के चौदह प्रकार बतलाए गए है। उनमें सातवाँ दशवैकालिक और आठवाँ उत्तराध्ययन है।[3]

श्वेताम्बर-साहित्य मे अंग-बाह्य श्रुत के दो मुख्य विभाग है—(१) कालिक और (२) उत्कालिक। कालिक सूत्रो की गणना में पहला स्थान उत्तराध्ययन का और उत्कालिक सूत्रो की गणना मे पहला स्थान दशवैकालिक का है।[4]

६ : दशवैकालिक : आकार और विषय-वस्तु

दशवैकालिक के दस अध्ययन है और चूँकि वह विकाल मे रचा गया, इसलिए इसका नाम दशवैकालिक रखा गया। इसके कर्त्ता श्रुतकेवली शय्यंभव है। अपने पुत्र—शिष्य मनक के लिए उन्होने इसकी रचना की। वीर सम्वत् ७२ के आस-पास 'चम्पा' में इसकी रचना हुई।

१—प्रभावक चरितम्, दूसरा आर्यरक्षित प्रबन्ध :

ततश्चतुर्विध. कार्योऽनुयोगोऽतः परं मया।
ततोऽङ्गोपाङ्गमूलाख्यग्रन्थच्छेदकृतागमः॥२४१॥

२—सामाचारी शतक, पत्र ७६।

३—(क) कषायपाहुड (जयधवला सहित) भाग १, पृष्ठ १३।२५ :

दसवेयालियं उत्तरज्झयणं।

(ख) गोम्मटसार (जीव-काण्ड), गाथा ३६७ :

दसवेयालं च उत्तरज्झयणं।

४—नंदी, सूत्र ४३ :

से किं तं कालियं? कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—उत्तरज्झयणाइं • ।
से किं तं उक्कालियं? उक्कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—दसवेयालियं • ।

इसकी दो चूलिकाएँ हैं। अध्ययनो के नाम, श्लोक, सख्या और विषय इस प्रकार हैं —

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
१ द्रुमपुष्पिका[1]	५		धर्म-प्रशंसा और माधुकरी वृत्ति।
२. श्रामण्यपूर्वक	११		सयम में धृति और उसकी साधना।
३. क्षुल्लकाचार	१५		आचार और अनाचार का विवेक।
४ धर्म-प्रज्ञप्ति या षड्जीवनिका	२८	२३	जीव-सयम तथा आत्म-संयम का विचार।
५. पिण्डैषणा	१५०		गवेषणा, ग्रहणैषणा और भोगैषणा की शुद्धि।
६ महाचार	६८		महाचार का निरूपण।
७. वाक्यशुद्धि	५७		भाषा-विवेक।
८ आचार-प्रणिधि	६३		आचार का प्रणिधान।
९. विनय-समाधि	६२	७	विनय का निरूपण।
१०. सभिक्षु	२१		भिक्षु के स्वरूप का वर्णन।
चूलिका			
१ रतिवाक्या	१८	१	सयम मे अस्थिर होने पर पुन स्थिरीकरण का उपदेश।
२. विविक्तचर्या	१६		विविक्तचर्या का उपदेश।

निर्युक्तिकार के अनुसार दशवैकालिक का समावेश चरण-करणानुयोग में होता है। इसका फलित अर्थ यह है कि इसका प्रतिपाद्य आचार है। वह दो प्रकार का होता है— (१) चरण—व्रत आदि और (२) करण—पिण्ड-विशुद्धि आदि।[2]

धवला के अनुसार दशवैकालिक आचार और गोचर की विधि का वर्णन करने वाला सूत्र है।[3] अंगपण्णत्ति के अनुसार इसका विषय गोचर-विधि और पिण्ड-विशुद्धि

१–तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय, में इसका नाम 'वृक्षकुसुम' दिया है—देखिए पृ० ११ पा० टि० २।

२–दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा ४ :

अपुहुत्तपुहुत्ताइं, निद्दिसिउं एत्थ होइ अहिगारो।
चरणकरणाणुओगेण, तस्स दारा इमे हुंति॥

३–षड्खंडागमः, सत्प्ररूपणा (१।१।१), पृ० ९७ :

दसवेयालियं आयार-गोयर-विहिं वण्णेइ।

है।[1] तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय में इसे वृक्ष-कुसुम आदि का भेद-कथक और यतियों के आचार का कथक कहा है।[2]

उक्त प्रतिपादन से दशवैकालिक का स्थूल रूप हमारे सामने प्रस्तुत हो जाता है, किन्तु आचार्य शय्यंभव ने आचार-गोचर की प्ररूपणा के साथ-साथ अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों का निरूपण किया है। जीव-विद्या, योग-विद्या आदि के अनेक सूक्ष्म-बीज इसमें विद्यमान हैं।

१० : दशवैकालिक : निर्यूहण कृति

रचना दो प्रकार की होती है—स्वतंत्र और निर्यूहण। दशवैकालिक निर्यूहण कृति है, स्वतन्त्र नहीं। आचार्य शय्यंभव श्रुतकेवली थे। उन्होंने विभिन्न पूर्वों से इसका निर्यूहण किया—यह एक मान्यता है।

दशवैकालिक की निर्युक्ति के अनुसार चौथा अध्ययन—आत्मप्रवाद पूर्व से, पाँचवाँ अध्ययन—कर्मप्रवाद पूर्व से, सातवाँ अध्ययन—सत्यप्रवाद पूर्व से और शेष सभी अध्ययन—प्रत्याख्यान पूर्व की तीसरी वस्तु से उद्धृत किए गए है।[3]

दूसरी मान्यता के अनुसार इसका निर्यूहण गणिपिटक द्वादशांगी से किया गया है।[4] किस अध्ययन का किस अंग से उद्धरण किया गया, इसका कोई उल्लेख प्राप्त नहीं है। किन्तु तीसरे अध्ययन का विषय सूत्रकृतांग १।९ से प्राप्त होता है। चतुर्थ अध्ययन का विषय भी सूत्रकृतांग १।११।७,८ तथा आचारांग १।१।१ का क्वचित् संक्षेप और क्वचित् विस्तार है। पाँचवें अध्ययन का विषय आचारांग के दूसरे अध्ययन लोक-विजय

१–अंगपण्णत्ति, ३।२४ :

जदि गोचरस्स विहिं, पिंडविसुद्धिं च जं परूवेहि।
दसवेआलिय सुत्तं, दह काला जत्थ संवुत्ता॥

२–तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय, पृष्ठ ६७ :

वृक्षकुसुमादीनां दशानां भेदकथकं यतीनामाचारकथकंच दशवैकालिकम्।

३–दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा, १६,१७ :

आयप्पवायपुव्वा, निज्जूढा होइ धम्मपन्नत्ती।
कम्मप्पवायपुव्वा, पिंडस्स उ एसणा तिविहा॥
सच्चप्पवायपुव्वा, निज्जूढा होइ वक्कसुद्धी उ।
अवसेसा निज्जूढा, नवमस्स उ तइयवत्थूओ॥

४–वही, गाथा १८ :

बीओऽवि अ आएसो, गणिपिडगाओ दुवालसंगाओ।
एअं किर णिज्जूढं, मणगस्स अणुग्गहट्ठाए॥

के पाँचवें उद्देशक और आठवें विमोह अध्ययन के दूसरे उद्देशक से प्राप्त होता है। छठा अध्ययन समवायांग समवाय १८ के "वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं। पलियंक निसिज्जा य, सिणाणं सोभवज्जणं ॥" श्लोक का विस्तार है। सातवें अध्ययन के बीज आचारांग १।१।६।५ मे मिलते हैं। आठवें अध्ययन का आंशिक विषय स्थानांग ८।५९८,६०१,६१५ से मिलता है। आंशिक तुलना अन्यत्र भी प्राप्त होती है।[1]

आचारांग के दूसरे श्रुतस्कंध की प्रथम चूला के अध्ययन १ और ४ से क्रमश इसके पाँचवें और सातवें अध्ययन की तुलना होती है। किन्तु हमारे अभिमत मे वह दशवैकालिक के बाद का निर्यूहण है। इसके दूसरे, नवें तथा दसवें अध्ययन का विषय उत्तराध्ययन के प्रथम और पन्द्रहवें अध्ययन से तुलित होता है। किन्तु वह अंग-बाह्य आगम है।

यह सूत्र श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनो परम्पराओ में मान्य रहा है। इसके कर्तृत्व के विषय मे भी श्वेताम्बर-साहित्य मे प्रामाणिक ऊहापोह है। श्वेताम्बर आचार्यों ने इस पर निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, दीपिका, अवचूरि आदि-आदि व्याख्या-ग्रन्थ लिखे हैं।

दिगम्बर-परम्परा में भी यह सूत्र प्रिय रहा है। धवला, जयधवला, तत्त्वार्थवार्तिक (राजवार्तिक), तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय आदि में इस विषय का उल्लेख मिलता है। परन्तु इसके निश्चित कर्तृत्व तथा स्वरूप का कही भी विवरण प्राप्त नही होता। इसके कर्तृत्व का उल्लेख करते हुए आरातीयैराचार्यैर्निर्यूढं—इतना मात्र संकेत देते है। कब तक यह सूत्र उनको मान्य रहा और कब से यह अमान्य हुआ—यह प्रश्न आज भी असमाहित है।

११ : दशवैकालिक : व्याकरण-विमर्श

प्राचीन आगम अर्वाचीन प्राकृत व्याकरणो की कसौटी पर खरे नही उतरते। उन्हें व्याकरण की कसौटी पर कसने का हमारा प्रयत्न भी सम्मान्य नही है। जिन वैयाकरण परम्पराओ और नियमो के संदर्भ में आगम लिखे गए, वे परम्पराएँ और नियम अर्वाचीन काल मे परिवर्तित हो गए। इसलिए उनमे परस्पर पूर्ण-सामंजस्य प्राप्त नही होता। व्याकरण-विमर्श की हमारी दृष्टि इतनी ही हो सकती है कि हम प्राचीन रचनाओ मे अर्वाचीन व्याकरणो से जो अतिरिक्तता पाते है, वह सुलभ हो जाए।

१–(क) दशवैकालिक, ४। सूत्र ९ : मिलाइये—आचारांग, १।१।६।४९।
(ख) दशवैकालिक, ५।२।२८ : मिलाइये—आचारांग, १।१।२।४।
(ग) दशवैकालिक, ६।५३ : मिलाइये—सूत्रकृतांग, १।२।२।१८।

प्रस्तुत सूत्र मे अलाक्षणिक (व्याकरण-असिद्ध) मकार के अनेक प्रयोग मिलते है—वत्थगन्धमलंकारं (२।२), आहारमाईणि (६।४६), निक्खम्ममाणाए (१०।१) ।

विभक्ति और वचन के व्यत्यय भी मिलते है—पीढए (७।२८)—यहाँ चतुर्थी के अर्थ में प्रथमा विभक्ति है। बुद्धवयणे (१०।६)—यहाँ तृतीया के अर्थ में सप्तमी विभक्ति है।

अच्छन्दा जे न भुजन्ति, न से चाइ त्ति वुच्चइ (२।२)—यहाँ 'भुजन्ति' वहुवचन है और 'से चाइ' एकवचन है।

इस प्रकार कुछेक उदाहरण हमने प्रस्तुत किए हैं। विस्तार के लिए देखें—"दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन", अध्ययन १ व्याकरण-विमर्श।

१२ : दशवैकालिक : भाषा की दृष्टि से

इसमें अर्धमागधी और जैन-महाराष्ट्री आदि के संवलित प्रयोग है। 'हत्थंसि वा', 'पायंसि वा' (४। सूत्र २३) मे अर्धमागधी के प्रयोग है। प्राकृत मे सप्तमी के एकवचन के दो रूप वनते है—'हत्थे, हत्थम्मि'।[1] 'हत्थंसि' यह अर्धमागधी में वनता है। 'जे' (२।३), 'करेमि' (४। सूत्र १०)—इनमें 'ओकार' के स्थान में जो 'एकार' है, वह अर्धमागधी का लक्षण है।[2]

मणसा (८।३) जोगसा (८।१७)—ये अर्धमागधी के प्रयोग है। प्राकृत मे ये नही मिलते।

वहवे (७।४८)—वहु शब्द का प्रथमा का वहुवचन, जसोकामी (२।७), दोच्चे (४।सूत्र १२), तच्चे (४।सूत्र १३), सोच्चा (४।११), लद्धूण (५।२।४७), ऊसंढं (५।२।२५), संवुड (५।१।८३), परिवुड (६।१।१५), कड (४। २०), कट्टु (चूलिका १।१४) आदि-आदि तथा मकार के अलाक्षणिक प्रयोग—ये सव अर्धमागधी के प्रयोग है, जिन्हे हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण मे आर्षप्रयोग कहा है। हियट्ठयाए (४।सूत्र १७)—यहाँ स्वार्थ मे 'या' और 'य' के स्थान में 'एकार' का प्रयोग है, जो प्राकृत-सिद्ध नही है। तेइंदिया में 'ति' का 'ते' हुआ है। यह अर्धमागधी का प्रयोग है।[3] कही शौरसेनी के लक्षण भी मिलते है जैसे—अत्तवं (आत्मवान्) (८।४८)। यहाँ 'न' को 'म' किया है, जो शौरसेनी मे होता है।[4]

१–हेमशब्दानुशासन, ८।३।११ : ङे म्मि ङेः।

२–वही, ८।४।२८७ :
अत एत्सौ पुंसि मागध्याम्।

३–प्राकृत भाषाओं का व्याकरण :
पैरा ४३८, पृष्ठ ६५१।

४–हेमशब्दानुशासन, ८।४।२६४ : मो वा।

देशी या अपभ्रंश शब्दो के प्रयोग भी प्रचुर है। गावी (५।१।१२) को पतञ्जलि 'गो' शब्द का अपभ्रंश बतलाते है।[1] आचार्य हेमचन्द्र ने प्राकृत-भाषा-विशेष के शब्दो को 'देशी' माना है।[2]

१३ : दशवैकालिक के व्याख्या-ग्रन्थ

दशवैकालिक की प्राचीनतम व्याख्या निर्युक्ति है। उसमें इसकी रचना के प्रयोजन, नामकरण, उद्धरण-स्थल, अध्ययनो के नाम, उनके विषय आदि का संक्षेप में बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलता है। यह ग्रन्थ उत्तरवर्ती सभी व्याख्या-ग्रन्थो का आधार रहा है। यह पद्यात्मक है। इसकी गाथाओ का परिमाण टीकाकार के अनुसार ३७१ है। इसके कर्त्ता द्वितीय भद्रबाहु माने जाते हैं। इनका काल-मान विक्रम की पाँचवी-छठी शताब्दी है।

इसकी दूसरी पद्यात्मक व्याख्या भाष्य है। चूर्णिकार ने भाष्य का उल्लेख नही किया। टीकाकार भाष्य और भाष्यकार का अनेक स्थलो में उल्लेख करते है।[3] टीकाकार के अनुसार भाष्य की ६३ गाथाएँ है। इसके कर्त्ता की जानकारी हमें नही है। टीकाकार ने भी भाष्यकार के नाम का उल्लेख नही किया है।[4] वे निर्युक्तिकार के बाद और चूर्णिकार से पहले हुए हैं।

हरिभद्र सूरि ने जिन गाथाओ को भाष्यगत माना है, वे चूर्णि मे है। इससे जान पड़ता है कि भाष्यकार चूर्णिकार के पूर्ववर्ती है। इसके बाद चूर्णियाँ लिखी गई है। अभी दो चूर्णियाँ प्राप्त है। एक के कर्त्ता अगस्त्यसिंह स्थविर है और दूसरी के कर्त्ता जिनदास महत्तर (वि० की ७ वी शताब्दी)।

१—पातञ्जल महाभाष्य, पस्पशाह्निक :

एकस्यैव गोशब्दस्य गावी-गोणी-गोता-गोपोतलिकेत्यादयोऽनेकेऽपशब्दाः।

२—देशीनाममाला, १।४ :

देसविसेसपसिद्धीइ, भण्णमाणा अणन्तया हुंति।

तम्हा अणाइपाइयपयट्टभासाविसेसओ देसी॥

३—(क) दशवैकालिक हारिभद्रीय टीका, पत्र ६४ : भाष्यकृता पुनरुपन्यस्त इति।

(ख) वही, पत्र १२० : आह च भाष्यकारः।

(ग) वही, पत्र १२८ : व्यासार्थस्तु भाष्यादवसेयः।

(घ) वही, पत्र १२३,१२५,१२६,१२९,१३३,१३४,१४०,१६१,१६२,२७८।

४—दशवैकालिक हारिभद्रीय टीका, पत्र १३२ :

तामेव निर्युक्तिगाथां लेशतो व्याचिख्यासुराह भाष्यकारः। ······ एतदपि नित्यत्वादिप्रसाधकमिति निर्युक्तिगाथायामनुपन्यस्तमप्युक्तं सूक्ष्मधिया भाष्यकारेणेति गाथार्थः।

दशवैकालिक की द्वितीय चूर्णि के अन्त में कोई प्रशस्ति नहीं है और न ग्रन्थकार का नाम ही उपलब्ध है। पारंपरिक अनुश्रुति से यह जिनदास महत्तर कृत मानी जाती है।

उत्तराध्ययन (अ० ३०) चूर्णि पृ० २७४ में एक उल्लेख आता है—"षष्ठोऽपि चित्तो नानाप्रकारो प्रकीर्णतपोऽभिधीयते, तदन्यत्राभिहितं, शेषं दशवैकालिकचूर्णौ अभिहितम्।" इस वाक्य से दशवैकालिक और उत्तराध्ययन की चूर्णियाँ एक-कर्तृक प्रतीत होती है। दशवैकालिक चूर्णि (पृ० २१) में इत्वरिक तप का वर्णन बहुत संक्षिप्त रूप में किया गया है। शेष वर्णन विस्तृत है। उत्तराध्ययन चूर्णि (पृ० २७४) में इत्वरिक तप के पाँच प्रकारों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। छठे प्रकीर्ण तप के कहीं अन्यत्र वर्णन करने की सूचना दी है और शेष वर्णन दशवैकालिक चूर्णि में किया गया है—ऐसा लिखा है।

दशवैकालिक (१।१) की चूर्णि में पृ० २१ से ३७ तक तप का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसीलिए उत्तराध्ययन में उन्होंने इसकी पुनरुक्ति नहीं की। सही अर्थ में तप का इतना विस्तृत वर्णन उत्तराध्ययन के तपोऽध्ययन (अ० ३०) की चूर्णि में करना चाहिए था किन्तु दशवैकालिक चूर्णि की रचना पहले की थी। वहाँ प्रथम अध्ययन के प्रथम श्लोक में आए 'तप' शब्द का विशद वर्णन कर डाला। इसीलिए उत्तराध्ययन में, जो दशवैकालिक की चूर्णि में नहीं था, उसी का उल्लेख कर शेष के लिए दशवैकालिक चूर्णि में अभिहित की सूचना दे दी।

मुनि श्री पुण्यविजयजी के मतानुसार अगस्त्यसिंह की चूर्णि का रचना-काल विक्रम की तीसरी शताब्दी के आस-पास है।[1]

अगस्त्यसिंह स्थविर ने अपनी चूर्णि में तत्त्वार्थसूत्र, आवश्यकनिर्युक्ति, ओघनिर्युक्ति, व्यवहारभाष्य, कल्पभाष्य आदि ग्रन्थों का उल्लेख किया है। इनमें अन्तिम रचनाएँ भाष्य है। उनके रचना-काल के आधार पर अगस्त्यसिंह का समय पुन: अन्वेषणीय है।

अगस्त्यसिंह ने पुस्तक रखने की औत्सर्गिक और आपवादिक—दोनों विधियों की चर्चा की है। इस चर्चा का आरम्भ जब देवर्द्धिगणी ने आगम पुस्तकारूढ किए तब या उसके आस-पास हुआ होगा। अगस्त्यसिंह यदि देवर्द्धिगणी के उत्तरवर्ती और जिनदास के पूर्ववर्ती हो तो इनका समय विक्रम की ५-६ठी शताब्दी हो जाता है।

१—बृहत्कल्प भाष्य, भाग ६, आमुख पृष्ठ ४।

२—दशवैकालिक १।१ अगस्त्य चूर्णि :

उक्कारणं संजमो—पोत्थएसु घेप्पंतेसु असंजमो महाघणमोल्लेसु वा दूसेसु वज्जणं तु संजमो, कालं पडुच्च चरणकरणट्ठं अव्वोछित्तिनिमित्तं गेण्हंतस्स संजमो भवति।

इन चूर्णियों के अतिरिक्त कोई प्राकृत व्याख्या और रही है पर वह अब उपलब्ध नही है। उसके अवशेष हरिभद्र सूरि की टीका में मिलते है।[1]

प्राकृत युग समाप्त हुआ और संस्कृत युग आया। आगम की व्याख्याएँ संस्कृत भाषा मे लिखी जाने लगी। इस पर हरिभद्र सूरि ने संस्कृत मे टीका लिखी। इनका समय विक्रम की आठवी शताब्दी है।

यापनीय संघ के अपराजित सूरि (या विजयाचार्य—विक्रम की आठवी शताब्दी) ने इस पर विजयोदया नाम की टीका लिखी। इसका उल्लेख उन्होने स्वरचित मूलाराधना की टीका में किया है।[2] परन्तु वह अभी उपलब्ध नही है। हरिभद्र सूरि की टीका को आधार मान कर तिलकाचार्य (१३-१४वी शताब्दी) ने टीका, माणिक्यशेखर (१५वी शताब्दी) ने निर्युक्ति-दीपिका, समयसुन्दर (विक्रम सं० १६११) ने दीपिका, विनयहंस (विक्रम सं० १५७३) ने वृत्ति, रामचन्द्र सूरि (विक्रम सं० १६७८) ने वार्तिक

१—दशवैकालिक हारिभद्रीय टीका, पत्र १६५ :

तथा च वृद्धव्याख्या—वेसादिगयभावस्स मेहुणं पीडिज्जइ, अणुवओगेणं एसणाकरणे हिंसा, पडुप्पायणे अन्नपुच्छणअवलवणासच्चवयणं, अणणुण्णायवेसाइदंसणे अदत्तादाणं, ममत्तकरणे परिग्गहो, एवं सव्ववयपीडा, दव्वसामन्ने पुण संसयो उण्णिक्खमणेण त्ति।

दशवैकालिक चूर्णि (पृ० १७१) मे इस आशय की जो पंक्तियाँ हैं, वे इन पंक्तियो से भिन्न है

जइ उण्णिक्खमइ तो सव्ववया पीडिया भवन्ति, अहवि ण उण्णिक्खमइ तोवि तग्गयमाणसस्स भावाओ मेहुणं पीडियं भवइ, तग्गयमाणसोय एसणं न रक्खइ, तत्थ पाणाइवायपीडा भवति, जोएमाणो पुच्छिज्जइ—किं जोएसि ? ताहे अवलवइ, ताहे मुसावायपीडा भवति, ताओ य तित्थगरेहि णाणुण्णायाउत्तिकाउं अदिण्णादाणपीडा भवइ, तासु य ममत्तं करेंतस्स परिग्गहपीडा भवति।

अगस्त्य चूर्णि की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं —

तस्स पीडा वयाण तासु गयाचतो रियं न सोहेतिति पाणातिवातो पुच्छितो किं जोएसित्ति ? अवलवति मुसावातो, अदत्तादाणमणणुण्णातो तित्थकरेहि मिहुणे वि गयभावो मुच्छाए परिग्गहो वि।

२—मूलाराधना, गा० ११९७ की वृत्ति :

दशवैकालिकटीकायां श्रीविजयोदयायां प्रपञ्चिता उद्गमादिदोषा इति नेह प्रतन्यते।

और पायचन्द्र सूरि तथा धर्मसिंह मुनि (विक्रम की १८वी शताब्दी) ने गुजराती-राजस्थानी-मिश्रित भाषा मे टब्बा लिखा। किन्तु इनमे कोई उल्लेखनीय नया चिन्तन और स्पष्टीकरण नही है। ये सब सामयिक उपयोगिता की दृष्टि से रचे गए है। अत इसकी महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ तीन ही है—(१) अगस्त्य चूर्णि, (२) जिनदास चूर्णि और (३) हारिभद्रीय वृत्ति।

अगस्त्यसिंह स्थविर की चूर्णि इन सबमे प्राचीनतम है, इसलिए यह सर्वाधिक मूल-स्पर्शी है। जिनदास महत्तर अगस्त्यसिंह स्थविर के आस-पास भी चलते है और कही-कही इनसे दूर भी चले जाते है। टीकाकार तो कही-कही बहुत दूर चले जाते है।[1]

लगता है चूर्णि के रचना-काल मे भी दशवैकालिक की परम्परा अविच्छिन्न नही रही थी। अगस्त्यसिंह स्थविर ने अनेक स्थलो पर अर्थ के कई विकल्प किए है। उन्हे देखकर सहज ही जान पडता है कि वे मूल अर्थ के बारे में असंदिग्ध नही है।

आर्य सुहस्ती ने एक बार जो आचार-शैथिल्य की परम्परा का सूत्रपात किया वह आगे चल कर उग्र बन गया। ज्यो-ज्यो जैन आचार्य लोक-संग्रह की ओर अधिक झुके, त्यो-त्यो अपवादो की बाढ-सी आ गई। वीर-निर्वाण की नवी शताब्दी (८५०) मे चैत्यवास का प्रारम्भ हुआ। इसके बाद शिथिलाचार की परम्परा बहुत ही उग्र हो गई। देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण (वीर-निर्वाण की दसवी शताब्दी) के बाद चैत्यवास का प्रभुत्व बढा और वह जैन परम्परा पर छा गया। अभयदेव सूरि ने इस स्थिति का चित्रण इन शब्दो में किया है—"देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण तक की परम्परा को मैं भाव-परम्परा मानता हूं। इसके बाद शिथिलाचारियो ने अनेक द्रव्य-परम्पराओ का प्रवर्तन कर दिया।"[2] आचार-शैथिल्य की परम्परा मे जो ग्रन्थ लिखे गए, उनमे ऐसे अपवाद भी है जो आगम में प्राप्त नही है। प्रस्तुत आगम की चूर्णि और टीका तात्कालिक वातावरण से मुक्त नही है। इन्हे पढते समय इस तथ्य को नही भूल जाना चाहिए।

उत्सर्ग की भाँति अपवाद भी मान्य होते है। पर उनकी भी एक निश्चित सीमा है। जिनका बनाया हुआ आगम प्रमाण होता है, उन्ही के किए अपवाद मान्य हो सकते है। वर्तमान में जो व्याख्याएँ उपलब्ध है, वे चौदहपूर्वी या दसपूर्वी की नही है, इसलिए उन्हें आगम (अर्थागम) की कोटि में नही रखा जा सकता।

१—उदाहरण के लिए देखे दशवैकालिक, भाग २, पृष्ठ २६६, टिप्पण १७७।

२—आगम अट्ठुत्तरी, गाथा १४ :

देवड्ढिखमासमणजा, परंपरं भावओ वियाणेमि।
सिढिलायारे ठविया, दव्वेण परंपरा बहुहा॥

दोनो चूर्णियो में पाठ और अर्थ का भेद है। टीकाकार का मार्ग तो उनसे बहुत ही भिन्न है।

चैत्यवासी और संविग्न-पक्ष के आपसी खिंचाव के कारण संभव है उन्हें (टीकाकार को) अगस्त्य चूर्णि उपलब्ध न हुई हो। उसके उपलब्ध होने पर भी यदि इतने बड़े पाठ और अर्थ के भेदो का उल्लेख न किया हो तो यह बहुत बड़े आश्चर्य की बात है। पर लगता यही है कि टीका-काल में टीकाकार के सामने अगस्त्य चूर्णि नही रही। यदि वह उनके सम्मुख होती तो टीका और चूर्णि मे इतना अर्थ-भेद नही होता। टीकाकार ने 'अन्ये तु', 'तथा च वृद्धसम्प्रदाय', 'तथा च वृद्धव्याख्या'—आदि के द्वारा जिनदास महत्तर का उल्लेख किया है।[1] पर उनके नाम और चूर्णि का स्पष्ट उल्लेख नही किया।

हरिभद्र संविग्न-पाक्षिक थे। इनका समय चैत्यवास के उत्कर्ष का समय है। पुस्तको का संग्रह अधिकांशतया चैत्यवासियो के पास था। संविग्न-पक्ष एक प्रकार से नया था। चैत्यवासी इसे मिटा देना चाहते थे। इस परिस्थिति मे टीकाकार को पुस्तक-प्राप्ति की दुर्लभता रही हो, यह भी आश्चर्य की बात नही है।

आगमो की माथुरी और वल्लभी—ये दो वाचनाएँ हुई। देवर्द्धिगणी ने आगमो को पुस्तकारूढ करते हुए उन दोनो का समन्वय किया। माथुरी मे उससे भिन्न पाठ थे। उन्हें पाठ-भेद मान शेष अंश को वल्लभी में समन्वित कर दिया। यह पाठ-भेद की

१–(क) दशवैकालिक, हारिभद्रीय टीका पत्र ७ :

अन्यस्त्वनादिष्टो दशकालिकाख्य आदिष्टस्तु तदध्ययनविशेषो द्रुमपुष्पिकादिरिति व्याचष्टे।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्णि, पृष्ठ ४ :

तत्थ अणादिट्ठं जहा दसगालियंआदिट्ठं दुमपुप्फियंसामण्णपुव्वयं एवमादि।

(ख) वही, हारिभद्रीय टीका, पत्र १७२ :

अत्रायं वृद्धसम्प्रदायः—गच्छवासी जइ थणजीवी ··· मज्जारादि वा अवहरेज्ज त्ति।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्णि, पृष्ठ-१८०-१८१ :

तत्थ गच्छवासी जति थणजीवी ··· मज्जाराइ वा अवधरेज्जा।

(ग) वही, हारिभद्रीय टीका, पत्र १४२-४२ :

तथा च वृद्धव्याख्या—एसो खलु छट्ठो ··· ··· आगासत्थिकाओ अवगाहलक्खणो।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्णि, पृष्ठ १४१-४२ :

··छट्ठो जीवनिकायो ····आगासत्थिकाओ अवगाहलक्खणो।

परम्परा मिटी नही । कुछ आगमो के पाठ-भेद केवल आगमो की व्याख्याओ मे उपलब्ध है। व्याख्याकार—'नागार्जुनीयास्तु एवं पठन्ति' लिखकर उसका निर्देश करते रहे हैं और कुछ आगमो के पाठ-भेद मूल से ही सम्बद्ध रहे, इस कारण से उनका परम्परा-भेद चलता ही रहा। दशवैकालिक सम्भवत इसी दूसरी कोटि का आगम है। इसकी उपलब्ध व्याख्याओ मे सबसे प्राचीन व्याख्या अगस्त्य चूर्णि है। उसमें अनेक स्थलो पर परम्परा-भेद का उल्लेख है।[1] इस सारी वस्तु-सामग्री को देखते हुए लगता है कि चूर्णिकार और टीकाकार के सामने भिन्न-भिन्न परम्परा के आदर्श रहे है और टीकाकार ने अपनी परम्परा के आदर्श और व्याख्या-पद्धति को महत्त्व दिया हो तथा सम्भव है कि परम्परा-भेद के कारण चूर्णियो की उपेक्षा की हो। कल्पना की इस भूमिका पर पहुँचने के बाद चूर्णि एव टीका के पाठ और अर्थ के भेद की पहेली सुलझ जाती है।

दशवैकालिक के रचना-काल, रचना-शैली, व्याकरण-विमर्श, छन्द-विमर्श आदि विषयो की विस्तृत चर्चा हम 'दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन' मे कर चुके है। यहाँ हम उत्तराध्ययन के बारे मे कुछ विस्तार से विचार करेंगे।

१४ : उत्तराध्ययन

आलोच्यमान आगम का नाम 'उत्तराध्ययन' है। इसमे दो शब्द है—'उत्तर' और 'अध्ययन'। समवायाग के—'छत्तीसं उत्तरज्झयणा'[2]—इस वाक्य मे उत्तराध्ययन के 'छत्तीस अध्ययन' प्रतिपादित नही हुए है, किन्तु 'छत्तीस उत्तर अध्ययन' प्रतिपादित हुए हैं। नंदी मे भी 'उत्तरज्झयणाणि' यह बहुवचनात्मक नाम मिलता है।[3] उत्तराध्ययन के अंतिम श्लोक मे भी—'छत्तीसं उत्तरज्झाए'—ऐसा बहुवचनात्मक नाम मिलता है।[4] निर्युक्तिकार ने 'उत्तराध्ययन' का बहुवचन मे प्रयोग किया है।[5] चूर्णिकार ने छत्तीस

१—देखिए—दशवैकालिक, भाग २, पृष्ठ २२१, टिप्पण २९ तथा पृष्ठ ३५२, टिप्पण ७८।

२—समवायांग, समवाय ३६।

३—नंदी, सूत्र ४३।

४—उत्तराध्ययन ३६।२६८।

५—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ४.
देखिये पृ० २१, पा० टि० ४।

उत्तराध्ययनो का एक श्रुतस्कन्ध (एक ग्रन्थ रूप) स्वीकार किया है। फिर भी इन्होंने इसका नाम बहुवचनात्मक माना है।[१]

इस बहुवचनात्मक नाम से यह फलित होता है कि उत्तराध्ययन अध्ययनो का योग मात्र है, एक-कर्तृक एक ग्रन्थ नहीं।

'उत्तर' शब्द 'पूर्व' सापेक्ष है। चूर्णिकार ने प्रस्तुत अध्ययनो की तीन प्रकार से योजना की है[२]—

(१) स-उत्तर	—पहला अध्ययन
(२) निरुत्तर	—छत्तीसवाँ अध्ययन
(३) स-उत्तर-निरुत्तर	—बीच के सारे अध्ययन

किन्तु 'उत्तर' शब्द की यह अर्थ-योजना चूर्णिकार की दृष्टि मे अधिकृत नहीं है। उनकी दृष्टि में अधिकृत अर्थ वही है जो निर्युक्तिकार के द्वारा प्रस्तुत है। निर्युक्तिकार के अनुसार प्रस्तुत अध्ययन आचारांग के उत्तरकाल मे पढ़े जाते थे, इसलिए इन्हें 'उत्तर अध्ययन' कहा गया।[३] श्रुतकेवली शय्यंभव (वीर-निर्वाण सं० ९८) के पश्चात् ये अध्ययन दशवैकालिक के उत्तरकाल में पढे जाने लगे।[४] इसलिए ये 'उत्तर अध्ययन' ही बने रहे। यह 'उत्तर' शब्द की संगत व्याख्या प्रतीत होती है।

दिगम्बर-आचार्यों ने भी 'उत्तर' शब्द की अनेक दृष्टिकोणो से व्याख्या की है।

१—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ८ :

ऐतेसिं चेव छत्तीसाए उत्तरज्झयणाणं समुदयसमितिसमागमेणं उत्तरज्झयणभाव-सुतक्खंधेति लब्भइ, ताणि पुण छत्तीसं उत्तरज्झयणाणि इमेहि नामेहि अणुगंतव्वाणि।

२—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ६ :

विणयसुयं सउत्तरं जीवाजीवाभिगमो णिरुत्तरो, सर्वोत्तर इत्यर्थः, सेसज्झयणाणि सउत्तराणि णिरुत्तराणि य, कहं? परीसहा विणयसुयस्स उत्तरा चउरंगिज्जस्स तु पुव्वा इतिकाउं णिरुत्तरा।

३—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ३ :

कमउत्तरेण पगयं आयारस्सेव उवरिमाइं तु।
तम्हा उ उत्तरा खलु अज्झयणा हुंति णायव्वा॥

४—उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ५ :

विशेषश्चायं यथा—शय्यम्भवं यावदेष क्रमः, तदाऽऽरतस्तु दशवैकालिकोत्तरकालं पठ्यन्त इति।

धवलाकार (वि० ६ वी शताब्दी) के मतानुसार 'उत्तराध्ययन' उत्तर-पदो का वर्णन करता है। यह 'उत्तर' शब्द समाधान-सूचक है।[1]

अंगपण्णत्ति (वि० १६ वी शताब्दी) से 'उत्तर' शब्द के दो अर्थ फलित होते है—

(१) उत्तरकाल—किसी ग्रन्थ के पश्चात् पढे जाने वाले अध्ययन।

(२) उत्तर—प्रश्नो का उत्तर देने वाले अध्ययन।[2]

ये अर्थ भी 'उत्तर' और 'अध्ययनों' के सम्बन्ध की वास्तविकता पर प्रकाश डालते है।

उत्तराध्ययन में प्रश्नोत्तर-शैली से लिखित पाँच अध्ययन है—९,१६,२३,२५ और २९। आंशिक रूप मे कुछ प्रश्नोत्तर अन्य अध्ययनो में भी है। इस दृष्टि से 'उत्तर' का समाधान-सूचक अर्थ संगत होते हुए भी पूर्णत व्याप्त नही है।

'उत्तरकाल' वाची अर्थ सगत होने के साथ-साथ पूर्णत व्याप्त भी है, इसलिए इस 'उत्तर' का मुख्य अर्थ यही प्रतीत होता है।

१५ : उत्तराध्ययन : रचना-काल और कर्तृत्व

उत्तराध्ययन एक कृति है। कोई भी कृति शाश्वत नही होती, इसलिए यह प्रश्न भी स्वाभाविक है कि इसका कर्त्ता कौन है ? इस प्रश्न पर सर्व प्रथम निर्युक्तिकार ने विचार किया है। चूर्णिकार ने भी इस प्रश्न को स्पष्ट शब्दो मे उठाया है।[3] निर्युक्तिकार की दृष्टि में उत्तराध्ययन एक-कर्तृक नही है। उनके मतानुसार उत्तराध्ययन के अध्ययन, कर्तृत्व की दृष्टि से, चार वर्गों में विभक्त होते है—

(१) अंगप्रभव

(२) जिन-भाषित

(३) प्रत्येकबुद्ध-भाषित

(४) संवाद-समुत्थित[4]

१–धवला, पृष्ठ ९७ (सहारनपुर प्रति, लिखित) :
उत्तरज्झयणं उत्तरपदाणि वण्णेइ।

२–अंगपण्णत्ति ३।२५,२६ :
उत्तराणि अहिज्जंति, उत्तरज्झयणं पदं जिणिंदेहिं।

३–उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ६ :
एयाणि पुण उत्तरज्झयणाणि कओ केण वा भासियाणित्ति ?

४–उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ४ :
अंगप्पभवा जिणभासिया य पत्तेयबुद्धसंवाया।
बंधे मुक्खे य कया छत्तीसं उत्तरज्झयणा॥

दूसरा अध्ययन अंगप्रभव माना गया है। निर्युक्तिकार के अनुसार वह कर्मप्रवाद पूर्व के सतरहवें प्राभृत से उद्धृत है।[१] दसवाँ अध्ययन जिन-भाषित है।[२] आठवाँ अध्ययन प्रत्येकबुद्ध-भाषित है।[३] नवाँ और तेईसवाँ अध्ययन संवाद-समुत्थित है।[४] ये चूर्णि और बृहद्वृत्तिकार द्वारा उदाहृत है।

उत्तराध्ययन की मूल रचना पर ध्यान देने से उसके कर्तृत्व पर कुछ प्रकाश पड़ता है। प्रस्तुत सूत्र मे गद्यात्मक अध्ययन तीन हैं—दूसरा, सोलहवाँ और उनतीसवाँ।

दूसरे अध्ययन का प्रारम्भिक वाक्य है—"सुयं मे, आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया।"

सोलहवें अध्ययन का प्रारम्भिक वाक्य है—"सुयं मे, आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता।"

उनतीसवें अध्ययन का प्रारम्भिक वाक्य है—"सुयं मे, आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु सम्मत्तपरक्कमे नाम अज्झयणे समणेणं भगवया महावीरेण कासवेणं पवेइए।"

इन प्रारम्भिक वाक्यों से फलित होता है कि दूसरा और उनतीसवाँ अध्ययन महावीर द्वारा निरूपित है अर्थात् जिन-भाषित है और सोलहवाँ अध्ययन स्थविर-विचरित है।

१–उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ६९ :

कम्मप्पवायपुव्वे सत्तरसे पाहुडंमि जं सुत्तं।
सणयं सोदाहरणं तं चेव इहंपि णायव्वं॥

२–(क) उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ७ :

जिणभासिया जहा दुमपत्तगादि।

(ख) उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ५ :

जिनभाषितानि यथा द्रुमपुष्पिकाऽध्ययनम्।

३–(क) उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ७ :

पत्तेयबुद्धभासियाणि जहा काविलिज्जादि।

(ख) उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ५ :

प्रत्येकबुद्धाः—कपिलादयः तेभ्य उत्पन्नानि यथा कापिलीयाध्ययनम्।

४–(क) उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ७ :

संवाओ जहा णमिपव्वज्जा केसिगोयमेज्जं च।

(ख) उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ५ :

संवादः—सङ्गतप्रश्नोत्तरवचनरूपस्तत उत्पन्नानि, यथा—केशिगौतमीयम्।

निर्युक्ति मे दूसरे अध्ययन को कर्मप्रवाद-पूर्व से निर्यूढ माना गया है और इसके प्रारम्भिक वाक्य से यह फलित होता है कि वह जिन-भाषित है।

निर्युक्तिकार के चार वर्गों से कर्तृत्व पर कोई प्रकाश नही पडता, किन्तु विषय-वस्तु पर प्रकाश पडता है। दसवें अध्ययन की विषय-वस्तु भगवान् महावीर द्वारा कथित है। किन्तु उस अध्ययन के कर्त्ता भगवान् महावीर नही है—यह उस अध्ययन के अंतिम वाक्य—'बुद्धस्स निसम्म भासियं'—से स्पष्ट है। इसी प्रकार दूसरे और उनतीसवें अध्ययन के प्रारम्भिक वाक्यो से भी यही तथ्य प्रकट होता है। छठे अध्ययन के अंतिम श्लोक से भी यही सूचित होता है—

एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे।
अरहा नायपुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिए॥ (६।१७)

प्रत्येकबुद्ध-भाषित अध्ययन प्रत्येकबुद्ध-विरचित नही है। आठवें अध्ययन के अंतिम श्लोक से इस अभिमत की पुष्टि होती है—

इइ एस धम्मे अक्खाए कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं।
तरिहिन्ति जे उ काहिन्ति तेहि आराहिया दुवे लोगे॥ (८।२०)

संवाद-समुत्थित अध्ययन, नवाँ और तेईसवाँ भी नमि तथा केशि-गौतम द्वारा विरचित नही है। इसका समर्थन भी उनके अन्तिम श्लोको से होता है—

एवं करेन्ति संबुद्धा पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से नमी रायरिसि॥ (९।६२)
तोसिया परिसा सव्वा सम्मग्गं समुवट्ठिया।
संथुया ते पसीयन्तु भयवं केसिगोयमे॥ (२३।८९)

इस प्रकार हम देखते है कि निर्युक्तिकार के चार वर्गो से इतना ही फलित होता कि भगवान् महावीर, कपिल, नमि और केशि-गौतम—इनके उपदेशो, उपदेश-गाथाओ या संवादो को आधार बनाकर ये अध्ययन रचे गए है। वे कब और किसके द्वारा रचे गए—इस प्रश्न का निर्युक्ति मे कोई उत्तर प्राप्त नही है। चूर्णि और बृहद्वृत्ति मे भी नही है। अन्य किसी साधन से भी प्रस्तुत सूत्र के कर्त्ता का नाम ज्ञात नही हो सका है। इसके रचना-काल की मीमासा से हम इतना जान सकते है कि ये अध्ययन विभिन्न युगो में हुए अनेक ऋषियो द्वारा उद्गीत है।

साख्य, न्याय, वैशेषिक आदि दर्शन ई० पू० ५ वी शताब्दी से लेकर ई० पू० पहली शताब्दी तक व्यवस्थित रूप धारण कर चुके थे। भगवद्गीता और उत्तरवर्ती उपनिषदो का निर्माण ई० पू० ५०० के लगभग हुआ था। आत्मा, पुनर्जन्म, मोक्ष, कर्म, संसार की क्षणभंगुरता, वैराग्य व संन्यास की चर्चा इस युग मे विशेष विकसित हुई थी।

उत्तराध्ययन में हम ई० पू० ६०० से ई० सन् ४०० तक की धार्मिक व दार्शनिक धारा का प्रतिनिधित्व या विकास पाते है। हो सकता है कि इनका कुछ अंग महावीर से पहले का भी हो। चूर्णि मे ऐसा संकेत भी मिलता है कि उत्तराध्ययन का छठा अध्ययन भगवान् पार्श्व द्वारा उपदिष्ट है।[1]

'दशवैकालिक' वीर निर्वाण की पहली शताब्दी की रचना है।[2] उत्तराध्ययन एक ग्रन्थ के रूप मे उससे पूर्व संकलित हो चुका था। उस समय उसके अध्ययन कितने थे, यह निश्चय-पूर्वक नही कहा जा सकता।

वीर-निर्वाण की दसवी शताब्दी (९८०-९९३) में देवर्द्धिगणी ने आगमो का संकलन किया था। उन्होने उत्तराध्ययन के आकार-प्रकार व विषय-वस्तु मे कोई अभिवृद्धि की या नही की, इसका प्रत्यक्ष उल्लेख प्राप्त नहीं है, किन्तु नही की, ऐसा मानने का कोई कारण नही है। अत उत्तराध्ययन को हम एक सहस्राब्दी की, विचारधारा का प्रतिनिधि सूत्र कह सकते है। इसमें जहाँ वेद और ब्राह्मण-साहित्य-कालीन यज्ञ और जातिवाद की चर्चा है, वहाँ द्रव्य, गुण और पर्याय की परिभाषाएँ भी है। उन परिभाषाओ को दर्शनकालीन (ई०पू० ५ वी से ई०पू० पहली शताब्दी) माना जाए तो यह निष्पन्न होता है कि उत्तराध्ययन के अध्ययन विभिन्न कालो में निर्मित हुए और अंतिम वाचना के समय देवर्द्धिगणी ने उनका छत्तीस अध्ययनात्मक एक ग्रन्थ के रूप में संकलन किया। इसीलिए समवायांग में छत्तीस उत्तर-अध्ययनो के नाम उल्लिखित हुए। अन्यथा अंग-साहित्य मे इनका उल्लेख सम्भव नही होता। वर्तमान संकलन को सामने रखकर हम चिन्तन करें तो उत्तराध्ययन के संकलयिता देवर्द्धिगणी है। इसके प्रारम्भिक संकलन और देवर्द्धिगणी कालीन संकलन मे अध्ययनों की संख्या और विषय-वस्तु में पर्याप्त अन्तर आया है।

विषय-वस्तु की दृष्टि से उत्तराध्ययन के अध्ययन चार भागो में विभक्त होते है—

(१) धर्मकथात्मक—७,८,९,१२,१३,१४,१८,१९,२०,२१,२२,२३,२५ और २७।
(२) उपदेशात्मक—१,३,४,५,६ और १०।
(३) आचारात्मक—२,११,१५,१६,१७,२४,२६,३२ और ३५।
(४) सैद्धान्तिक—२८,२९,३०,३१,३३,३४ और ३६।

१—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ १५७ :
केचिदन्यथा पठन्ति—एवं से उदाहु, अरहा पासे पुरिसादाणीए।
भगवंते वेसालीए, बुद्धे परिणिव्वुडे॥

२—दशवैकालिक भाग २, भूमिका पृष्ठ १५।

आर्य रक्षित सूरि (वि० शती प्रथम) ने आगमो के चार वर्ग किए—

(१) चरण-करणानुयोग (३) गणितानुयोग
(२) धर्मकथानुयोग (४) द्रव्यानुयोग

इस वर्गीकरण मे उत्तराध्ययन धर्मकथानुयोग के अन्तर्गत गृहीत है।[1] पर आचारात्मकअध्ययन चरण-करणानुयोग मे तथा सैद्धान्तिक अध्ययन द्रव्यानुयोग मे समाते है। इस प्रकार उत्तराध्ययन का वर्तमान स्वरूप अनेक अनुयोगो का सम्मिश्रण है। यह सम्मिश्रण देवर्द्धिगणी के संकलन-काल में हुआ, यह बहुत संभव है।

कुछ विद्वानो का अभिमत है कि उत्तराध्ययन के पहले अठारह अध्ययन प्राचीन है और उत्तरवर्ती अठारह अध्ययन अर्वाचीन। किन्तु इस अभिमत की पुष्टि के लिए उन्होने कोई निश्चित हेतु प्रस्तुत नही किया है। यह हो सकता है कि कुछ उत्तरवर्ती अध्ययन अर्वाचीन हो, किन्तु सारे उत्तरवर्ती अध्ययन अर्वाचीन है, ऐसा मानने के लिए कोई कारण प्राप्त नही है। इकतीसवें अध्ययन में आचारांग, सूत्रकृतांग आदि प्राचीन आगमो के साथ-साथ दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहार और निशीथ जैसे अर्वाचीन आगमो के नाम भी उपलब्ध होते है।[2] ये श्रुतकेवली भद्रबाहु (वीर-निर्वाण दूसरी शती) द्वारा निर्यूढ या कृत है।[3] इसलिए प्रस्तुत अध्ययन भद्रबाहु के बाद की रचना है।

१—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ १ :
अत्र धम्माणुयोगेनाधिकारः।

२—उत्तराध्ययन, ३१।१६-१८ :
तेवीसइ सूयगडे, रूवाहिएसु सुरेसु अ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले॥
पणवीसभावणाहि, उद्देसेसु दसाइणं।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले॥
अणगारगुणेहिं च, पकप्पम्मि तहेव य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले॥

३—(क) दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति, गाथा १ :
वंदामि भद्दबाहुं, पाईणं चरिमसयलसुयणाणि।
सुत्तस्स कारगमिसि, दसासु कप्पे य ववहारे॥

(ख) पंचकल्प भाष्य, गाथा २३, चूर्णि :
तेण भगवता आयारपकप्प दसाकप्प ववहारा य नवमपुव्वनीसंदभूता निज्जूढा।

अठाइसवें अध्ययन मे अंग और अंग-बाह्य—इन दो आगमिक विभागो के अतिरिक्त ग्यारह अंग, प्रकीर्णक और दृष्टिवाद का उल्लेख भी मिलता है।[1] प्राचीन आगमो के चौदह पूर्वों, ग्यारह अंगो या बारह अंगो के अध्ययन का वर्णन मिलता है। किन्तु अंग-बाह्य या प्रकीर्णक श्रुत के अध्ययन का वर्णन नही मिलता, इसलिए यह अध्ययन भी उत्तरकालीन आगम-व्यवस्था के आस-पास की रचना प्रतीत होती है।

इस अध्ययन मे द्रव्य, गुण तथा पर्याय की परिभाषाएँ भी है। इनकी तुलना क्रमश वैशेषिक दर्शन के द्रव्य, गुण और कर्म से की जा सकती है—

उत्तराध्ययन[2]	वैशेषिक दर्शन[3]
(१) द्रव्य— गुणाणमासओ दव्वं	(१) द्रव्य— क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्।
(२) गुण— एगदव्वस्सिया गुणा	(२) गुण— द्रव्याश्रय्यगुणवान् संयोगविभागेष्वकारणमनपेक्ष इति गुणलक्षणम्।
(३) पर्याय— लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ अस्सिया भवे।	(३) कर्म— एकद्रव्यमगुणं संयोगविभागेष्वनपेक्षकारणमिति कर्म-लक्षणम्।

आगम साहित्य में द्रव्य, गुण और पर्याय की परिभाषा प्रथम बार उत्तराध्ययन मे प्राप्त होती है। आगमो मे विवरणात्मक अर्थ ही अधिक मिलते है, संक्षिप्त परिभाषाएँ प्राय नही मिलती। इसकी पूर्ति व्याख्या-ग्रन्थो से होती है। उत्तराध्ययन मे ये परिभाषाएँ विशेष अर्थ-सूचक है। प्रस्तुत अध्ययन के कर्ता वैशेषिक दर्शन की उक्त परिभाषाओ से परिचित रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता है। इसलिए यह अध्ययन भी अर्वाचीन संकलन में संकलित हुआ—ऐसा अनुमान होता है। उत्तराध्ययन के प्राचीन संस्करण में कितने अध्ययन संकलित थे और अर्वाचीन संस्करण मे कितने अध्ययन संकलित किए गये, यह निश्चय पूर्वक नही कहा जा सकता। किन्तु स्थूल रूप मे इतना कहा जा सकता है कि प्राचीन संस्करण का मुख्य भाग कथा-भाग था और अर्वाचीन परिवर्द्धन का मुख्य भाग सैद्धान्तिक है।

१—(क) उत्तराध्ययन २८।२१ :

·अंगेण बाहिरेण व· ···· ·।

(ख) वही, २८।२३ :

· · एक्कारस अंगाइं पइण्णगं दिट्ठिवाओ य ॥

२—वही, २८।६।

३—वैशेषिक दर्शन, प्रथम अध्याय, प्रथम आह्निक, सूत्र १५-१७।

उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का उल्लेख श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्पराओं में मिलता है।

'जैन सिद्धान्त भवन', आरा (बिहार) में प्राप्त धवला की प्रति (पत्र ५४५) में मिलता है—"उत्तराध्ययन में उद्गम, उत्पादन और एषणा से सम्बन्धित दोषों के प्रायश्चित्तो का विधान है।"[१]

अंगपण्णत्ति में लिखा है—"बाईस परीषहों और चार प्रकार के उपसर्गों के सहन का विधान, उसका फल तथा इस प्रश्न का यह उत्तर है—यह उत्तराध्ययन का प्रतिपाद्य विषय है।"[२]

धवला में यह भी लिखा है कि उत्तराध्ययन उत्तरपदों का वर्णन करता है।[३]

हरिवंश पुराण (वि० सं० ८४०) में लिखा है कि उत्तराध्ययन में वीर-निर्वाणगमन का वर्णन है।[४]

इस प्रकार दिगम्बर-साहित्य में उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का जो वर्णन मिलता है, उसकी संगति उत्तराध्ययन के वर्तमान स्वरूप से नहीं होती। अंगपण्णत्ति का विषय-वर्णन आंशिक रूप से संगत होता है। जैसे—

(१) बाईस परीषहों के सहन का विधान, देखिए—दूसरा अध्ययन।

(२) प्रश्नों के उत्तर, देखिए—उनतीसवाँ अध्ययन।

प्रायश्चित्त विधि के वर्णन तथा महावीर के निर्वाण-प्राप्ति के वर्णन की वर्तमान उत्तराध्ययन के साथ कोई संगति नहीं। संभव है इन लेखकों के सामने उत्तराध्ययन का कोई दूसरा संस्करण रहा है या भ्रान्त अनुश्रुति के आधार पर ऐसा लिखा है।

दिगम्बर-साहित्य में एक बात निश्चित रूप से फलित होती है कि उत्तराध्ययन

१–उत्तरज्झयणं उग्गमुप्पायणेसणदोसगयपायच्छित्तविहाणं कालादि विसेसिदं वण्णेदि।

२–अंगपण्णत्ति, ३।२५,२६ :

उत्तराणि अहिज्जंति, उत्तरज्झयणं मदं जिणिदेहिं।
बावीसपरीसहाणं, उवसग्गाणं च सहणविहिं॥
वण्णेदि तप्फलमवि, एवं पण्हे च उत्तरं एवं।
कहदि गुरुसीसयाण, पइण्णिय अट्ठमं तं खु॥

३–धवला, पृष्ठ ९७ (सहारनपुर प्रति) :

उत्तरज्झयणं उत्तरपदाणि वण्णेइ।

४–हरिवंश पुराण, १०।१३४ :

उत्तराध्ययनं वीर-निर्वाणगमनं तथा।

अंग-बाह्य प्रकीर्णक है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह आरातीय आचार्यों (गणधरो के उत्तर-कालीन आचार्यों) की रचना है।[1]

श्वेताम्बर-साहित्य में उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का वर्णन वही मिलता है, जो वर्तमान उत्तराध्ययन में प्राप्त है।[2]

वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी की पूर्ति के साथ-साथ दशवैकालिक की रचना हो चुकी थी। उत्तराध्ययन उससे पूर्ववर्ती रचना है। वह आचारांग के बाद पढा जाने लगा था। उसे अपनी विशेषता के कारण थोडे समय में ही महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो चुका था। इस स्थिति के संदर्भ मे यह अनुमान किया जा सकता है कि उत्तराध्ययन के प्रारम्भिक संस्करण की संकलना वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही हो चुकी थी।

उत्तराध्ययन के प्रारम्भिक संस्करण की प्राचीनता असंदिग्ध है। उसकी प्राचीनता जानने के दो साधन है—

(१) भाषा-प्रयोग और

(२) सिद्धान्त।

भाषा-प्रयोग तीसरे अध्ययन (श्लोक १४) मे 'जक्ख' (सं० यक्ष) शब्द का 'अर्चनीय देव' के अर्थ मे प्रयोग हुआ है। यह प्रयोग इसकी प्राचीनता का सूचक है। यज्ञ के उत्कर्ष काल मे ही 'यक्ष' शब्द उत्कर्षवाची था। दोनो की निष्पत्ति एक ही धातु (यज्) से है। यज्ञ के अपकर्ष के साथ-साथ 'यक्ष' शब्द के अर्थ का भी अपकर्ष हो गया। उत्तरकालीन साहित्य में वह देवो की एक हीन जाति का वाचक मात्र रह गया।

इसी प्रकार 'पाढव' (३।१३), 'वुसीमओ' (५।१८), 'मिलेक्खुया' (१०।१६), 'अज्झत्थ' (६।६), 'समिय' (६।४) आदि अनेक शब्द है, जो आचाराग और सूत्रकृतांग जैसे प्राचीन आगमो मे ही मिलते है।

सिद्धान्त : जातिवाद (अध्ययन १२ और १३), यज्ञ एवं तीर्थस्थान (अध्ययन १२), ब्राह्मणों के लक्षणो का प्रतिपादन (अध्ययन २५)—ये इन अध्ययनो की प्राचीनता के सूचक है। ये सम्बन्धित चर्चाओ के उत्कर्ष काल मे लिखे गए है, अन्यथा शान्त चर्चा का

१–तत्त्वार्थवार्तिक, १।२०, पृष्ठ ७८ :

यद् गणधरशिष्यप्रशिष्यैरारातीयैरधिगतश्रुतार्थतत्त्वैः कालदोषादल्पमेधायुर्बलानां प्राणिनामनुग्रहार्थमुपनिबद्धं संक्षिप्ताङ्गार्थवचनविन्यासं तदङ्गबाह्यम्। तद्भेदा उत्तराध्ययनादयोऽनेकविधाः।

२–उत्तराध्ययन निर्युक्ति, १८-२६।

इतनी सप्राणता के साथ प्रतिपादन नहीं हो सकता। इसी तथ्य के आधार पर कहा जा सकता है कि ये अध्ययन महावीर-कालीन अथवा उनके परिपार्श्व-कालीन है। संभव है कुछ अध्ययन पूर्ववर्ती भी हो।

चिकित्सा का वर्जन (२।३२,३३), परिकर्म का वर्जन (अध्ययन १९), अचेलकता का प्रतिपादन (२।३४,३५, २३।२९) तथा अचेलकता और सचेलकता की सामंजस्यपूर्ण स्थिति का स्वीकार (२।१२,१३)—ये सभी जैन आचार की प्राचीनतम परम्परा के अवशेष है जो उत्तरवर्ती साहित्य मे नवीन परम्पराओ की पृष्ठभूमि में प्रश्न-चिह्न बने हुए है।

उत्तराध्ययन अपने मूल रूप में धर्मकथानुयोग है। इसके कथा-भाग मे भगवान् महावीर के उत्तरकालीन किसी भी राजा, मुनि या व्यक्ति का नाम नहीं है। इससे भी यह ज्ञात होता है कि इसका प्रारम्भिक संस्करण भगवान् महावीर के निर्वाण-काल के आस-पास ही संकलित हो गया था।

१६ : क्या उत्तराध्ययन भगवान् महावीर की अंतिम वाणी है ?

कल्पसूत्र में बताया गया है कि भगवान् महावीर कल्याणफल-विपाक वाले ५५ अध्ययनो, पाप-फल वाले ५५ अध्ययनो तथा ३६ अपृष्ट-व्याकरणो का व्याकरण कर 'प्रधान' नामक अध्ययन का निरूपण करते-करते सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गए।[1]

उपर्युक्त उद्धरण के आधार पर यह माना जाता है कि छत्तीस अपृष्ट-व्याकरण वस्तुत उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन ही है। उत्तराध्ययन के अंतिम श्लोक (३६।२६८) से इसकी पुष्टि की जाती है—

इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए।
छत्तीसं उत्तरज्झाए, भवसिद्धीयसंमए॥

चूर्णिकार ने इसका अर्थ निम्न प्रकार किया है—ज्ञातकुल मे उत्पन्न वर्द्धमान स्वामी छत्तीस उत्तराध्ययनो का प्रकाशन या प्रज्ञापन कर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।[2]

१–कल्पसूत्र, सूत्र १४६ :

पच्चूसकालसमयंसि संपलियंकनिसन्ने पणपन्नं अज्झयणाइं कल्लाणफलविवागाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं छत्तीसं च अपुट्ठवागरणाइं वागरित्ता पधाणं नाम अज्झयणं विभावेमाणे २ कालगए वितिक्कंते समुज्जाए छिन्नजाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतकडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे।

२–उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ २८३ :

इति परिसमाप्तौ उपप्रदर्शने च, प्रादुः प्रकाशे, प्रकाशीकृत्य—प्रज्ञापयित्वा बुद्धः—अवगतार्थः ज्ञातकः—ज्ञातकुलसमुद्भवः वर्द्धमानस्वामी, तत. परिनिर्वाणं गतः, किं प्रज्ञापयित्वा ?, षट्त्रिंशदुत्तराध्ययनानि।

शान्त्याचार्य ने चूर्णिकार का अनुसरण करते हुए भी इसमें अपनी ओर से दो बातें और जोड़ी हैं। पहली यह है कि भगवान् महावीर ने उत्तराध्ययन के कुछ अध्ययनों का अर्थ-रूप में और कुछ अध्ययनों का सूत्र-रूप में प्रकाशन किया।[1] दूसरी यह कि उन्होंने 'परिनिर्वृत' का वैकल्पिक अर्थ 'स्वस्थीभूत' किया है।[2]

निर्युक्तिकार ने इन अध्ययनों को जिन-प्रज्ञप्त बतलाया है।[3] शान्त्याचार्य ने 'जिन' शब्द का अर्थ 'श्रुत-जिन' अर्थात् श्रुतकेवली किया है।[4]

निर्युक्तिकार के अभिमतानुसार ये छत्तीस अध्ययन श्रुतकेवली आदि स्थविरों द्वारा प्ररूपित हैं। उन्होंने इसकी भी कोई चर्चा नहीं की कि भगवान् ने अन्तिम देशना में इन छत्तीस अध्ययनों का प्ररूपण किया। बृहद्वृत्तिकार शान्त्याचार्य भी परिनिर्वाण के विषय में असंदिग्ध नहीं हैं। केवल चूर्णिकार ने अपना असंदिग्ध मत प्रगट किया है।

उत्तराध्ययन के अध्ययनों की संख्या ३६ होने के कारण सहज ही उस ओर ध्यान जाता है कि कल्पसूत्र में उल्लिखित ३६ अपृष्ट-व्याकरण ये ही होने चाहिए। यहाँ यह स्मरणीय है कि समवायांग में छत्तीस अपृष्ट-व्याकरणों का उल्लेख नहीं है। वहाँ केवल इतना ही बतलाया गया है कि भगवान् महावीर ने अंतिम रात्रि के समय ५५ कल्याण-

---

१—उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ७१२ :

इति इत्यनन्तरमुपवर्णितान् 'पाउकरे'त्ति सूत्रत्वात् 'प्रादुष्कृत्य' कांश्चिदर्थतः कांश्चन सूत्रतोऽपि प्रकाश्य, कोऽर्थः ? प्रज्ञाप्य, किमित्याह—'परिनिर्वृतः' निर्वाणं गत इति सम्बन्धनीयम्, कीदृशः सन् क इत्याह—'बुद्धः' केवलज्ञानादवगतसकलवस्तुतत्त्वः 'ज्ञातको' 'ज्ञातजो' वा—ज्ञातकुलसमुद्भवः, स चेह भगवान् वर्द्धमानस्वामी 'षट्त्रिंशद्' इति षट्त्रिंशत्संख्या उत्तराः—प्रधाना अधीयन्त इत्यध्याया—अध्ययनानि तत उत्तराश्च तेऽध्यायाश्चोत्तराध्यायास्तान्—विनयश्रुतादीन्…… ।

२—वही, पत्र ७१२ :

अथवा 'पाउकरे'त्ति प्रादुरकार्षीत् प्रकाशितवान्, शेषं पूर्ववत् नवरं 'परिनिर्वृतः' क्रोधादिदहनोपशमतः समन्तात्स्वस्थीभूतः ।

३—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ५५९ :

तम्हा जिणपन्नत्ते, अणंतगमपज्जवेहि संजुत्ते ।
अज्झाए जहाजोगं, गुरुप्पसाया अहिज्जिज्जा ॥

४—उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ७१३ :

तस्माज्जिनैः—श्रुतजिनादिभिः प्ररूपिताः ।

फल-विपाक वाले अध्ययनो तथा ५५ पाप-फल-विपाक वाले अध्ययनो का व्याकरण कर परिनिर्वृत हुए ।[1] समवायाग के छत्तीसवें समवाय में भी इसकी कोई चर्चा नही है ।

उत्तराध्ययन की रचना तथा 'इइ एस धम्मे अक्खाए, कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं' जैसे उल्लेखो से यह प्रमाणित नही होता कि ये सब अध्ययन महावीर के द्वारा निरूपित हैं। निर्युक्ति के साक्ष्य से इसकी चर्चा हम पहले कर चुके है । अठारहवें अध्ययन के चौबीसवें श्लोक के प्रथम दो चरण वे ही हैं, जो छत्तीसवें अध्ययन के अंतिम श्लोक के है—

१८।२४	३६।२६८
इइ पाउकरे बुद्धे	इइ पाउकरे बुद्धे
नायए परिनिव्वुडे ।	नायए परिनिव्वुए ।
विज्जाचरणसंपन्ने	छत्तीसं उत्तरज्झाए
सच्चे सच्चपरक्कमे ॥	भवसिद्धीयसंमए ॥

अठारहवें अध्ययन के चौबीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध का जो अर्थ वृत्तिकार ने किया है, वही अर्थ छत्तीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध का होना चाहिए। वृत्तिकार ने चौबीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध की व्याख्या इस प्रकार की है—बुद्ध (अवगत तत्त्व), परिनिर्वृत (शीतीभूत), ज्ञातपुत्र महावीर ने इस तत्त्व का प्रज्ञापन किया है।[2] इस अर्थ के संदर्भ मे जब हम छत्तीसवें अध्ययन के अंतिम श्लोक को पढते है, तब उससे यह फलित नही होता कि ज्ञातपुत्र महावीर छत्तीस अध्ययनो का प्रज्ञापन कर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए ।

महावीर की परम्परा मे जो अर्थ-प्रतिपादन होता है, वह उनकी धर्मदेशना के आधार पर होता है । इसी पारंपरिक सत्य का उल्लेख उत्तराध्ययन के संकलनकर्त्ता ने अन्तिम श्लोक में किया है ।

१७ : महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र

अविकल उत्तराध्ययन भगवान् महावीर की प्रत्यक्ष वाणी भले न हो, किन्तु उसमे भगवान् महावीर की वाणी का जिस समीचीन पद्धति से संगुम्फन हुआ है, उसे देख कर सहज ही यह कहने को मन ललचा उठता है कि यह महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र है ।

अहिंसा, अपरिग्रह आदि तत्त्व नवीन नही है और भगवान् महावीर के समय में भी नवीन नही थे । उनसे पहले अनेक तीर्थङ्कर और धर्माचार्य उनका प्रयोग कर चुके थे ।

१–समवायांग, समवाय ५५ ।

२–उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ४४४ .

इत्येवंरूपं 'पाउकरे'त्ति प्रादुरकार्षीत्—प्रकटितवान् 'बुद्धः' अवगततत्त्वः सन् ज्ञात एव ज्ञातकः—जगत्प्रतीत. क्षत्रियो वा, स चेह प्रस्तावान्महावीर एव, 'परिनिर्वृतः' कषायानलविध्यापनात्समन्ताच्छीतीभूतः ।

किन्तु भगवान् महावीर ने तात्कालिक परिस्थितियो के संदर्भ में उनकी जो अभिव्यक्ति दी, वह उनका नवीन रूप है। भगवान् महावीर के समय की सामाजिक परिस्थिति में अहिंसा और अपरिग्रह के मुख्य बाधक-तत्त्व ये थे--

(१) दास-प्रथा
(२) जातिवाद
(३) पशुबलि
(४) अमित संग्रह
(५) दण्ड का उच्छृंखल प्रयोग
(६) अनियंत्रित भोग

इन बाधक-तत्त्वो के निरसन के लिए भगवान् महावीर ने जिस विचारधारा का प्रतिपादन किया उसका हृदयग्राही संकलन उत्तराध्ययन में हुआ है।

पार्श्वनाथ के समय में चार महाव्रत थे और सामायिक चारित्र था। भगवान् महावीर ने महाव्रत पाँच किए और छेदोपस्थापनीय चारित्र की व्यवस्था की। छेदोपस्थापनीय का अर्थ है—विभाग-युक्त चारित्र।

पूज्यपाद (वि० ५-६ शताब्दी) ने लिखा है "भगवान् महावीर ने चारित्र-धर्म के तेरह विभाग किए—पाँच महाव्रत, पाँच समितियाँ और तीन गुप्तियाँ। ये विभाग पार्श्वनाथ के समय में नही थे।"[1]

उत्तराध्ययन में इनका सुव्यवस्थित प्रतिपादन हुआ है। षड्जीवनिकायवाद महावीर के तत्त्ववाद का प्रधान अंग है। जीव विषयक इतना व्यवस्थित और विस्तृत प्रतिपादन अन्य किसी धर्म-परम्परा में नहीं था। आचार्य सिद्धसेन ने इसे भगवान् महावीर की सर्वज्ञता की कसौटी के रूप में प्रस्तुत किया है।[2]

उत्तराध्ययन मे जीव-विभक्ति का भी एक सुन्दर प्रकरण है। अजीव-विभक्ति, कर्मवाद, षड्द्रव्य, नव तत्त्व आदि-आदि भी समुचित रूपेण प्रतिपादित हुए है।

यद्यपि उत्तराध्ययन को धर्मकथानुयोग के अन्तर्गत रखा गया है, किन्तु अपने वर्तमान आकार में वह चारो अनुयोगो का संगम है। इस दृष्टि से इसे महावीर-वाणी (आगमो) का प्रतिनिधि सूत्र कहा जा सकता है।

१—चारित्र भक्ति, ७ :

तिस्रः सत्तमगुप्तयस्तनुमनोभाषानिमित्तोदयाः
पंचेर्यादिसमाश्रयाः समितयः पंचव्रतानीत्यपि।
चारित्रोपहितं त्रयोदशतयं पूर्वं न दिष्टं परै-
राचारं परमेष्ठिनो जिनमतेर्वीरान् नमामो वयम्॥

२—प्रथम द्वात्रिंशिका, श्लोक १३ :

य एव षड्जीवनिकायविस्तर परैरनालीढपथस्त्वयोदितः।
अनेन सर्वज्ञपरीक्षणक्षमा—स्त्वयि प्रसादोदयसोत्सवाः स्थिताः॥

१८ : उत्तराध्ययन : आकार और विषय-वस्तु

उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन है। यह संकलित सूत्र है। इसका प्रारम्भिक संकलन वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ। उत्तरकालीन संस्करण देवर्द्धिगणी के समय में सम्पन्न हुआ। वर्तमान अध्ययनों के नाम समवायांग तथा उत्तराध्ययन निर्युक्ति में मिलते है। उनमें क्वचित् थोड़ा अन्तर भी है—

समवायांग[1]	उत्तराध्ययन निर्युक्ति[2]
१ विणयसुयं	विणयसुयं
२. परीसह	परीसह
३. चाउरंगिज्जं	चउरंगिज्जं
४. असंखयं	असंखयं
५ अकाममरणिज्जं	अकाममरणं
६. पुरिसविज्जा	नियंठ (खुड्डागनियंठ[3])
७ उरब्भिज्जं	ओरब्भं
८. काविलिज्जं	काविलिज्जं
९. नमिपव्वज्जा	णमिपव्वज्जा
१०. दुमपत्तयं	दुमपत्तयं
११. वहुसुयपूजा	वहुसुयपुज्जं
१२. हरिएसिज्जं	हरिएस
१३. चित्तसंभूयं	चित्तसंभूइ
१४. उसुकारिज्जं	उसुआरिज्जं

१—समवायांग, समवाय ३६।

२—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १३-१७।

३—वही, गाथा २४३ :

एसा खलु निज्जुत्ती खुड्डागनियंठसुत्तस्स।

१५. सभिक्खुगं	सभिक्खु
१६. समाहिठाणाइं	समाहिठाणं
१७ पावसमणिज्जं	पावसमणिज्जं
१८. संजइज्जं	संजईज्जं
१९. मियचारिता	मियचारिया
२०. अणाहपव्वज्जा	नियंठिज्जं (महानियंठ[1])
२१. समुद्दपालिज्जं	समुद्धपालिज्जं
२२ रहनेमिज्जं	रहनेमीयं
२३ गोयमकेसिज्जं	केसिगोयमिज्जं
२४ समितीओ	समिइओ
२५. जन्नतिज्जं	जन्नइज्जं
२६ सामायारी	सामायारी
२७. खलुकिज्जं	खलुकिज्जं
२८. मोक्खमग्गगई	मुक्खगई
२९ अप्पमाओ	अप्पमाओ
३०. तवोमग्गो	तव
३१. चरणविही	चरण
३२. पमायठाणाइं	पमायठाणं
३३ कम्मपगडी	कम्मप्पयडी
३४. लेसज्झयणं	लेसा
३५. अणगारमग्गे	अणगारमग्गे
३६. जीवाजीवविभत्ती	जीवाजीवविभत्ती

१—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ४२२ :
एसा खलु निज्जुत्ती महानियंठस्स सुत्तस्स ।

निर्युक्ति के अनुसार छत्तीस अध्ययनों का विषय-वर्णन इस प्रकार है[1] -

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
१	४८		विनय
२	४६	३	प्राप्त-कष्ट-सहन का विधान।
३	२०		चार दुर्लभ अंगों का प्रतिपादन।
४	१३		प्रमाद और अप्रमाद का प्रतिपादन।
५	३२		मरण-विभक्ति—अकाम और सकाम मरण।
६	१७		विद्या और आचरण।

१–उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १८-२७ :

पढमे विणओ बीए परिसहा दुल्लहंगया तइए।
अहिगारो य चउत्थे होइ पमायप्पमाएत्ति ॥
मरणविभत्ती पुण पंचमम्मि विज्जा चरणं च छट्ठअज्झयणे।
रसगेहिपरिच्चाओ सत्तमे अट्ठमि अलाभे ॥
निक्कंपया य नवमे दसमे अणुसासणोवमा भणिया।
इक्कारसमे पूया तवरिद्धी चेव बारसमे ॥
तेरसमे अ नियाणं अनियाणं चेव होइ चउदसमे।
भिक्खुगुणा पन्नरसे सोलसमे बंभगुत्तीओ ॥
पावाण वज्जणा खलु सत्तरसे भोगिड्ढिविजहणट्ठारे।
एगुणि अप्परिकम्मे अणाहया चेव वीसइमे ॥
चरिया य विचित्ता इक्वीसि बावीसिमे थिरं चरणं।
तेवीसइमे धम्मो चउवीसइमे य समिइओ ॥
बंभगुण पन्नवीसे सामायारी य होइ छव्वीसे।
सत्तावीसे असढया अट्ठावीसे य मुक्खगई ॥
एगुणतीस आवस्सगप्पमाओ तवो अ होइ तीसइमे।
चरणं च इक्कतीसे बत्तीसि पमायठाणाइं ॥
तेत्तीसइमे कम्मं चउतीसइमे य हुंति लेसाओ।
भिक्खुगुणा पणतीसे जीवाजीवा य छत्तीसे ॥
उत्तरज्झयणागेसो पिंडत्थो वण्णिओ समासेणं।
इत्तो इक्किक्कं पुण अज्झयणं कित्तइस्सामि ॥

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
७	३०		रस-गृद्धि का परित्याग।
८	२०		लाभ और लोभ के योग का प्रतिपादन।
९	६२		संयम में निष्प्रकम्प भाव।
१०	३७		अनुशासन।
११	३२		बहुश्रुत की पूजा।
१२	४७		तप का ऐश्वर्य।
१३	३५		निदान—भोग-संकल्प।
१४	५३		अनिदान—भोग-असंकल्प।
१५	१६		भिक्षु के गुण।
१६	१७	१२	ब्रह्मचर्य की गुप्तियाँ।
१७	२१		पाप-वर्जन।
१८	५३		भोग और ऋद्धि का त्याग।
१९	९८		अपरिकर्म—देहाध्यास का परित्याग।
२०	६०		अनाथता।
२१	२४		विचित्र चर्या।
२२	४९		चरण का स्थिरीकरण।
२३	८९		धर्म—चातुर्याम और पंचयाम।
२४	२७		समितियाँ-गुप्तियाँ।
२५	४३		ब्राह्मण के गुण।
२६	५२		सामाचारी।
२७	१७		अशठता।
२८	३६		मोक्ष-गति।
२९		७४	आवश्यक में अप्रमाद।
३०	३७		तप।
३१	२१		चारित्र।
३२	१११		प्रमाद-स्थान।
३३	२५		कर्म।
३४	६१		लेश्या।
३५	२१		भिक्षु के गुण।
३६	२६८		जीव और अजीव का प्रतिपादन।

निर्युक्तिकार ने उत्तराध्ययन के प्रतिपाद्य के संक्षिप्त सकेत प्रस्तुत किए है। इनसे एक स्थूल-सी रूपरेखा हमारे सामने आ जाती है। विस्तार मे जाएँ तो उत्तराध्ययन का प्रतिपाद्य बहुत विशद है। भगवान् पार्श्व और भगवान् महावीर की धर्म-देशनाओ का स्पष्ट चित्रण यहाँ मिलता है। वैदिक और श्रमण संस्कृति के मतवादो का संवादात्मक शैली मे इतना व्यवस्थित प्रतिपादन अन्य आगमो में नही है। इसमे धर्म-कथाओ, आध्यात्मिक-उपदेशो तथा दार्शनिक-सिद्धान्तो का आकर्षक योग है। इसे भगवान् महावीर की विचार-धारा का प्रतिनिधि सूत्र कहा जा सकता है।

१६ : उत्तराध्ययन की कथाएँ : तुलनात्मक दृष्टिकोण

भारतीय धर्मों की अनेक साहित्यिक शाखाएँ है। उनमें अनेक कथाएँ एक जैसी है। प्रस्तुत सूत्र मे चार कथाएँ ऐसी है, जो किंचित् रूपान्तर के साथ महाभारत और बौद्ध-साहित्य मे मिलती है। जैसे—

उत्तराध्ययन	महाभारत	जातक
१ हरिकेश बल (अ० १२)	×	मातंग (सं० ४९७)
२ चित्त-संभूत (अ० १३)	×	चित्तसंभूत (सं० ४९८)
३ इषुकारीय (अ० १४)	शान्तिपर्व, अ० १७५ शान्तिपर्व, अ० २७७	हस्तिपाल (सं० ५०९)
४ नमि-प्रव्रज्या (अ० ९)	शान्तिपर्व, अ० १७८ तथा अ० २७६	महाजन (सं० ५३९)

इनके सादृश्य का कारण पूर्व कालीन 'श्रमण-साहित्य' का स्वीकरण है। प्रत्येक-बुद्धो द्वारा रचित प्रकरण हजारो की संख्या में प्रचलित थे। उन्होने भारतीय साहित्य की प्रत्येक धारा को प्रभावित किया था। मार्कण्डेय पुराण के पिता-पुत्र संवाद की तुलना उत्तराध्ययन के चौदहवें इषुकारीय अध्ययन गत पिता-पुत्र संवाद से करने पर दोनो का स्रोत एक ही परम्परा में प्राप्त होता है। इसकी विस्तृत चर्चा हमने 'उत्तराध्ययन एक समीक्षात्मक अध्ययन' मे की है।

२० : उत्तराध्ययन : व्याकरण-विमर्श

वर्तमान प्राकृत व्याकरण की अपेक्षा प्राचीन आगमो मे कुछ विशिष्ट प्रयोग उपलब्ध होते हैं। उत्तराध्ययन भी उसी कोटि का आगम है। इसके अनेक स्थलो में विभक्ति-विहीन शब्द प्रयोग है। अनेक स्थलो में ह्रस्व का दीर्घीकरण और दीर्घ का ह्रस्वीकरण है। संस्कृत तुल्य तथा प्राकृत व्याकरण से असिद्ध संधि-प्रयोग प्राप्त होते है। विभक्ति, वचन आदि का व्यत्यय भी विपुल मात्रा में मिलता है। इसमें समालोच्य शब्द भी प्रयुक्त है।

विभक्ति-विहीन शब्द-प्रयोग :

बुद्धपुत्त (१।७)
भाय (१।३९)
कल्लाण (१।३९)
भिक्खु (२।२२)
तेल्ल (१४।१८)
जीविय (३२।२०)

ह्रस्व का दीर्घीकरण :

समाययन्ती (४।२)
परत्था (४।५)
दुक्खपउराए (८।१)
जाईमय (१२।५)
अन्नमन्नमणूरत्ता (१३।५)
अग्गमाहिसी (१९।१)

दीर्घ का ह्रस्वीकरण :

पक्खिणि (१४।४१)
जिया (२२।१९)
पमाणि (२६।२७)

सस्कृत-तुल्य संधि-प्रयोग :

सुइरादवि ७।१८

प्राकृत व्याकरण से असिद्ध सधि-प्रयोग :

उवसग्गे	+	अभिधारए	=	उवसग्गाभिधारए (२।२१)
बुद्धेहिं	+	आयरियं	=	बुद्धेहायरियं (१।४२)
विप्परियासं	+	उवेइ	=	विप्परियासुवेइ (२०।४६)

विभक्ति-व्यत्यय :

आणुपुव्विं (१।१)—यहाँ तृतीया के अर्थ मे द्वितीया विभक्ति है।
अदीणमणसो (२।३)—यहाँ प्रथमा के अर्थ में षष्ठी विभक्ति है।
सव्वदुक्खाणं (८।८)—यहाँ तृतीया के अर्थ में षष्ठी विभक्ति है।
चोद्दसहिं ठाणेहिं (११।६)—यहाँ सप्तमी के अर्थ में तृतीया विभक्ति है।
मुहाजीवी (२५।२७)—यहाँ द्वितीया के अर्थ में प्रथमा विभक्ति है।
चरमाण (३०।२०)—यहाँ षष्ठी के अर्थ मे प्रथमा विभक्ति है।

वचन-व्यत्यय :

विहन्नइ (२।६)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है।

आहु (१२।२५)—यहाँ एकवचन के स्थान पर बहुवचन है।

तं (३६।४८)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है।

परित्तसंसारी (३६।२६०)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है।

अलाक्षणिक :

फरसु+आईहिं	=	फरसुमाईहिं १९।६६
मुट्ठि+आईहिं	=	मुट्ठिमाईहिं १९।६७
असजत्	=	संजए २१।२०

समालोच्य शब्द :

अप्पायंके (३।१८)—यहाँ 'अप्प' का प्रचलित अर्थ 'अल्प' प्राप्त नही होता। यहाँ यह शब्द निषेधार्थ में प्रयुक्त है।

सुदिट्ठं (१२।३८), सुजट्ठं (१२।४०)—इन दोनो में समान प्रयोग चाहिए। संभव है 'सुदिट्ठं' के स्थान मे लिपि-दोष से 'सुजट्ठं' हो गया हो।

भवताम् = भवयाणं (१२।१०)

२१ : उत्तराध्ययन : भाषा की दृष्टि से

उत्तराध्ययन की भाषा प्राकृत है। भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में सात प्राकृतो का उल्लेख किया है—मागधी, आवन्ती, प्राच्या, शौरसेनी, अर्द्धमागधी, वाल्हीका और दाक्षिणात्या।[1]

१—नाट्यशास्त्र, १७।४८ :

मागध्यवन्तिजा प्राच्या शौरसेन्यर्द्धमागधी।
वाल्हीका दाक्षिणात्याश्च सप्तभाषाः प्रकीर्तिता.॥

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत व्याकरण में प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिका-पैशाचिक और अपभ्रंश—इन छह प्राकृतो का उल्लेख किया है।

'षड्भाषा चन्द्रिका' में भी प्राकृत के ये ही छह विभाग मिलते है। वहाँ महाराष्ट्र की भाषा को प्राकृत, शूरसेन (मथुरा के आसपास के प्रदेश) की भाषा को शौरसेनी, मगध की भाषा को मागधी, पिशाच (पाण्ड्य, केकय आदि देशो) की भाषा को पैशाची और चूलिका पैशाची तथा आभीर आदि देशो की भाषा को अपभ्रंश कहा गया है[1]।

भगवान् महावीर अर्द्धमागधी भाषा मे बोलते थे। आगमो में स्थान-स्थान पर यही उल्लेख मिलता है[2]। प्राचीन जैन आगमो की भाषा अर्द्धमागधी और मागधी रही है।

१—षड्भाषाचन्द्रिका, उपोद्घात :

षड्विधा सा प्राकृती च शौरसेनी च मागधी।
पैशाची चूलिकापैशाच्यपभ्रंश इति क्रमात्॥
तत्र तु प्राकृतं नाम महाराष्ट्रोद्भवं विदुः।
शूरसेनोद्भवा भाषा शौरसेनीति गीयते॥
मगधोत्पन्नभाषां तां मागधीं संप्रचक्षते।
पिशाचदेशनियतं पैशाचीद्वितयं भवेत्॥
पाण्ड्यकेकयवाल्हीक सिंह नेपाल कुन्तलाः।
सुधेष्णभोजगान्धारहैवकन्नोजकास्तथा॥
एते पिशाचदेशाः स्युस्तद्देश्यस्तद्गुणो भवेत्।
पिशाचजातमथवा पैशाचीद्वयमुच्यते॥
अपभ्रंशस्तु भाषा स्यादाभीरादिगिरां चय.।
.. .. ॥

२—(क) औपपातिक, सूत्र ३४ :

तए णं समणं भगवं महावीरे कूणिअस्स भंभासारपुत्तस्स·········
अद्धमागहाए भासाए भासति········· ·· ।

(ख) समवायांग, समवाय ३४ :

भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ (२२)।

क्षेत्र की दृष्टि से अर्द्धमागधी उस भाषा का नाम है, जो आधे मगध में अर्थात् मगध के पश्चिमी भाग में व्यवहृत थी। इसमें मागधी भाषा के लक्षण प्राप्त थे, इसलिये प्रवृत्ति की दृष्टि से भी संभव है इसे अर्द्धमागधी कहा गया। भाषा-शास्त्रियों के अनुसार मागधी की तीन मुख्य विशेषताएँ है—

(१) प्रथमा विभक्ति के एकवचन मे 'ओकार' के स्थान पर 'एकार' होना।

(२) 'र' का 'ल' होना।

(३) 'ष', 'स' के स्थान पर 'श' होना।

अर्द्धमागधी मे प्रथम विशेषता बहुलता से मिलती है, दूसरी कहीं-कहीं मिलती है और तीसरी प्राय नही मिलती।

जब जैन मुनि पूर्वी भारत से हट कर पश्चिमी भारत में विहार करने लगे तब उनकी मुख्य भाषा महाराष्ट्री-प्राकृत हो गई। अर्द्धमागधी और मागधी मे लिखे हुए आगम भी उससे प्रभावित हुए। प्राकृत के सभी रूपो मे महाराष्ट्री ने उत्कर्ष भी प्राप्त कर लिया। महाकवि दण्डी ने भी इसका उल्लेख किया है—"महाराष्ट्राश्रयां, प्रकृष्टं प्राकृतं विदु"[१]।

फिर भी जैन आचार्यों को आगमो की मूल भाषा की विस्मृति नही हुई। वे समय के विविध परिवर्तों मे भी इसी तथ्य की पुनरावृत्ति करते रहे है कि आगमो की मूल भाषा अर्द्धमागधी है। प्रज्ञापना में अर्द्धमागधी भाषा बोलने वाले को 'भाषा-आर्य' कहा गया है।[२] स्थानाग[३] और अनुयोगद्वार[४] में संस्कृत तथा प्राकृत को ऋषिभाषित कहा गया है। आचार्य हरिभद्र सूरि ने भाषा-आर्य की व्याख्या में संस्कृत और जोड़ा है।[५] कुछ आचार्य पूर्वों की भाषा भी संस्कृत मानते है।[६] इन सब तथ्यो के अध्ययन के उपरान्त भी हम इस तथ्य की विस्मृति नही कर सकते कि प्राचीन आगमो की भाषा अर्द्धमागधी थी।

१—काव्यादर्श, १।३४।

२—प्रज्ञापना, पद १, सूत्र ३७ : भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासेंति।

३—स्थानांग ७।३।५५३, गाथा २८ :

सक्ता पागता चेव, दुहा भणितीओ आहिया।
सरमंडलंमि गिज्जंते, पसत्था इसिभासिता॥

४—अनुयोगद्वार, सूत्र १२७ गाथा ५३ :

सक्कया पायया चेव, भणिईओ होंति दोण्णि वा।
सरमंडलम्मि गिज्जंते, पसत्था इसिभासिआ॥

५—तत्त्वार्थ सूत्र ३।१५, हारिभद्रीय वृत्ति पृष्ठ १८० :

शिष्टाः-सर्वातिशयसम्पन्ना गणधरादयः तेषां भाषा संस्कृताऽर्धमागधिकादिका च।

६—प्रभावक चरित, पृष्ठ ५८, वृद्धवादिसूरि चरित, श्लोक ११३ :

चतुर्दशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन्।

अर्द्धमागधी और महाराष्ट्री

उत्तराध्ययन की भाषा महाराष्ट्री से प्रभावित अर्द्धमागधी है। अर्द्धमागधी और महाराष्ट्री का अन्तर निम्न प्रकार है

अर्द्धमागधी	महाराष्ट्री
असंयुक्त 'क' को 'ग' या 'त' होता है—	'क' का प्राय लुक् होता है—
कुमारगा (१४।११)	अज्झावयाणं (१२।१६)
लोगो (१४।२२)	
असंयुक्त 'ग' का लुक् नही होता—	'ग' का प्राय लुक् होता है—
कामभोगेसु (१४।६)	भोए (१४।३७)
सगरो (१८।३५)	
असंयुक्त 'च' और 'ज' के तकार वहुल प्रयोग मिलते है—	'च' और 'ज' का प्राय लुक् होता है-
तेगिच्छं (२।३३)	समुवाय (१४।३७)
वितिगिच्छा (१६। सू० ४)	बीयाइं (१२।१२)
असंयुक्त 'त' का प्राय लुक् नही होता—	'त' का प्राय लुक् होता है—
अतरं (८।६)	पुरोहियं (१४।३७)
असंयुक्त 'द' का प्राय लुक् नही होता और कही-कही उसको 'त' हो जाता है—	'द' का प्राय लुक् होता है—
उदंग (७।२३)	विइयाणि (१२।१३)
असंयुक्त 'प' को प्राय 'व' हो जाता है—	'प' का प्राय लुक् होता है—
महादीवो (२३।६६)	तउय (३६।७३)
असंयुक्त 'य' का प्राय लुक् नही होता और कही-कही उसको 'त' हो जाता है—	'य' का प्राय लुक् होता है—
उवाया (३२।६)	काए (३६।८२)
	आउ (७।१०)
असंयुक्त 'व' का प्राय लुक् नही होता और कही-कही उसको 'त' हो जाता है—	'व' का प्राय लुक् होता है—
पवरे (११।१६)	चेय (२४।१६)
दिवायरे (११।२४)	
प्रथमा के एकवचन में 'एकार' होता है—	प्रथमा के एकवचन मे 'ओकार' होता है-
कयरे (१२।६)	मणगुत्तो (१२।३)
धीरे (१५।३)	

शब्द-भेद—

अर्द्धमागधी	महाराष्ट्री
कम्मुणा	कम्मेण
वेयसां (२५।१६)	वेयाण
विसालिसेहिं (३।१४)	विसरिसेहिं
दुवालसंगं (२४।३)	बारसंग (२३।७)
गेही (६।४)	गिद्धी
सोही (३।१२)	सुद्धी
तेगिच्छं (२।३३)	चीइच्छं
मिलेक्खुया (१०।१६)	मिलिच्छा, मिच्छा
माहणा (१२।१३)	बम्हणो (२५।१९)
पडुप्पन्न (२९।सू०१३)	पच्चुप्पन्न (७।९)

उत्तराध्ययन में अर्द्धमागधी के साथ-साथ महाराष्ट्री-प्राकृत के प्रयोग भी मिलते है। इसलिए भाषा की दृष्टि से इसे भाषा-द्वय की मिश्रित कृति कहा जा सकता है।

२२ : उत्तराध्ययन के व्याख्या-ग्रन्थ

जैन आगमो में उत्तराध्ययन सर्वाधिक प्रिय आगम है। उसकी प्रियता का कारण उसके सरस कथानक, सरस संवाद और सरस रचना-शैली है। उसकी सर्वाधिक प्रियता के साक्ष्य व्यापक अध्ययन-अध्यापन और विशाल व्याख्या-ग्रन्थ है। जितने व्याख्या-ग्रन्थ उत्तराध्ययन के है, उतने अन्य किसी आगम के नही है।

१—निर्युक्ति :

यह उत्तराध्ययन के प्राप्त व्याख्या-ग्रन्थो में सर्वाधिक प्राचीन है। इसमें ५५७ गाथाएँ है। यह लघु कृति है, किन्तु इसमें अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध है। इसलिय यह उत्तरवर्ती सभी व्याख्या-ग्रन्थों की आधार-भित्ति रही है। इसके कर्त्ता द्वितीय भद्रबाहु (वि० छठी शताब्दी) है।

२—चूर्णि :

यह प्राकृत-संस्कृत में लिखी गई उत्तराध्ययन की महत्त्वपूर्ण व्याख्या है। इसमे अन्तिम अठारह अध्ययनो का व्याख्यान बहुत ही संक्षिप्त है। ग्रन्थ की प्रशस्ति में ग्रन्थकार

ने अपना परिचय 'गोपालिक महत्तर शिष्य' के रूप में दिया है ।[१] इनका अस्तित्व-काल विक्रम की सातवी शताब्दी है ।

३—शिष्यहिता (बृहद्वृत्ति या पाइय-टीका) :

उत्तराध्ययन की संस्कृत-व्याख्याओ में यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है । इसमें अवतरणात्मक कथाएँ प्राकृत में गृहीत हैं । बृहद्वृत्तिकार ने अनेक बार 'वृद्धसम्प्रदाया-दवसेय '[२] या 'सम्प्रदायादवसेय '[३] लिख कर उनका अवतरण किया है ।

बृहद्वृत्तिकार के सामने चूर्णि के अतिरिक्त और भी कोई प्राचीन व्याख्या रही है, ऐसा प्रतीत होता है । नौवें अध्ययन के अट्ठाईसवें श्लोक की व्याख्या में—'तथा च वृद्धा - लोमहारा प्राणहारा इति'[४] ऐसा उल्लेख मिलता है । यह वाक्य चूर्णि का नही है । उसमें 'लोमहार' का अर्थ—'लोमहारा णाम पेल्लणमोसगा'[५]—इन शब्दो में है ।

इससे यह प्रमाणित होता है कि बृहद्वृत्ति में उद्धृत वाक्य चूर्णि से अतिरिक्त किसी दूसरी प्राचीन व्याख्या का है ।

बृहद्वृत्तिकार ने 'वृद्ध' शब्द के द्वारा चूर्णिकार का भी उल्लेख किया है—'वृद्धास्तु व्याचक्षते—लोलुप्यमाणं ति लालप्यमानं—भरणपोषणकुलसंताणेसु य तुब्भे भविस्सह त्ति'[६] ।

मिलाइए—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ २२३ 'लोलुप्पमाणं लोलुप्पमानं भरणपोसण-कुलसंताणेसु य तुब्भे भविस्सह'त्ति ।'

ये बृहद्वृत्तिकार है वादी-वेताल शान्ति सूरि । इनका अस्तित्व-काल विक्रम की ११वी शताब्दी है ।

१—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ २८३ :

वाणिजकुलसंभूओ, कोडियगणिओ उ वयरसाहीतो ।
गोवालियमहत्तरओ, विक्खाओ आसि लोगंमि ॥१॥
ससमयपरसमयविऊ, ओयस्सी दित्तिमं सुगंभीरो ।
सीसगणसंपरिवुडो, वक्खाणरतिप्पिओ आसी ॥२॥
तेसिं सीसेण इमं, उत्तरज्झयणाण चुण्णिखंडं तु ।
रइयं अणुग्गहत्थं, सीसाणं मंदबुद्धीणं ॥३॥

२—उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र १४५ ।

३—वही, पत्र १२५ ।

४—वही, पत्र ३१२ ।

५—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ १८३ ।

६—उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ४०० ।

४—सुखबोधा :

यह बृहद्वृत्ति से समुद्धृत लघु वृत्ति है। इसके कर्त्ता नेमिचन्द्र सूरि हैं। सूरिपद-प्राप्ति से पूर्व इनका नाम देवेन्द्र था। इस वृत्ति का रचना-काल विक्रम सं० ११२९ है।

५—सर्वार्थसिद्धि :

इसके रचयिता भावविजय हैं। इसका रचना-काल विक्रम संवत् १६७९ है। इसमें कथाएँ पद्यबद्ध हैं।

इनके अतिरिक्त और भी व्याख्या-ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। वे सारे के सारे प्राय: इन्ही मुख्य व्याख्या-ग्रन्थो के उपजीवी है। हम उनका संक्षिप्त परिचय—नाम, कर्त्ता और रचना-काल के विवरण-सहित—नीचे प्रस्तुत कर रहे है[1]

६—अवचूरि	ज्ञानसागर	वि० सं० १६४१
७—वृत्ति	कमल संयम	,, १५५४
८—दीपिका	उदयसागर	,, १५४६
९—लघुवृत्ति	खरतर तपोरत्नवाचक	,, १५५०
१०—वृत्ति	कीर्तिवल्लभ	,, १५५२
११—वृत्ति	विनयहंस	,, १५६७-८१
१२—टीका	अजितदेव सूरि	,, १६२८
१३—दीपिका	हर्षकुल	१६ वी शताब्दी
१४—अवचूरि	अजितदेव सूरि	
१५—टीका-दीपिका	माणिक्यशेखर सूरि	
१६—दीपिका	लक्ष्मीवल्लभ	१८ वी शताब्दी
१७—वृत्ति-टीका	हर्षनन्दन	वि० सं० १७११
१८—वृत्ति	शान्तिभद्राचार्य	
१९—टीका	मुनिचन्द्र सूरि	
२०—अवचूरि	ज्ञानशीलगणी	
२१—अवचूरि		वि० सं० १४९१
२२—बालावबोध	समरचन्द्र	
२३—बालावबोध	कमललाभ	१६ वी शताब्दी
२४—बालावबोध	मानविजय	वि० सं० १७४१

१—जैनभारती (वर्ष ७, अंक ३३, पृ० ५६५-६८) मे प्रकाशित श्री अगरचन्दजी नाहटा के उत्तराध्ययन सूत्र और उसकी टीकाएँ लेख पर आधृत।

इनके अतिरिक्त कुछ वृत्ति-टीकाएँ, दीपिकाएँ तथा अवचूरियाँ भी उपलब्ध होती हैं। कई में कर्त्ता का नाम नहीं है तो कई में रचना-काल का उल्लेख नहीं है। वे ये हैं—

व्याख्या-ग्रन्थ	कर्त्ता	रचना-काल
मकरन्द टीका		वि० सं० १७५०
दीपिका		,, १६३७
वृत्ति-दीपिका		
दीपिका		,, १६४३
वृत्ति		
अक्षरार्थ लवलेश		
टब्बा	आदिचन्द्र या रायचन्द्र	
टब्बा	पार्श्वचन्द्र, धर्मसिंह	१८ वीं शताब्दी
वृत्ति	मतिकीर्ति के शिष्य	
भाषा पद्यसार	ब्रह्म ऋषि	वि० सं० १५६६

तेरापन्थ के चतुर्थ आचार्य श्रीमज्जयाचार्य (वि० सं० १८६०-१९३८) ने इस सूत्र के उनतीस अध्ययनों पर राजस्थानी भाषा में पद्य-बद्ध 'जोड़' की रचना की। यत्र-तत्र उन्होंने विषय को स्पष्ट करने के लिए वार्तिक भी लिखे हैं।

२३ : उपसंहार

प्रस्तुत भूमिका में दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का संक्षिप्त पर्यालोचन किया गया है। इनके छन्द आदि अनेक विषयों पर यहाँ कोई विमर्श नहीं किया गया है। इनका पर्यालोचन 'दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन' तथा 'उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन' में किया जा चुका है। इसलिए उनके अवलोकन की सूचना के साथ-साथ मैं इस विषय को सम्पन्न कर रहा हूँ।

बाँठिया-भवन आचार्य तुलसी
बीदासर
१ अगस्त, १९६६

भूमिका में प्रयुक्त ग्रन्थों की तालिका

१ *अनुयोगद्वार* (वि० सं० २०१६) — ले० आर्यरक्षित सूरि
(प्र० देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार फण्ड, बम्बई)

२ *आगम अट्ठुत्तरी* — ले० अभयदेव सूरि

३. *आगम पुरुषनु रहस्य, श्री* (वि०सं० २०१०) — ले० मुनि अभयसागर
(प्र० श्री गोडजी मित्र मंडल, बम्बई)

४. *आगमाधिकार* — ले०श्रीमज्जयाचार्य
(अप्रकाशित)

५ *आचारांग सूत्रम्* (वि० सं० २००७) — अनु० मुनि सौभाग्यमलजी
(प्र० श्री जैन साहित्य समिति, नयापुरा, उज्जैन)

६ *आवश्यक निर्युक्ति* (वि० सं० १९८४) — ले० भद्रबाहु स्वामी (द्वितीय)
(प्र० आगमोदय समिति, बम्बई)

७ *आवश्यकवृत्ति* (वि० सं० १९८८) — ले० मलयगिरि
(प्र० आगमोदय समिति, बम्बई)

८ *उत्तराध्ययन चूर्णि* (वि० सं० १९८९) — ले० जिनदासगणि महत्तर
(प्र० श्री ऋषभदेव केसरीमलजी
श्री श्वे० संस्था, इन्दौर)

९ *उत्तराध्ययन निर्युक्ति* भा० १-३ (वि०सं० १९७२) — ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भांडागार संस्था)

१० *उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति* (वि०सं० १९७२) — ले० वेदालवादी शान्ति सूरि
(भा० १-३)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार भांडागार संस्था)

११ *उत्तराध्ययन सूत्र एक समीक्षात्मक अध्ययन* — वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(अप्रकाशित)

१२ *उत्तराध्ययन सूत्र*, दी (२ भाग) (सन् १९२२) — स० जार्ज शार्पेन्टियर
(प्र० उप्पसला विश्वविद्यालय)

१३. *औपपातिक सूत्रम्* (सवृत्ति) (वि०सं०१९९४) सं० मुनि हेमसागर
(प्र० पं० भूरालाल कालीदास)

१४. *ओघनिर्युक्ति, श्रीमती* (वृत्ति सहित) (वि०सं०१९७५) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० आगमोदय समिति)

१५. *अंगपण्णत्ति*
(प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाल)

१६ *कल्पसूत्र* (वि० सं० २००८) ले० आर्य भद्रबाहु स्वामी
(प्र० साराभाई मणिकलाल नवाब, अहमदाबाद) सं० मुनि पुण्यविजयजी

१७. *कषायपाहुड* (भाग-१-६)(वि०सं०२००० से २०२२) ले० भगवद् गुणधराचार्य
(प्र० भारतीय दिगम्बर जैन संघ, चौरासी, मथुरा)

१८. *काव्यादर्श* (सन् १९२४) ले० दंडी
(प्र० ओरियन्टल बुक्स सप्लाई ऐजेन्सी, पूना)

१९ *केनीनिकल लिटरेचर ऑफ दी जैन्स* ले० हीरालाल रसिकदास
(प्र० ही०रा० संकडीसेरी, गोपीपुरा, सूरत)

२०. *गाथा सहस्री* ले० समयसुन्दर गणी

२१ *गोम्मटसार* (जीवकांड) (सन् १९२७) ले० नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती
(प्र० सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस, अजिताश्रम, लखनऊ) अनु० सं० जे० एल० जैनी एम० ए०

२२. *चारित्रभक्ति* (क्रियाकलाप में मुद्रित) ले० पूजपाद स्वामी

२३. *जयधवला* (६ भाग) (वि०स० २००० से २०२२) ले० वीरसेनाचार्य
(प्र० भारत दिगम्बर जैन संघ, चौरासी, मथुरा) सं० फूलचन्द सिद्धान्तशास्त्री, सं० कैलाशचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

२४. *जातक* (६ खंड) (प्रथम संस्करण) अनु० भदन्त आनन्द कोसल्यायन
(प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग)

२५. *जैनधर्मवरस्तोत्र* (स्वोपज्ञवृत्ति सहित) (वि० सं० १९८९) ले० भावप्रभ सूरि
(प्र० जव्हेरी जीवनचन्द्र साकरचन्द्र)

२६. *जैन भारती* (मासिक) (वर्ष ७ अंक ३३)
(प्र० जैन श्वे० तेरापंथी महासभा, कलकत्ता-१)

२७. *तत्त्वार्थवार्त्तिक* (राजवार्त्तिक) (वि०सं०२०००) ले० अकलंकदेव
(प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी)

२८. *तत्त्वार्थवृत्ति* (श्रुतसागरीय) (वि०सं०२०००) ले० श्रुतसागर
(प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी) सं० प्रो० महेन्द्रकुमार जैन

२९. *तत्त्वार्थवृत्ति* (हारिभद्रीय) (वि०सं०१९९२) ले० हरिभद्र
(प्र० ऋषभदेव केसरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम) सं० आनन्दसागर सूरि

३० *दशवेआलियं* (भाग २) (वि०सं०२०२०) वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(प्र० श्री जैन श्वे० तेरापंथी महासभा, कलकत्ता)

३१ दशवैकालिक : *एक समीक्षात्मक अध्ययन* वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(यन्त्रस्थ)

३२ *दशवैकालिक चूर्णि* (अगस्त्य) ले० स्थविर अगस्त्यसिंह
(अप्रकाशित)

३३ *दशवैकालिक चूर्णि* (जिनदास) (वि०सं०१९८९) ले० जिनदास महत्तर
(प्र० ऋषभदेव केशरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम)

३४ *दशवैकालिक दीपिका* (वि०सं०१९७५) ले० समयसुन्दर उपाध्याय
(प्र० श्री जिनयश सूरिजी ग्रन्थमाला समिति, खंभात)

३५ *दशवैकालिक निर्युक्ति* (वि०सं०१९७४) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भण्डागार संस्था)

३६. *दशवैकालिक वृत्ति* (हारिभद्रीय) (वि०सं०१९७४) ले० हरिभद्र
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भण्डागार संस्था)

३७ *दसवेयालिय सुत्त* (सन् १९३२) ले० डॉ० वाल्थर शुब्रिंग
(प्र० सेठ आनन्दजी कल्याणजी, अहमदाबाद)

३८. *दशवैकालिक सूत्र, ए स्टडी, टी* (सन् १९३३) ले० प्रो०पट्टवर्द्धन एम०ए०
(प्र० विलिंगटन कालेज, संगली)

३९. दशाश्रुतस्कन्ध *निर्युक्ति* (वि०सं०२०११) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० पन्यास मणिविजयजी गणि ग्रन्थमाला) सं० विजय कुमुदसूरीश्वरजी

४० देशी*नाममाला* (द्वितीय संस्करण) (सन् १९३८) ले० आचार्य हेमचन्द्र
(प्र० बम्बई संस्कृत सीरीज)

४१. *धवला* (षट्खण्डागम) (भा०१-९) (वि०सं०१९९६ से २००६)
(प्र० जैन साहित्योद्धार कार्यालय, अमरावती) ले० वीरसेनाचार्य
सं० हीरालाल जैन

४२ *नन्दी चूर्णि*
(प्र० ऋषभदेव केशरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम)

४३. *नन्दी वृत्ति* (वि०सं०१९८०) ले० मलयगिरि
(प्र० आगमोदय समिति)

४४ *नन्दी वृत्ति* (वि०सं०१९८४) ले० हरिभद्र
(प्र० ऋषभदेव केशरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम)

४५ *नन्दी सुत्त* (सन् १९५८) सं० सुबोध मुनि
(प्र० सन्मति ज्ञानपीठ, लोहामंडी, आगरा)

४६ *नन्दी सूत्रम् श्रीमद्* (चूर्णि और हारिभद्रीय वृत्ति सहित) सं० विजयदास सूरि
(वि०सं०१९८८)
(प्र० श्रीमद् रूपचन्द्रजी नवलमलजी, इन्दौर)

४७ *नाट्यशास्त्र* (सन् १९३६) ले० भरत मुनि
(प्र० गायकवाड ओरियंटल सीरीज)

४८ *प्रथम द्वात्रिंशिका* ले० सिद्धसेन

४९. *प्रभावकचरित* (१९९७) ले० श्री प्रभाचन्द्र आचार्य
(प्र० सिंघी जैन ग्रन्थमाला, अहमदाबाद) सं० मुनि जिनविजय

५० *प्रज्ञापना* (वि०सं०१९७४) ले० श्यामाचार्य
(प्र० आगमोदय समिति, मेसाणा)

५१ *पचकल्प भाष्य* (बृहद्) ले० संघदास क्षमाश्रमण

५२ *पचकल्प चूर्णि*

५३ *प्राकृत भाषाओं का व्याकरण* (वि०सं०२०१५) ले० आर० पिशल
(प्र० विहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना) अनु० डॉ० हेमचन्द्र जोशी

५४. *पातजल महाभाष्य* (सन् १९५१) ले० पतजलि
(प्र० निर्णयसागर, बम्बई) सं० भार्गव शास्त्री

५५. *पिण्ड निर्युक्ति* (वि०सं०२०१८) ले० भद्रबाहु स्वामी
(प्र० शासन कण्टकोद्धारक ज्ञानमंदिर, अनु० श्री हंससागरजी महाराज
भावनगर (सौराष्ट्र)

५६. *बृहत्कल्प सूत्रम्* (भाष्य निर्युक्ति सहित) (सन् १९३३ से १९३८) लें० भद्रबाहु
(प्र० श्री जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, (सौराष्ट्र) सं० पुण्यविजयजी

५७ *महाभारत* (प्रथम संस्करण) ले० महर्षि वेदव्यास
(प्र० गीताप्रेस, गोरखपुर)

५८ *मार्कण्डेय पुराण* (वि०सं०२०१८) ले० कृष्ण द्वैपायन
(प्र० गुरुमंडल ग्रन्थमाला, मनसुखराय मोर, कलकत्ता)

५९ *मूलाचार* (वि०सं०२४८४) ले० बट्टकेर आचार्य
(प्र० सूरत भाण्डागार ग्रन्थमाला समिति, अनु० जिनदास पार्श्वनाथ फुडकुले शास्त्री फलटन, जि० उत्तरसतारा)

६०. *मूलाचार* (वि०सं०१९७७) ले० वट्टकेर आचार्य
(प्र० जैन ग्रन्थमाला समिति) सं०पं०पन्नालाल न्याय-काव्यतीर्थ
सं०पं०गजाधरलाल

६१ *मूलाराधना* (टीका-विजयोदया) ले० अपराजित सूरि

६२ *रत्नमुनि स्मृति ग्रन्थ* (वि०सं०२००१) सं० विजय मुनि
(प्र० गुरुदेव स्मृतिग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति,
लोहामंडी, आगरा) डॉ० हरिशंकर शर्मा

६३ *रिलीजियन व जैन० क* अनु० डॉ० ग्यारीनो

६४. *व्यवहारभाष्य* (वि०सं०१९९४) संशोधक मुनि माणक
(प्र० वकील केशवलाल प्रेमचन्द, भावनगर)

६५. *विचारलेस* (विचारसार प्रकरण) ले० प्रद्युम्न सूरि

६६. *वैशेषिक दर्शन* (सन् १९५४, द्वितीय संस्करण) ले० दर्शनानन्द सरस्वती
(प्र० पुस्तक भण्डार, बरेली)

६७. *स्थानाग* (द्वितीय संस्करण, सं०१९५४)
(प्र० माणिकचन्द चुन्नीलाल, अहमदाबाद)

६८ *समवायाग सूत्रम्* (वि०सं०१९७४)
(प्र० आगमोदय समिति)

६९. *सामाचारीशतक* (वि०सं०१९९६) ले० समयसुन्दरगणी
(प्र० जवेरी मूलचन्द हीराचंद भगत, बम्बई)

७०. *सिद्धान्तस्तवस्रोत* ले० जिनप्रभ सूरि

७१. *सूत्रकृताग* (सं०१९७३)
(प्र० आगमोदय समिति)

७२. *षड्भाषाचन्द्रिका*

७३. *हरिवंश पुराण* (दो भाग) (ग्रन्थांक ३२, ३३) लें० जिनसेन
(प्र० माणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला) सं० पं० दरबारीलाल

७४. *हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर* (भाग-२) (सन् १९३३)
(प्र० कलकत्ता विश्वविद्यालय) लें० मोरी विन्टरनित्ज, पी-एच०डी०

७५. *हिस्ट्री ऑफ दी केनोनिकल लिटरेचर ऑफ दी जैन्स, ए* (सन् १९४१) लें० एच०आर०कापडिया
(प्र० हीरालाल रसिकदास कापडिया, गोपीपुरा, सूरत)

७६. *हेमशब्दानुशासन* (सं १९६२) लें० आचार्य हेमचन्द्र सूरि
(प्र० सेठ मनसुख भाई पोरवाड डायमंड जुबली प्रिन्टिंग प्रेस, सालापोस दरवाजा, अहमदाबाद)

७७. *श्रमण भगवान् महावीर* (वि०सं०१९९८) लें० पं० कल्याणविजयजी गणी
(प्र० श्री क० वि० शास्त्रसंग्रह समिति, जालोर)

७८. *श्रावक विधि* लें० धनपाल

*

दसवेआलियं : विषय-सूची

पिंडेसणा (उ० २) २९

****

उत्तरज्झयणं : विषय-सूची

दसवेआलियं

पढम अज्झयणं

दुमपुप्फिया

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो ।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥

जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं ।
न य पुप्फं किलामेइ सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥

एमेए समणा मुत्ता जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥

वयं च वित्तिं लब्भामो न य कोइ उवहम्मई ।
अहागडेसु रीयंति पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥

महुकारसमा बुद्धा जे भवंति अणिस्सिया ।
नाणापिंडरया दंता तेण वुच्चंति साहुणो[1] ॥ ५ ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—साहुणु (क, ख, ग) ।

बीअं अज्झयणं

सामण्णपुव्वयं

कहं नु कुज्जा[1] सामंण्णं जो कामे न निवारए।
पए पए विसीयंतो संकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ॥

वत्थगन्धमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य।
अच्छन्दा जे न भुंजन्ति न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥

जे य[2] कन्ते पिए भोए लद्धे विपिट्ठिकुव्वई[3]।
साहीणे चयइ भोए[4] से हु चाइ त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥

समाए[5] पेहाए परिव्वयंतो
सिया मणो निस्सरई बहिद्धा।
न सा महं नोवि अहं पि तीसे
इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥

आयावयाही चय सोउमल्लं
कामे कमाही कमियं खु दुक्खं।
छिन्दाहि दोसं विणएज्ज रागं[6]
एवं सुहो होहिसि संपराए ॥ ५ ॥

१—कह नु कुज्जा (अ. जि. हा.) : कइऽहं कुज्जा (अ., जि., हा.) :
कहं न कुज्जा (जा) : कह स कुज्जा (अ.) : कहं नु कुज्जा (जा)।
२—उ (अ)।
३—विपिट्ठि° (अ) : विप्पिट्ठि° (ख) : विप्पिट्ठि° (ग)।
४—भोगे (ख)।
५—समए (अ)।
६—छिंदाहि रागं विणएज्ज दोसं (अ)।

पक्खन्दे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं।
नेच्छन्ति वन्तयं भोत्तु[1] कुले जाया अगन्धणे ॥ ६ ॥

धिरत्थु 'ते जसोकामी'[2] जो तं जीवियकारणा।
वन्तं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥

अहं च भोयरायस्स[3] तं चऽसि अन्धगवण्हिणो।
मा 'कुले गंधणा'[4] होमो संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥

जइ तं काहिसि भावं जा जा दच्छसि नारिओ।
वायाइद्धो व्व हडो[5] अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥

तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं।
अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥ १० ॥

एवं करेन्ति संबुद्धा[6] पण्डिया पवियक्खणा।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से पुरिसोत्तमो[7] ॥ ११ ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—भुत्त (ख)।
२—ते ऽजसो ° (आ, जा)।
३—भोग ° (क, ख, ग, घ, ज, ह)।
४—कुल गन्धिणो (जा)।
५—हढो (अ, क, ज)।
६—संपन्ना (अ, ज)।
७—पुरिसोत्तिमे (अ), पुरिसुत्तमु (ख, ग, घ), पुरिसुत्तमो (ज)।

तइयं अज्झयणं

खुड्डियायारकहा

संजमे सुट्ठिअप्पाणं विप्पमुक्काण ताइणं ।
तेसिमेयमणाइण्णं निग्गंथाण महेसिणं ॥ १ ॥

उद्देसियं कीयगडं नियागमभिहडाणि य ।
राइभत्ते सिणाणे य गंधमल्ले य वीयणे ॥ २ ॥

सन्निही गिहिमत्ते य रायपिंडे किमिच्छए ।
संबाहणा दंतपहोयणा य संपुच्छणा[1] देहपलोयणा य ॥ ३॥

अट्ठावए य[2] नालीय छत्तस्स य धारणट्ठाए ।
तेगिच्छं पाणहा पाए समारंभं च जोइणो ॥ ४ ॥

सेज्जायरपिंडं च 'आसंदीपलियंकए'[3] ।
गिहंतरनिसेज्जा य गायस्सुव्वट्टणाणि य ॥ ५ ॥

गिहिणो वेयावडियं 'जाय आजीववित्तिया[4]'[5] ।
तत्तानिव्वुडभोइत्तं आउरस्सरणाणि[6] य ॥ ६ ॥

मूलए सिंगबेरे य उच्छुखंडे अनिव्वुडे ।
कंदे मूले य सच्चित्ते फले बीए य आमए ॥ ७ ॥

१—संपुछणो (अ) ।
२—× (ग) ।
३—आसण्ण परिवज्जए (आ, जा) ।
४—°वत्तिया (ख, ग) ।
५—जाइ याजीव° (ग), जाय आजीवि° (अ) ।
६—आउरेस्सर° (अ) ; आउरसर° (हा, जा) ।

सोवच्चले सिंधवे लोणे रोमालोणे[1] य आमए।
सामुद्दे पंसुखारे य कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
धूवणेत्ति वमणे य वत्थीकम्म विरेयणे।
अंजणे दंतवणे य गायाभंगविभूसणे ॥ ९ ॥
सव्वमेयमणाइण्णं निग्गंथाण महेसिणं।
'संजमम्मि य[2] जुत्ताणं'[3] लहुभूयविहारिणं[4] ॥ १० ॥
पंचासवपरिन्नाया तिगुत्ता छसु संजया।
पंचनिग्गहणा धीरा[5] निग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥ ११ ॥
आयावयंति गिम्हेसु हेमंतेसु अवाउडा।
वासासु पडिसंलीणा संजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
परीसहरिऊदंता धुयमोहा जिइंदिया।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा 'पक्कमंति महेसिणो'[6] ॥ १३ ॥
[7]दुक्कराइं करेत्ताणं दुस्सहाइ सहेत्तु य।
केइत्थ देवलोएसु केई सिज्झंति नीरया ॥ १४ ॥
खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता ताइणो परिनिव्वुडा[8] ॥ १५ ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—रुमा ० (अ, घ, ज)।
२—उ (अ)।
३—सजम अणुपालला (ज)।
४— ० विहारिणो (ज)।
५—वीरा (अ)।
६—ते वदति सिव गतिं (अ) ; परक्कमति महेसिणो (ज)।
७—अगस्त्यचूर्णी में श्लोक १४ और १५ पाठान्तर रूप में स्वीकृत हैं।
८—परिनिव्वुड (क, ख, घ, हा) ; परिनिव्वुडे (ख) ; परिनिव्वुए (ह)।

चउत्थं अज्झयणं

छज्जीवणिया

सुयं मे 'आउसं! तेणं'[1] भगवया एवमक्खायं—इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता। सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥ सू० १ ॥

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता? सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥ सू० २ ॥

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता। सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती तं जहा—पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया तसकाइया ॥ सू० ३ ॥

पुढवी चित्तमंतमक्खाया[2] अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ४ ॥

आऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ५ ॥

तेऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ६ ॥

१—आवसतेणं, आमुसतेण (हाटी पा०)।

२—चित्तमत्ता अक्खाया (जिचू); चित्तमत्ता अक्खाया (जिचू पा०); चित्तमत्त मक्खाया (अचू पा० ; हाटी पा०)।

वाऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ७ ॥

वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं, तं जहा—अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया बीयरुहा सम्मुच्छिमा तणलया वणस्सइकाइया सबीया चित्तमंतमक्खाया, अणेगजीवा, पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ८ ॥

से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा तं जहा—अंडया पोयया जराउया रसया संसेइमा[1] सम्मुच्छिमा उब्भिया उववाइया। जेसिं केसिंचि[2] पाणाणं अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचियं पसारियं रुयं भंतं तसियं पलाइयं आगइगइविन्नाया—जे य कीडपयंगा जा य कुंथुपिवीलिया 'सव्वे बेइंदिया सव्वे तेइंदिया सव्वे चउरिंदिया सव्वे पंचिंदिया सव्वे तिरिक्खजोणिया सव्वे नेरइया सव्वे मणुया सव्वे देवा सव्वे पाणा'[3] परमाहम्मिया[4] एसो[5] खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चई ॥ सू० ९ ॥

इच्चेसिं[6] छण्हं जीवनिकायाणं नेव सयं दंड समारभेज्जा नेवन्नेहिं दडं समारभावेज्जा दंड समारभंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा[7]

१—ससेयणा (जिचू)।

२—केसिं च (ख)।

३—सव्वे नेरइया, सव्वे पचेंदिया, सव्वे तिरिक्ख जोणिया, सव्वे मणुया, सव्वे देवा, सव्वे पाणा (जिचू)।

सव्वे देवा, सव्वे असुरा, सव्वे नेरइया, सव्वे पंचिंदियतिरिक्खजोणिया, सव्वे मणुस्सा, सव्वे पाणा (अचू)।

४—परधम्मिया (जिचू पा० , जिचू पा०)।

५—× (अचू)।

६—इच्चेतेहिं (जिचू , अचू)।

७—समणुजाणामि (क, ख, ग, अचू , सू १० से २२ तक)।

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं 'मणेणं वायाए काएणं'[1] न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० १० ॥

पढमे भंते! महव्वए[2] पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वं भंते! पाणाइवायं पच्चक्खामि—से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा 'थावरं वा'[3] नेव सयं पाणे अइवाएज्जा[4] नेवन्नेहिं पाणे अइवायावेज्जा[5] पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

पढमे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि[6] सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥ सू० ११ ॥

अहावरे दोच्चे भंते! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं सव्वं भंते! मुसावायं पच्चक्खामि—से कोहा वा लोहा वा भया वा हासा वा नेव सयं मुसं वएज्जा[7] नेवन्नेहिं मुसं वायावेज्जा[8] मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न

१—मणसा वयसा कायसा (अचू)।
२—महव्वए उवट्ठिओमि (अचू सू० ११ से १५ तक)।
३—थावरं वा से त पाणातिवाते चतुव्विहे, त दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो (अचू पा०)।
४—अइवाएमि (अचू) एव षोडश सूत्र पर्यन्त प्रथमपुरुषस्य स्थाने उत्तमपुरुषस्य प्रयोगः।
५—अइवायावेमि (अचू)।
६—× (अचू) सू ११ से १५ तक।
७—वयामि (अचू)।
८—वायावेमि (अचू)।

समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

दोच्चे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥ सू० १२ ॥

अहावरे तच्चे भंते! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं सव्वं भंते! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि से गामे वा नगरे वा रण्णे[1] वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव सयं अदिन्नं गेण्हेज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गेण्हावेज्जा अदिन्नं गेण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

तच्चे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ सू० १३ ॥

अहावरे चउत्थे भंते! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं सव्वं भंते! मेहुणं पच्चक्खामि—से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणियं वा, नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवावेज्जा मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

चउत्थे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥ सू० १४ ॥

१—अरण्णे (अचू)।

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि—से 'गामे वा'[1] नगरे वा रण्णे[2] वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव सयं परिग्गहं परिगेण्हेज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगेण्हावेज्जा परिग्गहं परिगेण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

पंचमे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ सू० १५ ॥

अहावरे छट्ठे भंते ! वए राईभोयणाओ वेरमणं सव्वं भंते ! राईभोयणं पच्चक्खामि—से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेव सयं राइं भुंजेज्जा नेवन्नेहिं राइं भुंजावेज्जा राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

छट्ठे भंते! वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ सू० १६ ॥

इच्चेयाइं[3] पंच महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्त-हियट्ठयाए[4] उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ सू० १७ ॥

१—× (क, ख, ग, घ, हाटी०)।
२—अरण्णे (अचू)।
३—इच्चेइयाइं (ख, ग, घ)।
४—० हियट्ठाए (घ, ज)।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा 'एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा'[1]—से पुढविं वा भित्तिं वा सिलं वा लेलुं[2] वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण वा पाएण वा 'कट्ठेण वा किलिंचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा'[3] सलागहत्थेण वा, न आलिहेज्जा न विलिहेज्जा न घट्टेज्जा न भिंदेज्जा अन्नं न आलिहावेज्जा न विलिहावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० १८ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से उदगं वा ओसं वा हिमं वा महियं वा करगं वा हरतणुगं वा सुद्धोदगं वा उदओल्लं वा कायं उदओल्लं वा वत्थ ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्धं वा वत्थं, न आमुसेज्जा न संफुसेज्जा न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा न अक्खोडेज्जा न पक्खोडेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्नं न आमुसावेज्जा न संफुसावेज्जा न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा न अक्खोडावेज्जा न पक्खोडावेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्न आमुसंतं वा संफुसंतं वा आवीलंतं वा पवीलंतं वा अक्खोडंतं वा पक्खोडंतं वा

१—सुत्ते वा जागरमाणे वा एगओ वा परिसागओ वा (अ, ज)। एव सूत्र १९ से २३ में।
२—लेलं (ख)।
३—अगुलियाए वा सलागाए वा कट्ठेण वा कलिंचेण वा (अ)।

आयावंतं वा पयावंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० १९ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से अगणिं वा इंगालं वा मुम्मुरं वा अच्चिं वा 'जालं वा अलायं वा'[1] सुद्धागणिं वा उक्कं वा, न उंजेज्जा 'न घट्टेज्जा न उज्जालेज्जा'[2] न निव्वावेज्जा अन्नं न उंजावेज्जा 'न घट्टावेज्जा न उज्जालावेज्जा'[3] न निव्वावेज्जा अन्नं उंजंतं वा 'घट्टंतं वा उज्जालंतं वा'[4] निव्वावंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २० ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से सिएण वा विहुयणेण वा तालियंटेण वा 'पत्तेण वा'[5] साहाए वा साहाभंगेण वा पिहुणेण वा पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा अप्पणो वा कायं बाहिरं वा वि पुग्गलं, न फुमेज्जा न वीएज्जा अन्नं न फुमावेज्जा न वीयावेज्जा अन्नं फुमंतं वा वीयंतं वा न

१—अलायं वा जालं वा (अ)।

२—न घट्टेज्जा न भिंदेज्जा न उज्जालेज्जा न पज्जालेज्जा (क, ख, ग, घ)।

३—न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा न उज्जावेज्जा न पज्जालावेज्जा (क, ख, ग, घ)।

४—घट्टन्तं वा भिंदतं वा उज्जालतं वा पज्जालतं वा (क, ख, ग, घ)।

५—पत्तेण वा पत्तभंगेण वा (क, ख, ग, घ)।

समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २१ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से बीएसु वा बीयपइट्ठिएसु[1] वा रूढेसु वा रूढपइट्ठिएसु वा जाएसु वा जायपइट्ठिएसु वा हरिएसु वा हरियपइट्ठिएसु वा छिन्नेसु वा 'छिन्नपइट्ठिएसु वा'[2] सच्चित्तकोलपडिनिस्सिएसु, वा, न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न निसीएज्जा न तुयट्टेज्जा अन्नं न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा न निसीयावेज्जा न तुयट्टावेज्जा अन्नं गच्छंतं वा चिट्ठंतं वा निसीयंतं वा तुयट्टंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २२ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से कीडं वा पयंगं वा कुंथुं वा पिवीलियं वा हत्थंसि वा पायंसि वा "बाहुंसि वा ऊरुंसि वा 'उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा 'पडिग्गहंसि वा'[3] रयहरणंसि वा'[4] गोच्छगंसि वा उंडगंसि वा दंडगंसि वा

१—बीयपइट्ठेसु (क, ख, ग, घ)।

२—छिन्नपइट्ठिएसु वा सच्चित्ते सु वा (क, ख, ग, घ, ह)।

३—पडिग्गहंसि वा कंबलंसि वा पाय-पुंछणंसि वा (क, ख, ग)।

४—उदरंसि वा वत्थंसि वा रयहरणंसि वा (ह)।

पीढगंसि वा"[1] फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथारगंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगंतमवणेज्जा नो णं संघायमावज्जेज्जा ॥ सू० २३॥

अजय चरमाणो उ[2] पाणभूयाइं हिंसई[3] ।
बंधई[4] पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ १ ॥
अजयं चिट्ठमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।
बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ २ ॥
अजयं आसमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।
बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ३ ॥
अजयं सयमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।
बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ४ ॥
अजयं भुजमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।
बंधई पावय कमं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ५ ॥
अजयं भासमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।
बंधई पावयं कम्मं त से होइ कडुयं फलं ॥ ६ ॥
कहं चरे? कहं चिट्ठे ? कहमासे ? कहं सए ?
कहं भुंजन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बंधई? ॥ ७ ॥
जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए ।
जयं भुंजन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बंधई ॥ ८ ॥
सव्वभूयप्पभूयस्स सम्मं भूयाइ पासओ ।
पिहियासवस्स दंतस्स पावं कम्मं न बंधई ॥ ९ ॥

१—बाहुसि वा उदसीससि वा उरुंसि वा उदरसि वा पात्तसि वा रयहरणसि वा गोच्छगंसि वा इंडगसि वा कबलसि वा उंडुयसि वा पीढगसि वा (अ) ।
२—य (ख, ग) । गाथा १ से ६ तक ।
३—हिंसओ (अ, ज) । गाथा १ से ६ में ।
४—वज्झइ (अ) । गाथा १ से ६ व ९ मे ।

पढमं नाणं तओ दया एव चिट्ठइ सव्वसंजए।
अन्नाणी कि काही ? किंवा नाहिइ छेय पावगं? ॥१०॥
सोच्चा जाणइ कल्लाणं सोच्चा जाणइ पावगं ?।
उभयं पि जाणई सोच्चा जं छेयं तं समायरे ॥११॥
जो जीवे वि न याणाइ अजीवे वि न याणई।
जीवाजीवे अयाणंतो कहं सो नाहिइ संजमं? ॥१२॥
जो जीवे वि वियाणाइ अजीवे वि वियाणई।
जीवाजीवे वियाणंतो सो हु नाहिइ संजमं ॥१३॥
जया 'जीवे अजीवे'[1] य दो वि एए वियाणई।
तया गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणई ॥१४॥
जया गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणई।
तया पुण्णं च पावं च बंधं मोक्खं च जाणई ॥१५॥
जया पुण्णं च पावं च बंधं मोक्खं च जाणई।
तया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥
जया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे।
तया चयइ[2] संजोगं सब्भिंतरबाहिरं ॥१७॥
जया चयइ[2] संजोगं सब्भिंतरबाहिरं।
तया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए[3] अणगारियं ॥१८॥
जया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए[3] अणगारियं।
तया संवरमुक्किट्ठं धम्मं फासे[4] अणुत्तरं ॥१९॥
जया संवरमुक्किट्ठं धम्मं फासे[4] अणुत्तरं।
तया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं ॥२०॥

१—जीवमजीवे (क, ख, ग, घ)।
२—जहइ (अ, ज)।
३—पव्वए (ग), पव्वाति (अ)।
४—फासेइ (अ, ज); फासइ (घ)।

जया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं ।
तया सव्वत्तग[1] नाणं दंसणं चाभिगच्छई ॥२१॥
जया सव्वत्तगं नाणं दसणं चाभिगच्छई ।
तया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ॥२२॥
जया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ।
तया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जई ॥२३॥
जया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जई ।
तया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥२४॥
जया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
तया लोग मत्थयत्थो सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥
सुहसायगस्स[2] समणस्स
सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।
उच्छोलणापहोइस्स
दुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥२६॥
तवोगुणपहाणस्स
उज्जुमइ खंतिसजमरयस्स ।
परीसहे जिणंतस्स
सुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥२७॥
[पच्छा वि ते पयाया
खिप्पं गच्छन्ति अमरभवणाइं ।
जेसिं पिओ तवो संजमो य
खन्ती य बम्भचेरं च ॥][3]

१—सव्वत्था (ज) ।
२—सुहसीलगस्स (अ), सुहसायगस्स (आ) ।
३—यह गाथा (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है किन्तु चूर्णिद्वय व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

इच्चेयं छज्जीवणियं
सम्मद्दिट्ठी सया जए ।
दुलहं[1] लभित्तु सामण्णं
कम्मुणा न विराहेज्जासि ॥२८॥
—त्ति बेमि ॥

१—दुल्लह (ज), दुल्लभ (आ) ।

पंचमं अज्झयणं

पिंडेसणा (पढमोद्देसो)

संपत्ते भिक्खकालम्मि[1] असंभंतो अमुच्छिओ ।
इमेण कमजोगेण भत्तपाणं गवेसए ॥ १ ॥

से गामे वा नगरे वा गोयरग्गगओ मुणी ।
चरे मंदमणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण[2] चेयसा ॥ २ ॥

पुरओ[3] जुगमायाए[4] पेहमाणो महिं चरे ।
वज्जंतो बीयहरियाइं पाणे य दगमट्टियं ॥ ३ ॥

ओवायं विसमं खाणुं विज्जलं परिवज्जए ।
संकमेण न गच्छेज्जा विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥

पवडन्ते व से तत्थ पक्खलन्ते व संजए ।
हिंसेज्ज पाणभूयाइं[5] तसे अदुव थावरे ॥ ५ ॥

तम्हा तेण न गच्छेज्जा संजए सुसमाहिए ।
सइ अन्नेण मग्गेण जयमेव परक्कमे ॥[6] ६ ॥

१—भिक्खु-° (क, ग)।
२—अवखित्तेण (अ); अव्विखित्तेण (ग)।
३—सव्वतो (आ, जा)।
४—°मायाय (जा); °मादाय (आ)।
५—°भूतेय (अ, ज)।
६—श्लोक ६ के पश्चात् अगस्त्यचूर्णि में निम्न श्लोक का (जो कि कुछ परिवर्तन के साथ ६५वें, ६६वें श्लोक के प्रथम दो-दो चरण हैं) उल्लेख है (अय केसिंचि सिलोगो उवरिं भण्णिहिति)—
चल कट्ठं सिलं वावि इट्टालं वावि संकमो ।
न तेग भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असजमो ।

इंगाल छारियं रासिं तुसरासिं च गोमयं।
'ससरक्खेहिं पाएहिं'[1] संजओ तं 'न अक्कमे'[2] ॥ ७ ॥
न चरेज्ज वासे वासंते महियाए व[3] पडंतीए।
महावाए व वायंते तिरिच्छसंपाइमेसु वा ॥ ८ ॥
न चरेज्ज वेससामंते बंभचेरवसाणुए[4]।
बंभयारिस्स दंतस्स होज्जा तत्थ विसोत्तिया ॥ ९ ॥
अणायणे चरंतस्स संसग्गीए अभिक्खणं।
होज्ज वयाणं पीला सामण्णम्मि य संसओ ॥१०॥
तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं।
वज्जए वेससामंतं मुणी एगंतमस्सिए ॥११॥
साणं सूइयं[5] गावि दित्तं गोणं हयं गयं।
संडिब्भं कलहं जुद्धं दूरओ परिवज्जए ॥१२॥
अणुन्नए नावणए अप्पहिट्ठे अणाउले।
इंदियाणि जहाभागं[6] दमइत्ता मुणी चरे ॥१३॥
दवदवस्स न गच्छेज्जा भासमाणो य[7] गोयरे।
हसंतो नाभिगच्छेज्जा कुलं उच्चावयं सया ॥१४॥
आलोयं थिग्गलं दारं संधिं दगभवणाणि य।
चरंतो न विणिज्झाए संकट्ठाणं विवज्जए ॥१५॥
रन्नो गिहवईणं च 'रहस्सारक्खियाण'[8] य।
संकिलेसकरं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥१६॥

१—ससरक्खेण पाएण (अ)।
२—न्ऽइक्कमे (क, ख, ग, घ)।
३—× (अ)।
४—बंभचारी° (आ); °वसाणए (ह)।
५—सूय (क, ख, ग, घ, ह); सूवेय (ज)।
६—जहाभाव (ज)।
७—व (ह)।
८—रहस्सारक्खियाणि (ख)।

पडिकुट्ठकुलं न पविसे मामगं परिवज्जए।
अचियत्तकुलं न पविसे चियत्तं पविसे कुलं॥१७॥
साणीपावारपिहियं अप्पणा नावपंगुरे।
कवाडं नो पणोल्लेज्जा ओग्गहंसि अजाइया॥१८॥
गोयरग्गपविट्ठो उ वच्चमुत्तं न धारए।
ओगासं फासुयं नच्चा अणुन्नविय वोसिरे॥१९॥
नीयदुवारं तमसं कोट्ठगं परिवज्जए।
अचक्खुविसओ जत्थ पाणा दुप्पडिलेहगा॥२०॥
जत्थ पुप्फाइं बीयाइं विप्पइण्णाइं कोट्ठए।
अहुणोवलित्तं उल्लं दट्ठूणं परिवज्जए॥२१॥
एलगं दारगं साणं वच्छगं वावि कोट्ठए।
उल्लंघिया न पविसे विऊहित्ताण व संजए॥२२॥
असंसत्तं पलोएज्जा नाइदूरावलोयए।
उप्फुल्लं न विणिज्झाए नियट्टेज्ज अयंपिरो॥२३॥
अइभूमिं न गच्छेज्जा गोयरग्गगओ मुणी।
कुलस्स भूमिं जाणित्ता मियं भूमिं परक्कमे॥२४॥
तत्थेव पडिलेहेज्जा भूमिभागं वियक्खणो।
सिणाणस्स य वच्चस्स संलोगं परिवज्जए॥२५॥
'दगमट्टियआयाणं'[1] बीयाणि हरियाणि य[2]।
परिवज्जंतो चिट्ठेज्जा सव्विंदियसमाहिए॥२६॥
तत्थ से चिट्ठमाणस्स आहरे पाणभोयणं।
अकप्पियं न इच्छेज्जा[3] पडिगाहेज्ज कप्पियं॥२७॥

१—°आयाणे (क, ख, ग, घ)।
२—वा (क)।
३—गिण्हेज्जा (क, ख, ह)।

आहरंती सिया तत्थ परिसाडेज्ज भोयणं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२८॥

सम्मद्दमाणी पाणाणि बीयाणि हरियाणि य ।
असंजमकरिं नच्चा तारिसं[1] परिवज्जए ॥२९॥

साहट्टु निक्खिवित्ताणं सच्चित्तं घट्टियाण[2] य ।
तहेव समणट्ठाए उदगं संपणोल्लिया ॥३०॥

आगाहइत्ता[3] चलइत्ता आहरे पाणभोयणं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३१॥

पुरेकम्मेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३२॥

[एवं उदओल्ले ससिणिद्धे ससरक्खे मट्टिया ऊसे ।
हरियाले हिंगुलए मणोसिला अंजणे लोणे ॥३३॥
गेरुय वण्णिय सेडिय सोरट्ठिय पिट्ठ कुक्कुस कए य ।
उक्कट्ठमसंसट्ठे संसट्ठे चेव बोधव्वे ॥३४॥][4]

१—तारिसिं (ह) ।
२—घट्टियाणि (क, ख, ग) ।
३—ओगाहइत्ता (अ, ज, ह) ।
४—अगस्त्य चूर्णि में गाथा ३३-३४ के स्थान में सतरह श्लोक हैं :
१—उदउल्लेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥
२—ससिणिद्धेण हत्थेण ......
३—ससरक्खेण ,, ...
४—मट्टियागतेण ,, ..
५—ऊसगतेण ,, ...
६—हारतालगतेण ,, ...
७—हिंगोलएगतेण ,, ...
८—पणोसिलागतेण ,, ...
९—अंजणगतेण ,, .. .
१०—लोणगतेण हत्थेण .. ..
११—गेरुयगतेण ,, ...
१२—वण्णियगतेण ,, ...
१३—सेडियगतेण ,, ...
१४—सोरट्ठियगतेण ,, ...
१५—पिट्ठगतेण ,, ...
१६—कुक्कुसगतेण ,, ...
१७—उक्कुट्ठगतेण ,, ...

असंसट्ठेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा पच्छाकम्मं जहिं भवे ॥३५॥
संसट्ठेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥३६॥
दोण्हं तु भुंजमाणाणं एगो तत्थ निमंतए ।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा छंदं से पडिलेहए ॥३७॥
दोण्हं तु भुंजमाणाणं दोवि तत्थ निमंतए ।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥३८॥
गुव्विणीए उवन्नत्थं विविहं पाणभोयणं ।
भुज्जमाणं[1] विवज्जेज्जा भुत्तसेसं पडिच्छए ॥३९॥
सिया य समणट्ठाए गुव्विणी कालमासिणी ।
उट्ठिया वा निसीएज्जा निसन्ना वा पुणुट्ठए ॥४०॥
'तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।'[2]
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४१॥
'थणगं पिज्जेमाणी दारगं वा कुमारियं ।'[2]
तं निक्खिवित्तु रोयंतं आहरे पाणभोयणं ॥४२॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४३॥
जं भवे भत्तपाणं तु कप्पाकप्पम्मि संकियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४४॥
दगवारएण पिहियं नीसाए पीढएण वा ।
लोढेण वा वि लेवेण सिलेसेण व केणई ॥४५॥

१—भुंजमाण. (क, ख, ग, घ, ज) ।

२—अगस्त्य चूर्णी में श्लोक ४१-४३ के प्रथम दो चरण नहीं हैं—पुव्व भणितं सुत्त सिलोगद्धं वित्तीए अणुस्सरिज्जति "देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पति तारिसं" अहवा दिवड्ढ सिलोगो (अ) ।

तं च उब्भिंदिया देज्जा समणट्ठाए व दावए।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥४६॥

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा दाणट्ठा पगडं इमं ॥४७॥

'तं भवे'[1] भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४८॥

असण पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा पुण्णट्ठा पगड इमं ॥४९॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५०॥

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा वणिमट्ठा पगड इमं ॥५१॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५२॥

असणं पाणग वा वि खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा समणट्ठा पगडं इमं ॥५३॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५४॥

उद्देसियं कीयगडं पूईकम्मं च आहडं।
अज्झोयर पामिच्चं मीसजायं 'च वज्जए'[2] ॥५५॥

उग्गमं से पुच्छेज्जा कस्सट्ठा केण वा कडं?।
सोच्चा निस्संकियं सुद्धं पडिगाहेज्ज संजए ॥५६॥

१—तारिस (अ, क, ह)।
२—विवज्जए (अ, ज)।

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
पुप्फेसु होज्ज उम्मीसं बीएसु हरिएसु वा ॥५७॥
'तं भवे'[1] भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५८॥
असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
उदगम्मि होज्ज निक्खित्तं उत्तिगपणगेसु वा ॥५९॥
'तं भवे'[1] भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६०॥
असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
'तेउम्मि'[2] होज्ज निक्खित्तं तं च संघट्टिया दए ॥६१॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६२॥
[एवं उस्सक्किया ओसक्किया उज्जालिया पज्जालिया निव्वाविया।
उस्सिंचिया निस्सिंचिया ओवत्तिया ओयारिया दए ॥६३॥][3]

१—तारिसं (अ, क, ह)।
२—अगणिम्मि (अ)।
३—अगस्त्यचूर्णि में गाथा ६३ के स्थान पर निम्न अट्ठारह श्लोक हैं—
१—असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
तेउम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च उस्सक्किया दए॥
२—तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं॥
३—.................. तं च ओसक्किया दए॥
५—.................. तं च उज्जालिया ..॥
७—.................. तं च निव्वाविया ..॥
९—.................. तं च उस्सिंचिया ..॥
११—.................. तं च उक्कड्ढिया ..॥
१३—.................. तं च निस्सिंचिया ..॥
१५—.................. तं च ओवत्तिया ..॥
१७—.................. तं च ओयारिया ..॥
श्लोक ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८ ठीक दूसरे श्लोक की तरह हैं।

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६४॥
'होज्ज कट्ठं सिलं वा वि इट्टालं वा वि एगया ।
ठवियं संकमट्ठाए तं च होज्ज चलाचलं ॥६५॥'[१]
'न तेण भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो ।'[२]
गंभीरं झुसिरं चेव सव्विंदियसमाहिए ॥६६॥
निस्सेणि फलगं पीढं उस्सवित्ताणमारुहे ।
मंचं कीलं च पासायं समणट्ठाए व दावए ॥६७॥
दुरूहमाणी[३] पवडेज्जा हत्थं पायं व लूसए ।
पुढविजीवे[४] वि हिंसेज्जा जे य[५] तन्निस्सिया जगा ॥६८॥
'एयारिसे महादोसे जाणिऊण महेसिणो ।'[६]
तम्हा[७] मालोहडं भिक्खं न 'पडिगेण्हंति संजया'[८] ॥६९॥
कंदं मूलं पलंबं वा आमं छिन्नं व सन्निरं ।
तुंबागं सिंगबेरं च आमगं परिवज्जए ॥७०॥
तहेव सत्तुचुण्णाइं कोलचुण्णाइं आवणे ।
सक्कुलिं फाणियं पूयं अन्नं वा वि तहाविहं ॥७१॥
विक्कायमाणं पसढं रएण परिफासियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७२॥

१—अगस्त्य चूर्णि में यह श्लोक यहाँ नहीं है। किन्तु इसी उद्देशक के छठे श्लोक के पश्चात् है।
२—६६वें श्लोक के प्रथप दो चरण अगस्त्य चूर्णि मे व्याख्यात नहीं हैं।
३—दुरूहमाणे (अ)।
४—पुढवि-काय (अ, ज,)
५—वा (अ)।
६—६९वें श्लोक के प्रथम दो चरण अगस्त्य चूर्णि मे व्याख्यात नहीं हैं।
७—हदि (हा)।
८—पडिगाहेज्ज सजए (अ)।

बहु-अट्ठियं पुग्गलं अणिमिसं वा बहु-कंटयं ।
अत्थियं तिंदुयं बिल्लं उच्छुखंडं व[1] सिंबलिं ॥७३॥
अप्पे सिया भोयणजाए बहु-उज्झिय-धम्मिए ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७४॥
तहेवुच्चावयं पाणं अदुवा वारधोयणं ।
संसेइमं चाउलोदगं अहुणाधोयं विवज्जए ॥७५॥
जं जाणेज्ज चिराधोयं मईए दंसणेण वा ।
पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा जं च निस्संकियं भवे ॥७६॥
अजीवं परिणयं नच्चा पडिगाहेज्ज संजए ।
अह संकियं भवेज्जा आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥
थोवमासायणट्ठाए हत्थगम्मि दलाहि मे ।
मा मे अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ॥७८॥
तं च अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७९॥
तं च होज्ज अकामेणं विमणेण पडिच्छियं ।
तं 'अप्पणा न पिबे'[2] नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥
एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प[3] पडिक्कमे ॥८१॥
सिया य गोयरग्गगओ इच्छेज्जा परिभोत्तुयं ।
कोट्ठगं भित्तिमूलं वा पडिलेहित्ताण फासुयं ॥८२॥
अणुन्नवेत्तु मेहावी पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ भुंजेज्ज संजए ॥८३॥

१—च (क, ख, घ) ।
२—अप्पणा वि न पिबे अ) ।
३—पडिट्ठप्प (ह) ।

तत्थ से भुंजमाणस्स अट्ठियं कंटओ सिया ।
तण-कट्ठ-सक्करं वा वि अन्नं 'वा वि'[1] तहाविहं ॥८४॥
तं उक्खिवित्तु न निक्खिवे आसएण न छड्डुए ।
हत्थेण तं गहेऊणं एगंतमवक्कमे ॥८५॥
एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प[2] पडिक्कमे ॥८६॥
सिया य भिक्खू इच्छेज्जा सेज्जमागम्म भोत्तुयं ।
सपिंडपायमागम्म उंडुय[3] पडिलेहिया ॥८७॥
विणएण पविसित्ता सगासे गुरुणो मुणी ।
इरियावहियमायाय[4] आगओ य पडिक्कमे ॥८८॥
आभोएत्ताण नीसेसं अइयारं[5] जहक्कमं ।
गमणागमणे चेव भत्तपाणे व[6] संजए ॥८९॥
उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
आलोए गुरुसगासे जं जहा गहियं भवे ॥९०॥
न सम्ममालोइयं होज्जा पुव्विं पच्छा व जं कडं ।
पुणो पडिक्कमे तस्स वोसट्ठो चिंतए इमं ॥९१॥
अहो जिणेहि असावज्जा वित्ती साहूण देसिया ।
मोक्खसाहणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥९२॥
नमोक्कारेण पारेत्ता करेत्ता जिणसंथवं ।
सज्झायं पट्ठवेत्ताणं वीसमेज्ज खणं मुणी ॥९३॥

१—चापि (ह) ।
२—पडिहुप्प (ह) ।
३—उण्णय (अ) ।
४—°मायाए (ख) ।
५—अइयारं च (क, ग, घ, ह) ।
६—य (क, ख, ग, घ, ह) ।

वीसमंतो इमं चिंते हियमट्ठं लाभमट्ठिओ ।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा साहू होज्जामि तारिओ ॥९४॥
साहवो तो चियत्तेणं निमंतेज्ज जहक्कमं ।
जइ तत्थ केइ[1] इच्छेज्जा तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥९५॥
अह कोइ न इच्छेज्जा तओ भुंजेज्ज एक्कओ ।
आलोए[2] भायणे साहू जयं 'अपरिसाडयं'[3] ॥९६॥
तित्तगं व कडुयं व कसायं
अंबिलं व[4] महुरं लवणं वा ।
एय लद्धमन्नट्ठ-पउत्तं
महु-घयं व भुंजेज्ज संजए ॥९७॥
अरसं विरसं वा वि सूइयं[5] वा असूइयं ।
उल्लं वा जइ वा सुक्कं मन्थु-कुम्मास-भोयणं ॥९८॥
उप्पण्णं नाइहीलेज्जा अप्पं पि[6] बहु फासुयं ।
मुहालद्धं मुहाजीवी भुंजेज्जा दोसवज्जियं ॥९९॥
दुल्लहा उ[7] मुहादाई मुहाजीवी वि दुल्लहा ।
मुहादाई मुहाजीवी दो वि गच्छंति सोग्गइं ॥१००॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—कोइ (अ) ।
२—आलोय (अ, ज) ।
३—अपरिसाडिय (क, ख, ग, घ, ज) ।
४—× (ग, घ) ।
५—सूविय (अ) ।
६—वा (क, ख, ग, घ, ह) ।
७—हु (अ) ।

पंचमं अज्झयणं

पिंडेसणा (बीओ उद्देसो)

पडिग्गहं संलिहित्ताणं लेव-मायाए[1] संजए ।
दुगंधं वा सुगंधं वा सव्वं भुंजे न छड्डुए[2] ॥ १ ॥
सेज्जा निसीहियाए समावन्नो व[3] गोयरे ।
अयावयट्ठा भोच्चाणं जइ तेणं न संथरे ॥ २ ॥
तओ कारणमुप्पन्ने भत्तपाणं गवेसए ।
विहिणा पुव्व-उत्तेण इमेण उत्तरेण य ॥ ३ ॥
कालेण निक्खमे भिक्खू 'कालेण य'[4] पडिक्कमे ।
अकालं च विवज्जेत्ता काले कालं समायरे ॥ ४ ॥
अकाले चरसि भिक्खू कालं न पडिलेहसि ।
अप्पाणं च किलामेसि सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ५ ॥
सइ काले चरे भिक्खू कुज्जा पुरिसकारियं ।
अलाभो त्ति न सोएज्जा तवो त्ति अहियासए ॥ ६ ॥
तहेवुच्चावया पाणा भत्तट्ठाए समागया ।
त-उज्जुयं न गच्छेज्जा जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥
गोयरग्ग-पविट्ठो उ[5] न निसीएज्ज कत्थई ।
कहं च न पबंधेज्जा चिट्ठित्ताण व संजए ॥ ८ ॥
अग्गलं फलिहं दारं कवाडं वा वि संजए ।
अवलंबिया न चिट्ठेज्जा गोयरग्गगओ मुणी ॥ ९ ॥

१—° -मायाय (ग) ; मादाय (अ) ; मायाइ (ख) ।
२—उज्झए (ह) ।
३—य (क, ख, ग) ।
४—कालेणे व (अ) ।
५—य (ग) ।

समणं माहणं वा वि किविणं वा वणीमगं ।
'उवसंकमंतं भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए'[1] ॥१०॥

तं अइक्कमित्तु[2] न पविसे न चिट्ठे 'चक्खु-गोयरे'[3] ।
"एगंतमवक्कमित्ता तत्थ चिट्ठेज्ज संजए'[1] ॥११॥

वणीमगस्स वा तस्स दायगस्सुभयस्स वा ।
अप्पत्तियं सिया होज्जा लहुत्तं[4] पवयणस्स वा ॥१२॥

पडिसेहिए व दिन्ने[5] वा तओ तम्मि नियत्तिए ।
उवसंकमेज्ज भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए ॥१३॥

उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं ।
अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च संलुंचिया दए ॥१४॥

'तं भवे'[6] भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१५॥

उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं ।
अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च सम्मद्दिया दए ॥१६॥

'तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं'[7] ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१७॥

सालुयं वा विरालियं कुमुदुप्पलनालियं[8] ।
मुणालियं सासवनालियं उच्छुखंडं अनिव्वुडं ॥१८॥

१—अगस्त्य चूर्णि में दस और ग्यारह श्लोक के अन्तिम दो-दो चरण व्याख्यात नहीं हैं ।
२—अइक्कम्म (अ) ।
३—चक्खु-फासओ (अ) ।
४—लहुयत्त (घ) ।
५—दिन्नं (अ) ।
६—तारिसं (ह) ; एतस्स सिलोगस्स प्रागेण पच्चद्धध पढंति (अ) ।
७—अगस्त्य चूर्णि मे ये दो चरण व्याख्यात नहीं हैं ।
८—कुमुयं उप्पल° (क, ख, ग, घ) ।

तरुणगं वा पवालं रुक्खस्स तणगस्स वा ।
अन्नस्स वा वि हरियस्स आमगं परिवज्जए ॥१९॥

तरुणियं व छिवाडि आमियं भज्जियं सइं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥

तहा कोलमणुस्सिन्नं वेलुयं कासवनालियं ।
तिलपप्पडगं नीमं आमगं परिवज्जए ॥२१॥

तहेव चाउलं पिट्ठं वियडं वा तत्तनिव्वुडं ।
तिलपिट्ठ पूइ पिन्नागं आमगं परिवज्जए ॥२२॥

कविट्ठं माउलिंगं च मूलगं 'मूलगत्तियं'[1] ।
आमं असत्थपरिणयं मणसा वि न पत्थए ॥२३॥

तहेव फलमंथूणि बीयमंथूणि जाणिया ।
बिहेलगं पियालं च आमगं परिवज्जए ॥२४॥

समुयाणं चरे भिक्खू कुलं उच्चावयं सया ।
नीयं कुलमइक्कम्म ऊसढं नाभिधारए ॥२५॥

अदीणो वित्तिमेसेज्जा न विसीएज्ज पंडिए ।
अमुच्छिओ भोयणम्मि मायन्ने एसणारए ॥२६॥

बहुं परघरे अत्थि विविहं खाइमसाइमं ।
न तत्थ पंडिओ कुप्पे इच्छा देज्ज परो न वा ॥२७॥

सयणासण वत्थं वा भत्तपाणं व संजए ।
अदेंतस्स न कुप्पेज्जा पच्चक्खे वि य दीसओ ॥२८॥

इत्थियं पुरिसं वा वि डहरं वा महल्लगं ।
वंदमाणो[2] न जाएज्जा नो य णं फरुसं वए ॥२९॥

१—मूलवत्तिय (घ, ह) ।
२—वंदमाणं (अ, क, ख, ग, घ, ज, ह) ; वंदमाणो (आ, जा, ह) ।

जे न वंदे न से कुप्पे वंदिओ न समुक्कसे ।
एवमन्नेसमाणस्स सामण्णमणुचिट्ठई ॥३०॥
सिया एगइओ लद्धुं[1] लोभेण विणिगूहई ।
मा मेयं दाइयं संतं दट्ठूणं सयमायए ॥३१॥
अत्तट्ठगुरुओ लुद्धो बहुं पावं पकुव्वई ।
दुत्तोसओ य से होइ निव्वाणं च न गच्छई ॥३२॥
सिया एगइओ लद्धुं विविहं पाणभोयणं ।
भद्दगं भद्दगं भोच्चा विवण्णं विरसमाहरे ॥३३॥
जाणंतु ता इमे समणा आययट्ठी अयं मुणी ।
संतुट्ठो सेवई पंतं लूहवित्ती सुतोसओ ॥३४॥
पूयणट्ठी[2] जसोकामी माणसम्माणकामए ।
बहुं पसवई पावं मायासल्लं च कुव्वई[3] ॥३५॥
सुरं वा मेरगं वा वि अन्नं वा मज्जगं रसं ।
ससक्खं न पिबे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो ॥३६॥
पिया एगइओ तेणो न मे कोइ वियाणई ।
तस्स पस्सह दोसाइं नियडिं च सुणेह मे ॥३७॥
वड्ढई सोंडिया तस्स मायमोसं च भिक्खुणो ।
अयसो य अनिव्वाणं[4] सययं च असाहुया ॥३८॥
निच्चुव्विग्गो जहा तेणो अत्तकम्मेहि दुम्मई ।
तारिसो मरणंते वि नाराहेइ संवरं ॥३९॥
आयरिए नाराहेइ समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि णं गरहंति जेण जाणंति तारिसं ॥४०॥

१—लद्धं (ख)।
२—पूयणट्ठा (क. ख. ग. घ. ह)।
३—पकुव्वइ (ख); वि कुव्वइ (ग)।
४—अनिव्वाणो (ग)।

'एवं तु अगुणप्पेही गुणाणं च विवज्जओ ।
तारिसो मरणंते वि नाराहेइ संवरं ॥४१॥'[1]

तवं कुव्वइ मेहावी पणीयं वज्जए रसं ।
मज्जप्पमायविरओ तवस्सी अइउक्कसो ॥४२॥

तस्स पस्सह कल्लाणं अणेगसाहुपूइयं[2] ।
विउलं अत्थसंजुत्तं कित्तइस्सं सुणेह मे ॥४३॥

एवं 'तु गुणप्पेही'[3] अगुणाणं 'च विवज्जओ'[4] ।
तारिसो मरणंते वि आराहेइ संवरं ॥४४॥

आयरिए आराहेइ समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि णं पूयंति जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥

तवतेणे वयतेणे रूवतेणे य जे नरे ।
आयारभावतेणे य कुव्वइ देवकिब्बिसं ॥४६॥

लद्धूण वि देवत्तं उववन्नो देवकिब्बिसे ।
तत्था वि से न याणाइ किं मे किच्चा इमं फलं ? ॥४७॥

तत्तो वि से चइत्ताणं लब्भिही एलमूययं ।
नरयं तिरिक्खजोणिं वा बोही जत्थ सुदुल्लहा ॥४८॥

एयं च दोस दट्ठूणं नायपुत्तेण भासियं ।
अणुमाय पि मेहावी मायामोसं विवज्जए ॥४९॥

१—यह श्लोक चूर्णिद्वय में व्याख्यात नहीं है ।
२—अणेग० (ज) ।
३—स गुणप्पेही (ह) ; अगुणप्पेही (जा) ।
४—विवज्जए (अ, क, जा) ।

सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं
संजयाण बुद्धाण सगासे।
तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिंदिए
तिव्वलज्ज गुणवं विहरेज्जासि ॥५०॥
—त्ति बेमि ॥

सुर... ...ं वा मज्ज...
ससक्खं न पिबे ... सारक्खमप्पण...
पिया एगइ ... कोइ विय...
तस्स पस्सह ... ...
वड्ढई सोंडिया तस्स म...
अयसो य अनिव्वाणं[4] स...
निच्चुव्विग्गो जहा तेणो ...
तारिसो मरणंते ...
आयरिए ...
गिहत्था वि...

१—लद्धं (ख)।
२—पूयणट्ठा (क, ख...
३—पकुव्वइ (ख)
४—अनिव्वाणी (...

छट्ठमज्झयणं

महायारकहा

नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
गणिमागमसंपन्नं उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥

रायाणो रायमच्चा य माहणा अदुव खत्तिया ।
पुच्छंति निहुअप्पाणो कहं भे आयारगोयरो ? ॥२॥

तेसिं सो निहुओ दंतो सव्वभूयसुहावहो ।
सिक्खाए सुसमाउत्तो आइक्खइ वियक्खणो ॥ ३ ॥

हंदि धम्मत्थकामाणं निग्गंथाणं सुणेह मे ।
आयारगोयरं भीमं सयलं दुरहिट्ठियं ॥ ४ ॥

नन्नत्थ एरिसं वुत्तं जं लोए परमदुच्चरं ।
विउलट्ठाणभाइस्स[1] न भूयं न भविस्सई ॥ ५ ॥

सखुड्डगवियत्ताणं वाहियाणं च जे गुणा ।
अखंडफुडिया[2] कायव्वा तं सुणेह जहा तहा ॥ ६ ॥

दस अट्ठ य ठाणाइं जाइं बालोऽवरज्झई ।
तत्थ अन्नयरे ठाणे निग्गंथत्ताओ भस्सई ॥ ७ ॥

[वयछक्कं कायछक्कं अकप्पो गिहिभायणं ।
पलियंक निसेज्जा य सिणाणं सोहवज्जणं ॥][3]

१—°भाविस्स (ऊ) ।
२—°फुडा (उ) : °फुल्ला (ऊ) ।
३—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है किन्तु चूर्णिद्वय व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

तत्थिमं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं ।
अहिंसा निउणं[1] दिट्ठा सव्वभूएसु[2] संजमो ॥ ८ ॥

जावंति लोए पाणा तसा अदुव थावरा ।
ते जाणमजाणं वा न हणे णो वि[3] घायए ॥ ९ ॥

सव्वे[4] जीवा वि इच्छन्ति जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणवहं[5] घोरं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥१०॥

अप्पणट्ठा परट्ठा वा कोहा वा जइ वा भया ।
हिंसगं न मुसं बूया नो वि अन्नं वयावए ॥११॥

मुसावाओ य लोगम्मि सव्वसाहूहिं गरहिओ ।
अविस्सासो य भूयाणं तम्हा मोसं विवज्जए ॥१२॥

चित्तमंतमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं ।
दंतसोहणमेत्त पि ओग्गहंसि अजाइया ॥१३॥

तं अप्पणा न गेण्हंति नो वि गेण्हावए परं ।
अन्नं वा गेण्हमाणं पि 'नाणुजाणंति संजया'[6] ॥१४॥

अबंभचरियं घोरं पमायं दुरहिट्ठियं ।
नायरंति मुणी लोए भेयाययणवज्जिणो ॥१५॥

मूलमेयमहम्मस्स महादोससमुस्सयं ।
तम्हा मेहुणसंसग्गिं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥१६॥

१—निउणा (क, ख, ग, घ, ज, ह) ।
२—°जीवेसु (आ, ज) ।
३—व (क, ख, ग) ।
४—सव्व (अ, ख) ।
५—पाणिवहं (क, ग, घ) ।
६—नाणुजाणेज्ज संजए (अ) ।

बिडमुब्भेइमं[1] लोणं तेल्लं सप्पिं च फाणियं ।
न ते सन्निहिमिच्छन्ति नायपुत्तवओरया ॥१७॥

लोभस्सेसो अणुफासो मन्ने अन्नयरामवि ।
जे सिया सन्निहीकामे गिही पव्वइए न से ॥१८॥

जं पि वत्थं व पायं वा कंबलं पायपुंछणं ।
तं पि संजमलज्जट्ठा धारंति परिहरंति य ॥१९॥

न सो परिग्गहो वुत्तो नायपुत्तेण ताइणा ।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इइ वुत्तं महेसिणा ॥२०॥

सव्वत्थुवहिणा बुद्धा संरक्खणपरिग्गहे ।
अवि अप्पणो वि देहम्मि नायरंति ममाइयं ॥२१॥

अहो निच्चं तवोकम्मं सव्वबुद्धेहिं वण्णियं ।
जा य[2] लज्जासमा वित्ती एगभत्तं च भोयणं ॥२२॥

संतिमे सुहुमा पाणा तसा अदुव थावरा ।
जाइं राओ अपासंतो कहमेसणियं चरे? ॥२३॥

उदउल्लं बीयसंसत्तं पाणा निवडिया महिं ।
दिया ताइं विवज्जेज्जा राओ तत्थ कहं चरे? ॥२४॥

एयं च दोसं दट्ठूणं नायपुत्तेण भासियं ।
सव्वाहारं न भुंजंति निग्गंथा राइभोयणं ॥२५॥

पुढविकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥२६॥

पुढविकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥२७॥

१—पिंडमुब्भे° (अ)।
२—व (अ)।

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
पुढविकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥२८॥
आउकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥२९॥
आउकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥३०॥
तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
आउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३१॥
जायतेयं न इच्छंति पावगं जलइत्तए ।
तिक्खमन्नयरं सत्थं सव्वओ वि दुरासयं ॥३२॥
पाईणं पडिणं वा वि उड्ढं अणुदिसामवि ।
अहे दाहिणओ वा वि दहे उत्तरओ वि य ॥३३॥
भूयाणमेसमाघाओ हव्ववाहो न संसओ ।
तं पईवपयावट्ठा[1] संजया किंचि नारभे ॥३४॥
तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
तेउकायसमारंभं[2] जावज्जीवाए वज्जए ॥३५॥
अनिलस्स समारंभं बुद्धा मन्नंति तारिसं ।
सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥३६॥
तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
न ते वीइउमिच्छन्ति वीयावेऊण वा परं[3] ॥३७॥
जंपि वत्थं व पायं वा कंबलं पायपुंछणं ।
न ते वायमुईरंति[4] जयं परिहरंति य ॥३८॥

१— ° वियावट्ठा (अ) ।
२—अगणिकाय ° (क, घ) ।
३—ना वि वीयावए पर (क) ।
४—वाउ ° (ख, घ) ।

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३९॥

वणस्सइं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥४०॥

वणस्सइं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४१॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वणस्सइसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४२॥

तसकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥४३॥

तसकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४४॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
तसकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४५॥

जाइं चत्तारिऽभोज्जाइं इसिणाहारमाईणि[1] ।
ताइं तु विवज्जंतो संजमं अणुपालए ॥४६॥

पिंडं सेज्जं च वत्थं च चउत्थं पायमेव य ।
अकप्पियं न इच्छेज्जा पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥४७॥

जे नियागं ममायंति कीयमुद्देसियाहडं ।
वहं ते समणुजाणंति इइ वुत्तं महेसिणा ॥४८॥

तम्हा असणपाणाइं कीयमुद्देसियाहडं ।
वज्जयंति ठियप्पाणो निग्गंथा धम्मजीविणो ॥४९॥

१—असणा० (ख)।

कंसेसु कंसपाएसु 'कुंडमोएसु'[1] वा पुणो।
भुंजंतो असणपाणाइं आयारा परिभस्सइ ॥५०॥

सीओदगसमारंभे मत्तधोयणछड्डणे।
जाइं छन्नंति[2] भूयाइं दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥५१॥

पच्छाकम्मं पुरेकम्मं सिया तत्थ न कप्पई।
एयमट्ठं न भुंजंति निग्गंथा गिहिभायणे ॥५२॥

आसंदीपलियंकेसु मंचमासालएसु वा।
अणायरियमज्जाणं आसइत्तु सइत्तु वा ॥५३॥

'नासंदीपलियंकेसु न निसेज्जा न पीढए।
निग्गंथाऽपडिलेहाए बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥५४॥'[3]

गंभीरविजया एए पाणा दुप्पडिलेहगा।
आसंदीपलियंका[4] य एयमट्ठं विवज्जिया ॥५५॥

गोयरग्गपविट्ठस्स निसेज्जा जस्स कप्पई।
इमेरिसमणायारं आवज्जइ अबोहियं ॥५६॥

विवत्ती बंभचेरस्स पाणाणं अवहे[5] वहो।
वणीमगपडिग्घाओ पडिकोहो अगारिणं ॥५७॥

अगुत्ती बंभचेरस्स इत्थीओ यावि[6] संकणं।
कुसीलवड्ढणं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥५८॥

१—कुंडकोसेसु (आ. जा)।
२—छिन्नति (क, ख, ग) : खिप्पति (ह)।
३—'णसंदीपलियंकेसु' एस सिलोगो केसिंचि णेव अत्थि (अ) ; जिनदास चूर्णि में भी यह श्लोक व्याख्यात नहीं है।
४—° पलियंको (क, ग) ; ° पलियके (ख)।
५—च वहे (क, ख, ग, घ, ह)।
६—वावि (अ, क, ख, ग, ज)।

तिण्हमन्नयरागस्स निसेज्जा जस्स कप्पई ।
जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥५९॥

वाहिओ वा अरोगी वा सिणाणं जो उ पत्थए ।
वोक्कंतो होइ आयारो जढो हवइ संजमो ॥६०॥

संतिमे सुहुमा पाणा घसासु भिलुगासु य ।
जे उ[1] भिक्खू सिणायंतो वियडेणुप्पिलावए ॥६१॥

तम्हा ते न सिणायंति सीएण उसिणेण वा ।
जावज्जीवं वयं घोरं असिणाणमहिट्ठगा ॥६२॥

सिणाणं अदुवा कक्कं लोद्धं पउमगाणि य ।
गायस्सुव्वट्टणट्ठाए नायरंति कयाइ वि ॥६३॥

नगिणस्स वा वि मुंडस्स दीहरोमनहंसिणो ।
मेहुणा उवसंतस्स किं विभूसाए कारियं? ॥६४॥

विभूसावत्तियं भिक्खू कम्मं बंधइ चिक्कणं ।
संसारसायरे घोरे जेणं पडइ[2] दुरुत्तरे ॥६५॥

विभूसावत्तियं चेयं बुद्धा मन्नंति तारिसं ।
सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥६६॥

खवेंति अप्पाणममोहदंसिणो
तवे रया संजम अज्जवे गुणे ।
धुणंति पावाइं पुरेकडाइं
नवाइ पावाइं न ते करेंति ॥६७॥

१—य (ख)।
२—भपइ (अ)।

सत्तमज्झयणं

वक्कसुद्धि

चउण्हं खलु भासाणं परिसंखाय पन्नवं ।
दोण्हं तु विणयं[1] सिक्खे दो न भासेज्ज सव्वसो ॥ १ ॥
जा य[2] सच्चा अवत्तव्वा सच्चामोसा य जा मुसा ।
जा य बुद्धेहिंऽणाइन्ना न तं भासेज्ज पन्नवं ॥ २ ॥
असच्चमोसं सच्चं च अणवज्जमकक्कसं ।
समुप्पेहमसंदिद्धं गिरं भासेज्ज पन्नवं ॥ ३ ॥
एयं च अट्ठमन्नं वा जं तु नामेइ सासयं ।
स भासं सच्चमोसं पि[3] तं पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
वितहं पि तहामुत्ति जं गिरं भासए नरो ।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं किंपुण जो मुसं वए ? ॥ ५ ॥
तम्हा गच्छामो वक्खामो अमुगं वा णे भविस्सई ।
अहं वा णं करिस्सामि एसो वा णं करिस्सई ॥ ६ ॥
एवमाई उ जा भासा एसकालम्मि संकिया ।
संपयाईयमट्ठे वा तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥
'अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए ।
जमट्ठं तु न जाणेज्जा एवमेयं ति नो वए ॥ ८ ॥
अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए ।
जत्थ संका भवे तं तु एवमेयं ति नो वए ॥ ९ ॥

१—विजय (अ) ; विनय (आ) ।
२—जा (अ) ।
३—च (ख) ।

अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए ।
निस्संकियं भवे जं तु 'एवमेयं ति निद्दिसे'[1] ॥१०॥[2]

तहेव फरुसा भासा गुरुभूओवघाइणी ।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा जओ पावस्स आगमो ॥११॥

तहेव काणं काणे त्ति पंडगं पंडगे त्ति वा ।
वाहियं वा वि रोगि त्ति तेणं चोरे त्ति नो वए ॥१२॥

एएणन्नेण वट्ठेण[3] परो जेणुवहम्मई ।
आयारभावदोसन्नू[4] न तं भासेज्ज पन्नवं ॥१३॥

तहेव होले गोले त्ति साणे वा वसुले त्ति य ।
दमए दुहए वा[5] वि नेवं[6] भासेज्ज पन्नवं ॥१४॥

अज्जिए पज्जिए वा वि अम्मो माउस्सिय त्ति य ।
पिउस्सिए भाइणेज्ज त्ति धूए नत्तुणिए त्ति य ॥१५॥

हले हले त्ति अन्ने त्ति भट्टे सामिणि गोमिणि ।
होले गोले वसुले त्ति इत्थियं नेवमालवे ॥१६॥

१—थेव थेवं तु निद्दिसे (हा)।

२—श्लोक ८, ९ व १० के स्थान पर चूर्णिद्वय में निम्न श्लोक हैं :—

तहेवणागतं अट्ठं जं वण्ण मणु(ण) व धारियं ।
संकितं पडुपण्णं वा 'एवमेयं' ति णो वदे ॥ ८ ॥
तहेवणागतं अट्ठं जं वण्ण मु(न) व धारियं ।
णीसंकितं पडुपण्णं थाव थवाए णिद्दिसे ॥ ९ ॥ (अ)।
तं तहेव अइयंमि कालंमिणवधारियं ।
जं वण्णं संकियं वावि 'एवमेय' ति नो वए ॥ ८ ॥
तहेवाणागयं अट्ठं जं होइ उवहारियं ।
निस्संकियं पडुप्पन्ने 'एवमेयं' ति निद्दिसे ॥ ९ ॥ (जि)।

३—वट्ठेण (क. ख. ग, घ)।

४—°दोसेन (ख)।

५—वा (ह)।

६—नेयं (ख)।

नामधिज्जेण णं बूया इत्थीगोत्तेण वा पुणो।
जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥१७॥

अज्जए पज्जए वा वि बप्पो चुल्लपिउ त्ति य।
माउला भाइणेज्ज त्ति पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥१८॥

हे हो हले त्ति अन्ने त्ति भट्टा सामिय गोमिए।
होल गोल वसुले त्ति पुरिसं नेवमालवे ॥१९॥

नामधेज्जेण णं बूया पुरिसगोत्तेण वा पुणो।
जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥२०॥

पंचिदियाण पाणाणं एस इत्थी अयं पुमं।
जाव णं न विजाणेज्जा ताव जाइ त्ति आलवे ॥२१॥

तहेव मणुस्सं पसुं पक्खि वा वि सरीसिवं।
थूले पमेइले वज्झे पाइमे त्ति य नो वए ॥२२॥

परिवुड्ढे त्ति णं बूया बूया उवचिए त्ति य।
संजाए पीणिए वा वि महाकाए त्ति आलवे ॥२३॥

तहेव गाओ दुज्झाओ दम्मा गोरहग त्ति य।
वाहिमा रहजोग त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२४॥

जुव गवे त्ति णं बूया धेणुं रसदय त्ति य।
रहस्से महल्लए[1] वा वि वए संवहणे त्ति य ॥२५॥

तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य।
रुक्खा महल्ल पेहाए नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२६॥

अलं पासायखंभाणं तोरणाणं गिहाण य।
फलिहग्गलनावाणं अलं उदगदोणिणं ॥२७॥

१—महव्वए (अ, ज)।

पीढए चंगबेरे य नंगले मइयं सिया ।
जंतलट्ठी व नाभी वा गंडिया[1] व अलं सिया ॥२८॥

आसणं सयणं जाणं होज्जा वा 'किंचुवस्सए'[2] ।
भूओवघाइणिं भासं नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२९॥

तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य ।
रुक्खा महल्ल पेहाए एवं भासेज्ज पन्नवं ॥३०॥

जाइमंता इमे रुक्खा दीहवट्टा महालया ।
पयायसाला विडिमा[3] वए दरिसणि त्ति य ॥३१॥

तहा फलाइं पक्काइं पायखज्जाइं नो वए ।
वेलोइयाइं टालाइं वेहिमाइ त्ति नो वए ॥३२॥

असंथडा इमे अंबा बहुनिवट्टिमा फला ।
वएज्ज बहुसंभूया भूयरूव त्ति वा पुणो ॥३३॥

तहेवोसहीओ पक्काओ नीलियाओ छवीइय ।
लाइमा भज्जिमाओ त्ति पिहुखज्ज त्ति नो वए ॥३४॥

रूढा[4] बहुसंभूया थिरा ऊसढा[5] वि य ।
गब्भियाओ पसूयाओ ससाराओ[6] त्ति आलवे ॥३५॥

तहेव संखडिं नच्चा 'किच्चं कज्जं'[7] ति नो वए ।
तेणगं वा वि वज्झे त्ति सुतित्थ त्ति य आवगा ॥३६॥

१—दड्डिया (क, ख, ग) ।
२—किं तुवस्सए (ख) ।
३—पडिमा (ख) ।
४—विरूढा (ज) ।
५—उस्सडा (अ), उस्सिया (ज) ।
६—ससाराओ (ह) ।
७—करणिजति (घ) ।

संखडिं संखडिं बूया 'पणियट्ठ त्ति'[1] तेणगं ।
बहुसमाणि तित्थाणि आवगाणं वियागरे ॥३७॥
तहा नईओ पुण्णाओ 'कायतिज्ज त्ति'[2] नो वए ।
नावाहिं तारिमाओ त्ति पाणिपेज्ज त्ति नो वए ॥३८॥
बहुवाहडा अगाहा बहुसलिलुप्पिलोदगा ।
बहुवित्थडोदगा यावि एवं भासेज्ज पन्नवं ॥३९॥[3]
तहेव सावज्जं जोगं परस्सट्ठाए निट्ठियं ।
कीरमाणं ति वा नच्चा सावज्जं न लवे मुणी ॥४०॥
सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुछिन्ने सुहडे मडे ।
सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥४१॥
पयत्तपक्के त्ति व पक्कमालवे ।
पयत्तछिन्न त्ति व छिन्नमालवे ।
पयत्तलट्ठ त्ति व कम्महेउयं,
'पहारगाढ'[4] त्ति व गाढमालवे ॥४२॥
सव्वुक्कसं परग्घं वा अउलं नत्थि एरिसं ।
अविक्कियमवत्तव्वं[5] अचियत्तं चेव नो वए ॥४३॥
सव्वमेयं वइस्सामि सव्वमेयं त्ति नो वए ।
अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ एवं भासेज्ज पन्नवं ॥४४॥
सुक्कीयं वा सुविक्कीयं अकेज्जं केज्जमेव वा ।
इमं गेण्ह इमं मुंच पणियं नो वियागरे ॥४५॥

१—पणियट्ठ त्ति (ख, ग, घ) ।
२—काय-पेज्जति (अ) , काय-तेज्जति (आ) , काय-पेज्जति (जा) ।
३—अगस्त्य चूर्णि में श्लोक ३६, ३७ के स्थान में ३८, ३९ और ३८, ३९ के स्थान में ३६, ३७ इस प्रकार दो श्लोकों का व्यत्यय है ।
४—गाढप्पहार (अ, ज, ह) ।
५—अचक्किय° (ख, ग) ; अवक्किय° (अ) ।

अप्पग्घे वा महग्घे वा कए वा विक्कए वि वा ।
पणियट्ठे समुप्पन्ने अणवज्जं वियागरे ॥४६॥

तहेवासंजयं धीरो आस एहि करेहि वा ।
सय चिट्ठ वयाहि त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥४७॥

बहवे इमे असाहू लोए वुच्चंति साहुणो ।
न लवे असाहुं साहु त्ति साहुं साहु त्ति आलवे ॥४८॥

नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
एवं गुणसमाउत्तं संजयं साहुमालवे ॥४९॥

देवाणं मणुयाणं च तिरियाणं च वुग्गहे[1] ।
अमुयाणं जओ होउ मा वा होउ त्ति नो वए ॥५०॥

वाओ वुट्ठं व सीउण्हं खेमं धायं सिवं ति वा ।
कया णु होज्ज एयाणि मा वा होउ त्ति नो वए ॥५१॥

तहेव मेहं व नहं व माणवं
न देव देव त्ति गिरं वएज्जा ।
समुच्छिए उन्नए वा पओए
वएज्ज वा वुट्ठ बलाहए त्ति ॥५२॥

अंतलिक्खे त्ति णं बूया गुज्झाणुचरिय त्ति य ।
रिद्धिमंतं नरं दिस्स रिद्धिमंतं ति आलवे ॥५३॥

तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा
ओहारिणी जा य परोवघाइणी ।
से कोह लोह भयसा[2] व माणवो[3]
न हासमाणो वि गिरं वएज्जा ॥५४॥

१—विग्गहे (ह) ।
२—भय-हास (ख, ज, ह) ।
३—माणवा (ख) ।

सवक्कसुद्धिं[1] समुपेहिया मुणी
गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया।
मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासए
सयाण मज्झे लहई पसंसणं ॥५५॥

भासाए दोसे य गुणे य जाणिया
तीसे य दुट्ठे परिवज्जए[2] सया।
छसु संजए सामणिए सया जए
वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ॥५६॥

परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए
चउक्कसायावगए अणिस्सिए।
स निद्धुणे धुन्नमलं पुरेकडं
आराहए लोगमिणं तहा परं ॥५७॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—सव्वक्क॰ (क, घ); सुव्वक्क॰ (ख, ग)।
२—विवज्जगो (अ)।

अट्ठमज्झयणं

आयारपणिही

अयारप्पणिहिं लद्धुं जहा कायव्व भिक्खुणा ।
तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥ १ ॥
पुढवि दग अगणि मारुय तणरुक्ख सबीयगा ।
तसा य पाणा जीव त्ति इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २ ॥
तेसिं अच्छणजोएण निच्चं होयव्वयं सिया ।
मणसा कायवक्केण एवं भवइ संजए ॥ ३ ॥
पुढविं भितिं सिलं लेलुं नेव भिंदे न संलिहे ।
तिविहेण करणजोएण संजए सुसमाहिए ॥ ४ ॥
सुद्धपुढवीए[1] न निसिए ससरक्खम्मि य आसणे ।
पमज्जित्तु निसीएज्जा जाइत्ता जस्स ओग्गहं ॥ ५ ॥
सीओदगं न सेवेज्जा सिलावुट्ठं[2] हिमाणि य ।
उसिणोदगं तत्तफासुयं पडिगाहेज्ज संजए ॥ ६ ॥
उदउल्लं अप्पणो कायं नेव पुंछे न संलिहे ।
समुप्पेह[3] तहाभूयं नो णं संघट्टए मुणी ॥ ७ ॥
इंगालं अगणि अच्चि अलायं व सजोइयं ।
न उंजेज्जा न घट्टेज्जा नो णं निव्वावए मुणी ॥ ८ ॥
तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
न वीएज्ज अप्पणो कायं बाहिरं वा वि पोग्गलं ॥ ९ ॥

१— ० पुढवी (ख) ।
२— ० वुट्ठिं (क, ख) ।
३—समुप्पेहे (अ, ज) ।

तणरुक्खं[1] न छिंदेज्जा फलं मूलं व कस्सई।
आमगं विविहं बीयं मणसा वि न पत्थए ॥१०॥

गहणेसु[2] न चिट्ठेज्जा बीएसु हरिएसु वा।
उदगम्मि तहा निच्चं उत्तिंगपणगेसु वा ॥११॥

तसे पाणे न हिंसेज्जा वाया अदुव कम्मुणा।
उवरओ सव्वभूएसु पासेज्ज विविहं जगं ॥१२॥

अट्ठ सुहुमाइं 'पेहाए'[3] 'जाइं जाणित्तु संजए'[4]।
दयाहिगारी भूएसु आस चिट्ठ सएहि वा ॥१३॥

कयराइं अट्ठ सुहुमाइं जाइं पुच्छेज्ज संजए।
इमाइं ताइं मेहावी आइक्खेज्ज वियक्खणो ॥१४॥

सिणेहं पुप्फसुहुमं च पाणुत्तिंगं तहेव य।
पणगं बीय हरियं च अंडसुहुमं च अट्ठमं ॥१५॥

एवमेयाणि जाणित्ता सव्वभावेण संजए।
अप्पमत्तो जए निच्चं सव्विंदियसमाहिए ॥१६॥

धुवं च पडिलेहेज्जा जोगसा पायकंबलं।
सेज्जमुच्चारभूमिं च संथारं अदुवासणं ॥१७॥

उच्चारं पासवणं खेलं सिंघाणजल्लियं।
फासुयं पडिलेहित्ता परिट्ठावेज्ज संजए ॥१८॥

पविसित्तु परागारं पाणट्ठा भोयणस्स वा।
जयं चिट्ठे मियं भासे ण[5] य रूवेसु मणं करे ॥१९॥

१—०रुक्खे (अ)।
२—गहणंमि (अ)।
३—मेहावी (अ)।
४—पडिलेहित्तु संजए (अ)।
५—णो (अ)।

बहुं सुणेइ कण्णेहिं बहुं अच्छीहिं पेच्छइ[1] ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥२०॥

सुयं वा जइ वा दिट्ठं न लवेज्जोवघाइयं ।
न य केणइ[2] उवाएणं गिहिजोगं समायरे ॥२१॥

निट्ठाणं रसनिज्जूढं भद्दगं पावगं ति वा ।
पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा लाभालाभं न निद्दिसे ॥२२॥

न य भोयणम्मि गिद्धो चरे उंछं अयंपिरो ।
अफासुयं न भुंजेज्जा कीयमुद्देसियाहडं ॥२३॥

सन्निहिं च न कुव्वेज्जा अणुमायं पि संजए ।
मुहाजीवी असंबद्धे हवेज्ज जगनिस्सिए ॥२४॥

लूहवित्ती सुसंतुट्ठे अप्पिच्छे सुहरे सिया ।
आसुरत्तं न गच्छेज्जा सोच्चाणं जिणसासणं ॥२५॥

कण्णसोक्खेहिं सद्देहिं पेमं नाभिनिवेसए ।
दारुणं कक्कसं फासं काएण अहियासए ॥२६॥

खुहं पिवासं दुस्सेज्जं सीउण्हं अरई भयं ।
अहियासे अव्वहिओ देहे[3] दुक्खं महाफलं ॥२७॥

अत्थंगयम्मि आइच्चे पुरत्था य अणुग्गए ।
आहारमइयं[4] सव्वं मणसा वि न पत्थए ॥२८॥

अतिंतिणे अचवले अप्पभासी[5] मियासणे ।
हवेज्ज उयरे दंते थोवं लद्धुं न खिंसए ॥२९॥

१—पासति (अ) ।
२—कोइ (ज) ; केण (ख, घ) ।
३—देह (क, ख, घ) ।
३—°माइयं (क) ।
५—°वादी (अ, ज) ।

न बाहिरं परिभवे अत्ताणं न समुक्कसे ।
सुयलाभे न मज्जेज्जा जच्चा तवसिबुद्धिए ॥३०॥

से जाणमजाणं वा कट्टु आहम्मियं पयं ।
संवरे खिप्पमप्पाणं बीयं तं न समायरे ॥३१॥

अणायारं परक्कम्म नेव गूहे न निण्हवे ।
सुई सया वियडभावे असंसत्ते जिइंदिए ॥३२॥

अमोहं वयणं कुज्जा आयरियस्स महप्पणो ।
तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ॥३३॥

अधुवं जीवियं नच्चा सिद्धिमग्गं वियाणिया ।
विणियट्टेज्ज[1] भोगेसु आउं परिमियमप्पणो ॥३४॥

[बलं थामं च पेहाए सद्धामारोगमप्पणो ।
खेत्तं कालं च विन्नाय तहप्पाणं निजुंजए ॥][2]

जरा जाव न पीलेइ वाही जाव न वड्ढई ।
जाविंदिया न हायंति ताव धम्मं समायरे ॥३५॥

कोहं माणं च मायं च लोभं च पापवड्ढणं ।
वमे चत्तारि दोसे उ इच्छंतो हियमप्पणो ॥३६॥

कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो ।
माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्वविणासणो ॥३७॥

उवसमेण हणे कोहं माणं मद्दवया जिणे ।
मायं चज्जवभावेण लोभं संतोसओ[3] जिणे ॥३८॥

१—विणिव्विज्जेज्ज (अ) ।
२—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है, किन्तु चूर्णि व टीका में व्याख्यात नहीं है ।
३—सतुट्ठिए (ज) ।

कोहो य माणो य अणिग्गहीया
माया य लोभो य पवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया
सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥३९॥

राइणिएसु विणयं पउंजे
धुवसीलयं सययं न हावएज्जा।
कुम्मो व्व अल्लीणपलीणगुत्तो
परक्कमेज्जा तवसंजमम्मि ॥४०॥

निद्दं च न बहुमन्नेज्जा संपहासं[1] विवज्जए।
मिहोकहाहिं न रमे सज्झायम्मि[2] रओ सया ॥४१॥

जोगं च समणधम्मम्मि[3] जुंजे अणलसो धुवं।
जुत्तो य समणधम्मम्मि अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥४२॥

इहलोगपारत्तहियं जेण गच्छइ सोग्गइं।
बहुस्सुयं पज्जुवासेज्जा पुच्छेज्जत्थ विणिच्छयं ॥४३॥

हत्थं पायं च कायं च पणिहाय जिइंदिए।
अल्लीणगुत्तो निसिए सगासे गुरुणो मुणी ॥४४॥

न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ।
न य ऊरुं समासेज्जा चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए ॥४५॥

अपुच्छिओ न भासेज्जा भासमाणस्स अंतरा।
पिट्ठिमंसं न खाएज्जा मायामोसं विवज्जए ॥४६॥

अप्पत्तियं जेण सिया आसु कुप्पेज्ज वा परो।
सव्वसो तं न भासेज्जा भासं अहियगामिणिं[4] ॥४७॥

१—सप्पहास (क, ख, ग, घ, ह)।
२—अज्झयणम्मि (ज)।
३—° धम्मस्स (अ)।
४—° गामिणी (अ)।

दिट्ठं मियं असंदिद्धं पडिपुन्नं वियंजियं ।
अयंपिरमणुव्विग्गं भासं निसिर अत्तवं ॥४८॥
आयारपन्नत्तिधरं दिट्ठिवायमहिज्जगं ।
वइविक्खलियं नच्चा न तं उवहसे मुणी ॥४९॥
नक्खत्तं सुमिणं जोगं निमित्तं मंत भेसजं ।
गिहिणो तं न आइक्खे भूयाहिगरणं पयं ॥५०॥
अन्नट्ठं पगडं लयणं भएज्ज सयणासणं ।
उच्चारभूमिसंपन्नं इत्थीपसुविवज्जियं ॥५१॥
विवित्ता य भवे सेज्जा नारीणं न लवे कहं ।
गिहिसंथवं न कुज्जा कुज्जा साहूहिं संथवं ॥५२॥
जहा कुक्कुडपोयस्स निच्चं कुललओ भयं ।
एवं खु बंभयारिस्स इत्थीविग्गहओ भयं ॥५३॥
चित्तभित्तिं न निज्झाए नारिं वा सुअलंकियं ।
भक्खरं पिव दट्ठूणं दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥५४॥
हत्थपायपडिच्छिन्नं कण्णनासविगप्पियं ।
अवि वाससइं नारिं 'बंभयारी विवज्जए'[1] ॥५५॥
विभूसा इत्थिसंसग्गी पणीयरसभोयणं[2] ।
नरस्सत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥५६॥
अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं[3] ।
इत्थीणं तं न निज्झाए कामरागविवड्ढणं ॥५७॥
विसएसु मणुन्नेसु पेमं नाभिनिवेसए ।
अणिच्चं तेसिं विन्नाय परिणामंपोग्गलाण उ[4] ॥५८॥

१—दूरओ परिवज्जए (ज) ।
२—पणीय रसं (क, ख, ग) ।
३—चारुलविय० (अ, ज) ।
४—य (क, ख, ग, घ) ।

पोग्गलाण परीणामं तेसिं नच्चा जहा तहा ।
विणीयतण्हो विहरे सीईभूएण अप्पणा ॥५९॥
जाए सद्धाए निक्खंतो परियायट्ठाणमुत्तमं ।
तमेव अणुपालेज्जा गुणे आयरियसम्मए ॥६०॥
तवं चिमं संजमजोगयं[1] च
सज्झायजोगं च सया अहिट्ठए ।
सूरे व सेणाए समत्तमाउहे
अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥६१॥
सज्झायसज्झाणरयस्स ताइणो
अपावभावस्स तवे रयस्स ।
विसुज्झई जं सि मलं[2] पुरेकडं
समीरियं रुप्पमलं व जोइणा ॥६२॥
से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए
सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे ।
विरायई[3] कम्मघणम्मि[4] अवगए
कसिणब्भपुडावगमे व चंदिमा ॥६३॥
—त्ति बेमि ॥

२—°जोगं (अ) ।
३—रयं (अ) ।
१—विसुज्झई (अ), विमुच्चइ (ज) ।
२—पुव्वकडेण कम्मुणा (अ, ज) ।

नवमं अज्झयणं

विणयसमाही (पढमो उद्देसो)

थंभा व कोहा व मयप्पमाया
गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे[1] ।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो
फलं व कीयस्स वहाय होइ ॥ १ ॥

जे यावि मंदि त्ति गुरुं विइत्ता
डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा ।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा
करेंति आसायण ते गुरूणं ॥ २ ॥

पगईए मंदा वि भवंति एगे
डहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया ।
आयारमंता गुण सुट्ठिअप्पा
जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ॥३॥

जे यावि नागं डहरं ति नच्चा
आसायए से अहियाय होइ ।
एवायरियं पि हु हीलयंतो
नियच्छई जाइपहं खु मंदे ॥ ४ ॥

आसीविसो यावि[2] परं सुरुट्ठो
किं जीवनासाओ[3] परं नु कुज्जा ।
आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ॥ ५ ॥

१—चिट्ठे (अ, ज, हा) ।
२—ऽावि (क, ख, ग, ज) ।
३—जीवि० (घ) ; जीवित० (अ) ।

जो पावगं जलियमवक्कमेज्जा
आसीविसं वा वि हु कोवएज्जा ।
जो वा विसं खायइ जीवियट्ठी
एसोवमासायणया गुरूणं ॥ ६ ॥

सिया हु से पावय नो डहेज्जा
आसीविसो वा कुविओ न भक्खे ।
सिया विसं हालहलं न मारे
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥

जो पव्वयं सिरसा भेत्तुमिच्छे
सुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा ।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं
एसोवमासायणया गुरूणं ॥ ८ ॥

सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे
सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
सिया न भिंदेज्ज व सत्तिअग्गं
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥

आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ।
तम्हा अणाबाह सुहाभिकंखी
गुरुप्पसायाभिमुहो रमेज्जा ॥१०॥

जहाहियग्गी जलणं नमंसे
नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं ।
एवायरियं उवचिट्ठएज्जा
अणंतनाणोवगओ वि संतो ॥११॥

जस्संतिए धम्मपयाइ सिक्खे
तस्संतिए वेणइयं पउंजे ।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ
कायग्गिरा भो मणसा य[1] निच्चं ॥१२॥

लज्जा दया संजम बंभचेरं
कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
जे मे गुरू सययमणुसासयंति
ते हं गुरू सययं पूययामि ॥१३॥

जहा निसंते तवणच्चिमाली
पभासई केवलभारहं तु ।
एवायरिओ सुयसीलबुद्धिए
विरायई सुरमज्झे व इंदो ॥१४॥

जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो
नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
खे सोहई विमले अब्भमुक्के
एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ॥१५॥

महागरा आयरिया महेसी
'समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए'[2] ।
संपाविउकामे अणुत्तराइं
आराहए[3] तोसए धम्मकामी ॥१६॥

१—वि (ख)।
२—समाहिजोगस्सुय ० (हा)।
३—उवट्ठिओ (अ)।

सोच्चाण मेहावी सुभासियाइं

सुस्सूसए आयरियप्पमत्तो ।

आराहइत्ताण गुणे अणेगे

से पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥१७॥

—त्ति बेमि ॥

*

नवम अज्झयण

विणयसमाही (बीओ उद्देसो)

मूलाओ खधप्पभवो दुमस्स
खधाओ पच्छा समुवेंति साहा ।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता
तओ से पुप्फं च फलं रसो य ॥ १ ॥
एवं धम्मस्स विणओ मूलं परमो से मोक्खो ।
जेण कित्ति सुयं सिग्घं निस्सेस चाभिगच्छई[1] ॥ २ ॥
जे य चंडे मिए थद्धे दुव्वाई नियडी सढे ।
वुज्झइ से अविणीयप्पा कट्ठं सोयगयं जहा ॥ ३ ॥
विणयं पि जो उवाएणं चोइओ कुप्पई नरो ।
दिव्वं सो सिरिमेज्जंति दंडेण पडिसेहए ॥ ४ ॥
तहेव अविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया ॥ ५ ॥
तहेव सुविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढिं[2] पत्ता महायसा ॥ ६ ॥
तहेव अविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ ।
दीसंति दुहमेहंता छाया विगलितेंदिया[3] ॥ ७ ॥
दंडसत्थपरिजुण्णा असब्भ वयणेहि य ।
कलुणा विवन्नछंदा खुप्पिवासाए[4] परिगया ॥ ८ ॥

१—चाधिगच्छई (अ, ह) ।
२—इड्ढि (अ) ।
३—ते विगलिंदिया (क, ख, ग, घ) , विगलिंदिया (अ) ।
४—खुप्पिवासा (घ) , खुप्पिवासाहि (क, ग) , खुप्पिवासा य (ख) ।

तहेव सुविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढि पत्ता महायसा ॥ ९ ॥
तहेव अविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया ॥१०॥
तहेव सुविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढि पत्ता महायसा ॥११॥
जे आयरियउवज्झायाणं सुस्सूसावयणंकरा।
तेसि सिक्खा पवड्ढंति जलसित्ता इव[1] पायवा ॥१२॥
अप्पणट्ठा परट्ठा वा सिप्पा णेउणियाणि य।
गिहिणो उवभोगट्ठा इहलोगस्स कारणा ॥१३॥
जेण बंधं वहं घोरं परियावं च दारुणं।
सिक्खमाणा नियच्छंति जुत्ता ते ललिइंदिया ॥१४॥
ते वि तं गुरुं पूयंति तस्स सिप्पस्स कारणा।
सक्कारेति नमंसंति[2] तुट्ठा निद्देसवत्तिणो ॥१५॥
किं पुण जे सुयग्गाही 'अणंतहियकामए'[3]।
आयरिया जं वए भिक्खू तम्हा तं नाइवत्तए ॥१६॥
नीयं सेज्जं गइं ठाणं नीयं च आसणाणि य।
नीयं च पाए वंदेज्जा नीयं कुज्जा य अंजलिं ॥१७॥
संघट्टइत्ता काएणं तहा उवहिणामवि।
खमेह अवराहं मे वएज्ज न पुणो त्ति य ॥१८॥
दुग्गओ वा पओएणं चोइओ वहई रहं।
एवं दुबुद्धि किच्चाणं[4] वुत्तो वुत्तो पकुव्वई ॥१९॥

१—व (अ)।
२—समणेंति (अ)।
३—°सुहकामए (अ)।
४—किच्चाइं (अ, ज, हा)।

[आलवंते लवंते वा न निसेज्जाए पडिस्सुणे ।
मोत्तूणं आसणं धीरो सुस्सूसाए पडिस्सुणे ॥][1]
कालं छंदोवयारं च पडिलेहित्ताण हेउहिं ।
तेण तेण उवाएण तं तं संपडिवायए ॥२०॥
विवत्ती अविणीयस्स संपत्ती विणियस्स य ।
जस्सेयं दुहओ नायं सिक्खं से अभिगच्छइ[2] ॥२१॥
जे यावि चंडे मइइड्ढिगारवे
पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे ।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए
असंविभागी न हु तस्स मोक्खो ॥२२॥
निद्देसवत्ती पुण जे गुरूणं
सुयत्थधम्मा विणयम्मि कोविया ।
तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गय ॥२३॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है, किन्तु चूर्णि व टीका में व्याख्यात नहीं है।

२—अधिगच्छइ (हा)।

नवमं अज्झयणं

विणयसमाही (तइओ उद्देसो)

आयरियं[1] अग्गिमिवाहियग्गी
सुस्सूसमाणो पडिजागरेज्जा ।
आलोइयं[2] इंगियमेव नच्चा
जो छन्दमाराहयइ स पुज्जो ॥ १ ॥

आयारमट्ठा विणयं पउंजे
सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं ।
जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो[3]
'गुरुं तु नासाययई'[4] स पुज्जो ॥ २ ॥

राइणिएसु विणयं पउंजे
डहरा वि य जे परियायजेट्ठा ।
नियत्तणे वट्टइ सच्चवाई
ओवायवं वक्करे स पुज्जो ॥ ३ ॥

अन्नायउंछं चरई विसुद्धं
जवणट्ठया समुयाणं च निच्चं ।
अलद्धुयं नो परिदेवएज्जा
लद्धुं न विकत्थयई[5] स पुज्जो ॥ ४ ॥

१—आयरियग्गि (अ, क, ख, ग) ।
२—आलोइय (क, ख) ।
३—अविकंपमाणो (अ, ज) ।
४—जो छंदमाराहयइ (अ, ज) ।
५—विकंथई (ग) ; विकंथयई (क, ख, घ) ।

संथारसेज्जासणभत्तपाणे
अप्पिच्छया अइलाभे वि संते।
जो एवमप्पाणभितोसएज्जा
संतोसपाहन्नरए स पुज्जो ॥ ५ ॥

सक्का सहेउं आसाए[1] कंटया
अओमया उच्छहया नरेणं।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए
वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥

मुहुत्तदुक्खा हु[2] हवंति कंटया
अओमया ते वि तओ सुउद्धरा[3]।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि
वेराणुबंधीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥

समावयंता वयणाभिघाया
कण्णंगया दुम्मणियं जणंति।
धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे
जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥

अवण्णवायं च परम्मुहस्स
पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं।
ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च
भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥

१—आसाय (ख)।
२—उ (क, ख, ग, घ)।
३—सुदुद्धरा (क)।

अलोलुए अक्कुहए अमाई
अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।
नो भावए नो वि य भावियप्पा
अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥१०॥

गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू
गिण्हाहि साहूगुण मुंचऽसाहू ।
वियाणिया अप्पगमप्पएणं
जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥११॥

तहेव डहरं व महल्लगं वा
इत्थीपुमं पव्वइयं गिहिं वा ।
नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा
थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥१२॥

जे माणिया सययं माणयंति
जत्तेण कन्नं व निवेसयंति ।
ते माणए माणरिहे तवस्सी
जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ॥१३॥

तेसिं गुरूणं गुणसागराणं
सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं ।
चरे मुणी पंचरए[1] तिगुत्तो
चउक्कसायावगए स पुज्जो ॥१४॥

१—पचजए (अ)।

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी
जिणमयनिउणे[1] अभिगमकुसले ।
धुणिय रयमलं पुरेकडं
भासुरमउलं गइं गय[2] ॥१५॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—जिणवयण° (अ)।
२—वइ (ज, ह)।

नवमं अज्झयणं

विणयसमाही (चउत्थो उद्देसो)

सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ॥ सू० १ ॥

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ? ॥ सू० २ ॥

इमे खलु ते थेरेहि भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता, तंजहा—(१) विणयसमाही (२) सुयसमाही (३) तवसमाही (४) आयारसमाही ।

विणए सुए अ तवे आयारे निच्चं पंडिया ।
अभिरामयंति अप्पाणं जे भवंति जिइंदिया ॥ १ ॥
॥ सू० ३ ॥

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ, तंजहा—(१) अणुसासिज्जंतो सुस्सूसइ (२) सम्मं संपडिवज्जइ (३) वेयमाराहयइ[1] (४) न य भवइ अत्तसंपग्गहिए। चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

पेहेइ[2] हियाणुसासणं
सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठए ।
न य माणमएण मज्जइ
विणयसमाही आययट्ठिए ॥ २ ॥
॥ सू० ४ ॥

१—वेयमाराहइ (ख, ज) ।
२—वीहेति (अ) ।

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ, तंजहा—(१) सुयं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्वं भवइ (२) एगग्गचित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाइयव्व भवइ (३) अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ (४) ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ। चउत्थं पयं भवइ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

नाणमेगग्गचित्तो य[1] ठिओ ठावयई परं।
सुयाणि य अहिज्जित्ता रओ सुयसमाहिए ॥ ३ ॥

॥ सू० ५ ॥

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ, तंजहा—(१) नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (२) नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (४) नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा। चउत्थं पयं भवइ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

विविहगुणतवोरए य निच्चं
भवइ निरासए निज्जरट्ठिए।
तवसा धुणइ पुराणपावगं
जुत्तो सया तवसमाहिए ॥ ४ ॥

॥ सू० ६ ॥

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ, तंजहा—(१) नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (२) नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (४) नन्नत्थ आरहंतेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठेज्जा। चउत्थं पयं भवइ।

१—× (ख)।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

जिणवयणरए[1] अतिंतिणे
पडिपुण्णाययमाययट्ठिए।
आयारसमाहिसंवुडे
भवइ य दंते भावसंधए॥ ५॥
॥ सू० ७॥

अभिगम[2] चउरो समाहिओ[3]
सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ।
विउलहियसुहावहं पुणो
कुव्वइ सो पयखेममप्पणो॥ ६॥

जाइमरणाओ मुच्चई
इत्थंथं[4] च चयइ[5] सव्वसो।
सिद्धे वा भवइ सासए
देवे वा अप्परए महिड्ढिए॥ ७॥

—त्ति बेमि॥

*

१—०मए (अ)।
२—अभिगत (अ)।
३—सपाहीओ (ख)।
४—इत्थत्तं (अ)।
५—जहाइ (अ. ज)।

दसमज्झयणं

स-भिक्खु

निक्खम्ममाणाए[1] वुद्धवयणे[2]
निच्चं चित्तसमाहिओ हवेज्जा ।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे
वंतं नो पडियायई जे स भिक्खू ॥१॥

पुढविं[3] न खणे न खणावए
सीओदगं न पिए[4] न पियावए[5] ।
अगणिसत्थं जहा सुनिसियं
तं न जले न जलावए जे स भिक्खू ॥२॥

अनिलेण न 'वीए न वीयावए'[6]
हरियाणि न 'छिंदे न छिंदावए'[7] ।
वीयाणि सया विवज्जयंतो
सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्खू ॥३॥

वहणं तसथावराण होइ
पुढवितणकट्ठनिस्सियाणं ।
तम्हा उद्देसियं न भुंजे
नो 'वि पए'[8] न पयावए जे स भिक्खू ॥४॥

१—° माणाइय (क, ख, ग), ° मादाय (जा)।
२—° वयण (जा)।
३—पुढवि (अ)।
४—पीए (ख)।
५—पीयावए (ख)।
६—वीयावए न वीए (अ)।
७—छिंदावए न छिंदे (अ)।
८—न पए (अ)।

रोइय नायपुत्तवयणे
अत्तसमे मन्नेज्ज छप्पि काए।
पंच य फासे महव्वयाइं
पंचासवसंवरे[1] जे स भिक्खू ॥५॥

चत्तारि वमे सया कसाए
धुवजोगी य[2] हवेज्ज बुद्धवयणे।
अहणे निज्जायरूवरयए[3]
गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥६॥

सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे
अत्थि हु नाणे तवे संजमे य।
तवसा धुणइ पुराणपावगं
मणवयकायसुसंवुडे जे स भिक्खू ॥७॥

तहेव असणं पाणगं वा
विविहं खाइमसाइमं लभित्ता।
होही अट्ठो सुए परे वा
तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ॥८॥

तहेव असणं पाणगं वा
विविहं खाइमसाइम लभित्ता।
छंदिय साहम्मियाण भुंजे
भोच्चा सज्झायरए य[4] जे स भिक्खू ॥९॥

१—° सवुडे (घ, ह)।
२—× (ज, ह)।
३—° रए (ख, ग)।
४—× (क, ख, ग)।

न य वुग्गहियं[1] कहं कहेज्जा
न य[2] कुप्पे निहुइंदिए पसंते ।
संजमधुवजोगजुत्ते
उवसंते अविहेडए[3] जे स भिक्खू ॥१०॥

जो सहइ हु[4] गामकंटए
अक्कोसपहारतज्जणाओ य ।
भयभेरवसद्दसंपहासे[5]
समसुहदुक्खसहे य जे स भिक्खू ॥११॥

पडिमं पडिवज्जिया मसाणे
नो भायए भयभेरवाइं दिस्स[6] ।
विविहगुणतवोरए य निच्चं
न सरीरं चाभिकंखई जे स भिक्खू ॥१२॥

असइं वोसट्ठचत्तदेहे
अक्कुट्ठे व हए व लूसिए वा ।
पुढवि समे मुणी हवेज्जा
अनियाणे अकोउहल्ले[7] य जे स भिक्खू ॥१३॥

१—विग्गहिय (अ, ह) ।
२—हु (क, ख, ग) ।
३—अवहेडए (क, ग) ।
४—इइ (ख) ।
५—° सप्पहासे (क, ख, ग, घ, ज, ह) ।
६—दिअस्स (ख) ।
७—अकूतुहलि (अ) ।

अभिभूय काएण परीसहाइं
समुद्धरे जाइपहाओ[1] अप्पयं ।
विइत्तु जाईमरणं महब्भयं
तवे[2] रए सामणिए जे स भिक्खू ॥१४॥

हत्थसंजए पायसंजए
वायसंजए संजइंदिए ।
अज्झप्परए सुसमाहियप्पा
सुत्तत्थं च वियाणई जे स भिक्खू ॥१५॥

उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे[3]
अन्नायउंछं पुलनिप्पुलाए ।
कयविक्कयसन्निहिओ[4] विरए
सव्वसंगावगए य जे स भिक्खू ॥१६॥

अलोल भिक्खू न रसेसु गिद्धे
उंछं चरे जीविएनाभिकंखे[5] ।
इड्ढि च सक्कारण पूयणं च
चए[6] ठियप्पा अणिहे[7] जे स भिक्खू ॥१७॥

न परं वएज्जासि अयं कुसीले
जेणऽन्नो कुप्पेज्ज न तं वएज्जा ।
जाणिय पत्तेयं पुण्णपावं
अत्ताणं न समुक्कसे जे स भिक्खू ॥१८॥

१—°वहाओ (अ. ज)।
२—भवे (अ)।
३—अगढिए (अ)।
४—°सन्निहीहिं (अ)।
५—°नावकखे (अ) : °नामिकखी (क, ख. ग, घ)।
६—जहै (अ, ज)।
७—अणिहिय (क) ; अणिहिए (ग)।

न जाइमत्ते न य रूवमत्ते
न लाभमत्ते न सुएणमत्ते ।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता[1]
धम्मज्झाणरए जे[2] स भिक्खू ॥१९॥

पवेयए अज्जपयं[3] महामुणी
धम्मे ठिओ ठावयई परं पि ।
निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं
न यावि हस्सकुहए[4] जे स भिक्खू ॥२०॥

तं देहवासं असुइं असासयं
सया चए[5] निच्च हियट्ठियप्पा ।
छिंदित्तु जाईमरणस्स बंधणं
उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं ॥२१॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—विवज्जयती (क, ख) ; विगिंच धीरो (ङ) ।
२—°रए य जे (क) ।
३—अज्जवय (ङ) ।
४—हासं° (क, ख, ग, घ) ।
५—जहे (ङ) ।

रइवक्का (पढमा चूलिया)

इह खलु भो ! पव्वइएणं, उप्पन्नदुक्खेणं, संजमे अरइसमावन्न-चित्तेणं, ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव, हयरस्सिगयंकुस-पोयपडागाभूयाइं[1] इमाइं अट्ठारस ठाणाइं सम्मं संपडिलेहियव्वाइं भवंति । तंजहा—

१—हं भो ! दुस्समाए दुप्पजीवी[2] ।

२—लहुस्सगा इत्तरिया गिहीणं कामभोगा ।

३—भुज्जो य साइबहुला[3] मणुस्सा ।

४—इमे य मे दुक्खे न चिरकालो वट्ठाई भविस्सइ ।

५—ओमजणपुरक्कारे ।

६—वंतस्स य पडियाइयणं ।

७—अहरगइवासोवसंपया ।

८—दुल्लभे खलु भो ! गिहीणं धम्मे गिहिवासमज्झे वसंताणं ।

९—आयंके से वहाय होइ ।

१०—संकप्पे से वहाय होइ ।

११—सोवक्केसे गिहवासे ।। निरुवक्केसे परियाए ।।

१२—बंधे गिहवासे ।। मोक्खे परियाए ।।

१३—सावज्जे गिहवासे ।। अणवज्जे परियाए ।।

१४—बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा ।।

१५—पत्तेयं पुण्णपावं ।।

१६—अणिच्चे खलु[4] भो ! मणुयाण जीविए कुसग्गजलबिंदुचंचले ।।

१— ० पडागारो (अ) ।

२—दुप्पजीवं (अ) ।

३—साय ० (क, दी, ग, घ)

४—× (आ, जा) ।

१७—बहुं च खलु[1] पावं कम्मं पगडं ॥

१८—पावाणं च खलु भो ! कडाणं कम्माणं पुव्वि दुच्चिण्णाणं दुप्पडिकंताणं[2] वेयइत्ता मोक्खो, नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता अट्ठारसमं पयं भवइ ॥ सू० १ ॥

भवइ य इत्थ सिलोगो—

जया य चयई[3] धम्मं अणज्जो भोगकारणा ।
से तत्थ मुच्छिए बाले आयइं नावबुज्झइ ॥ १ ॥

जया ओहाविओ होइ इंदो वा पडिओ छमं ।
सव्वधम्म परिब्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥

जया य वंदिमो होइ पच्छा होइ अवंदिमो ।
देवया व चुया ठाणा स पच्छा परितप्पइ ॥ ३ ॥

जया य पूइमो होइ पच्छा होइ अपूइमो ।
राया व रज्जपब्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ ॥ ४ ॥

जया य माणिमो होइ पच्छा होइ अमाणिमो ।
सेट्ठि व्व कब्बडे छूढो स पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ॥

जया य थेरओ होइ समइक्कंतजोव्वणो ।
मच्छो व्व गलं गिलित्ता स पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ॥

'जया य कुकुडंबस्स कुतत्तीहिं विहम्मइ ।
हत्थी व बंधणे बद्धो स पच्छा परितप्पइ ॥ ७ ॥'[4]

१—खलु भो (ख, घ.) ।
२—दुप्परक्कंताणं (ह), दुप्पडिकंताणं (ख) ।
३—जयइ (क, ख) ।
४—यह श्लोक हस्तलिखित प्रतियों में है तथा टीका में व्याख्यात है किन्तु चूर्णि में व्याख्यात नहीं है ।

पुत्तदारपरिकिण्णो मोहसंताणसंतओ ।
पंकोसन्नो जहा नागो स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥

'अज्ज आहं'[1] गणी हुंतो भावियप्पा बहुस्सुओ ।
जइ हं रमंतो परियाए सामण्णे जिणदेसिए ॥ ९ ॥

देवलोगसमाणो उ[2] परियाओ महेसिणं ।
रयाणं अरयाणं तु[3] महानिरयसारिसो ॥१०॥

अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं
रयाण परियाए तहारयाणं ।
निरओवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं
रमेज्ज तम्हा परियाय पंडिए ॥११॥

धम्माउ भट्ठं सिरिओ ववेयं[4]
जन्नग्गि विज्झायमिव प्पतेयं ।
हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला[5]
दाढुद्धियं[6] घोरविसं व नागं ॥१२॥

इहेवधम्मो अयसो अकित्ती
दुन्नामधेज्जं[7] च पिहुज्जणम्मि ।
चुयस्स धम्माउ अहम्मसेविणो
संभिन्नवित्तस्स य[8] हेट्ठओ गई ॥१३॥

१—अज्जत्तेह (जा) ।
२—य (ख) ।
३—च (क, ख, ग, घ, ह) ।
४—अवेयं (क, ग, घ, ह) ।
५—कुसील (अ, ज,) ।
६—दाढुड्ढियं (क, ज, ह) ।
७—°गोत्तं (अ, ज) ।
८—उ (क, घ) ।

भुंजित्तु भोगाइ पसज्झ चेयसा
तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं ।
गइं च गच्छे अणभिज्झियं[1] दुहं
बोही य से नो सुलभा पुणो पुणो ॥१४॥

इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो
दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो ।
पलिओवमं झिज्जइ सागरोवमं
किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं ? ॥१५॥

न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सई
असासया भोगपिवास जंतुणो ।
न चे[2] सरीरेण इमेणवेस्सई
अविस्सई[3] जीवियपज्जवेण मे ॥१६॥

जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ[4]
चएज्ज[5] देहं न उ[6] धम्मसासणं ।
तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया
उवेंतवाया[7] व सुदंसणं गिरिं ॥१७॥

१—अणिहिज्झिय (क, ख, ग, घ) ।
२—मे (अ) ।
३—विवस्सई (अ) ।
४—निच्चओ (ख) ।
५—जहेज्ज (अ) ।
६—य (अ, ख) ।
७—उविंति° (क) ; उवें° (ग) ।

इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं नरो
आयं उवायं विविहं वियाणिया ।
काएण वाया अदु माणसेणं
तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठिज्जासि[1] ॥१८॥

—त्ति बेमि ॥

*

१— ० महिट्ठए (अ, ज) ।

विवित्तचरिया (विइया चूलिया)

चूलियं तु पवक्खामि सुयं केवलिभासियं।
जं सुणित्तु सपुण्णाणं[1] धम्मे उप्पज्जए मई॥ १ ॥

अणुसोयपट्ठिएबहुजणम्मि पडिसोयलद्धलक्खेणं।
पडिसोयमेव अप्पा दायव्वो होउकामेणं॥ २ ॥

अणुसोयसुहोलोगो
पडिसोओ आसवो[2] सुविहियाणं।
अणुसोओ संसारो
पडिसोओ तस्स उत्तारो[3]॥ ३ ॥

तम्हा[4] आयारपरक्कमेण संवरसमाहिबहुलेणं।
चरिया गुणा य नियमा य होंति साहूण दट्ठव्वा॥ ४ ॥

अणिएयवासो समुयाणचरिया
अन्नायउंछं पइरिक्कया य।
अप्पोवही कलहविवज्जणा य[5]
विहारचरिया इसिणं पसत्था॥ ५ ॥

आइण्णओमाणविवज्जणा य
ओसन्नदिट्ठाहडभत्तपाणे[6]।
संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू
तज्जायसंसट्ठ जई जएज्जा॥ ६ ॥

१—सपुण्णानं (घ), सपुन्नाण (ह)।
२—आसओ (अ, ह)।
३—निग्गओ (अ, च)।
४—[illegible] (अ, च)।
५—उ (च)।
६—°पाणं (अ)।

अमज्जमंसासि अमच्छरीया
'अभिक्खणं निव्विगइं'[1] गया य'[2] ।
अभिक्खणं काउस्सग्गकारी
सज्झायजोगे पयओ हवेज्जा ॥ ७ ॥

न पडिन्नवेज्जा सयणासणाइं
सेज्जं निसेज्जं तह भत्तपाणं ।
गामे कुले वा नगरे व देसे
ममत्तभावं[3] न 'कहिं चि'[4] कुज्जा ॥ ८ ॥

गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा
अभिवायणं वंदण पूयणं च[5] ।
असंकिलिट्ठेहिं समं वसेज्जा
मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥

न या लभेज्जा निउणं सहायं
गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो
विहरेज्ज[6] कामेसु असज्जमाणो ॥१०॥

संवच्छरं चावि परं पमाणं
बीयं च वासं न तहिं वसेज्जा ।
सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू
सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥११॥

१—निव्विगई (अ, घ) ।
२—अभिक्खणि व्वितियजोगया य (आ, जा) ।
३—ममत्ति ० (अ) ।
४—कहिं पि (ख) ।
५—वा (क, ख, ग, घ, ह) ।
६—चरेज्ज (अ) ।

जो पुव्वरत्तावररत्तकाले
संपिक्खई[1] अप्पगमप्पएणं ।
किं मे कडं ? किं च मे किच्चसेसं ?
किं सक्कणिज्जं न समायरामि ? ॥१२॥

किं मे परो पासइ ? किं व[2] अप्पा ?
किं वाहं[3] 'खलियं न विवज्जयामि'[4] ?
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो
अणागयं नो पडिबंध कुज्जा ॥१३॥

जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्त[5]
काएण वाया अदु माणसेणं ।
तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा
आइन्नओ[6] खिप्पमिव[7] क्खलीणं ॥१४॥

जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स
धिइमओ सप्पुरिसस्स निच्चं ।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी
सो जीवइ संजमजीविएणं ॥१५॥

१—सारक्खई (अ, ज) ।
२—च (क, ग, घ, ज) ।
३—चाह (क) ।
४—खलितो वि ० (अ) ; खलित्त ण वि ० (आ) ।
५—दुप्पणीय (अ, ज) ; दुप्पइत्त (क) ।
६—आइण्णो (अ) ; आइण्ण (ज) ।
७—खिप्प ० (आ, जा) ; खित्त ० (अ. जा) ; ओखित्त ० (ज) ।

अप्पा[1] खलु सययं रक्खियव्वो
सव्विदिएहि सुसमाहिएहिं ।
अरक्खिओ जाइपहं[2] उवेइ
सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥१६॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—अप्पा हु (क. ख, ग, घ) ।
२—०वहं (जा, आ) ।

उत्तरज्झयणं

पढमं अज्झयणं

विणयसुयं

१—संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥

२—आणानिद्देसकरे गुरूणमुववायकारए ।
इंगियागारसंपन्ने से विणीए त्ति वुच्चई ॥

३—आणाऽनिद्देसकरे[1] गुरूणमणुववायकारए ।
पडिणीए असंवुद्धे अविणीए त्ति वुच्चई ॥

४—जहा सुणी पूइकण्णी निक्कसिज्जइ सव्वसो ।
एवं दुस्सीलपडिणीए मुहरी निक्कसिज्जई ॥

५—कणकुण्डगं चइत्ताणं[2] विट्ठं भुंजइ सूयरे ।
एवं सीलं चइत्ताणं दुस्सीले रमई मिए[3] ॥

६—सुणियाऽभावं साणस्स सूयरस्स नरस्स य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाणं इच्छन्तो हियमप्पणो ॥

७—तम्हा विणयमेसेज्जा सीलं 'पडिलभे जओ'[4] ।
वुद्धपुत्त[5] नियागट्ठी न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥

१—आणा अनिद्देसयरे (अ) ।
२—जहित्ताण (वृ०, चू०) ।
३—मिई (आ) ।
४—पडिलभिज्जओ (ऋ) ; पडिलभेज्जओ (अ) ।
५—वुद्धउत्ते (वृ०) : वुद्धपुत्ते, वुद्धवुत्ते (वृ० पा०) ।

८—निसन्ते सियाऽमुहरी[1] बुद्धाणं अन्तिए सया ।
अट्ठजुत्ताणि सिक्खेज्जा निरट्ठाणि उ वज्जए ॥

९—अणुसासिओ न कुप्पेज्जा खंति सेविज्ज पण्डिए ।
खुड्डेहिं सह संसग्गिं हासं कीडं च वज्जए ॥

१०—मा य चण्डालियं कासी[2] बहुयं मा य आलवे ।
कालेण य अहिज्जित्ता तओ झाएज्ज एगगो[3] ॥

११—आहच्च चण्डालियं कट्टु न निण्हविज्ज कयाइ वि ।
कडं कडे त्ति भासेज्जा अकडं नो कडे त्ति य ॥

१२—मा 'गलियस्सेव'[4] कसं वयणमिच्छे पुणो पुणो ।
कसं व दट्ठुमाइण्णे पावगं परिवज्जए[5] ॥

१३—अणासवा[6] थूलवया कुसीला
मिउं पि चण्डं पकरेंति सीसा ।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया
पसायए ते हु दुरासयं पि ॥

१४—नापुट्ठो वागरे किंचि पुट्ठो वा नालियं वए ।
कोहं असच्चं कुव्वेज्जा धारेज्जा पियमप्पियं ॥

१५—'अप्पा चेव दमेयव्वो'[7] अप्पा हु खलु दुद्दमो ।
अप्पा दन्तो सुही होइ अस्सिं लोए परत्थ य ॥

१—सियाअमुहरी (अ) ।
२—कुज्जा (उ) ।
३—एक्कओ (अ) ।
४—गलियस्सुव्व (उ, ऋ) ; गलियस्सेव्व (अ) ।
५—पडिवज्जए (अ, बृ० पा०) ।
६—अणासुणा (बृ० पा०) ।
७—अप्पाणमेव दमए (बृ०, चू०) ।

१६—वरं[1] मे अप्पा दन्तो संजमेण तवेण य ।
माहं परेहि दम्मन्तो बन्धणेहि वहेहि य ॥
१७—पडिणीयं च बुद्धाणं वाया अदुव कम्मुणा ।
आवी वा जइ वा रहस्से नेव कुज्जा कयाइ वि ॥
१८—न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न जुंजे ऊरुणा ऊरुं सयणे नो पडिस्सुणे ॥
१९—नेव पल्हत्थियं कुज्जा पक्खपिण्डं व संजए ।
पाए पसारिए[2] वावि न चिट्ठे गुरुणन्तिए ॥
२०—आयरिएहिं वाहित्तो[3] तुसिणीओ न कयाइ वि ।
पसायपेही[4] नियागट्ठी उवचिट्ठे गुरुं सया ॥
२१—आलवन्ते लवन्ते वा न निसीएज्ज कयाइ वि ।
चइऊणमासणं धीरो जओ जत्तं[5] पडिस्सुणे ॥
२२—आसणगओ न पुच्छेज्जा नेव 'सेज्जागओ कया'[6] ।
आगम्मुक्कुडुओ सन्तो पुच्छेज्जा पंजलीउडो[7] ॥
२३—एवं विणयजुत्तस्स सुत्तं अत्थं च तदुभयं ।
पुच्छमाणस्स सीसस्स वागरेज्ज जहासुयं ॥
२४—मुसं परिहरे भिक्खू न य ओहारिणिं वए ।
भासादोसं परिहरे मायं च वज्जए सया ॥
२५—न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं न निरट्ठं न मम्मयं ।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा उभयस्सन्तरेण वा ॥

१—वर (अ, उ, म)।
२—पसारे नो (वृ०); पसारिए (वृ० पा०)।
३—वाहित्तो (अ, आ, इ, उ)।
४—पसायट्ठी (वृ० पा०)।
५—जुत्तं (अ, उ)।
६—णिसिज्जागओ कयाइ (चू०)।
७—पजलीगडे (वृ०), पजलीउडो (वृ० पा०)।

२६—समरेसु अगारेसु 'सन्धीसु य महापहे'[1] ।
एगो एगित्थिए सद्धिं नेव चिट्ठे न संलवे ॥
२७—जं मे बुद्धाणुसासन्ति सीएण[2] फरुसेण वा ।
मम लाभो त्ति पेहाए पयओ तं पडिस्सुणे ॥
२८—अणुसासणमोवायं दुक्कडस्स य चोयणं[3] ।
हियं तं मन्नए पण्णो वेसं होइ असाहुणो ॥
२९—हियं विगयभया बुद्धा फरुसं पि अणुसासणं ।
वेसं तं होइ मूढाणं खन्तिसोहिकरं[4] पयं ॥
३०—आसणे उवचिट्ठेज्जा 'अणुच्चे अकुए'[5] थिरे ।
अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥
३१—कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे ।
अकालं च विवज्जित्ता काले कालं समायरे ॥
३२—परिवाडीए न चिट्ठेज्जा भिक्खू दत्तेसणं चरे ।
पडिरूवेण एसित्ता मियं कालेण भक्खए ॥
३३—नाइदूरमणासन्ने[6] नन्नेसिं चक्खुफासओ ।
एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा लंघिया तं नइक्कमे[7] ॥
३४—नाइउच्चे व नीए वा नासन्ने नाइदूरओ ।
फासुयं परकडं पिण्डं पडिगाहेज्ज संजए ॥

१—गिहसन्धीसु महापहे (सु) ; गिहसंधिसु अ महापहेसु (बृ०) ।
२—सीतेण (अ) ; सीलेण (बृ० पा०, चू० पा०) ।
३—पेरणं (बृ०) ; चोयणा (चू०) ।
४—० सुद्धिकरं (बृ०) ।
५—अणुच्चेऽकुक्कुए (बृ०) ।
६—णाइ दूरे अणासण्णे (चू०) ।
७—न अइक्कमे (अ) ।

४४—वित्ते अचोइए निच्चं[1] 'खिप्पं हवइ सुचोइए'[2]।
जहोवइट्ठं सुकयं किच्चाइं कुव्वई सया॥
४५—नच्चा नमइ मेहावी लोए 'कित्ती से'[3] जायए।
हवई किच्चाणं सरणं भूयाणं जगई जहा॥
४६—पुज्जा जस्स पसीयन्ति संबुद्धा पुव्वसंथुया।
पसन्ना[4] लाभइस्सन्ति विउलं अट्ठियं सुयं॥
४७—स पुज्जसत्थे सुविणीयसंसए
'मणोरुई[5] चिट्ठइ कम्मसंपया।'[6]
तवोसमायारिसमाहिसंवुडे
महज्जुई पंचवयाइं पालिया॥
४८—स देवगन्धव्वमणुस्सपूइए
चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं।
सिद्धे वा हवइ सासए
देवे वा अप्परए महिड्ढिए॥
—त्ति बेमि॥

१—खिप्पं (बृ० पा०, चू० पा०)।
२—पसन्ने थामवं करे (बृ० पा०, चू० पा०)।
३—कित्तीय (अ, उ, ऋ); कित्ती सि (ऋ)।
४—संपन्ना (बृ० पा०)।
५—मणोरुइ (बृ० पा०)।
६—मणोरुइं चिट्ठइ कम्मसपय (बृ० पा०); मणिच्छियं संपयमुत्तम गया (नागार्जुनीयाः)।

बीयं अज्झयणं

परीसहपविभत्ती

सू० १—सुयं मे, आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए[1] परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा[2] ।

सू० २—कयरे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ?

सू० ३—इमे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा, तं जहा—

१. दिगिंछापरीसहे, २. पिवासापरीसहे, ३. सीयपरीसहे, ४. उसिणपरीसहे, ५. दंसमसयपरीसहे, ६. अचेलपरीसहे, ७. अरइ-परीसहे, ८. इत्थीपरीसहे, ९. चरियापरीसहे, १०. निसीहिया-परीसहे, ११. सेज्जापरीसहे, १२. अक्कोसपरीसहे,[3] १३. वहपरीसहे, १४. जायणापरीसहे, १५. अलाभपरीसहे, १६. रोगपरीसहे, १७. तणफासपरीसहे, १८. जल्लपरीसहे, १९. सक्कारपुरक्कारपरीसहे, २०. पन्नापरीसहे, २१. अन्नाणपरीसहे, २२. दंसणपरीसहे ।

१—परीसहाणं पविभत्ती कासवेणं पवेइया ।
तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥

१—भिक्खुचरियाए (बृ०) ; भिक्खायरियाए (बृ० पा०) ।
२—विनिहन्नेज्जा (बृ०) ।
३—उक्कोस ० (अ, ऋ) ।

(१) दिगिंछापरीसहे

२—दिगिंछापरिगए[1] देहे तवस्सी भिक्खु थामवं ।
न छिन्दे न छिन्दावए न पए न पयावए ॥

३—कालीपव्वंगसंकासे किसे धमणिसंतए ।
मायन्ने असणपाणस्स अदीणमणसो चरे ॥

(२) पिवासापरीसहे

४—तओ पुट्ठो पिवासाए दोगुंछी लज्जसंजए[2] ।
सीओदगं न सेविज्जा वियडस्सेसणं चरे ॥

५—छिन्नावाएसु पन्थेसु आउरे सुपिवासिए[3] ।
परिसुक्कमुहेऽदीणे[4] 'तं तितिक्खे परीसहं'[5] ॥

(३) सीयपरीसहे

६—चरन्तं विरयं लूहं सीयं फुसइ एगया ।
'नाइवेलं मुणी गच्छे सोच्चाणं जिणसासणं'[6] ॥

७—न मे निवारणं अत्थि छवित्ताणं न विज्जई ।
अहं तु अग्गिं सेवामि इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

(४) उसिणपरीसहे

८—उसिणपरियावेणं परिदाहेण तज्जिए ।
घिंसु वा परियावेणं सायं नो परिदेवए ॥

१—°परियावेण (वृ०) : °परितापेग (चू०) : °परिगते (वृ० पा०) ।
२—लद्धसंजने (वृ० चू०) : लज्जासंजए, लज्जसंजमे (वृ० पा०) ; लज्जसंजते (चू० पा०) ।
३—सुप्पिवासिए (अ) ; सुपिवासए (ऋ) ।
४—°मुहद्दीणे (अ, सु) : °मुहोदीणे (ऋ) ।
५—सव्वतो य परिव्वए (वृ० पा०) ।
६—नाइवेलं विहन्निज्जा पावदिट्ठी विहन्नइ (चू०, वृ०) : नाइवेलं मुणी गच्छे सोच्चाण जिणसासणं (चू० पा०, वृ० पा०) ।

९—उण्हाहितत्ते मेहावी सिणाणं 'नो वि पत्थए'[1]।
गायं नो परिसिंचेज्जा[2] न वीएज्जा य अप्पयं ॥

(५) दंसमसयपरीसहे

१०—पुट्ठो य दंसमसएहिं समरेव[3] महामुणी।
नागो संगामसीसे वा सूरो अभिहणे परं ॥
११—न संतसे न वारेज्जा मणं पि न पओसए।
उवेहे[4] न हणे पाणे भुंजन्ते मंससोणियं ॥

(६) अचेलपरीसहे

१२—परिजुण्णेहि वत्थेहिं होक्खामि त्ति अचेलए।
अदुवा सचेलए होक्खं इइ भिक्खू न चिन्तए ॥
१३—'एगयाऽचेलए होइ'[5] सचेले यावि एगया।
एयं धम्महियं नच्चा नाणी नो परिदेवए ॥

(७) अरइपरीसहे

१४—गामाणुगामं रीयन्तं अणगारं अकिंचणं।
अरई अणुप्पविसे तं तितिक्खे परीसहं ॥
१५—अरइं पिट्ठओ किच्चा विरए आयरक्खिए।
धम्मारामे निरारम्भे उवसन्ते मुणी चरे ॥

(८) इत्थीपरीसहे

१६—संगो एस मणुस्साणं जाओ लोगंमि इत्थिओ।
जस्स एया परिन्नाया सुकडं[6] तस्स सामण्णं ॥

१—नाभिपत्थए (चू०, बृ०); णोऽवि पत्थए (बृ० पा०)।
२—परिसेविज्जा (उ, ऋ)।
३—सम एव (अ)।
४—उवेह (उ, चू०, ऋ)।
५—एगता अचेलगो भवति (चू०) : अचेलए सयं होइ (बृ० पा०, चू० पा०)।
६—सुकर (बृ० पा०)।

१७—एवमादाय[1] मेहावी 'पंकभूया उ इत्थिओ'[2] ।
नो ताहिं विणिहन्नेज्जा[3] चरेज्जत्तगवेसए ॥

(९) चरियापरीसहे

१८—एग एव[4] चरे लाढे अभिभूय परीसहे ।
गामे वा नगरे वावि निगमे वा रायहाणिए ॥

१९—असमाणो चरे भिक्खू नेव[5] कुज्जा परिग्गहं ।
असंसत्तो गिहत्थेहि अणिएओ परिव्वए ॥

(१०) निसीहियापरीसहे

२०—सुसाणे सुन्नगारे वा रुक्खमूले व एगओ ।
अकुक्कुओ निसीएज्जा न य वित्तासए परं ॥

२१—तत्थ से चिट्ठमाणस्स[6] 'उवसग्गाभिधारए'[7] ।
संकाभीओ न गच्छेज्जा उट्ठित्ता[8] अन्नमासणं ॥

(११) सेज्जापरीसहे

२२—उच्चावयाहिं सेज्जाहिं तवस्सी भिक्खु थामवं ।
नाइवेलं विहन्नेज्जा पावदिट्ठी विहन्नई ॥

२३—पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं कल्लाणं अदु पावगं ।
'किमेगरायं करिस्सइ'[9] एवं तत्थऽहियासए ॥

१—एवमाणाय (चू०, वृ०) ; एवपादाय (चू० पा०, वृ० पा०) ।
२—जहा एया लहुस्सगा (चू० पा०, वृ० पा०) ।
३—विहन्नेज्जा (अ, सु) ।
४—एगो (चू० पा०) : एगे (वृ० पा०) ।
५—नेयं (अ) ।
६—अच्छमाणस्स (वृ० पा०, चू०) ।
७—उवसग्गभयं भवे (वृ० पा०, चू० पा०) ।
८—उवट्ठित्ता (उ) ।
९—किं मज्झ एग रायाए (चू०) ।

(१२) अक्कोसपरीसहे

२४—अक्कोसेज्ज परो भिक्खुं न तेसिं पडिसंजले ।
सरिसो होइ बालाणं तम्हा भिक्खू न संजले ॥
२५—सोच्चाणं फरुसा भासा दारुणा गामकण्टगा ।
तुसिणीओ उवेहेज्जा न ताओ मणसीकरे ॥

(१३) वहपरीसहे

२६—हओ न संजले भिक्खू मणं पि न पओसए ।
तितिक्खं परमं नच्चा 'भिक्खुधम्मं विचिंतए'[1] ॥
२७—समणं संजयं दन्तं हणेज्जा कोइ कत्थई ।
नत्थि जीवस्स नासु त्ति 'एवं पेहेज्ज संजए'[2] ॥

(१४) जायणापरीसहे

२८—दुक्करं खलु भो निच्चं अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वं से जाइयं होइ नत्थि किंचि अजाइयं ॥
२९—गोयरग्गपविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए ।
सेओ अगारवासु त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

(१५) अलाभपरीसहे

३०—परेसु घासमेसेज्जा भोयणे परिणिट्ठिए ।
लद्धे पिण्डे अलद्धे वा नाणुतप्पेज्ज संजए[3] ॥
३१—अज्जेवाहं न लब्भामि अवि लाभो सुए सिया ।
जो एवं पडिसंविक्खे[4] अलाभो तं न तज्जए ॥

१—°धम्मपि चिंतए (वृ०) ; °धम्मं व चिंतए (वृ० पा०) ।
२—ग त पेहे असाहुव (वृ०) ; न ता पेहे असाधुव (चू०) : एव पीहेज्ज संजए (चू० पा०) ; न य पेहे असाधुय, पठन्ति च—एव पेहिज्ज सजतो (वृ० पा०) ।
३—पडिए (अ) ।
४—पडिसचिक्खे (सु) ।

(१६) रोगपरीसहे

३२—नच्चा उप्पइयं दुक्खं वेयणाए दुहट्टिए ।
अदीणो थावए पन्नं पुट्ठो तत्थहियासए ॥

३३—तेगिच्छं नाभिनन्देज्जा संचिक्खत्तगवेसए ।
एवं[1] खु तस्स सामण्णं जं न कुज्जा न कारवे ॥

(१७) तणफासपरीसहे

३४—अचेलगस्स लूहस्स संजयस्स तवस्सिणो ।
तणेसु सयमाणस्स हुज्जा गायविराहणा ॥

३५—आयवस्स निवाएणं अउला[2] हवइ वेयणा ।
एवं[3] नच्चा न सेवन्ति तन्तुजं[4] तणतज्जिया ॥

(१८) जल्लपरीसहे

३६—किलिन्नगाए[5] मेहावी पंकेण व रएण वा ।
घिंसु वा परितावेण सायं नो परिदेवए ॥

३७—वेएज्ज[6] निज्जरापेही 'आरियं धम्मऽणुत्तरं'[7] ।
जाव सरीरभेउ त्ति जल्लं काएण धारए[8] ।

(१९) सक्कारपुरक्कारपरीसहे

३८—अभिवायणमब्भुट्ठाणं सामी कुज्जा निमन्तणं ।
जे ताइं पडिसेवन्ति न तेसिं पीहए मुणी ॥

१—एय (अ, उँ, ऋ, बृ०) ; एव (बृ० पा०) ।
२—तिउला (चू०, बृ०) , अतुला, विपुला वा (बृ० पा०) ।
३—एयं (अ, उ, ऋ, बृ०) ; एव (बृ० पा०) ।
४—तन्तय (चू० पा०, बृ० पा०)।
५—किलिङ्गगाए (चू० पा०, बृ०, पा०)।
६—वेयज्ज (अ) ; वेइ त्तो, वेइज्ज, वेयत्तो (बृ० पा०) ।
७—आयरिय धम्मपणुत्तरं (स०), आरिय धम्ममणुत्तर (अ) ।
८—उव्वटे (चू०, बृ० पा०) ; धारए (चू० पा०) ।

३९—अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए ।
'रसेसु[1] नाणुगिज्झेज्जा'[2] 'नाणुतप्पेज्ज पन्नवं'[3] ॥

(२०) पन्नापरीसहे

४०—से नूण मए पुव्वं कम्माणाणफला कडा ।
जेणाह नाभिजाणामि पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥

४१—अह पच्छा उइज्जन्ति कम्माणाणफला कडा ।
एवमस्सासि अप्पाणं नच्चा कम्मविवागयं ॥

(२१) अन्नाणपरीसहे

४२—निरट्ठगम्मि विरओ मेहुणाओ सुसंवुडो ।
जो सक्खं[4] नाभिजाणामि धम्मं कल्लाण पावगं ॥

४३—तवोवहाणमादाय पडिमं पडिवज्जओ[5] ।
एवं पि विहरओ मे छउमं न नियट्टई ॥

(२२) दंसणपरीसहे

४४—नत्थि नूणं परे लोए इड्ढी वावि तवस्सिणो ।
अदुवा वंचिओ मि त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

४५—अभू जिणा अत्थि जिणा अदुवावि भविस्सई ।
मुसं ते एवमाहंसु इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

४६—एए परीसहा सव्वे कासवेण पवेइया ।
जे भिक्खू न विहन्नेज्जा पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—सरसेसु० (वृ०) ।
२—रसिएसु णातिगिज्झेज्जा (चू०) , रसेसु नाणु० (वृ० पा०, चू० पा०) ।
३—न तेसिं पीहए मुणी (चू०, बृ०) ; नाणुतप्पेज्ज पण्णव (बृ० पा०, चू० पा०) ।
४—सप्रक्ख (चू०) ।
५—पडिवज्जिअ (बृ०) , पडिवज्जओ (बृ० पा०) ।

तइयं अज्झयणं

चाउरंगिज्जं

१–चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो[1] ।
माणुसत्तं सुई सद्धा संजमंमि य वीरियं ॥

२–समावन्नाण संसारे नाणागोत्तासु जाइसु ।
कम्मा नाणाविहा कट्टु पुढो[2] विस्संभिया पया ॥

३–एगया देवलोएसु नरएसु वि एगया ।
एगया आसुरं कायं आहाकम्मेहिं गच्छई ॥

४–एगया खत्तिओ होइ तओ चण्डालवोक्कसो ।
तओ कीडपयंगो य तओ कुन्थुपिवीलिया ॥

५–एवमावट्टजोणीसु पाणिणो कम्मकिब्बिसा ।
न निविज्जन्ति संसारे 'सव्वट्ठेसु व[3,4] खत्तिया ॥

६–कम्मसंगेहि सम्मूढा दुक्खिया बहुवेयणा ।
अमाणुसासु जोणीसु विणिहम्मन्ति पाणिणो ॥

७–कम्माणं तु पहाणाए आणुपुव्वी कयाइ उ ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता 'आययन्ति मणुस्सयं'[5] ॥

८–माणुस्सं विग्गहं लद्धुं सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
जं सोच्चा पडिवज्जन्ति तवं खन्तिमहिंसयं ॥

१—देहिणो (बृ० पा०, चू०) ।
२—पुणो (चू० पा०) ।
३—य (अ) ; वि (ऋ) ।
४—सव्वट्ठ इव (बृ० पा०, चू० पा०) ।
५—जायन्ते मणुसत्तय (बृ० पा०) ।

९—आहच्च सवणं लद्धुं सद्धा परमदुल्लहा ।
सोच्चा नेआउयं मग्गं बहवे परिभस्सई ॥

१०—सुइं च लद्धु सद्धं च वीरियं पुण दुल्लहं ।
बहवे रोयमाणा वि 'नो एणं'[1] पडिवज्जए ॥

११—माणुसत्तंमि आयाओ जो धम्मं सोच्च सद्दहे ।
तवस्सी वीरियं लद्धुं संवुडे निद्धुणे रयं ॥

१२—"सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई ।
निव्वाणं परमं जाइ 'घयसित्त व्व'[2] पावए ॥"[3]

१३—विगिंच[4] कम्मुणो[5] हेउं जसं संचिणु खन्तिए ।
पाढवं सरीरं हिच्चा उड्ढं पक्कमई दिसं ॥

१४—विसालिसेहिं सीलेहिं जक्खा उत्तरउत्तरा ।
महासुक्का व दिप्पन्ता मन्नन्ता अपुणच्चवं ॥

१५—अप्पिया देवकामाणं कामरूवविउव्विणो ।
उड्ढं कप्पेसु चिट्ठन्ति पुव्वा वाससया बहू ॥

१६—तत्थ ठिच्चा जहाठाणं जक्खा आउक्खए चुया ।
उवेन्ति माणुसं जोणिं से दसंगेऽभिजायई ॥

१७—खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च पसवो दासपोरुसं ।
चत्तारि कामखन्धाणि तत्थ से उववज्जई ॥

१—नो य ण (स, सु, वृ०) ।
२—घयसत्तिव्व (उ) ; घयसित्तिव्व (ऋ, सु,) , घयसित्ते व (वृ०) ।
३—चउद्धा सपय लद्धु इहेव ताव भायते ।
तेयते तेजसपन्ने घयसित्ते व पावए ॥ (नागार्जुनीयाः) ।
४—विकिंचि (अ, आ) , विकिंच (चू०) ; विगिंच (चू० पा०) ।
५—कम्मणो (उ, ऋ) ।

१८—मित्तवं नायवं[1] होइ उच्चागोए य वण्णवं।
अप्पायंके महापन्ने अभिजाए जसोबले॥

१९—भोच्चा माणुस्सए भोए अप्पडिरूवे अहाउयं।
पुव्वं विसुद्धसद्धम्मे केवलं बोहि बुज्झिया॥

२०—चउरंगं दुल्लहं मत्ता[2] संजमं पडिवज्जिया।
तवसा धुयकम्मंसे सिद्धे हवइ सासए॥

—त्ति बेमि॥

*

१—नाइवं (अ); नाइवं (च)।
२—नच्चा (च)।

चउत्थं अज्झयणं

असंखयं

१—असंखयं जीविय मा पमायए
जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं।
एवं[1] वियाणाहि जणे पमत्ते
कण्णू विहिंसा अजया गहिन्ति॥

२—जे पावकम्मेहि धणं मणूसा
समाययन्ती अमइं[2] गहाय।
पहाय ते 'पास पयट्टिए'[3] नरे
वेराणुबद्धा नरयं उवेन्ति॥

३—तेणे जहा सन्धिमुहे गहीए
सकम्मुणा किच्चइ पावकारी।
एवं पया पेच्च[4] इहं च[5] लोए
'कडाण कम्माण न मोक्ख[6] अत्थि'[7]॥

४—संसारमावन्न परस्स अट्ठा
साहारणं जं च करेइ कम्मं।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले
न बन्धवा बन्धवयं उवेन्ति॥

१—एण (बृ० पा०)।
२—अमय (बृ० पा०; चू० पा०)।
३—पासपयट्टिए (ऋ); पासपइट्टिए (उ)।
४—पेच्छ (बृ०); पेच्च (बृ० पा०)।
५—पि (चू०, बृ० पा०)।
६—मोक्खो (बृ०, चू०)।
७—ण कम्मुणो पीहाति तो क्याती (बृ० पा०, चू० पा०)।

५—वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते
इमंमि लोए अदुवा परत्था।
दीवप्पणट्ठे व अणन्तमोहे
नेयाउयं दट्ठुमदट्ठुमेव ॥

६—सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी
न वीससे पण्डिए आसुपन्ने।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं
भारुण्डपक्खी व चरप्पमत्तो ॥

७—चरे पयाइं परिसंकमाणो
जं किंचि पासं इह मण्णमाणो।
लाभन्तरे जीविय वूहइत्ता
पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥

८—छन्दं निरोहेण उवेइ मोक्खं
आसे जहा सिक्खियवम्मधारी।
पुव्वाइं वासाइं चरप्पमत्तो
तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्खं ॥

९—स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा
एसोवमा सासयवाइयाणं।
विसीयई सिढिले आउयंमि[1]
कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥

१०—खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे।
समिच्च लोयं समया महेसी
अप्पाणरक्खी चरमप्पमत्तो[2] ॥

१—आउंमि (उ)।
२—व चरप्पमत्तो (ऋ); चरऽप्पमत्तो (उ)।

११—मुहुं मुहुं मोहगुणे जयन्तं
अणेगरूवा समणं चरन्तं ।
फासा फुसन्ती असमंजसं च
न तेसु भिक्खू मणसा पउस्से ॥

१२—'मन्दा य फासा बहुलोहणिज्जा'[1]
तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा ।
रक्खेज्ज कोह विणएज्ज माणं
मायं न सेवे पयहेज्ज लोहं ॥

१३—जे संखया तुच्छ परप्पवाई
ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
एए 'अहम्मो'त्ति दुगुंछमाणो
कंखे गुणे जाव सरीरभेओ ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—मदाउ तहा हियस्स वहुलोमणेज्जा (चू० पा०) ।

पञ्चम अज्झयणं

अकाममरणिज्जं

१—अण्णवंसि महोहंसि[1] एगे तिण्णे[2] दुरुत्तरं ।
तत्थ एगे महापन्ने इमं पट्ठमुदाहरे[3] ॥
२—सन्तिमे य[4] दुवे ठाणा अक्खाया मारणन्तिया ।
अकाममरणं चेव सकाममरणं तहा ॥
३—बालाणं[5] अकामं तु मरणं असइं भवे ।
पण्डियाण सकाम तु उक्कोसेण सइं भवे ॥
४—तत्थिम पढमं ठाणं महावीरेण देसियं ।
कामगिद्धे जहा बाले भिसं कूराइं कुव्वई ॥
५—जे गिद्धे कामभोगेसु एगे कूडाय गच्छई ।
न मे दिट्ठे परे लोए चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥
६—हत्थागया इमे कामा
कालिया जे अणागया ।
को जाणइ परे लोए
अत्थि वा नत्थि वा पुणो ? ॥
७—जणेण सद्धि होक्खामि इइ बाले पगब्भई ।
कामभोगाणुराएणं केसं सपडिवज्जई ॥
८—तओ से दण्डं समारभई तसेसु थावरेसु य ।
अट्ठाए य अणट्ठाए भूयग्गामं विहिंसई ॥

१—महोघसि (बृ० पा०) ।
२—तरइ (बृ०, चू०.) ; तिण्णे (बृ० पा०) ।
३—पण्हमुदाहरे (बृ० पा०, चू० पा०, सु) ।
४—खलु (चू०) , ए (बृ०) ।
५—बालाण य (अ) ।

९—हिंसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे ।
भुंजमाणे सुरं मंस सेयमेयं ति मन्नई ॥

१०—कायसा वयसा मत्ते वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
दुहओ मलं संचिणइ सिसुणागु व्व मट्टियं ॥

११—तओ पुट्ठो आयंकेणं गिलाणो परितप्पई ।
पभीओ परलोगस्स कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥

१२—सुया मे नरए ठाणा असीलाणं च जा गई ।
बालाण कूरकम्माण पगाढा जत्थ वेयणा ॥

१३—तत्थोववाइयं ठाणं जहा मेयमणुस्सुयं ।
आहाकम्मेहि गच्छन्तो सो पच्छा परितप्पई ॥

१४—जहा सागडिओ जाणं समं हिच्चा महापहं ।
विसमं मग्गमोइण्णो[1] 'अक्खे भग्गंमि'[2] सोयई ॥

१५—एवं धम्मं विउक्कम्म अहम्मं पडिवज्जिया ।
बाले मच्चुमुहं पत्ते अक्खे भग्गे व सोयई ॥

१६—तओ से मरणन्तंमि बाले सन्तस्सई[3] भया ।
अकाममरणं मरई धुत्ते व कलिना जिए ॥

१७—एयं अकाममरणं बालाणं तु पवेइयं ।
एत्तो सकाममरणं पण्डियाणं सुणेह मे ॥

१८—मरणं पि सपुण्णाणं[4] जहा मेयमणुस्सुयं ।
विप्पसण्णमणाघायं[5] संजयाण वुसीमओ ॥

१—मग्गमोगाढा (चू०) ; मग्गमोगाढो (वृ० पा०) ।
२—अक्खभग्गमि (वृ०) ; अक्खस्स भग्गे (चू०) ; अक्खे भग्गपि (वृ० पा०) ।
३—सतसई (चू०) ।
४—सुपुण्णाण (अ) ।
५—सुपसन्नेहिं अक्खाय (वृ० पा०, चू०) , सुप्पसन्नमणक्खाय (वृ०) ;
विप्पसण्णमणाघाय (चू० पा०) ।

१९—न इमं 'सव्वेसु भिक्खूसु'[1]
न इमं सव्वेसुऽगारिसु।
नाणासीला अगारत्था
विसमसीला य भिक्खुणो॥

२०—सन्ति एगेहि भिक्खूहि गारत्था संजमुत्तरा।
गारत्थेहि य सव्वेहिं साहवो संजमुत्तरा॥

२१—चीराजिणं नगिणिणं[2] जडीसंघाडिमुण्डिणं।
एयाणि वि न तायन्ति दुस्सीलं परियागयं॥

२२—पिण्डोलए व[3] दुस्सीले नरगाओ न मुच्चई।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा सुव्वए कम्मई दिवं॥

२३—अगारिसामाइयंगाइं सड्ढी काएण फासए।
पोसहं दुहओ पक्खं एगरायं न हावए॥

२४—एवं सिक्खासमावन्ने गिहवासे[4] वि सुव्वए।
मुच्चई छविपव्वाओ गच्छे जक्खसलोगयं॥

२५—अह जे संवुडे भिक्खू दोण्हं अन्नयरे[5] सिया।
सव्वदुक्खप्पहीणे वा देवे वावि महड्ढिए॥

२६—उत्तराइं विमोहाइं जुइमन्ताणुपुव्वसो।
समाइण्णाइं जक्खेहिं आवासाइं जसंसिणो॥

२७—दीहाउया इड्ढिमन्ता समिद्धा कामरूविणो।
अहुणोववन्नसंकासा भुज्जो अच्चिमालिप्पभा॥

१—सव्वेसिं भिक्खूणं (चू०)।
२—णिगिणिणं (वृ०); णियण (चू०)।
३—वि० (अ, चू०)।
४—गिहिवासे (उ)।
५—एगयरे (चू०)।

२८—ताणि ठाणाणि गच्छन्ति सिक्खित्ता संजमं तवं ।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा जे सन्ति परिनिव्वुडा ॥
२९—तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं[1] संजयाण वुसीमओ ।
न संतसन्ति मरणन्ते सीलवन्ता बहुस्सुया ॥
३०—तुलिया विसेसमादाय दयाधम्मस्स खन्तिए ।
विप्पसीएज्ज मेहावी तहाभूएण अप्पणा ॥
३१—तओ काले अभिप्पेए सड्ढी तालिसमन्तिए ।
विणएज्ज लोमहरिसं भेयं देहस्स कंखए ॥
३२—अह कालंमि संपत्ते 'आघायाय समुस्सयं ।'[2]
सकाममरणं मरई तिण्हमन्नयरं मुणी ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—सुपुज्जाण (चू०) ।
२—सुतक्खात समाहितो (चू०) ; आघायाए समुच्छय (चू० पा०) ।

छट्ठमज्झयणं

खुड्डागनियंठिज्जं

१—जावन्तऽविज्जापुरिसा 'सव्वे ते दुक्खसंभवा'[1]।
लुप्पन्ति बहुसो मूढा संसारंमि अणन्तए ॥

२—'समिक्ख पंडिए तम्हा'[2] पासजाईपहे बहू।
अप्पणा[3] सच्चमेसेज्जा मेत्तिं भूएसु[4] कप्पए ॥

३—माया पिया ण्हुसा भाया भज्जा पुत्ता य ओरसा।
नालं ते मम ताणाय लुप्पन्तस्स सकम्मुणा ॥

४—एयमट्ठं सपेहाए पासे समियदंसणे।
छिन्द गेहिं[5] सिणेहं च न कखे पुव्वसंथवं ॥

५—गवासं मणिकुंडलं पसवो दासपोरुसं।
सव्वमेयं चइत्ताणं कामरूवी भविस्ससि ॥

[थावरं जंगमं चेव धणं धण्णं उवक्खरं।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं नालं दुक्खाउ मोयणे ॥][6]

६—अज्झत्थं सव्वओ सव्वं दिस्स पाणे पियायए।
'न हणे पाणिणो पाणे'[7] भयवेराओ उवरए ॥

७—आयाणं नरयं दिस्स नायएज्ज तणामवि।
'दोगुंछी[8] अप्पणो पाए'[9] दिन्नं भुंजेज्ज भोयणं ॥

१—ते सव्वे दुक्खसंभवा (न ग.र्जुनीयाः)।
२—तम्हा समिक्ख मेहावी (चू०, वृ० पा०); समिक्ख पंडिए तम्हा (चू० पा०)।
३—अत्तट्ठा (वृ० पा०)।
४—भूएहिं (चू०)।
५—गेह (उ)।
६—यह श्लोक चूर्णि व टीका में व्याख्यात नहीं है।
७—नो हिंसेज्ज पाणिणं पाणे (चू०); नो हणे पाणिणं पाणे (वृ० पा०)।
८—दोगछी (ऋ)।
९—अप्पणो पाणिपाते (चू० पा०)।

८—इहमेगे उ मन्नन्ति अप्पच्चक्खाय पावगं ।
आयरियं[1] विदित्ताणं सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥

९—भणन्ता अकरेन्ता य बन्धमोक्खपइण्णिणो ।
वायाविरियमेत्तेण समासासेन्ति अप्पयं ॥

१०—न चित्ता तायए भासा कओ विज्जाणुसासणं ? ।
विसन्ना पावकम्मेहिं[2] बाला पंडियमाणिणो ॥

११—जे केइ सरीरे सत्ता वण्णे रूवे य सव्वसो ।
'मणसा कायवक्केणं'[3] सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥

१२—आवन्ना दीहमद्धाणं ससारंमि अणंतए ।
तम्हा सव्वदिसं पस्स अप्पमत्तो परिव्वए ॥

१३—बहिया उड्ढमादाय नावकंखे कयाइ वि ।
पुव्वकम्मखयट्ठाए इमं देहं समुद्धरे ॥

१४—विविच्च[4] कम्मुणो हेउं कालकंखी परिव्वए ।
मायं पिंडस्स पाणस्स कडं लद्धूण भक्खए ॥

१५—सन्निहिं च न कुव्वेज्जा लेवमायाए संजए ।
पक्खी पत्तं समादाय निरवेक्खो[5] परिव्वए ॥

१६—एसणासमिओ लज्जू गामे अणियओ चरे ।
अप्पमत्तो पमत्तेहिं पिंडवायं गवेसए ॥

१—आयारियं (वृ० पा०, उ, सु) ।
२—पावकिच्चेहिं (वृ० पा०) ।
३—पणसा वयसा चेव (चू०, वृ०) , मणसा कायवक्केण (वृ० पा०) ।
४—विगिंच (अ, आ, इ, उ, वृ० पा०) ।
५—निरवेक्खी (चू०) ।

१७–'एवं से उदाहु, अणुत्तरनाणी
अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे।
अरहा नायपुत्ते
भगवं वेसालिए वियाहिए ॥''[1]
—त्ति बेमि।'

*

१—एव से उदाहु अरहा पासे पुरिसादाणीए।
भगवंते वेसालिए वुद्धे परिनिव्वुडे ॥ (वृ० पा०, चू० पा०)

सत्तमं अज्झयणं

उरब्भिज्जं

१—जहाएसं समुद्दिस्स कोइ पोसेज्ज एलयं।
ओयणं 'जवसं देज्जा'[1] पोसेज्जा 'वि सयंगणे'[2] ॥
२—तओ से पुट्ठे परिवूढे जायमेए महोदरे।
पीणिए विउले देहे आएसं परिकंखए[3] ॥
३—जाव न एइ[4] आएसे ताव जीवइ से दुही।
अह पत्तंमि आएसे सीसं छेत्तूण भुज्जई ॥
४—जहा खलु से उरब्भे आएसाए समीहिए।
एवं बाले अहम्मिट्ठे ईहई नरयाउयं ॥
५—हिंसे बाले[5] मुसावाई अद्धाणंमि विलोवए।
अन्नदत्तहरे तेणे[6] माई कण्हुहरे[7] सढे ॥
६—इत्थीविसयगिद्धे य महारंभपरिग्गहे।
भुंजमाणे सुरं मंसं परिवूढे परंदमे ॥
७—अयक्करभोई य तुंदिल्ले चियलोहिए[8]।
आउयं नरए कंखे जहाएसं व एलए ॥
८—आसणं सयणं जाणं वित्तं कामे य भुंजिया।
दुस्साहडं धणं हिच्चा बहुं संचिणिया रयं ॥

१—जवसे देति (चू०)।
२—विसयगणे (वृ० पा०, चू०)।
३—पडि० (वृ०) : परि० (वृ० पा०)।
४—एज्जति (चू०)।
५—कोही (वृ० पा०)।
६—बाले (वृ०). तेणे (वृ० पा०)।
७—किन्नुहरे (चू०); कन्नुहरे (सु)।
८—°सोणिए (उ, ऋ)।

९—तओ कम्मगुरू जन्तू पच्चुप्पन्नपरायणे[1] ।
अय व्व आगयाएसे मरणन्तंमि सोयई ॥

१०—तओ आउपरिक्खीणे 'चुया देहा'[2] विहिंसगा[3] ।
आसुरियं दिसं बाला[4] 'गच्छन्ति अवसा'[5] तमं ॥

११—जहा कागिणिए हेउं सहस्सं हारए नरो ।
अपत्थं अम्बगं भोच्चा राया रज्जं तु हारए ॥

१२—एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए ।
सहस्सगुणिया भुज्जो आउं कामा य[6] दिव्विया ॥

१३—अणेगवासानउया जा सा पन्नवओ ठिई ।
'जाणि जीयन्ति'[7] दुम्मेहा ऊणे वाससयाउए ॥

१४—जहा य तिन्नि वणिया मूलं घेत्तूण निग्गया ।
एगोऽत्थ लहई लाहं एगो मूलेण आगओ ॥

१५—एगो मूलं पि हारित्ता आगओ तत्थ वाणिओ ।
ववहारे उवमा एसा एवं धम्मे वियाणह ॥

१६—माणुसत्तं भवे मूलं लाभो देवगई भवे ।
मूलच्छेएण जीवाणं नरगतिरिक्खत्तणं धुवं ॥

१७—दुहओ गई बालस्स आवई वहमूलिया ।
देवत्तं माणुसत्तं च जं जिए लोलयासढे ॥

१—० पलज्जणे (चू०) ।
२—चुओदेहा (बृ०) ; चुयदेहो (बृ० पा०) ।
३—विहिंसगो (बृ०) ।
४—बालो (बृ०) ।
५—गच्छइ अवसो (बृ०) ।
६—उ (अ) ।
७—हारिन्ति (बृ० पा०) ।

१८—तओ जिए सइं होइ दुविहं दोग्गइं गए ।
दुल्लहा तस्स उम्मज्जा अद्धाए सुइरादवि ॥

१९—एवं जिय[1] सपेहाए तुलिया बालं च पंडियं ।
मूलियं ते पवेसन्ति माणुसं जोणिमेन्ति[2] जे ॥

२०—वेमायाहिं सिक्खाहि जे नरा गिहिसुव्वया ।
उवेन्ति माणुसं जोणिं कम्मसच्चा[3] हु पाणिणो ॥

२१—जेसिं तु विउला सिक्खा मूलियं ते अइच्छिया[4] ।
सीलवन्ता सवीसेसा अद्दीणा जन्ति देवयं ॥

२२—एवमद्दीणवं[5] भिक्खु अगारिं[6] च वियाणिया ।
कहण्णु जिच्चमेलिक्ख 'जिच्चमाणे न'[7] संविदे ? ॥

२३—जहा कुसग्गे उदगं समुद्देण समं मिणे ।
एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए ॥

२४—कुसग्गमेत्ता इमे कामा सन्निरुद्धंमि आउए ।
कस्स हेउं पुराकाउं[8] जोगक्खेमं न संविदे ? ॥

२५—इह कामाणियट्टस्स अत्तट्ठे अवरज्झई ।
'सोच्चा[9] नेयाउयं मग्गं जं भुज्जो परिभस्सई'[10] ॥

१—जिए (बृ०) ।
२—जोणिमिन्ति (उ, चू०) ।
३—कम्मसत्ता (बृ० पा०, चू० पा०) ।
४—तिउच्छिया (अ) ; ते उड्डिया (चू०) , ते अइच्छिया (चू० पा०) ; विउट्टिया, अतिट्ठिया, अतिच्छिया (बृ०) ।
५—एव अदीणव (चू०, बृ०) ।
६—आगारिं (उ, ऋ) ।
७—जिच्चमाण व (चू०) ।
८—पुरोकाउ (चू०) ।
९—पत्तो (बृ० पा०, चू० पा०) ।
१०—पूइदेह निरोहेण भवे देवे त्ति मे सुय (चू० पा०) ।

२६—'इह कामणियट्टस्स अत्तट्ठे नावरज्झई।
पूइदेहनिरोहेणं भवे देवि त्ति मे सुयं॥'[1]

२७—इड्ढी जुई जसो वण्णो आउं सुहमणुत्तरं।
भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु तत्थ से उववज्जई॥

२८—बालस्स पस्स बालत्तं अहम्मं पडिवज्जिया[2]।
चिच्चा धम्मं अहम्मिट्ठे नरए[3] उववज्जई॥

२९—धीरस्स पस्स धीरत्तं सव्वधम्माणुवत्तिणो।
चिच्चा अधम्मं धम्मिट्ठे[4] देवेसु उववज्जई॥

३०—तुलियाण बालभावं अबालं चेव पण्डिए।
चइऊण बालभावं अबालं सेवए मुणि॥

—त्ति बेमि।

*

१—यह श्लोक चूर्णि में व्याख्यात नहीं है।
२—पडिवज्जिणो (अ, बृ० पा०)।
३—नरएसु (अ, उ)।
४—धम्मिट्ठे (उ)।

अट्ठमं अज्झयणं

काविलीयं

१–'अधुवे असासयंमि'[1]
संसारंमि दुक्खपउराए ।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं
'जेणाहं दोग्गइं न गच्छेज्जा'[2] ॥

२–विजहित्तु पुव्वसंजोगं
न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा ।
असिणेह सिणेहकरेहिं
दोसपओसेहिं[3] मुच्चए भिक्खू ॥

३–तो नाणदंसणसमग्गो
हियनिस्सेसाए[4] सव्वजीवाणं ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए
भासई मुणिवरो विगयमोहो ॥

४–सव्वं गन्थं कलहं च
विप्पजहे तहाविहं[5] भिक्खू ।
'सव्वेसु कामजाएसु'[6]
पासमाणो न लिप्पई ताई ॥

१–अधुवमि मोहगहणए (नागार्जुनीयाः) ।
२–जेणाह(ं) दुग्गइतो मुच्चेज्जा (चू०, वृ० पा०) ।
३–दोसपएहिं (वृ०) , दोसपउसेहिं (वृ० पा०) ।
४–हियनिस्सेसाय (चू०, सु) ।
५–तहाविहो (वृ० पा०, चू० पा०) ।
६–सव्वेहिं कामजाएहिं (चू०) ।

५—भोगामिसदोसविसण्णे
हियनिस्सेयसबुद्धिवोच्चत्थे ।
बाले य मन्दिए मूढे
बज्झई मच्छिया व खेलंमि ॥

६—दुपरिच्चया इमे कामा
नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं ।
अह सन्ति सुव्वया साहू[1]
जे तरन्ति 'अतरं वणिया व'[2] ॥

७—समणा मु एगे वयमाणा
पाणवहं मिया अयाणन्ता ।
मन्दा निरयं[3] गच्छन्ति
बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥

८—न हु पाणवहं अणुजाणे
मुंच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं ।
एवारिएहिं[4] अक्खायं
जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ॥

९—पाणे य नाइवाएज्जा
से 'समिए त्ति'[5] वुच्चई ताई ।
तओ से पावयं कम्मं
निज्जाइ[6] उदगं व थलाओ ॥

१—सव्वे (चू०) ।
२—वणिया व समुद्द (बृ० पा०, चू०) ; अतर वणिया व (चू० पा०)
३—नरय (बृ० पा०, चू०) ।
४—एवायरिएहिं (अ, ऋ) , एवमारिएहिं (आ, सु) ।
५—सम्मिय त्ति (चू०) , समीए त्ति (अ०) , समीइ त्ति (उ. ऋ) ।
६—णिण्गाइ (बृ० पा०) ।

१०—'जगनिस्सिएहिं भूएहिं
तसनामेहि थावरेहिं च।'[1]
नो तेसिमारभे दंडं
मणसा वयसा कायसा चेव ॥
११—सुद्धेसणाओ नच्चाणं
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं।
जायाए घासमेसेज्जा
रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥
१२—पन्ताणि चेव सेवेज्जा
सीयपिंडं पुराणकुम्मासं।
अदु वुक्कसं पुलागं वा
'जवणट्ठाए निसेवए'[2] मंथु ॥
१३—जे लक्खणं च सुविणं च
अंगविज्जं च जे पउंजन्ति।
न हु ते समणा वुच्चन्ति
एवं आयरिएहिं[3] अक्खायं ॥
१४—इहजीवियं अणियमेत्ता
पब्भट्ठा समाहिजोएहि।
ते कामभोगरसगिद्धा
उववज्जन्ति आसुरे काए ॥

१—जगनिस्सियाण भूयाण तसाण थावराण य। (बृ० पा०);
जगणिसित भूताण तसणामाणं च थावराण च। (चू०);
जगनिस्सितेसु थावरणामेसु भूतेसु तसणामेसु वा। (चू० पा०);
जगनिस्सिएहिं भूएहिं तसनामेहिं थावरे हिं वा। (चू०)।
२—जवणट्ठा वा सेवए (बृ०); जवणट्ठाए णिसेवए (बृ० पा०)।
३—आरिएहिं (अ, बृ०)।

१५—तत्तो वि य उवट्टित्ता
संसारं बहुं अणुपरियडन्ति[1] ।
बहुकम्मलेवलित्ताणं
बोही होइ[2] सुदुल्लहा तेसिं ॥

१६—कसिणं पि जो इमं लोयं
पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स ।
तेणावि से न संतुस्से[3]
इइ दुप्पूरए इमे आया ॥

१७—जहा लाहो तहा लोहो
लाहा लोहो पवड्ढई ।
दोमासकयं कज्जं
कोडीए वि न निट्ठियं ॥

१८—नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा
गंडवच्छासु ऽणेगचित्तासु ।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता
खेलन्ति जहा व दासेहिं ॥

१९—नारीसु नोपगिज्झेज्जा
इत्थी विप्पजहे अणगारे ।
धम्मं च पेसलं नच्चा
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥

१—अनुपरियट्टंति (ऋ) : अनुपरियति (अ, वृ०), अनुचरंति (वृ० पा०) ।
२—जत्थ (वृ० पा०) ।
३—संतुसिज्जा (ऋ) ; तुसिज्ज (उ) ; तुसिज्जा (अ) ; (सं)तुस्से (चू०) ।

२०—इइ एस धम्मे अक्खाए
कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं।
तरिहिन्ति जे उ काहिन्ति
तेहिं आराहिया दुवे लोग॥
—त्ति बेमि॥

*

नवम अज्झयणं

नमिपव्वज्जा

१—चइऊण देवलोगाओ
उववन्नो माणुसंमि लोगंमि।
उवसन्तमोहणिज्जो
सरई पोराणियं जाइं॥
२—जाइं सरित्तु भयवं
सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे।
पुत्तं ठवेत्तु रज्जे
अभिणिक्खमई नमी राया॥
३—से देवलोगसरिसे
अन्तेउरवरगओ वरे भोए।
भुंजित्तु नमी राया
बुद्धो भोगे परिच्चयई॥
४—मिहिल सपुरजणवय
बलमोरोहं च परियणं सव्वं।
चिच्चा अभिनिक्खन्तो
एगन्तमहिट्ठिओ भयवं॥
५—कोलाहलगभूयं
आसी मिहिलाए पव्वयन्तंमि।
तइया रायरिसिंमि
नमिंमि अभिणिक्खमन्तंमि॥
६—अब्भुट्ठियं रायरिसिं पव्वज्जाठाणमुत्तमं।
सक्को माहणरूवेण इमं वयणमब्बवी॥

७—किण्णु भो ! अज्ज मिहिलाए कोलाहलगसंकुला ।
सुव्वन्ति दारुणा सद्दा पासाएसु गिहेसु य ? ॥

८—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्ववी ॥

९—मिहिलाए चेइए वच्छे सीयच्छाए मणोरमे ।
पत्तपुप्फफलोवेए वहूणं वहुगुणे सया ॥

१०—वाएण हीरमाणंमि चेइयंमि मणोरमे ।
दुहिया असरणा अत्ता एए कन्दन्ति भो ! खगा ॥

११—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्ववी ॥

१२—एस अग्गी य वाऊ य एयं डज्झइ मन्दिरं ।
भयवं ! अन्तेउरं तेणं कीस णं नावपेक्खसि[1] ? ॥

१३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्ववी ॥

१४—सुहं वसामो जीवामो जेसिं मो नत्थि किंचण ।
मिहिलाए डज्झमाणीए न मे डज्झइ किंचण

१५—चत्तपुत्तकलत्तस्स निव्वावारस्स भिक्खुणो
पियं न विज्जई किंचि अप्पियं पि न विज्जए

१६—वहुं खु मुणिणो भद्दं अणगारस्स भिक्खुणो
सव्वओ विप्पमुक्कस्स एगन्तमणुपस्सओ

१७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्ववी

१—नावपिक्खह (अ) ।

१८—पागारं कारइत्ताणं गोपुरट्टालगाणि च ।
उस्सूलगसयग्घीओ[1] तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
१९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥
२०—सद्धं नगरं[2] किच्चा तवसंवरमग्गलं ।
'खन्ति निउणपागारं तिगुत्तं दुप्पधंसयं'[3] ॥
२१—धणुं परक्कमं किच्चा जीवं च इरियं सया ।
धिइं च केयणं किच्चा सच्चेण पलिमन्थए[4] ॥
२२—तवनारायजुत्तेण भेत्तूणं कम्मकंचुयं ।
मुणी विगयसंगामो भवाओ परिमुच्चए ॥
२३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥
२४—पासाए[5] कारइत्ताणं वद्धमाणगिहाणि य ।
बालग्गपोइयाओ य तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
२५—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥
२६—संसयं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घरं ।
जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ॥
२७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

१—उच्चूलगा० (स) ।
२—नगरीं (बृ०) ।
३—खन्ति निउण पागार तिगुत्ति दुप्पधसय (बृ० पा०) ।
४—पलिकथए (चू०) ।
५—पासायं (ऋ) ।

२८—आमोसे लोमहारे य गंठिभेए य तक्करे ।
नगरस्स खेमं काऊणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

२९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

३०—असइं तु मणुस्सेहिं मिच्छा दण्डो पजुंजई ।
अकारिणोऽत्थ बज्झन्ति मुच्चई कारओ जणो ॥

३१—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

३२—जे केइ पत्थिवा तुब्भं[1] नानमन्ति नराहिवा ! ।
वसे ते ठावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

३३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

३४—जो सहस्सं सहस्साणं संगामे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस से परमो जओ ॥

३५—अप्पाणमेव जुज्झाहि किं ते जुज्झेण बज्झओ ।
अप्पाणमेव[2] अप्पाणं जइत्ता सुहमेहए ॥

३६—पंचिन्दियाणि कोहं माणं मायं तहेव लोहं च ।
दुज्जयं चेव अप्पाणं सव्वं अप्पे जिए जियं ॥

३७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

३८—जइत्ता विउले जन्ने भोइत्ता समणमाहणे ।
दच्चा भोच्चा य जट्ठा य तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

१—तुज्झ (बृ० पा०) ।
२—अप्पणा चेव (अ) ।

३९—एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्ववी ॥

४०—जो सहस्सं सहस्साण मासे मासे गवं दए ।
तस्सावि संजमो सेओ अदिन्तस्स वि किंचण ॥

४१—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्ववी ॥

४२—घोरासमं चइत्ताण[1] अन्नं पत्थेसि आसमं ।
इहेव पोसहरओ भवाहि मणुयाहिवा ! ॥

४३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्ववी ॥

४४—मासे मासे तु जो बालो कुसग्गेण तु[2] भुंजए ।
न सो सुयक्खायधम्मस्स कलं अग्घइ सोलसिं ॥

४५—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्ववी ॥

४६—हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं कंसं दूसं च वाहणं[3] ।
कोसं वड्ढावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

४७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्ववी ॥

४८—सुवण्णरुप्पस्स उ[4] पव्वया भवे
सिया हु केलाससमा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं[5] किंचि
इच्छा उ आगाससमा अणन्तिया ॥

१—जहित्ताणं (वृ० पा०) ।
२—व (अ) ।
३—सवाहण (वृ० पा०, चू०) ।
४—य (अ) ।
५—तेणं (वृ० पा०) ।

४९—पुढवी साली जवा चेव हिरण्णं पसुभिस्सह ।
पडिपुण्णं[1] नालमेगस्स इइ विज्जा तवं चरे ॥

५०—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

५१—अच्छेरगमब्भुदए भोए चयसि[2] पत्थिवा[3] ।
असन्ते कामे पत्थेसि संकप्पेण विहन्नसि ॥

५२—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

५३—सल्लं कामा विसं कामा कामा आसीविसोवमा ।
कामे पत्थेमाणा अकामा जन्ति दोग्गइं ॥

५४—अहे वयइ कोहेणं माणेणं अहमा गई ।
माया गईपडिग्घाओ लोभाओ दुहओ भयं ॥

५५—अवउज्झिऊण माहणरूवं विउव्विऊण इन्दत्तं ।
वन्दइ अभित्थुणन्तो इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥

५६—अहो ते निज्जिओ कोहो अहो ते माणो पराजिओ ।
अहो ते निरक्किया माया अहो ते लोभो वसीकओ ॥

५७—अहो ते अज्जवं साहु अहो ते साहु मद्दवं ।
अहो ते उत्तमा खन्ती अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥

५८—इहं सि उत्तमो भन्ते पेच्चा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्तमुत्तमं[4] ठाणं सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥

१—सव्वत (वृ० पा०) ।
२—जहासि (वृ०) ; चयसि (वृ० पा०) ।
३—खत्तिया (वृ० पा०) ।
४—लोगुत्तम मुत्तमं (वृ० पा०) ।

५९—एवं अभित्थुणन्तो
रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए।
पयाहिणं[1] करेन्तो
पुणो पुणो वन्दई सक्को॥

६०—तो[2] वन्दिऊण पाए
चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स।
आगासेणुप्पइओ
ललियचवलकुंडलतिरीडी॥

६१—नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं[3] सक्केण चोइओ।
चइऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ॥

६२—एवं करेन्ति संबुद्धा[4] पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से नमी रायरिसि॥

—त्ति बेमि॥

१—पायाहिणं (बृ०)।
२—स (बृ० पा०)।
३—सक्कं (ऋ)।
४—सपन्ना (चू०)।

दसमं अज्झयणं

दुमपत्तयं

१—दुमपत्तए पण्डुयए जहा
निवडइ राइगणाण अच्चए।
एवं मणुयाण जीवियं
समयं गोयम! मा पमायए॥

२—कुसग्गे जह ओसबिन्दुए
थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए।
एवं मणुयाण जीवियं
समयं गोयम! मा पमायए॥

३—'इइ इत्तरियम्मि आउए
जीवियए बहुपच्चवायए'[1]।
विहुणाहि रयं पुरे कडं
समयं गोयम! मा पमायए॥

४—दुलहे खलु माणुसे भवे
चिरकालेण वि सव्वपाणिणं।
गाढा य विवाग कम्मुणो
समयं गोयम! मा पमायए॥

५—पुढविक्कायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं
समयं गोयम! मा पमायए॥

१—एवं मणुयाण जीविए
पत्तिरिए बहुपच्चवायए। (वृ० पा०)।

६—आउक्कायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं
समयं गोयम! मा पमायए॥

७—तेउक्कायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं
समयं गोयम! मा पमायए॥

८—वाउक्कायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं
समयं गोयम! मा पमायए॥

९—वणस्सइकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालमणन्तदुरन्तं
समयं गोयम! मा पमायए॥

१०—बेइन्दियकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखिज्जसन्नियं
समयं गोयम! मा पमायए॥

११—तेइन्दियकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखिज्जसन्नियं
समयं गोयम! मा पमायए॥

१२—चउरिन्दियकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखिज्जसन्नियं
समयं गोयम! मा पमायए॥

१३—पंचिन्दियकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
सत्तट्ठभवग्गहणे
समयं गोयम! मा पमायए॥

१४—देवे नेरइए य अइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
इक्किक्कभवग्गहणे
समयं गोयम! मा पमायए॥

१५—एवं भवसंसारे
संसरइ सुहासुहेहि कम्मेहिं।
जीवो पमायवहुलो
समयं गोयम! मा पमायए॥

१६—लद्धूण वि माणुसत्तणं
आरिअत्तं पुणरावि दुल्लहं।
वहवे दसुया मिलेक्खुया
समयं गोयम! मा पमायए॥

१७—लद्धूण वि आरियत्तणं
अहीणपंचिन्दियया हु दुल्लहा।
विगलिन्दियया हु दीसई
समयं गोयम! मा पमायए॥

१८—अहीणपंचिन्दियत्तं पि से लहे
उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा।
कुतित्थिनिसेवए[1] जणे
समयं गोयम! मा पमायए॥

१९—लद्धूण वि उत्तमं सुइं
सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा।
मिच्छत्तनिसेवए जणे
समयं गोयम! मा पमायए॥

२०—धम्मं पि हु सद्दहन्तया
दुल्लहया[2] काएण फासया।
इह कामगुणेहि[3] मुच्छिया
समयं गोयम! मा पमायए॥

२१—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से सोयबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

२२—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से चक्खुबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

१—कुतित्थ० (बृ० पा०, चू०)।
२—दुल्लहा (उ)।
३—कामगुणेसु (उ, म, बृ०); काम गुणेहि (बृ० पा०)।

२३—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से घाणबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

२४—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से जिब्भबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

२५—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से फासबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

२६—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से सव्वबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

२७—अरई गण्डं विसूइया
आयंका विविहा फुसन्ति ते।
विवडइ विद्धंसइ ते सरीरयं
समयं गोयम! मा पमायए॥

२८—वोछिन्द सिणेहमप्पणो
कुमुयं सारइयं व[1] पाणियं।
से सव्वसिणेहवज्जिए
समयं गोयम! मा पमायए॥

१—च (अ, उ)।

२९—चिच्चाण धणं च भारियं
पव्वइओ हि सि अणगारियं।
मा वन्तं पुणो वि आइए
समयं गोयम! मा पमायए॥

३०—अवउज्झियं मित्तबन्धवं
विउलं चेव धणोहसंचयं।
मा तं बिइयं गवेसए
समयं गोयम! मा पमायए॥

३१—न हु जिणे अज्ज दिस्सई
बहुमए दिस्सई मग्गदेसिए।
संपइ नेयाउए पहे
समयं गोयम! मा पमायए॥

३२—अवसोहिय कण्टगापहं
ओइण्णो सि पहं महालयं।
गच्छसि मग्गं विसोहिया
समयं गोयम! मा पमायए॥

३३—अबले जह भारवाहए
मा मग्गे विसमे वगाहिया।
पच्छा पच्छाणुतावए
समयं गोयम! मा पमायए॥

३४—तिण्णो हु सि अण्णवं महं
किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ।
अभितुर पारं गमित्तए
समयं गोयम! मा पमायए॥

३५—अकलेवरसेणिमुस्सिया
सिद्धिं गोयम लोयं गच्छसि ।
खेमं च सिवं अणुत्तरं
समयं गोयम! मा पमायए ॥
३६—बुद्धे परिनिव्वुडे चरे
गामगए नगरे व संजए ।
सन्तिमग्गं च बूहए
समयं गोयम! मा पमायए ॥
३७—बुद्धस्स निसम्म भासियं
सुकहियमट्ठपओवसोहियं ।
रागं दोसं च छिन्दिया
सिद्धिगइं गए गोयमे ॥
—त्ति बेमि ॥

*

इक्कारसमं अज्झयणं

बहुस्सुयपुज्जा

१—संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो।
आयारं पाउकरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे॥
२—जे यावि होइ निव्विज्जे थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
अभिक्खणं उल्लवई अविणीए अबहुस्सुए॥
३—अह पंचहिं ठाणेहि जेहिं सिक्खा न लब्भई।
थम्भा कोहा पमाएणं रोगेणाऽलस्सएण य॥
४—अह अट्ठहि ठाणेहि सिक्खासीले त्ति वुच्चई।
अहस्सिरे सया दन्ते न य मम्ममुदाहरे॥
५—नासीले न विसीले न सिया अइलोलुए।
अकोहणे सच्चरए सिक्खासीले त्ति वुच्चई॥
६—अह चउदसहि ठाणेहिं वट्टमाणे उ संजए।
अविणीए वुच्चई सो उ निव्वाणं च न गच्छइ॥
७—अभिक्खणं कोही हवइ पबन्धं च पकुव्वई।
मेत्तिज्जमाणो वमइ सुयं लद्धूण मज्जई॥
८—अवि पावपरिक्खेवी अवि मित्तेसु कुप्पई।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स रहे भासइ पावगं॥
९—पइण्णवाई दुहिले थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अचियत्ते अविणीए त्ति वुच्चई॥
१०—अह पन्नरसहिं ठाणेहिं सुविणीए त्ति वुच्चई।
नीयावत्ती अचवले अमाई अकुऊहले॥

११—अप्पं चाऽहिक्खिवई[1] पबन्धं च न कुव्वई ।
मेत्तिज्जमाणो भयई सुयं लद्धुं न मज्जई ॥

१२—न य पावपरिक्खेवी न य मित्तेसु कुप्पई ।
अप्पियस्सावि मित्तस्स रहे कल्लाण भासई ॥

१३—कलहडमरवज्जए वुद्धे अभिजाइए ।
हिरिमं पडिसंलीणे सुविणीए त्ति वुच्चई ॥

१४—वसे गुरुकुले निच्चं जोगवं उवहाणवं ।
पियंकरे पियंवाई से सिक्खं लद्धुमरिहई ॥

१५—जहा संखम्मि पयं
'निहियं दुहओ'[2] वि विरायइ ।
एवं वहुस्सुए भिक्खू
धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥

१६—जहा से कम्बोयाणं आइण्णे कन्थए सिया ।
आसे जवेण पवरे एवं हवइ वहुस्सुए ॥

१७—जहाइण्णसमारूढे सूरे दढपरक्कमे ।
उभओ नन्दिघोसेणं एवं हवइ वहुस्सुए ॥

१८—जहा करेणुपरिकिण्णे कुंजरे सट्ठिहायणे ।
बलवन्ते अप्पडिहए एवं हवइ वहुस्सुए ॥

१९—जहा से तिक्खसिंगे जायखन्धे विरायई ।
वसहे जूहाहिवई एवं हवइ वहुस्सुए ॥

२०—जहा से तिक्खदाढे उदग्गे दुप्पहंसए ।
सीहे मियाण पवरे एवं हवइ वहुस्सुए ॥

१—वाऽहिक्खिवइ (अ) ; चऽहिक्खिवइ (उ) ।
२—णिसित उभयतो (चू०) ।

२१–जहा से वासुदेवे संखचक्कगयाधरे ।
अप्पडिहयबले जोहे एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२२–जहा से चाउरन्ते चक्कवट्टी महिड्ढिए ।
चउदसरयणाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२३–जहा से सहस्सक्खे वज्जपाणी पुरन्दरे ।
सक्के देवाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२४–जहा से तिमिरविद्धंसे उत्तिट्ठन्ते दिवायरे ।
जलन्ते इव तेएण एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२५–जहा से उडुवई चन्दे नक्खत्तपरिवारिए ।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२६–जहा से सामाइयाणं[1] कोट्ठागारे सुरक्खिए ।
नाणाधन्नपडिपुण्णे एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२७–जहा सा दुमाण पवरा जम्बू नाम सुदंसणा ।
अणाढियस्स देवस्स एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२८–जहा सा नईण पवरा सलिला सागरंगमा ।
सीया नीलवन्तपवहा[2] एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२९–जहा से नगाण पवरे सुमहं मन्दरे गिरी ।
नाणोसहिपज्जलिए एवं हवइ बहुस्सुए ॥

३०–जहा से सयंभूरमणे उदही अक्खओदए ।
नाणारयणपडिपुण्णे[3] एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१–सामाइयंगाणं (बृ० पा०) ।
२–°पभवा (बृ०) ; °पवहा (बृ० पा०) ।
३–°संपुण्णे (अ) ।

३१—समुद्दगम्भीरसमा दुरासया
अचक्किया केणइ दुप्पहंसया[1]।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥
३२—तम्हा सुयमहिट्ठेज्जा उत्तमट्ठगवेसए[2]।
जेणऽप्पाणं परं चेव सिद्धिं संपाउणेज्जासि ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—दुप्पहसिया (चू०)।
२—उत्तमिट्ठ ० (अ)।

बारसमं अज्झयणं

हरिएसिज्जं

१–सोवागकुलसंभूओ
गुणुत्तरधरो[1] मुणी ।
हरिएसबलो नाम
आसि भिक्खू जिइन्दिओ ॥

२–इरिएसणभासाए
उच्चारसमिईसु य ।
जओ आयाणनिक्खेवे
संजओ सुसमाहिओ ॥

३–मणगुत्तो वयगुत्तो
कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
भिक्खट्ठा बम्भइज्जम्मि
जन्नवाडं उवट्ठिओ ॥

४–तं पासिऊणमेज्जन्तं तवेण परिसोसियं ।
पन्तोवहिउवगरणं उवहसन्ति अणारिया ॥

५–जाईमयपडिथद्धा[2] हिंसगा अजिइन्दिया ।
अबम्भचारिणो बाला इमं वयणमब्बवी ॥

६–'कयरे आगच्छइ'[3] दित्तरूवे
काले विगराले फोक्कनासे ।
ओमचेलए पंसुपिसायभूए
संकरदूसं परिहरिय कण्ठे ॥

१—अणुत्तरधरो (अ, बृ०पा०, चू०) ।
२—° पडिवद्धा (उ, बृ०पा०) ।
३—कयरे तुम एसिंघ (चू०) ; कयरे आगच्छति (चू० पा०) ;
को रे आगच्छइ (बृ० पा०) ।

७—कयरे[1] तुमं इय अदंसणिज्जे
काए व आसाइ इमागओ सि ।
ओमचेलगा पंसुपिसायभूया
गच्छ क्खलाहि किमिहं ठिओसि ? ॥

८—जक्खो तहिं तिन्दुयरुक्खवासी
अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स ।
पच्छायइत्ता नियग सरीरं
इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥

९—समणो अहं संजओ बम्भयारी
विरओ धणपयणपरिग्गहाओ ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले
अन्नस्स अट्ठा इहमागओ मि ॥

१०—वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई य
अन्नं पभूयं भवयाणमेयं ।
जाणाहि मे जायणजीविणु[2] त्ति
सेसावसेसं लभऊ तवस्सी ॥

११—उवक्खडंभोयण माहणाणं
अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं
दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ? ॥

१—को रे (सु० पा०, बृ० पा०) ।
२—° जीवणो त्ति (बृ० पा०) ।

१२—थलेसु बीयाइ ववन्ति कासगा
तहेव निन्नेसु य आससाए।
एयाए सद्धाए दलाह मज्झं
'आराहए पुण्णमिणं खु खेत्तं'[1] ॥

१३—खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए
जहिं पकिण्णा विरुहन्ति पुण्णा।
जे माहणा जाइविज्जोववेया
ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥

१४—कोहो य माणो य वहो य जेसिं
मोसं अदत्तं च परिग्गहं च।
ते माहणा जाइविज्जाविहूणा
ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥

१५—तुब्भेत्थ भो भावधरा[2] गिराणं
अट्ठं न जाणाह अहिज्ज वेए।
उच्चावयाइं मुणिणो चरन्ति
ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥

१६—अज्झावयाणं पडिकूलभासी
पभाससे किं तु सगासि अम्हं।
अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं[3]
न य णं दहामु तुमं नियण्ठा! ॥

१—आराहगा होहिम पुण्ण खेत्तं (बृ० पा०)।
२—भारवहा (बृ० पा०)।
३—भत्तपाण (ऋ)।

१७–समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स
गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स ।
जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं
किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ? ॥

१८–के एत्थ खत्ता उवजोइया वा
अज्झावया वा सह खण्डिएहिं ।
एयं[1] दण्डेण फलेण हन्ता
कण्ठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ? ॥

१९–अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता
उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव
समागया तं 'इसि तालयन्ति'[2] ॥

२०–रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया
भद्द त्ति नामेण अणिन्दियंगी ।
तं पासिया संजय हम्ममाणं
कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥

२१–देवाभिओगेण निओइएणं
दिन्ना मु रन्ना मणसा न झाया ।
नरिन्ददेविन्दऽभिवन्दिएणं
जेणम्हि वन्ता इसिणा स एसो ॥

१–एय खु (अ उ) ; एयं तु (आ) ।
२–इसिं ताडयंति (उ, ऋ) ।

२२–एसो हु सो उग्गतवो महप्पा
जिइन्दिओ संजओ बम्भयारी ।
'जो मे'[१] तया नेच्छइ दिज्जमाणिं
पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥

२३–महाजसो एस महाणुभागो[२]
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एयं हीलह अहीलणिज्जं
मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥

२४–एयाइं तीसे वयणाइ सोच्चा
पत्तीइ भद्दाइ सुहासियाइं ।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए
जक्खा कुमारे विणिवाडयन्ति[३] ॥

२५–ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्खे
असुरा तहि तं जणं तालयन्ति ।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते
पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥

२६–गिरिं नहेहिं खणह
अयं दन्तेहिं खायह ।
जायतेयं पाएहि हणह
जे भिक्खु अवमन्नह ॥

१—जो म (अ, आ०) ।
२—महानुभावो (बृ० पा०, चू०) ।
३—विणिवारयंति (बृ० पा०) ।

२७–आसीविसो उग्गतवो महेसी
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
अगणिं व पक्खन्द पयंगसेणा
जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह[1] ॥

२८–सीसेण एयं सरणं उवेह
समागया सव्वजणेण तुब्भे ।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा
लोगं पि एसो कुविओ डहेज्जा ॥

२९–अवहेडिय[2] पिट्ठिसउत्तमंगे
पसारियाबाहु अकम्मचेट्ठे ।
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमन्ते
उड्ढंमुहे निग्गयजीहनेत्ते ॥

३०–ते पासिया खण्डिय कट्ठभूए
विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
इसिं पसाएइ सभारियाओ
हीलं च निन्दं च खमाह भन्ते! ॥

३१–बालेहि मूढेहि अयाणएहिं
जं हीलिया तस्स खमाह भन्ते! ।
महप्पसाया इसिणो हवन्ति
न हु मुणी कोवपरा हवन्ति ॥

१–हणेह (क्व) ।
२–आवडिय (वृ० पा०) ।

३२–'पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च'[1]
मणप्पदोसो न मे अत्थि कोइ ।
जक्खा हु वेयावडियं करेन्ति
तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥

३३–अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा
तुब्भे न वि कुप्पह भूइपन्ना ।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो
समागया सव्वजणेण अम्हे ॥

३४–अच्चेमु ते महाभाग![2] न ते किंचि न अच्चिमो ।
भुंजाहि सालिमं कूरं नाणावंजणसंजुयं ॥

३५–इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं
तं भुंजसू अम्ह अणुग्गहट्ठा ।
बाढं ति पडिच्छइ भत्तपाणं
मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥

३६–तहियं गन्धोदयपुप्फवासं
दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा ।
पहयाओ[3] दुन्दुहीओ सुरेहिं
आगासे अहो दाणं च घुट्ठं ॥

३७–सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो
न दीसई जाइविसेस कोई ।
'सोवागपुत्ते हरिएससाहू'[4]
जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा ॥

१—पुव्विं च पच्छा व तहेव मज्झे (बृ० पा०) ; पुव्विं च पच्छा व अणागय च (चू०)
२—महाभागा ! (अ, उ, ऋ) ।
३—पहया (उ, ऋ) ।
४—सोवागपुत्तं हरिएससाहुं (बृ० पा०) ।

३८–किं माहणा! जोइसमारभन्ता
उदएण सोहिं बहिया विमग्गहा ? ।
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं
न तं सुदिट्ठं कुसला वयन्ति ॥

३९–कुसं च जूवं तणकट्ठमग्गिं
सायं च पायं उदगं फुसन्ता ।
पाणाइ भूयाइ विहेडयन्ता
भुज्जो वि मन्दा! पगरेह पावं ॥

४०–कहं चरे ? भिक्खु ! वयं जयामो ?
पावाइ कम्माइ पणोल्लयामो ? ।
अक्खाहि णे संजय ! जक्खपूइया !
कहं सुजट्ठं कुसला वयन्ति ? ॥

४१–छज्जीवकाए असमारभन्ता
मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
परिग्गहं इत्थिओ माणमायं
एयं परिन्नाय चरन्ति[1] दन्ता ॥

४२–सुसंवुडो[2] पंचहिं संवरेहिं
इह जीवियं अणवकंखमाणो[3] ।
वोसट्ठकाओ[4] सुइचत्तदेहो[5]
महाजयं जयई जन्नसिट्ठं ॥

१–चरेज्ज (वृ०) ; चरन्ति (वृ० पा०) ।
२–सुसवुडा (उ, सु) ।
३–अणवकखमाणा (उ, सु) ।
४–वोसट्ठकाया (उ, सु) ।
५–सुइचत्तदेहा (उ, सु) ।

४३—के ते जोई? के व ते जोइठाणे?
का ते सुया ? कि व[1] ते कारिसंगं ? ।
एहा य ते कयरा सन्ति ? भिक्खू !
कयरेण होमेण हुणासि जोइं ? ॥

४४—तवो जोई जीवो जोइठाणं
जोगा सुया सरीरं कारिसंगं ।
कम्म एहा संजमजोगसन्ती
होम हुणामी इसिणं पसत्थं ॥

४५—के ते हरए? के य ते सन्तितित्थे?
कहिंसि ण्हाओ व रयं जहासि? ।
आइक्ख णे संजय ! जक्खपूइया !
इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥

४६—धम्मे हरए बम्भे सन्तितित्थे
अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।
जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो
सुसीइभूओ[2] पजहामि दोसं ॥

४७—एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं
महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।
'जहिंसि ण्हाया'[3] विमला विसुद्धा
महारिसी उत्तम ठाण पत्त ॥

—त्ति बेमि ॥

१—च (उ, ऋ) ।
२—सुसीलभूओ (बृ० पा०) ।
३—जहिं सिणाया (अ, उ, ऋ) ।

तेरसमं अज्झयणं

चित्तसम्भूइज्जं

१—जाईपराजिओ खलु
कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि ।
चुलणीए बम्भदत्तो
उववन्नो पउमगुम्माओ ॥

२—कम्पिल्ले संभूओ
चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि ।
सेट्ठिकुलम्मि विसाले
धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥

३—कम्पिल्लम्मि य नयरे
समागया दो वि चित्तसम्भूया ।
सुहदुक्खफलविवागं
कहेन्ति ते एक्कमेक्कस्स ॥

४—चक्कवट्टी महिड्ढीओ बम्भदत्तो महायसो ।
भायरं बहुमाणेणं इमं वयणमब्बवी ॥

५—आसिमो भायरा दो वि अन्नमन्नवसाणुगा ।
अन्नमन्नमणूरत्ता अन्नमन्नहिएसिणो ॥

६—दासा दसण्णे आसी मिया कालिंजरे नगे ।
हंसा मयंगतीरे[1] सोवागा[2] कासिभूमिए ॥

१—मयगतीराए (अ, उ, ऋ) ।
२—चडाला (उ, ऋ) ।

७—देवा य[1] देवलोगम्मि आसि अम्हे महिड्ढिया ।
'इमा नो'[2] छट्ठिया जाई अन्नमन्नेण जा विणा ॥
८—कम्मा नियाणप्पगडा तुमे राय विचिन्तिया ।
तेसि फलविवागेण विप्पओगमुवागया ॥
९—सच्चसोयप्पगडा कम्मा मए पुरा कडा ।
ते अज्ज परिभुंजामो किं नु चित्ते वि से तहा ? ॥
१०—सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहि
आया ममं पुण्णफलोववेए ॥
११—जाणासि संभूय ! महाणुभागं
महिड्ढियं पुण्णफलोववेयं ।
चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं !
इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया ॥
१२—महत्थरूवा वयणप्पभूया
गाहाणुगीया नरसंघमज्झे ।
जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया
'इहऽज्जयन्ते समणो'[3] म्हि जाओ ॥
१३—उच्चोयए महु कक्के य बम्भे
पवेइया आवसहा 'य रम्मा'[4] ।
इमं गिहं चित्तधणप्पभूयं[5]
पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥

१—वि (उ) ।
२—इमामे (बृ०) ; इमाणो (बृ० पा०) ।
३—इहऽज्जवते सुपणो (चू० पा०) ; इहऽज्जयन्ते सुमणो (बृ० पा०) ।
४—ऽतिरम्मा, सुरम्मा वा (बृ० पा०) ।
५—वित्तधणोववेय (बृ०) ; धणवित्तोववेय (चू०) ; वित्तधणप्पभूय (बृ० पा०) ।

१४—नट्टेहि गीएहि य वाइएहिं
नारीजणाइं परिवारयन्तो[1]।
भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू !
मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥
१५—तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं
नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही
चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था[2] ॥
१६—सव्वं विलवियं गीयं सव्वं नट्टं विडम्वियं[3]।
सव्वे आभरणा भारा सव्वे कामा दुहावहा ॥
१७—'बालाभिरामेसु दुहावहेसु
न तं सुहं कामगुणेसु रायं।
विरत्तकामाण तवोधणाणं
जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥'[4]
१८—नरिंद ! जाई अहमा नराणं
सोवागजाई दुहओ गयाणं।
जहिं वयं सव्वजणस्स वेस्सा
वसीय सोवागनिवेसणेसु ॥
१९—तीसे य जाईइ उ पावियाए
वुच्छामु सोवागनिवेसणेसु।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा
इहं तु कम्माइं पुरेकडाइं ॥

१—पवियारियंतो (वृ० पा०) ; परियारयतो (अ, उ, ऋ) ।
२—वक्क° (वृ०) ; वयण° (वृ० पा०) ।
३—विडवणा (उ, चू०) ।
४—यह श्लोक चूर्णि में व्याख्यात नहीं है ।

२०—सो दाणि सि राय ! महाणुभागो
महिड्ढिओ पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइ असासयाइं
'आयाणहेउं अभिणिक्खमाहि'[1] ॥

२१—इह जीविए राय ! असासयम्मि
धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो ।
से सोयई मच्चुमुहोवणीए
धम्मं अकाऊण परंसि लोए ॥

२२—जहेह सीहो व मियं गहाय
मच्चू नरं नेइ हु अन्तकाले ।
न तस्स माया 'व पिया व भाया'[2]
कालम्मि तम्मिसहरा[3] भवंति ॥

२३—न तस्स दुक्खं विभयन्ति नाइओ
न मित्तवग्गा न सुया न बन्धवा ।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं
कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं ॥

२४—चेच्चा दुपयं च चउप्पयं च
खेत्तं गिहं धणधन्नं च सव्वं ।
कम्मप्पबीओ[4] अवसो पयाइ
परं भवं सुंदर पावगं वा ॥

१—आदाणमेव अणुचिंतयाहि (चू०) ; आदाण हेउ अभिणिक्खमाहि (चू० पा०) ; आयाणमेवा अणुचिंतयाहि (बृ० पा०) ।
२—न पिया न भाया (उ) ।
३—तम्मसहरा (उ) ।
४—सकम्मप्पवीओ (उ) ; सकम्मवीओ (ऋ) ; कम्मप्पविइओ (अ) ।

२५—तं इक्कगं तुच्छसरीरगं से
चिईगयं डहिय उ पावगेणं ।
भज्जा य पुत्ता[1] वि य नायओ य
दायारमन्नं अणुसंकमन्ति ॥

२६—उवणिज्जई जीवियमप्पमायं
वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं ।
पंचालराया! वयणं सुणाहि
मा कासि कम्माइं महालयाइं ॥

२७—अहं पि जाणामि 'जहेह साहू!'[2]
जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।
भोगा इमे संगकरा हवन्ति
जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ॥

२८—हत्थिणपुरम्मि चित्ता दट्ठूणं नरवइं महिड्ढियं ।
कामभोगेसु गिद्धेणं नियाणमसुहं कडं ॥

२९—तस्स मे अपडिकन्तस्स इमं एयारिसं फलं ।
जाणमाणो वि जं धम्मं कामभोगेसु मुच्छिओ ॥

३०—नागो जहा पंकजलावसन्नो
दट्ठुं थलं नाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा
न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥

१—पुत्तो (वृ०) ।
२—जो एत्थ सारो (वृ० पा०, चू०) ।

३१—अच्चेइ कालो तूरन्ति राइओ
न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।
उविच्च भोगा पुरिसं चयन्ति[1]
दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥

३२—'जइ ता सि'[2] भोगे चइउं असत्तो
अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं! ।
धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकम्पी
तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥

३३—न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी
गिद्धो सि आरम्भपरिग्गहेसु ।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो
गच्छामि रायं ! आमन्तिओ सि ॥

३४—पंचालराया वि य बम्भदत्तो
साहुस्स तस्स[3] वयणं अकाउं ।
अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे
अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥

३५—चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो
उदग्गचारित्ततवो[4] महेसी ।
अणुत्तरं संजम पालइत्ता
अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—जहंति (चू०) ।
२—जइ तसि (उ, बृ० पा०, ऋ) ; जईऽसि (चू०) ।
३—तस्सा (अ, आ, इ, स) ।
४—उदत्त० (चू०, बृ०, सु) ।

चउदसम अज्झयणं

उसुयारिज्जं

१—देवा भवित्ताण पुरे भवम्मी
केई चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे
खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥

२—सकम्मसेसेण पुराकएणं
कुलेसु दग्गेसु[1] य ते पसूया ।
निव्विण्णसंसारभया जहाय
जिणिन्दमग्गं सरणं पवन्ना ॥

३—पुमत्तमागम्म कुमार दो वी
पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहोसुयारो
रायत्थ देवी कमलावई य ॥

४—जाईजरामच्चुभयाभिभूया[2]
बहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
संसारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा
दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥

५—पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स
सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं
तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ॥

१—दत्तेसु (चू०, बृ०) ; उग्गेसु (उ) ।
२—० भयाभिभूए (बृ० पा०) ।

६—ते कामभोगेसु असज्जमाणा
माणुस्सएसुं जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा
तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥

७—असासयं दट्ठु इमं विहारं
वहुअन्तरायं न य दीहमाउं ।
तम्हा गिहंसि न रइं लहामो
आमन्तयामो चरिस्सामु मोणं ॥

८—अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं
तवस्स वाघायकरं वयासी ।
इमं वयं वेयविओ वयन्ति
जहा न होई असुयाण लोगो ॥

९—अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे
पुत्ते पडिट्ठप्प[1] गिहंसि जाया! ।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं
'आरण्णगा होह मुणी पसत्था'[2] ॥

१०—सोयग्गिणा आयगुणिन्धणेणं
मोहाणिला पज्जलणाहिएणं ।
संतत्तभावं परित्तप्पमाणं
लोलुप्पमाणं वहुहा वहुं च ॥

१—परिट्ठप्प (वृ० पा०) ।
२—पच्छा वणप्पवेस पसत्थ (चू०) ।

११—पुरोहियं तं कमसोऽणुणन्तं[1]
निमंतयन्तं च सुए धणेणं ।
जहक्कमं कामगुणेहि[2] चेव
कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥

१२—वेया अहीया न भवन्ति ताणं
भुत्ता दिया निन्ति तमं तमेणं ।
जाया य पुत्ता न हवन्ति ताणं
को णाम ते अणुमन्नेज्ज[3] एयं ॥

१३—खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा
पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा ।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया
खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥

१४—परिव्वयन्ते अणियत्तकामे
अहो य राओ परितप्पमाणे ।
अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे
पप्पोति मच्चु पुरिसे जरं च ॥

१५—इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि
इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।
तं एवमेव लालप्पमाणं
हरा हरंति त्ति कहं पमाए ? ॥

१—॰णिणतं (उ) ।
२—कामगुणेसु (वृ॰ पा॰) ।
३—अणुमोदेज्ज (अ) ।

१६—धणं पभूयं सह इत्थियाहि
सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
तवं कए तप्पइ जस्स लोगो
तं सव्व साहीणमिहेव तुब्भं ॥

१७—धणेण किं धम्मधुराहिगारे
सयणेण वा कामगुणेहि चेव ।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी
बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं ॥

१८—जहा य अग्गी अरणीउऽसन्तो
खीरे घयं तेल्लमहा तिलेसु ।
एमेव जाया ! सरीरंसि सत्ता
संमुच्छई नासइ नावचिट्ठे ॥

१९—नो इन्दियग्गेज्झ अमुत्तभावा
अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
अज्झत्थहेउं नियय‌ऽस्स बन्धो
ससारहेउं च वयन्ति बन्धं ॥

२०—जहा वयं धम्ममजाणमाणा
पावं पुरा कम्ममकासि मोहा ।
ओरुज्झमाणा परिरक्खियन्ता
तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥

२१—अब्भाहयंमि लोगंमि सव्वओ परिवारिए ।
'अमोहाहिं पडन्तीहिं'[1] गिहंसि न रइं लभे ॥

२२—केण अब्भाहओ लोगो? केण वा परिवारिओ ?।
का वा अमोहा वुत्ता ? जाया! चिंतावरो हुमि ॥

१—अमोहायए पुत्तीहिं (उ)।

२३—मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो जराए परिवारिओ।
अमोहा रयणी वुत्ता एवं ताय! वियाणह ॥
२४—जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई।
अहम्मं कुणमाणस्स अफला जन्ति राइओ ॥
२५—जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई।
धम्मं च कुणमाणस्स सफला जन्ति राइओ ॥
२६—एगओ संवसित्ताणं दुहओ सम्मत्तसंजुया।
पच्छा जाया! गमिस्सामो भिक्खमाणा कुले कुले ॥
२७—जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं जस्स वऽत्थि[1] पलायणं।
जो जाणे न मरिस्सामि सो हु कंखे सुए सिया ॥
२८—अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो
जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो।
अणागयं नेव य अत्थि किंचि
सद्धाखमं णे विणइत्तु रागं ॥
२९—पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो
वासिट्ठि! भिक्खायरियाइ कालो।
साहाहि रुक्खो लहए समाहिं
छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं ॥
३०—पंखाविहूणो व्व[2] जहेह[3] पक्खी
भिच्चाविहूणो[4] व्व[5] रणे नरिन्दो।
विवन्नसारो वणिओ व्व पोए
पहीणपुत्तो मि तहा अहं पि ॥

१—च्ऽत्थि (ऋ)।
२-५—व (उ, ऋ)।
३—जहेव (अ, उ, ऋ)।
४—भिच्चव्विहीणु (ऋ); भिच्चुविहीणु (उ)।

३१—सुसंभिया कामगुणा इमे ते
संपिण्डिया अग्गरसापभूया[1]।
भुंजामु ता कामगुणे पगामं
पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्गं ॥

३२—भुत्ता रसा भोइ[2]! जहाइ णे वओ
न जीवियट्ठा पजहामि भोए।
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं
संचिक्खमाणो[3] चरिस्सामि[4] मोणं ॥

३३—मा हू तुमं सोयरियाण सम्भरे
जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी।
भुंजाहि भोगाइ मए समाणं
दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ॥

३४—जहा य भोई[5]! तणुयं भुयंगो[6]
निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो।
एमेए[7] जाया पयहन्ति भोए
'ते हं'[8] कहं नाणुगमिस्समेक्को ? ॥

३५—छिन्दित्तु जालं अबलं व रोहिया
मच्छा जहा कामगुणे पहाय।
धोरेयसीला तवसा उदारा
धीरा हु भिक्खायरियं चरन्ति ॥

१—अग्गरसप्पभूया (उ, ऋ)।
२—होइ (बृ०)।
३—संविक्खमाणो (चू० उ)।
४—चरिसामि (अ, ऋ); करिस्सामि (चू०)।
५—भोगि (बृ० पा०)।
६—भुयंगमो (अ, बृ०)।
७—इमेति (बृ० पा०)।
८—ताह (उ, चू०); तोह (अ)।

३६—नहेव कुंचा समइक्कमन्ता
तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।
पलेन्ति पुत्ता य पई य मज्झं
'ते हं'[1] कहं नाणुगमिस्समेक्का ? ॥

३७—पुरोहियं तं ससुयं सदारं
सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
कुडुम्बसारं विउलुत्तमं त
रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥

३८—वन्तासी पुरिसो रायं ! न सो होइ पसंसिओ ।
माहणेण परिच्चत्तं धणं आदाउमिच्छसि ॥

३९—सव्वं जगं जइ तुहं सव्वं वावि धणं भवे ।
सव्वं पि ते अपज्जत्तं नेव ताणाय तं तव ॥

४०—मरिहिसि रायं ! जया तया वा
मणोरमे कामगुणे पहाय[2] ।
एक्को हु धम्मो नरदेव ! ताणं
न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ॥

४१—नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा
संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं ।
अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा
परिग्गहारम्भनियत्तदोसा ॥

४२—दवग्गिणा जहा रण्णे डज्झमाणेसु जन्तुसु ।
अन्ने सत्ता पमोयन्ति रागद्दोसवसं गया ॥

१—ताह (उ, चू०) ; तोह (अ) ।
२—जहाय (चू०) ।

४३—एवमेव[1] वयं मूढा कामभोगेसु मुच्छिया।
उज्झमाणं न बुज्झामो रागद्दोसग्गिणा जगं॥

४४—भोगे भोच्चा वमित्ता य लहुभूयविहारिणो।
आमोयमाणा गच्छन्ति दिया कामकमा इव॥

४५—इमे य वद्धा[2] फन्दन्ति मम हत्थऽज्जमागया।
वयं च सत्ता कामेसु भविस्सामो जहा इमे॥

४६—सामिसं कुललं दिस्स बज्झमाणं निरामिसं।
आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामि निरामिसा॥

४७—गिद्धोवमे उ नच्चाणं कामे संसारवड्ढणे।
उरगो 'सुवण्णपासे व'[3] संकमाणो तणुं चरे॥

४८—नागो व्व बन्धणं छित्ता अप्पणो वसहिं वए।
एयं पत्थं महारायं! उसुयारि त्ति मे सुयं॥

४९—चइत्ता विउलं रज्जं[4] कामभोगे य दुच्चए।
निव्विसया निरामिसा निन्नेहा निप्परिग्गहा॥

५०—सम्मं धम्मं वियाणित्ता चेच्चा कामगुणे वरे।
तवं पगिज्झऽहक्खायं[5] घोरं घोरपरक्कमा॥

५१—एवं ते कमसो बुद्धा
सव्वे धम्मपरायणा[6]।
जम्ममच्चुभउव्विग्गा
दुक्खस्सन्तगवेसिणो॥

१—एवमेवं (वृ०)।
२—लद्धा (चू०)।
३—सुवण्णपासेव्व (उ, चू०, सु); सुवण्णपासित्ता (ऋ); सुवण्णपासिव्वा (अ)।
४—रट्ठ (वृ०, चू०); रज्जं (वृ० पा०)।
५—° अहक्कामं (चू० पा०)।
६—° परंपरा (वृ० पा०)।

५२–सासणे विगयमोहाणं पुव्विं भावणभाविया ।
अचिरेणेव कालेण दुक्खस्सन्तमुवागया ॥
५३–राया सह देवीए माहणो य पुरोहिओ ।
माहणी दारगा चेव सव्वे ते परिनिव्वुड[1] ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—परिनिव्वुड्ड (ऋ) - परिनिव्वुडि (अ) ; परिनिव्वुए (चू०) ।

पनरसमं अज्झयणं

सभिक्खुयं

१—मोणं चरिस्सामि[1] समिच्च धम्मं
सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।
संथवं जहिज्ज अकामकामे
अन्नायएसी परिव्वए जे स भिक्खू ॥

२—राओवरयं[2] चरेज्ज लाढे
विरए वेयवियाऽऽयरक्खिए ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी
जे कम्हिचि[3] न मुच्छिए स भिक्खू ॥

३—अक्कोसवहं विइत्तु धीरे
मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥

४—पन्तं सयणासणं भइत्ता
सीउण्हं विविहं च दंसमसगं ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥

५—नो सक्कियमिच्छई न पूयं
नो वि य वन्दणगं कुओ पसंसं ।
से संजए सुव्वए तवस्सी
सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥

१—चरिस्सामो (वृ०) ।
२—रागोवरयं (वृ०) ; रातोवरयं (वृ० पा०) ।
३—कम्हि वि (अ, उ, ऋ) ।

६—जेण पुण जहाइ जीवियं
मोहं वा कसिणं नियच्छई ।
नरनारिं पजहे सया तवस्सी
न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥

७—छिन्नं सरं भोमं अन्तलिक्खं
सुमिणं लक्खणदण्डवत्थुविज्जं ।
अगवियारं सरस्स विजयं
जो विज्जाहि न जीवइ स भिक्खू ॥

८—मन्तं मूल विविहं वेज्जचिन्तं
वमणविरेयणधूमणेत्तसिणाणं ।
आउरे सरणं तिगिच्छियं च
तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥

९—खत्तियगणउग्गरायपुत्ता
माहणभोइय विविहा 'य सिप्पिणो'[1]।
नो तेसिं वयइ[2] सिलोगपूयं
तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥

१०—गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा
अप्पव्वइएण व संथुया हविज्जा ।
तेसिं इहलोइयफलट्ठा[3]
जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥

१—सिप्पिण्णोऽणे (बृ० पा०) ।
२—करेइ (चू०) ।
३—इहलोगफलट्ठाए (अ, आ, इ, चू०) ।

११—सयणासणपाणभोयणं
विविहं खाइमसाइमं परेसिं।
अदए पडिसेहिए नियण्ठे
जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू ॥

१२—जं किंचि आहारपाणं[1] विविहं
खाइमसाइमं परेसि लद्धुं।
जो तं तिविहेण नाणुकम्पे
मणवयकायसुसंवुडे स भिक्खू ॥

१३—आयामगं चेव जवोदणं च
'सीयं च सोवीरजवोदगं च'[2]।
नो हीलए पिण्डं नीरसं तु
पन्तकुलाइं परिव्वए स भिक्खू ॥

१४—सद्दा विविहा भवन्ति लोए
दिव्वा 'माणुस्सगा तहा तिरिच्छा'[3]।
भीमा भयभेरवा उराला
जो सोच्चा न वहिज्जई[4] स भिक्खू ॥

१५—वादं विविहं समिच्च लोए
सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी
उवसन्ते अविहेडए[5] स भिक्खू ॥

१—वाहार° (अ)।
२—सीय सुवीर च जवोदग च (स, सु)।
३—माणुस्सया तिरिच्छा य (चू०)।
४—वहिए (उ)।
५—उविहेडए (उ)।

१६–असिप्पजीवी[1] अगिहे अमित्ते
जिइन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहुअप्पभक्खी
चेच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—असिप्पजीवे (अ) ।

सोलसमं अज्झयण

बम्भचेरसमाहिठाणं

सू० १–सुयं मे, आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा।

सू० २–कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ? जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ?

सू० ३–इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहि दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा, तं जहा—'विवित्ताइं सयणासणाइं सेविज्जा[1], से निग्गन्थे।''[2] नो इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ 'वा धम्माओ'[3] भंसेज्जा। तम्हा नो इत्थिपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे।

१—सेविज्जा हवइ (उ)।

२—"विवित्ताइ सयणासणाइं सेविज्जा से निग्गन्थे" इतना पाठ चूर्णि मे नहीं है।

३—धम्माओ (उ, इ)।

सू० ४–नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स, बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । 'तम्हा नो इत्थीणं'[1] कहं कहेज्जा ।

सू० ५–नो इत्थीहिं[2] सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स, बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा[3] ।

सू० ६–नो इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता, निज्झाइत्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं आलोएमाणस्स, निज्झायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलि-

---

१—तम्हा खलु निग्गन्थे नो इत्थीण (उ) ।
२—इत्थीण (अ, ऋ) ।
३—विहरइ (अ) ।

पन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु 'निग्गन्थे नो'[1] इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं आलोएज्जा, निज्झाएज्जा।

सू० ७--नो इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि वा, कुइयसद्दं वा, रुइयसद्दं वा, गीयसद्दं वा, हसियसद्दं वा, थणियसद्दं वा, कन्दियसद्दं वा, विलवियसद्दं वा, सुणेत्ता हवइ से निग्गन्थे।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं 'कुड्डन्तंसि वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि[2] वा'[3], कुइयसद्दं वा, रुइयसद्दं वा, गीयसद्दं वा, हसियसद्दं वा, थणियसद्दं वा, कन्दियसद्दं वा, विलवियसद्दं वा, सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु निग्गन्थे नो इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि वा, कुइयसद्दं वा, रुइयसद्दं वा, गीयसद्दं वा, हसियसद्दं वा, थणियसद्दं वा, कन्दियसद्दं वा, विलवियसद्दं वा सुणेमाणे विहरेज्जा।

सू० ८–नो निग्गन्थे पुव्वरयं, पुव्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ, से निग्गन्थे।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु पुव्वरयं[4], पुव्वकीलिय अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा,

१—नो निग्गन्थे (अ)।
२—'भित्ति अतरसि वा (अ, ऋ); भित्तिलरसि (उ)।
३—कुड्डुन्तरसि वा भित्तन्तरसि वा दूसन्तरसि वा (चू०, स); कड्डुतरसि वा ▫ (अ)।
४—इत्थीण पुव्वरय (उ, ऋ)।

वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा।

सू० ९–नो पणीयं आहार आहारित्ता हवइ, से निग्गन्थे।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु पणीयं पाणभोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे पणीयं आहारं आहारेज्जा।

सू० १०–नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ, से निग्गन्थे।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु अइमायाए पाणभोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे अइमायाए पाणभोयणं भुंजिज्जा।

सू० ११–नो विभूसाणुवाई हवइ, से निग्गन्थे।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—विभूसावत्तिए[1], विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ। तओ णं तस्स इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स

१—निग्गन्थस्स खलु विभूसावत्तिए (अ)।

बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे विभूसाणुवाई सिया।

सू० १२–नो सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाई हवइ, से निग्गन्थे।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाइस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाई हविज्जा। दसमे बम्भचेरसमाहिठाणे हवइ।

भवन्ति इत्थ सिलोगा, तं जहा—

१—जं विवित्तमणाइण्णं रहियं थीजणेण य।
बम्भचेरस्स रक्खट्ठा आलयं तु निसेवए॥
२—मणपल्हायजणणिं कामरागविवड्ढणिं।
बम्भचेररओ भिक्खू थीकहं तु विवज्जए॥
३—समं च संथवं थीहिं संकहं च अभिक्खणं।
बम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए॥
४—अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं।
बम्भचेररओ थीणं[1] चक्खुगिज्झं विवज्जए॥
५—कुइयं रुइयं गीयं हसियं थणियकन्दियं।
बम्भचेररओ थीणं सोयगिज्झं विवज्जए॥

१—भिक्खू (ऋ)।

६—"हासं किड्डं रइं दप्पं सहसाऽवत्तासियाणि[1] य"[2]।
बम्भचेररओ थीणं नाणुचिन्ते कयाइ वि ॥

७—पणीय भत्तपाणं तु[3] खिप्पं मयविवड्ढणं।
बम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥

८—धम्मलद्धं[4] मियं काले जत्तत्थं पणिहाणवं।
नाइमत्तं तु भुंजेज्जा बम्भचेररओ सया ॥

९—विभूसं परिवज्जेज्जा सरीरपरिमण्डणं।
बम्भचेररओ भिक्खू सिंगारत्थं न धारए ॥

१०—सद्दे रूवे य गन्धे य रसे फासे तहेव य।
पंचविहे कामगुणे निच्चसो परिवज्जए ॥

११—आलओ थीजणाइण्णो थीकहा य मणोरमा।
संथवो चेव नारीणं[5] तासिं इन्दियदरिसणं ॥

१२—कुइयं रुइयं गीयं हसियं[6] भुत्तासियाणि य।
पणीयं भत्तपाणं च अइमायं[7] पाणभोयणं ॥

१३—गत्तभूसणमिट्ठं च कामभोगा य दुज्जया।
नरस्सऽत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥

१४—दुज्जए कामभोगे य निच्चसो परिवज्जए।
सकट्ठाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा[8] पणिहाणवं ॥

१—सहसावित्ता° (ऋ), सहभुत्ता° (अ)।
२—हस्स दप्प रइ किड्ड सहभुत्ता° (वृ० पा०)।
३—च (अ)।
४—धम्प लद्ध (वृ०), धम्मलद्धधु, धम्पलद्ध (वृ० पा०)।
५—नारिहिं (ऋ)।
६—सहभुत्ता° (अ)।
७—अइमाणं (ऋ)।
८—वज्जिया (ऋ)।

१५—धम्मारामे चरे भिक्खू धिइमं धम्मसारही ।
धम्मारामरए दन्ते बम्भचेरसमाहिए ॥
१६—देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा ।
बम्भयारिं नमंसन्ति दुक्करं जे करन्ति तं[1] ॥
१७—एस धम्मे धुवे निअए सासए जिणदेसिए ।
सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण सिज्झिस्सन्ति तहापरे ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—ते (अ) ।

सतरसमं अज्झयणं

पावसमणिज्जं

१–जे 'के इमे'[1] पव्वइए नियण्ठे
धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने ।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं
विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥

२–सेज्जा दढा पाउरणं मे अत्थि
उप्पज्जई भोत्तुं[2] तहेव पाउं ।
जाणामि जं वट्टइ आउसु ! त्ति
किं नाम काहामि सुएण भन्ते ! ॥

३–जे के इमे पव्वइए निद्दासीले पगामसो ।
भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ[3] पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

४–आयरियउवज्झाएहि सुयं विणयं च गाहिए ।
ते चेव खिंसई बाले पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

५–आयरियउवज्झायाणं सम्मं नो पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्धे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

६–सम्मद्दमाणे पाणाणि बीयाणि हरियाणि य ।
असंजए संजयमन्नमाणे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

७–संथारं फलगं पीढं निसेज्जं पायकम्बलं ।
अप्पमज्जियमारुहइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१—केइ उ (वृ०, ऋ, सु) , के इमे (बृ० पा०) ।
२—भुत्त् (ऋ) ।
३—वसइ (वृ० पा०) ।

८—दवदवस्स चरई पमत्ते य अभिक्खणं।
उल्लंघणे य चण्डे य पावसमणि त्ति वुच्चई॥

९—पडिलेहेइ पमत्ते अवउज्झइ पायकम्बलं।
पडिलेहणाअणाउत्ते[1] पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१०—पडिलेहेइ पमत्ते से किंचि हु निसामिया।
गुरुपरिभावए[2] निच्चं पावसमणि त्ति वुच्चई॥

११—बहुमाई पमुहरे[3] थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अचियत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१२—विवादं च उदीरेइ अहम्मे अत्तपन्नहा[4]।
वुग्गहे कलहे रत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१३—अथिरासणे कुक्कुईए जत्थ तत्थ निसीयई।
आसणम्मि अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१४—ससरक्खपाए सुवई सेज्जं न पडिलेहइ।
संथारए अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१५—दुद्धदहीविगईओ आहारेइ अभिक्खणं।
अरए य तवोकम्मे पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१६—अत्थन्तम्मि[5] य सूरम्मि आहारेइ अभिक्खणं।
चोइओ पडिचोएइ पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१७—आयरियपरिच्चाई परपासण्डसेवए।
गाणंगणिए दुब्भूए पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१—पडिलेहा° (स)।
२—गुरुं परिभवइ (उ): गुरुपरिभवए (बृ०): गुरुपरिभावए (बृ० पा०)।
३—पमुहरी (इ, चू- स):
४—अत्तपन्नहा (बृ०): अत्तपण्णहा (बृ० पा०)।
५—अत्थंतमयंमि (बृ० पा०)।

१८—सयं गेहं परिचज्ज परगेहंसि वावडे[1]।
निमित्तेण य ववहरई पावसमणि त्ति वुच्चई॥
१९—सन्नाइपिण्डं जेमेइ नेच्छई सामुदाणियं।
गिहिनिसेज्जं च वाहेइ पावसमणि त्ति वुच्चई॥
२०—एयारिसे पंचकुसीलसंवुडे
रूवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे।
अयंसि लोए विसमेव गरहिए
न से इहं नेव परत्थ लोए॥
२१—जे वज्जए एए सया उ दोसे
से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे।
अयंसि लोए अमयं व पूइए
आराहए 'दुहओ लोगमिणं'[2]॥
—त्ति बेमि॥

*

१—वावरे (वृ०, सु); ववहरे (वृ० पा०)।
२—लोगमिण तहापर (उ, स, सु, ऋ)।

अट्ठारसम अज्झयण

संजइज्जं

उक्खेव-पदं

१—कम्पिल्ले नयरे राया उदिण्णबलवाहणे ।
नामेणं संजए नाम मिगव्वं उवणिग्गए ॥
२—हयाणीए गयाणीए रहाणीए तहेव य ।
पायत्ताणीए महया सव्वओ परिवारिए[1] ॥
३—मिए छुभित्ता हयगओ कम्पिल्लुज्जाणकेसरे ।
भीए सन्ते मिए तत्थ वहेइ रसमुच्छिए ॥
४—अह केसरम्मि उज्जाणे अणगारे तवोधणे ।
सज्झायज्झाणजुत्ते धम्मज्झाणं झियायई ॥
५—अप्फोवमण्डवम्मि झायई झवियासवे[2] ।
तस्सागए मिए पासं वहेई से नराहिवे ॥
६—अह आसगओ राया खिप्पमागम्म सो तहिं ।
हए मिए उ पासित्ता अणगारं तत्थ पासई ॥
७—अह राया तत्थ संभन्तो अणगारो मणाऽऽहओ ।
मए उ मन्दपुण्णेणं रसगिद्धेण घन्तुणा[3] ॥
८—आसं विसज्जइत्ताणं अणगारस्स सो निवो ।
विणएण वन्दए पाए भगवं ! एत्थ मे खमे ॥
९—अह मोणेण सो भगवं अणगारे झाणमस्सिए ।
रायाणं न पडिमन्तेइ तओ राया भयद्दुओ ॥

१—परिवारए (अ) ।
२—खवियासवे (स) ।
३—घत्तुणा (उ) ; घम्मुणा (ऋ) ।

१०—सजओ अहमम्मीति भगवं ! वाहराहि मे ।
कुद्धे तेएण अणगारे डहेज्ज नरकोडिओ ॥

११—अभओ[1] पत्थिवा ! तुब्भं अभयदाया भवाहि य ।
अणिच्चे जीवलोगम्मि कि हिंसाए पसज्जसि ? ॥

सवोहि-पद

१२—जया सव्वं परिच्चज्ज गन्तव्वमवसस्स ते ।
अणिच्चे जीवलोगम्मि किं रज्जम्मि[2] पसज्जसि ? ॥

१३—जीवियं चेव रूवं च विज्जुसंपायचंचल ।
जत्थ तं मुज्झसी रायं पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥

१४—'दाराणि य सुया चेव मित्ता य तह बन्धवा ।
जीवन्तमणुजीवन्ति मयं नाणुव्वयन्ति य ॥'[3]

१५—नीहरन्ति मयं पुत्ता पियर परमदुक्खिया ।
पियरो वि तहा पुत्ते बन्धू रायं ! तवं चरे ॥

१६—तओ तेणऽज्जिए दव्वे दारे य परिरक्खिए ।
कीलन्तऽन्ने नरा रायं ! हट्ठतुट्ठमलंकिया ॥

१७—तेणावि जं कयं कम्मं सुहं वा जइ वा दुहं ।
कम्मुणा तेण संजुत्तो गच्छई उ परं भव ॥

रायरिसि-पदं

१८—सोऊण तस्स सो धम्मं अणगारस्स अन्तिए ।
महया संवेगनिव्वेयं समावन्नो नराहिवो ॥

१—अभय (अ, आ) ।

२—रज्जेण (उ, ऋ) , हिंसाए (वृ० पा०) ।

३—इदं सूत्र चिरन्तनवृत्तिकृता न व्याख्यात, प्रत्यन्तरेपु च दृश्यत इत्यस्माभिरुन्नीतम् (वृ०) ।

१९–संजओ चइउं रज्जं निक्खन्तो जिणसासणे ।
गद्दभालिस्स भगवओ अणगारस्स अन्तिए ॥
२०–चिच्चा रट्ठं पव्वइए खत्तिए परिभासइ ।
जहा ते दीसई रूवं पसन्नं ते तहा मणो ॥
२१–किंनामे ? किंगोत्ते ? कस्सट्ठाए व माहणे ? ।
कहं पडियरसी बुद्धे ? कहं विणीए त्ति वुच्चसि[1] ? ॥
२२–संजओ नाम नामेणं तहा गोत्तेण गोयमे ।
गद्दभाली ममायरिया विज्जाचरणपारगा ॥
२३–किरियं अकिरियं विणयं
अन्नाणं च महामुणी! ।
एएहिं चउहिं ठाणेहिं
मेयन्ने[2] किं पभासई? ॥
२४–इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुडे ।
विज्जाचरणसंपन्ने सच्चे सच्चपरक्कमे ॥
२५–पडन्ति नरए घोरे जे नरा पावकारिणो ।
दिव्वं च गइं गच्छन्ति चरित्ता धम्ममारियं ॥
२६–'मायावुइयमेयं तु मुसाभासा निरत्थिया ।
संजममाणो वि अहं वसामि इरियामि य ॥'[3]
२७–सव्वे ते विइया मज्झं मिच्छादिट्ठी अणारिया ।
विज्जमाणे परे लोए सम्मं जाणामि अप्पगं ॥
२८–अहमासी महापाणे जुइमं वरिससओवमे ।
जा सा पाली महापाली दिव्वा वरिससओवमा ॥

१–वुच्चई (अ, ऋ, वृ०) ।
२–मियन्ना (चू०) ।
३–इदमपि सूत्रं प्रायो न दृश्यते (वृ०) ।

२९—से चुए[1] बम्भलोगाओ माणुस्सं भवमागए ।
अप्पणो य परेसिं च आउं जाणे जहा तहा ॥

३०—नाणारुइं च छन्दं च परिवज्जेज्ज संजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था इइ विज्जामणुसंचरे ॥

३१—पडिक्कमामि पसिणाणं परमन्तेहिं वा पुणो ।
अहो उट्ठिए अहोरायं इइ विज्जा तवं चरे ॥

३२—जं च मे पुच्छसी काले सम्मं सुद्धेण[2] चेयसा ।
ताइं पाउकरे बुद्धे तं नाणं जिणसासणे ॥

३३—किरियं च रोयए धीरे अकिरियं परिवज्जए ।
दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने धम्मं चर सुदुच्चरं ॥

३४—एयं पुण्णपयं सोच्चा अत्थधम्मोवसोहियं ।
भरहो वि भारहं वासं चेच्चा कामाइ पव्वए ॥

३५—सगरो वि सागरन्तं भरहवासं नराहिवो ।
इस्सरियं केवलं हिच्चा दयाए परिनिव्वुडे[3] ॥

३६—चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
पव्वज्जमब्भुवगओ मघवं नाम महाजसो ॥

३७—सणंकुमारो मणुस्सिन्दो चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
पुत्तं रज्जे ठवित्ताणं[4] सो वि राया तवं चरे ॥

३८—चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
सन्ती सन्तिकरे लोए पत्तो गइमणुत्तरं ॥

१—चुया (अ) ।
२—वुद्धेण (वृ०) ।
३—परिनिव्वुओ (उ, ऋ) ।
४—ठवेऊण (उ ऋ) ।

३९—इक्खागरायवसभो कुन्थू नाम नराहिवो ।
विक्खायकित्ती धिइमं[1] 'मोक्खं गओ अणुत्तरं'[2] ॥

४०—सागरन्तं जहित्ताणं[3] 'भरहं वासं नरीसरो'[4] ।
अरो य अरयं[5] पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं ॥

४१—चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी नराहिओ[6] ।
चइत्ता उत्तमे भोए महापउमे तवं चरे ॥

४२—एगच्छत्तं पसाहित्ता महिं माणनिसूरणो ।
हरिसेणो मणुस्सिन्दो पत्तो[7] गइमणुत्तरं ॥

४३—अन्निओ रायसहस्सेहिं सुपरिच्चाई दमं चरे ।
जयनामो जिणक्खायं पत्तो गइमणुत्तरं ॥

४४—दसण्णरज्जं मुइयं चइत्ताणं मुणी चरे ।
दसण्णभद्दो निक्खन्तो सक्खं सक्केण चोइओ ॥

[नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥][8]

४५—करकण्डू कलिंगेसु पंचालेसु य दुम्मुहो[9] ।
नमी राया विदेहेसु गन्धारेसु य नग्गई ॥

१—भगव (उ, ऋ) ।
२—पत्तो गइमणुत्तर (उ, ऋ) ।
३—चइत्ताण (उ, ऋ, स) ।
४—भरह नरवरीसरो (उ, ऋ) ।
५—अरस (बृ० पा०) ।
६—महिड्ढिओ (उ, ऋ) ।
७—गओ (अ) ।
८—यह श्लोक वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।
९—दुम्महा (ऋ) ।

४६—एए[1] नरिन्दवसभा निक्खन्ता जिणसासणे ।
पुत्ते रज्जे ठवित्ताणं[2] सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥
४७—सवीररायवसभो चेच्चा[3] रज्जं मुणी चरे ।
उद्दायणो[4] पव्वइओ पत्तो गइमणुत्तरं ॥
४८—तहेव कासीराया सेओसच्चपरक्कमे ।
कामभोगे परिच्चज्ज पहणे कम्ममहावणं ॥
४९—तहेव विजओ राया 'अणट्ठाकित्ति[5] पव्वए'[6] ।
रज्जं तु गुणसमिद्धं पयहित्तु महाजसो ॥
५०—तहेवुग्गं[7] तवं किच्चा अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
महाबलो[8] रायरिसी अद्दाय[9] सिरसा सिरं[10]॥

निक्खेव-पद

५१—कह धीरो अहेऊहिं उम्मत्तो[11] व्व[12] महिं चरे ? ।
एए विसेसमादाय सूरा दढपरक्कमा ॥
५२—अच्चन्तनियाणखमा सच्चा[13] मे भासिया वई ।
अतरिंसु तरन्तेगे[14] तरिस्सन्ति अणागया[15] ॥

१—एव (उ, ऋ) ।
२—ठवेऊण (उ, ऋ) ।
३—चइत्ताण (अ, उ, ऋ) ।
४—उदाहणो (ऋ), उदायणो (वृ०, आ, उ, ऋ) ।
५—अणट्ठा० (वृ०); आणट्ठा० (सु) ।
६—आणट्ठा किइ पव्वइ (वृ० पा०) ।
७—तहेवउग्ग (अ) ।
८—महव्वलो (अ, आ, ऋ), महबलो (उ) ।
९—आदाय (उ, ऋ, सु, वृ० पा०) ।
१०—सिरिं (वृ० पा० अ, आ, उ, ऋ) ।
११—उम्मत्तु (उ, ऋ) ।
१२—व (अ) ।
१३—एसा (वृ०) सव्वा, सच्चा (वृ० पा०) ।
१४—तरतन्ने (वृ० पा०) ।
१५—अणागय (अ) ।

५३—कहं धीरे अहेऊहि अत्ताणं[1] परियावसे ? ।
सव्वसंगविनिम्मुक्के सिद्धे हवइ नीरए ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—अद्दाण (वृ०) , अत्ताणं (वृ० पा०) ।

एगूणविसइमं अज्झयणं

मियापुत्तिज्जं

उक्खेव-पदं

१—सुग्गीवे नयरे रम्मे काणणुज्जाणसोहिए ।
राया वलभद्दो त्ति मिया तस्सग्गमाहिसी ॥
२—तेसिं पुत्ते वलसिरी मियापुत्ते त्ति विस्सुए ।
अम्मापिऊण दइए जुवराया दमीसरे ॥
३—नन्दणे सो उ पासाए कीलए[1] सह इत्थिहिं ।
देवो दोगुन्दगो चेव निच्चं मुइयमाणसो ॥
४—मणिरयणकुट्टिमतले पासायालोयणट्ठिओ ।
आलोएइ नगरस्स चउक्कतियचच्चरे ॥
५—अह तत्थ अइच्छन्तं पासई समणसंजयं ।
तवनियमसंजमधरं सीलड्ढं गुणआगरं ॥
६—तं देहई[2] मियापुत्ते दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
कहिं मन्नेरिसं रूवं दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥
७—साहुस्स दरिसणे तस्स अज्झवसाणम्मि सोहणे ।
मोहंगयस्स सन्तस्स जाईसरणं समुप्पन्नं ॥
[देवलोग चुओ संतो माणुसं भवमागओ ।
सन्निनाणे समुप्पण्णे जाइं सरइ पुराणयं ॥][3]
८—जाईसरणे समुप्पन्ने मियापुत्ते महिड्ढिए ।
सरई पोराणियं जाइं सामण्णं च पुराकयं ॥

१—कीलिए (ऋ) ।
२—पेहइ (वृ०) ।
३—यह श्लोक वृहद् वृत्ति और सर्वार्थसिद्धि में व्याख्यात नहीं है ।

९—विसएहि अरज्जन्तो रज्जन्तो संजमम्मि य।
अम्मापियरं उवागम्म इमं वयणमब्बवी ॥

१०—सुयाणि मे पंच महव्वयाणि
नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु।
निव्विण्णकामो मि[1] महण्णवाओ
अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो! ॥

११—अम्मताय! मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा।
पच्छा कडुयविवागा अणुबन्धदुहावहा ॥

१२—इमं सरीरं अणिच्चं असुइं असुइसंभवं।
असासयावासमिणं दुक्खकेसाण भायणं ॥

१३—असासए[2] सरीरम्मि रइं नोवलभामहं।
पच्छा पुरा व चइयव्वे फेणबुब्बुयसन्निभे ॥

१४—माणुसत्ते असारम्मि वाहीरोगाण आलए।
जरामरणघत्थम्मि खणं पि न रमामऽहं ॥

दुक्ख-पदं

१५—जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणि य।
अहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसन्ति जन्तवो[3] ॥

१६—खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च पुत्तदारं च बन्धवा[4]।
चइत्ताणं इमं देहं गन्तव्वमवसस्स मे ॥

१७—जहा किम्पागफलाणं परिणामो न सुन्दरो।
एवं भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुन्दरो ॥

१—ह्मि (स)।
२—आसासए (अ, उ)।
३—जन्तुणो (आ, ऋ); पाणिणो (उ, स)।
४—उधवं (उ)।

धम्म-पद

१८—अद्धाणं जो महन्तं तु अपाहेओ पवज्जई ।
गच्छन्तो सो दुही होइ छुहातण्हाए पीडिओ ॥
१९—एवं धम्मं अकाऊणं जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छन्तो सो दुही होइ वाहीरोगेहिं पीडिओ ॥
२०—अद्धाणं जो महन्तं तु सपाहेओ पवज्जई ।
गच्छन्तो सो सुही होइ छुहातण्हाविवज्जिओ ॥
२१—एवं धम्मं पि काऊणं जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छन्तो सो सुही होइ अप्पकम्मे अवेयणे ॥

सारभण्ड-पदं

२२—जहा गेहे पलित्तम्मि तस्स गेहस्स जो पहू ।
सारभण्डाणि नीणेइ असारं अवउज्झइ ॥
२३—एवं लोए पलित्तम्मि जराए मरणेण य ।
अप्पाणं तारइस्सामि तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥

महव्वय-पद

२४—तं बित ऽम्मापियरो सामण्णं पुत्त ! दुच्चरं ।
गुणाणं तु सहस्साइं धारेयव्वाइं भिक्खुणो[1] ॥
२५—समया सव्वभूएसु सत्तुमित्तेसु वा जगे ।
पाणाइवायविरई जावज्जीवाए दुक्करा[2] ॥
२६—निच्चकालऽप्पमत्तेणं मुसावायविवज्जणं ।
भासियव्व हियं सच्चं निच्चाउत्तेण दुक्करं ॥
२७—दन्तसोहणमाइस्स अदत्तस्स विवज्जणं ।
अणवज्जेसणिज्जस्स गेण्हणा अवि दुक्करं ॥

१—भिक्खुणा (वृ०) , भिक्खुणो (वृ० पा०) ।
२—दुक्कर (बृ०, सु) ।

२८—विरई अबम्भचेरस्स कामभोगरसन्नुणा ।
उग्गं महव्वयं बम्भं धारेयव्वं सुदुक्करं ॥

२९ धणधन्नपेसवग्गेसु परिग्गहविवज्जणं[1] ।
सव्वारम्भपरिच्चाओ निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥

३०—चउव्विहे वि आहारे राईभोयणवज्जणा ।
सन्निहीसंचओ चेव वज्जेयव्वो सुदुक्करो[2] ॥

दुक्कर-पद

३१—छुहा तण्हा य सीउण्हं दंसमसगवेयणा ।
अक्कोसा दुक्खसेज्जा य तणफासा जल्लमेव य ॥

३२—तालणा तज्जणा चेव वहबन्धपरीसहा ।
दुक्खं भिक्खायरिया जायणा य अलाभया ॥

३३—कावोया जा इमा वित्ती केसलोओ य दारुणो ।
दुक्खं बम्भवयं घोरं धारेउं अ महप्पणो ॥

३४—सुहोइओ तुमं पुत्ता ! सुकुमालो सुमज्जिओ ।
न हु सी पभू तुमं पुत्ता ! सामण्णमणुपालिउं ॥

३५—जावज्जीवमविस्सामो गुणाणं तु महाभरो ।
गुरुओ लोहभारो व्व जो पुत्ता ! होइ दुव्वहो ॥

३६—आगासे गंगसोउ व्व पडिसोओ व्व दुत्तरो ।
बाहाहि सागरो चेव तरियव्वो गुणोयही ॥

३७—वालुयाकवले[3] चेव निरस्साए उ[4] संजमे ।
असिधारागमणं चेव दुक्करं चरिउं तवो ॥

१—° विवज्जणा (आ, इ, ऋ) ।
२—सुदुक्कर (उ) ।
३—° कवला (अ) ।
४—व (उ) ।

३८—अहीवेगन्तदिट्ठीए चरित्ते पुत्त दुच्चरे ।
जवा लोहमया चेव चावेयव्वा सुदुक्करं ॥
३९—जहा अग्गिसिहा दित्ता पाउं होइ सुदुक्करं[1] ।
तह दुक्करं करेउं जे तारुण्णे समणत्तणं ॥
४०—जहा दुक्खं भरेउं जे होइ वायस्स कोत्थलो ।
तहा दुक्खं करेउं जे कीवेणं समणत्तणं ॥
४१—जहा तुलाए तोलेउं दुक्करं मन्दरो गिरी ।
तहा निहुय नीसंकं दुक्करं समणत्तणं ॥
४२—जहा भुयाहिं तरिउं दुक्करं रयणागरो ।
तहा अणुवसन्तेणं दुक्करं[2] दमसागरो ॥
४३—भुंज माणुस्सए भोगे पंचलक्खणए तुमं ।
भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥
४४—'तं वित ऽम्मापियरो'[3] एवमेयं जहा फुडं ।
इह लोए निप्पिवासस्स नत्थि किंचि वि दुक्करं ॥

भवदुक्ख-पदं

४५—सारीरमाणसा चेव वेयणाओ अणन्तसो ।
मए सोढाओ भीमाओ असइं दुक्खभयाणि य ॥
४६—जरामरणकन्तारे चाउरन्ते भयागरे ।
मए सोढाणि भीमाणि जम्माणि मरणाणि य ॥

नरयदुक्ख-पदं

४७—जहा इहं अगणी उण्हो 'एत्तोऽणन्तगुणे तहिं'[4] ।
नरएसु वेयणा उण्हा अस्साया वेइया मए ॥

१—सुदुक्करा (बृ० पा०) ।
२—दुत्तरं (आ) ।
३—सो बे अम्मापियरो (उ, बृ० पा० ऋ) ; तो बेंतम्मापियरो (बृ० पा०) ।
४—इत्तोऽणन्तगुणा तहिं (बृ० पा०) ।

४८—जहा 'इमं इहं'[1] सीयं 'एत्तोऽणन्तगुणं तहिं'[2] ।
नरएसु वेयणा सीया अस्साया वेइया मए ॥
४९—कन्दन्तो कंदुकुम्भीसु उड्ढपाओ अहोसिरो ।
हुयासणे जलन्तम्मि पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥
५०—महादवग्गिसंकासे मरुम्मि वइरवालुए ।
कलम्बवालुयाए य दड्ढपुव्वो अणन्तसो ॥
५१—रसन्तो कंदुकुम्भीसु उड्ढं बद्धो अबन्धवो ।
करवत्तकरकयाईहिं छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥
५२—अइतिक्खकण्टगाइण्णे तुंगे सिम्बलिपायवे ।
खेवियं[3] पासबद्धेणं कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥
५३—महाजन्तेसु उच्छू वा आरसन्तो सुभेरवं ।
पीलिओ मि सकम्मेहि पावकम्मो अणन्तसो ॥
५४—कूवन्तो कोलसुणएहि
सामेहि सबलेहि य ।
पाडिओ फालिओ छिन्नो
विप्फुरन्तो[4] अणेगसो ॥
५५—असीहि[5] अयसिवण्णाहि
भल्लीहि पट्टिसेहि य ।
छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य
ओइण्णो[6] पावकम्मुणा ॥

१—इहं इम (उ, ऋ) ।
२—एत्तो ऽणन्तगुणा तहिं (वृ० पा०) ।
३—खेदिय (बृ०) ।
४—विप्फरतो (अ, ऋ) ।
५—अरसाहिं (बृ०), असीहि (बृ० पा०) ।
६—उववण्णो (ऋ) ।

५६—अवसो लोहरहे जुत्तो जलन्ते[1] समिलाजुए।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं रोज्झो वा जह पाडिओ॥

५७—हुयासणे जलन्तम्मि चियासु महिसो विव।
दड्ढो पक्को य अवसो पावकम्मेहि पाविओ॥

५८—बला संडासतुण्डेहिं लोहतुण्डेहि पक्खिहिं।
विलुत्तो विलवन्तो हं ढंकगिद्धेहिऽणन्तसो॥

५९—तण्हाकिलन्तो धावन्तो पत्तो वेयरणिं नदिं।
जलं 'पाहि ति'[2] चिन्तन्तो खुरधाराहिं विवाइओ[3]॥

६०—उण्हाभितत्तो संपत्तो असिपत्तं महावणं।
असिपत्तेहिं पडन्तेहि छिन्नपुव्वो अणेगसो[4]॥

६१—मुग्गरेहि मुसंढीहिं सूलेहि मुसलेहि य।
गयासं भग्गगत्तेहि पत्तं दुक्खं अणन्तसो॥

६२—खुरेहिं तिक्खधारेहिं[5] छुरियाहिं[6] कप्पणीहि य।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो उक्कत्तो[7] य अणेगसो[8]॥

६३—पासेहि कूडजालेहि मिओ वा अवसो अहं।
वाहिओ[9] बद्धरुद्धो अ 'बहु सो'[10] चेव विवाइओ॥

१—जलत्त (वृ० पा०)।
२—पाह ति (वृ०)।
३—विपाडिओ (वृ०), विवाइओ (वृ० पा०)।
४,८—अणतसो (उ, ऋ)।
५—तिक्ख दाढेहिं (उ)।
६—छुरीहिं (ऋ)।
७—उक्कित्तो (वृ० पा०, सु)।
९—गहिओ (वृ० पा०)।
१०—विवसो (उ, ऋ)।

६४—गलेहि मगरजालेहि
मच्छो वा अवसो अहं।
उल्लिओ[1] फालिओ गहिओ
मारिओ य अणन्तसो॥

६५—वीदंसएहि[2] जालेहि
लेप्पाहिं सउणो विव।
गहिओ लग्गो[3] बद्धो य
मारिओ य अणन्तसो॥

६६—कुहाडफरसुमाईहि
वड्ढईहि दुमो विव।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो
तच्छिओ य अणन्तसो॥

६७—चवेडमुट्ठिमाईहि
कुमारेहि अयं पिव।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो
चुण्णिओ य अणन्तसो॥

६८—तत्ताइं तम्बलोहाइं तउयाइं सीसयाणि य।
पाइओ कलकलन्ताइं आरसन्तो सुभेरवं॥

६९—तुहं पियाइं मंसाइं खण्डाइं सोल्लगाणि य।
खाविओ मि[4] समंसाइं अग्गिवण्णाइं णेगसो॥

७०—तुहं पिया सुरा सीहू मेरओ य महूणि[1] य।
पाइओ[5] मि जलन्तीओ वसाओ रुहिराणि य॥

१—अल्लिओ (उ, ऋ)।
२—वीसंदएहिं (ऋ) ; वीस देहिए (उ)।
३—भग्गो (अ)।
४—वि (ऋ)।
५—पज्जितो (बृ०)।

७१—निच्चं[1] भीएण तत्थेण दुहिएण वहिएण य।
परमा दुहसंबद्धा वेयणा वेइया मए॥
७२—तिव्वचण्डप्पगाढाओ घोराओ अइदुस्सहा।
महब्भयाओ[2] भीमाओ नरएसु वेइया मए॥
७३—जारिसा माणुसे लोए ताया! दीसन्ति वेयणा।
एत्तो[3] अणन्तगुणिया नरएसु दुक्खवेयणा॥
७४—सव्वभवेसु अस्साया वेयणा वेइया मए।
निमेसन्तरमित्तं पि जं साया नत्थि वेयणा॥

मिगचारिया-पदं

७५—तं बितऽम्मापियरो छन्देणं पुत्त! पव्वया।
नवरं पुण सामण्णे दुक्खं निप्पडिकम्मया॥
७६—सो बित ऽम्मापियरो! एवमेयं जहाफुडं।
पडिकम्मं को कुणई अरण्णे मियपक्खिणं?॥
७७—एगभूओ अरण्णे वा जहा उ चरई मिगे।
एवं धम्मं चरिस्सामि संजमेण तवेण य॥
७८—जया मिगस्स आयंको महारण्णम्मि जायई।
अच्छन्तं रुक्खमूलम्मि को णं ताहे तिगिच्छई[4]?॥
७९—को वा से ओसहं देई? को वा से पुच्छई सुहं?।
को से भत्तं च 'पाणं च'[5] आहरित्तु पणामए?॥
८०—जया य से सुही होइ तया गच्छइ गोयरं।
भत्तपाणस्स अट्ठाए वल्लराणि सराणि य॥

१—निच्च (अ, ऋ)।
२—महालया (वृ० पा०)।
३—तत्तो (अ); इत्तो (उ, ऋ)।
४—विगिच्छई (उ), चिगिच्छई (ऋ)।
५—पाण वा (ऋ)।

८१—खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहि वा ।
मिगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारियं ॥
८२—एवं समुट्ठिओ भिक्खू एवमेव अणेगओ[1] ।
मिगचारियं चरित्ताणं उड्ढं पक्कमई दिसं ॥
८३—जहा मिगे एग अणेगचारी
अणेगवासे धुवगोयरे य ।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे
नो हीलए नो वि य खिसएज्जा ॥
८४—मिगचारियं चरिस्सामि एवं पुत्ता! जहासुहं ।
अम्मापिऊहिंऽणुन्नाओ जहाइ उवहिं तओ ॥
८५—मियचारियं चरिस्सामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
तुब्भेहिं अम्म !ऽणुन्नाओ गच्छ पुत्त! जहासुहं ॥

पव्वज्जा-पदं

८६—एवं सो अम्मापियरो अणुमाणित्ताण बहुविहं ।
ममत्तं छिन्दई ताहे महानागो व्व कंचुयं ॥
८७—इड्ढिं[2] वित्तं च मित्ते य पुत्तदारं च नायओ ।
रेणुयं व पडे लग्गं निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥

समता-पदं

८८—पंचमहव्वयजुत्तो
पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।
सब्भिन्तरबाहिरओ
तवोकम्मंसि उज्जुओ ॥

१—अणेगसो (अ, ऋ) ; अणिएयणे (बृ० पा०) ।
२—इड्ढी (उ, ऋ) ।

८९—निम्ममो निरहंकारो निस्संगो चत्तगारवो ।
समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य ॥
९०—लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा ।
समो निन्दापसंसासु तहा माणावमाणओ ॥
९१—गारवेसु कसाएसु दण्डसल्लभएसु य ।
नियत्तो हाससोगाओ अनियाणो अवन्धणो ॥
९२—अणिस्सिओ इहं लोए परलोए अणिस्सिओ ।
वासीचन्दणकप्पो य असणे अणसणे तहा ॥
९३—अप्पसत्थेहिं दारेहिं सव्वओ पिहियासवे ।
अज्झप्पज्झाणजोगेहिं पसत्थदमसासणे ।
९४—एवं नाणेण चरणेण दंसणेण तवेण य ।
भावणाहि 'य सुद्धाहिं'[1] सम्मं भावेत्तु अप्पयं ॥
९५—बहुयाणि उ[2] वासाणि सामण्णमणुपालिया ।
मासिएण उ[3] भत्तेण सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥

निक्खेव-पदं

९६—एवं करन्ति संबुद्धा[4] पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु मियापुत्ते जहारिसी[5] ॥
९७—महापभावस्स महाजसस्स
मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासियं ।
तवप्पहाणं चरियं[6] च उत्तमं
गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ॥

१—विसुद्धाहिं (वृ०, सु) ।
२—ओ (उ) ; अ (ऋ) ।
३—य (अ) ।
४—सपन्ना (उ, वृ०) ।
५—जहामिसी (वृ०, सु) ।
६—चरित्तं (अ) ।

१८—वियाणिया दुक्खविवद्धणं धणं
ममत्तबंधं च महब्भयावहं।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं
धारेह निव्वाणगुणावहं[1] महं॥

—त्ति बेमि॥

*

१—नेव्वाणु० (अ)।

विंसइमं अज्झयणं

महानियण्ठिज्जं

उक्खेव-पदं

१—सिद्धाणं नमो किच्चा संजयाणं च भावओ ।
अत्थधम्मगइं[1] तच्चं अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥
२—पभूयरयणो राया सेणिओ मगहाहिवो ।
विहारजत्तं निज्जाओ मण्डिकुच्छिसि चेइए ॥
३—नाणादुमलयाइण्णं नाणापक्खिनिसेवियं ।
नाणाकुसुमसंछन्नं उज्जाणं नन्दणोवमं ॥
४—तत्थ सो पासई साहुं संजयं सुसमाहियं ।
निसन्नं रुक्खमूलम्मि सुकुमालं सुहोइयं ॥
५—तस्स रूवं तु पासित्ता राइणो तम्मि संजए ।
अच्चन्तपरमो आसी अउलो रूवविम्हओ ॥
६—अहो! वण्णो अहो! रूवं अहो! अज्जस्स सोमया ।
अहो! खन्ती अहो! मुत्ती अहो! भोगे असंगया ॥
७—तस्स पाए उ वन्दित्ता काऊण य पयाहिणं ।
नाइदूरमणासन्ने[2] पंजली पडिपुच्छई ॥

अणाह-पदं

८—तरुणो सि अज्जो! पव्वइओ
भोगकालम्मि संजया! ।
उवट्ठिओ[3] सि सामण्णे
एयमट्ठं सुणेमि ता ॥

१—°गत (अ); °वइं (बृ० पा०)।
२—निसण्णो नाइदूरंमि (आ)।
३—उवहितो (बृ० पा०)।

९—अणाहो मि महाराय ! नाहो मज्झ न विज्जई ।
अणुकम्पगं सुहिं वावि 'कंचि नाभिसमेमऽहं'[1] ॥

१०—तओ सो पहसिओ राया सेणिओ मगहाहिवो ।
एवं ते इड्ढिमन्तस्स कहं नाहो न विज्जई ? ॥

११—होमि नाहो भयन्ताणं ! भोगे भुंजाहि संजया ! ।
मित्तनाईपरिवुडो माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥

१२—अप्पणा वि अणाहो सि सेणिया ! मगहाहिवा ! ।
अप्पणा अणाहो सन्तो कहं[2] नाहो भविस्ससि ? ॥

१३—एवं वुत्तो नरिन्दो सो सुसंभन्तो सुविम्हिओ ।
वयणं अस्सुयपुव्वं साहुणा विम्हयन्निओ[3] ॥

१४—अस्सा हत्थी मणुस्सा मे पुरं अन्तेउरं च मे ।
भुंजामि माणुसे भोगे[4] आणाइस्सरियं च मे ॥

१५—एरिसे सम्पयग्गम्मि[5] सव्वकामसमप्पिए ।
कहं अणाहो भवइ ? 'मा हु भन्ते ! मुसं वए'[6] ॥

१६—न तुमं जाणे अणाहस्स अत्थं 'पोत्थं व'[7] पत्थिवा ! ।
जहा अणाहो भवई सणाहो वा नराहिवा ? ॥

१७—सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण[8] चेयसा ।
जहा अणाहो भवई जहा मे य पवत्तियं ॥

१—कचीनाहि तुमे मह (बृ०, सु) ; कची नाभिसमेम्यह (बृ० पा०) ।
२—कस्स (आ) ।
३—विम्हियन्निओ (अ, उ, ऋ) ।
४—लोए (अ) ।
५—संपयायम्मि (बृ० पा०) ।
६—भंते ! माहु मुस वए (बृ० पा०) ।
७—उत्थं व (बृ०) ; पोत्थं च (अ) ; पोत्थं व (बृ० पा०) ।
८—अविक्खित्तेण (ऋ) ।

१८—कोसम्बी नाम नयरी पुराणपुरभेयणी[1] ।
तत्थ आसी पिया मज्झ पभूयधणसंचओ ॥
१९—पढमे वए महाराय! अउला मे अच्छिवेयणा ।
अहोत्था विउलो[2] दाहो 'सव्वंगेसु य'[3] पत्थिवा! ॥
२०—सत्थं जहा परमतिक्खं सरीरविवरन्तरे[4] ।
पवेसेज्ज[5] अरी कुद्धो एवं मे अच्छिवेयणा ॥
२१—तियं मे अन्तरिच्छं च उत्तमंगं च पीडई ।
इन्दासणिसमा घोरा वेयणा परमदारुणा ॥
२२—उवट्ठिया मे आयरिया विज्जामन्ततिगिच्छगा[6] ।
'अबीया सत्थकुसला'[7] मन्तमूलविसारया ॥
२३—ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति चाउप्पायं जहाहियं ।
न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥
२४—पिया मे सव्वसारं पि दिज्जाहि मम कारणा ।
न य दुक्खा[8] विमोएइ[9] एसा मज्झ अणाहया ॥
२५—माया य[10] मे महाराय!
पुत्तसोगदुहट्टिया[11] ।
न य दुक्खा[12] विमोएइ
एसा मज्झ अणाहया ॥

१—नगराण पुडभेयण (वृ० पा०)।
२—तिउलो (वृ०) ; विउलो (वृ० पा०)।
३—सव्वगत्तेसु (वृ) ; सव्वंगेसु य (वृ० पा)।
४—सरीर वीय अंतरे (वृ० पा०)।
५—आविलिज्ज (उ, वृ० पा०, ऋ)।
६—°विगिच्छगा (ऋ)।
७—नाना सत्थत्थ कुसला (वृ० पा०) ; अधीया ····· (अ)।
८—दुक्खाओ (ऋ) ; दुक्खाउ (उ)।
९—विमोयंति (वृ०), एव सर्वत्र ।
१०—वि (उ)।
११—°दुहट्टिया (वृ० पा०)।
१२—पा० टि० ७

२६—भायरो[1] मे महाराय! सगा जेट्ठकणिट्ठगा।
न य दुक्खा[2] विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया॥
२७—भइणीओ मे महाराय! सगा जेट्ठकणिट्ठगा।
न य दुक्खा[3] विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया॥
२८—भारिया मे महाराय! 'अणुरत्ता अणुव्वया'[4]।
अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं उरं मे परिसिंचई॥
२९—अन्नं पाणं च ण्हाणं च गन्धमल्लविलेवणं।
'मए नायमणायं वा'[5] सा बाला नोवभुंजई॥
३०—खणं पि मे महाराय! पासाओ वि[6] न फिट्टई।
न य दुक्खा विमोएइ एसा मज्झ अणाहया॥
३१—तओ हं एवमाहंसु दुक्खमा हु पुणो पुणो।
वेयणा अणुभविउं जे संसारम्मि अणन्तए॥
३२—सइं[7] च जइ मुच्चेज्जा वेयणा विउला इओ।
खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वए[8] अणगारियं॥
३३—एवं च चिन्तइत्ताणं पसुत्तो मि नराहिवा!।
परियट्टन्तीए राईए वेयणा मे खयं गया॥
३४—तओ कल्ले पभायम्मि आपुच्छित्ताण बन्धवे।
खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वइओऽणगारियं॥
३५—ततो हं नाहो जाओ अप्पणो य परस्स य।
सव्वेसिं चेव भूयाणं तसाण थावराण य॥

१—भाया (उ)।
२, ३—दुक्खाओ (ऋ); दुक्खाउ (उ)।
४—अणुत्तरमणुव्वया (उ, ऋ, बृ० पा०)।
५—तारिसं रोगमावण्णे (बृ० पा०)।
६—य (अ, आ, उ)।
७—सयं (उ, बृ०); सइय (अ)।
८—पव्वइए (उ)।

अत्त-पदं

३६—अप्पा नई वेयरणी अप्पा मे कूडसामली।
अप्पा कामदुहा धेणू अप्पा मे नन्दणं वणं॥

३७—अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ॥

धम्मलोव-पद

३८—इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा!
तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि।
नियण्ठधम्मं लहियाण वी जहा
सीयन्ति एगे बहुकायरा नरा॥

३९—जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं
सम्मं नो फासयई[1] पमाया।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे
न मूलओ छिन्दइ बन्धणं से॥

४०—आउत्तया जस्स न अत्थि काइ
इरियाए भासाए तहेसणाए।
आयाणनिक्खेवदुगुछणाए
न वीरजायं[2] अणुजाइ मग्गं॥

४१—चिरं पि से मुण्डरुई भवित्ता
अथिरव्वए तवनियमेहि भट्ठे।
चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता
न पारए होइ हु संपराए॥

१—फासइ (उ, ऋ)।
२—धीरजाय (सु)।

४२–'पोल्ले व'[1] मुट्ठी जह से असारे
अयन्तिए कूडकहावणे वा ।
राढामणी वेरुलियप्पगासे
अमहग्घए होइ य जाणएसु ॥

४३–कुसीललिंगं इह धारइत्ता
इसिज्झयं जीविय वूहइत्ता ।
असंजए संजयलप्पमाणे[2]
विणिघायमागच्छइ से चिरं पि ॥

४४–'विसं तु पीयं'[3] जह कालकूडं
हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।
'एसे व'[4] धम्मो विसओववन्नो
हणाइ वेयाल इवाविवन्नो[5] ॥

४५–जे लक्खणं सुविण पउंजमाणे
निमित्तकोऊहलसंपगाढे ।
कुहेडविज्जासवदारजीवी
न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥

४६–तमंतमेणेव उ से असीले
सया दुही विप्परियासुवेइ[6] ।
संधावई नरगतिरिक्खजोणिं
मोणं विराहेत्तु असाहुरूवे ॥

१—पोल्लार (वृ० पा०) ।
२—सजयलाभमाणे (वृ० पा०) ।
३—विस पिवित्ता (अ, आ) : विस पिवन्ती (वृ०) ।
४—एसो वि (अ) : एसो व (उ) ।
५—इवाविवंधणो (वृ० पा०) ।
६—० समेइ (अ) ।

४७—उद्देसियं कीयगडं नियागं
न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता
इओ चुओ गच्छइ कट्टु पावं ॥

४८—न तं अरी कण्ठछेत्ता करेइ
जं से करे अप्पणिया दुरप्पा[1] ।
से नाहिई मच्चुमुहं तु पत्ते
पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥

४९—निरट्ठिया नग्गरुई उ तस्स
जे उत्तमट्ठं विवज्जासमेई ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए
दुहओ वि से झिज्जइ तत्थ लोए ॥

५०—एमेवऽहाछन्दकुसीलरूवे
मग्गं विराहेत्तु जिणुत्तमाणं ।
कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा
निरट्ठसोया परियावमेइ ॥

निक्खेव-पदं

५१—सोच्चाण मेहावि सुभासियं इमं
अणुसासणं नाणगुणोववेयं ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं
महानियण्ठाण वए पहेणं ॥

१—दुरप्पया (क) ।

५२–चरित्तमायारगुणन्निए[1] तओ
अणुत्तरं संजम पालियाणं ।
निरासवे संखवियाण कम्मं
उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥

५३–एवुग्गदन्ते वि महातवोधणे
महामुणी महापइन्ने महायसे ।
महानियण्ठिज्जमिणं महासुयं
से काहए महया वित्थरेणं ॥

५४–तुट्ठो य सेणिओ राया इणमुदाहु कयंजली ।
अणाहत्तं जहाभूय सुट्ठु मे उवदंसियं ॥

५५–तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं
लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ! ।
तुब्भे सणाहा य सबन्धवा य
जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं ॥

५६–तं सि नाहो अणाहाणं सव्वभूयाण संजया ! ।
खामेमि ते महाभाग ! इच्छामि अणुसासिउं ॥

५७–पुच्छिऊण मए तुब्भं झाणविग्घो उ[2] जो कओ ।
निमन्तिओ[3] य भोगेहि तं सव्वं मरिसेहि मे ॥

५८–एवं थुणित्ताण स रायसीहो
अणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।
'सओरोहो य सपरियणो य'[4]
धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥

१–° गुणत्तिए (अ) ।
२–अ (ऋ) ।
३–निमतिया (अ, आ. इ, उ) ।
४–सओरोहो सपरियणो सबधवो (अ, आ, इ) ।

५९—ऊससियरोमकूवो काऊण य पयाहिणं।
अभिवन्दिऊण सिरसा अइयाओ[1] नराहिवो॥

६०—इयरो वि गुणसमिद्धो
तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य।
विहग इव विप्पमुक्को
विहरइ वसुह विगयमोहो॥

—त्ति बेमि॥

*

१—आइयो (उ)।

एगविसइम अज्झयण

समुद्दपालीयं

उक्खेव-पदं

१—चम्पाए पालिए नाम सावए आसि वाणिए।
महावीरस्स भगवओ सीसे सो उ महप्पणो ॥

२—निग्गन्थे पावयणे सावए से विकोविए।
पोएण ववहरन्ते पिहुण्डं नगरमागए ॥

३—पिहुण्डे ववहरन्तस्स वाणिओ देइ धूयरं।
तं ससत्तं पइगिज्झ सदेसमह पत्थिओ ॥

४—अह पालियस्स घरणी समुद्दंमि पसवई।
अह 'दारए तहिं'[1] जाए समुद्दपालि त्ति नामए ॥

५—खेमेण आगए चम्पं सावए वाणिए घरं।
संवड्ढई घरे तस्स दारए से सुहोइए ॥

६—बावत्तरिं कलाओ य सिक्खए[2] नीइकोविए।
जोव्वणेण य संपन्ने[3] सुरूवे पियदंसणे ॥

७—तस्स रूववइं भज्ज पिया आणेइ रूविणिं।
पासाए कीलए रम्मे देवो दोगुन्दओ जहा ॥

८—अह अन्नया कयाई पासायालोयणे ठिओ।
वज्झमण्डणसोभागं वज्झं पासइ वज्झगं ॥

१—वालए॰ (उ) ; वालए तम्मि (ऋ)।
२—सिक्खिए (उ, ऋ, बृ०) ; सिक्खए (बृ० पा०)।
३—अप्फुण्णे (बृ०) ; सम्पन्ने (बृ० पा०)।

९–तं पासिऊण संविग्गो[1] समुद्दपालो इणमब्बवी ।
अहोऽसुभाण कम्माणं निज्जाणं पावगं इमं ॥

१०–संबुद्धो सो तहिं भगवं 'परं संवेगमागओ'[2] ।
आपुच्छऽम्मापियरो पव्वए[3] अणगारियं ॥

११–'जहित्तु संगं च'[4] महाकिलेसं
महन्तमोहं कसिणं भयावहं[5] ।
परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा
वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥

महव्वय-पद

१२–अहिंस सच्चं च अतेणगं च
तत्तो य 'बम्भं अपरिग्गहं च'[6] ।
पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि
चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विऊ ॥

चरिया-पद

१३–सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकम्पी[7]
खन्तिक्खमे संजयबम्भयारी ।
सावज्जजोगं परिवज्जयन्तो
चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए ॥

१–सवेगं (उ, ऋ, वृ०) ।
२–परम ० (उ) ।
३–पव्वइए (उ) ।
४–जहिज्ज सगग्रथ (वृ०) ; जहित्त्ु संगंथ (चू०) ; जहित्तु सांथ ० (सु) ;
जहित्तु सग च, जहाय सग च (वृ० पा०) ।
५–भयाणग (वृ०, चू०) ।
६–अव्वम परिग्गह च (वृ० पा०) ।
७–दयाणुकपो (वृ० पा०) ।

१४–कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे[1]
बलाबलं जाणिय अप्पणो य[2] ।
सीहो व सद्देण न संतसेज्जा
वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥

१५–उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा
पियमप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा ।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा
न यावि पूयं गरहं च संजए ॥

१६–अणेगछन्दाइह[3] माणवेहिं
जे भावओ संपगरेइ[4] भिक्खू ।
भयभेरवा तत्थ उइन्ति[5] भीमा
दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥

१७–परीसहा दुव्विसहा अणेगे
सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा ।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू
संगामसीसे इव नागराया ॥

१८–सीओसिणा दंसमसा य फासा
आयंका विविहा फुसन्ति देहं ।
अकुक्कुओ[6] तत्थऽहियासएज्जा
रयाइं[7] खेवेज्ज पुरेकडाइं ॥

१–रिट्ठे (ऋ) ।
२–उ (अ) ।
३–० छदामिह (बृ०) ।
४–सोपगरेइ (बृ०) ।
५–उवेन्ति (बृ० पा०) ।
६–अकक्करे (बृ० पा०, चू०) ।
७–रज्जाइं (उ) ।

१९—पहाय रागं च तहेव दोसं
मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो।
मेरु व्व वाएण अकम्पमाणो
परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा॥

२०—अणुन्नए नावणए महेसी
न यावि पूयं गरहं च संजए।
स उज्जुभावं पडिवज्ज संजए
निव्वाणमग्गं विरए उवेइ॥

२१—अरइरइसहे पहीणसंथवे
विरए आयहिए पहाणवं।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई
छिन्नसोए अममे अकिंचणे॥

२२—विवित्तलयणाइ भएज्ज ताई[1]
निरोवलेवाइ असंथडाइं।
इसीहि चिण्णाइ महायसेहि
काएण फासेज्ज परीसहाइं॥

२३—सन्नाणनाणोवगए[2] महेसी
अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं।
अणुत्तरेनाणधरे[3] जसंसी
ओभासई सूरिए वन्तलिक्खे[4]॥

१—ताया (ऋ)।
२—सन्नाईण° (ऋ) : सन्नाण° (वृ० पा०) ; सनाण° (वृ०)।
३—गुणुत्तरे° (वृ० पा०)।
४—वंतलिक्ख (अ)।

निक्खेव-पदं

२४—दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं
निरंगणे[1] सव्वओ विप्पमुक्के।
तरित्ता समुद्दं व महाभवोघं
समुद्दपाले 'अपुणागमं गए'[2] ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—निरंजणे (बृ०) ; निरंगणे (बृ० पा०)।
२—°गइं गउ (अ, चू०, ऋ, सु)।

वाइसमं अज्झयण

रहनेमिज्जं

उक्खेव-पदं

१—सोरियपुरंमि नयरे आसि राया महिड्ढिए।
वसुदेवे त्ति नामेणं रायलक्खणसंजुए ॥

२—तस्स भज्जा दुवे आसी रोहिणी देवई तहा।
तासिं दोण्हं पि दो पुत्ता इट्ठा रामकेसवा ॥

३—सोरियपुरंमि नयरे आसी राया महिड्ढिए।
समुद्दविजए नामं रायलक्खणसंजुए ॥

४—तस्स भज्जा सिवा नाम तीसे पुत्तो महायसो।
भगवं अरिट्ठनेमि त्ति लोगनाहे दमीसरे ॥

५—सोऽरिट्ठनेमिनामो उ लक्खणस्सरसंजुओ[1] ।
अट्ठसहस्सलक्खणधरो गोयमो कालगच्छवी ॥

निव्वाण-पदं

६—वज्जरिसहसंघयणो समचउरंसो झसोयरो।
तस्स राईमइं कन्नं भज्जं जायइ केसवो ॥

७—अह सा रायवरकन्ना सुसीला चारुपेहिणी।
सव्वलक्खणसंपुन्ना[2] विज्जुसोयामणिप्पभा ॥

८—अहाह जणओ तीसे वासुदेवं महिड्ढियं।
इहागच्छऊ कुमारो जा से कन्नं दलाम हं ॥

१—वजणस्सर° (अ, वृ० पा०)।
२—°संपन्ना (उ. ऋ)।

९—सव्वोसहीहि ण्हविओ कयकोउयमंगलो ।
दिव्वजुयलपरिहिओ आभरणेहिं विभूसिओ[1] ॥

१०—मत्तं च गन्धहत्थिं[2] वासुदेवस्स जेट्ठगं ।
आरूढो सोहए अहियं सिरे चूडामणी जहा ॥

११—'अह ऊसिएण'[3] छत्तेण चामराहि य सोहिए ।
दसारचक्केण य सो सव्वओ परिवारिओ ॥

१२—चउरंगिणीए सेनाए रइयाए जहक्कमं ।
तुरियाण सन्निनाएण दिव्वेण गगणं फुसे ॥

१३—एयारिसीए इड्ढीए जुईए उत्तिमाए य ।
नियगाओ भवणाओ निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥

१४—अह सो तत्थ निज्जन्तो दिस्स पाणे भयद्दुए ।
वाडेहिं पंजरेहिं च सन्निरुद्धे[4] सुदुक्खिए ॥

संवेग-पदं

१५—जीवियन्तं तु संपत्ते मंसट्ठा भक्खियव्वए ।
पासेत्ता से महापन्ने सारहिं इणमब्बवी ॥

१६—कस्स अट्ठा 'इमे पाणा'[5] एए सव्वे सुहेसिणो ।
वाडेहिं पंजरेहिं च सन्निरुद्धा य अच्छहिं ? ॥

१७—अह सारही तओ भणइ एए भद्दा उ पाणिणो ।
तुज्झं विवाहकज्जंमि भोयावेउं बहुं जणं ॥

१—विभूसई (ऋ) ।
२—°हत्थिं च (अ, आ, इ, उ) ।
३—से ओसिएण (वृ० पा०) ।
४—उद्धरुद्धे (वृ० पा०) ।
५—बहुपाणे (वृ० पा०) ।

१८–सोऊण तस्स[1] वयणं बहुपाणिविणासणं[2] ।
चिन्तेइ से महापन्ने साणुक्कोसे जिएहि उ ॥

१९–जइ मज्झ कारणा एए 'हम्मिहिंति बहू'[3] जिया ।
न मे एयं तु निस्सेसं परलोगे भविस्सई ॥

२०–सो कुण्डलाण जुयलं
सुत्तगं च महायसो ।
आभरणाणि य सव्वाणि[4]
सारहिस्स पणामए ॥

अभिनिक्खमण-पदं

२१–मणपरिणामे य कए
देवा य जहोइयं समोइण्णा[5] ।
सव्वड्ढीए सपरिसा
निक्खमणं तस्स काउं जे ॥

२२–देवमणुस्सपरिवुडो
सीयारयणं[6] तओ समारूढो ।
निक्खमिय बारगाओ
रेवययंमि ट्ठिओ भगवं ॥

२३–उज्जाणं संपत्तो
ओइण्णो उत्तिमाओ सीयाओ[7] ।
साहस्सीए परिवुडो
अह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥

१—तस्स सो (उ, ऋ) ।
२—बहुपाण° (वृ०) ।
३—हम्मंति सुबहू (उ, ऋ, वृ०), हम्मिहिंति सु बहू (वृ० पा०) ।
४—सेसाणि (उ, ऋ) ।
५—समोवडिया (वृ० पा०) ।
६, ७—सीइया° (ऋ) ।

२४—अह से सुगन्धगन्धिए[1] तुरियं मउयकुंचिए[2] ।
सयमेव लुंचई केसे पंचमुट्ठीहिं[3] समाहिओ ॥

आसीवाय-पद

२५—वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
इच्छियमणोरहे तुरियं पावेसू[4] तं दमीसरा ! ॥
२६—नाणेणं दंसणेणं च चरित्तेण तहेव[5] य ।
खन्तीए मुत्तीए[6] वड्ढमाणो भवाहि य ॥
२७—एवं ते रामकेसवा दसारा य बहू जणा ।
अरिट्ठणेमिं वन्दित्ता अइगया बारगापुरिं ॥

राईमई-पद

२८—सोऊण रायकन्ना पव्वज्जं सा जिणस्स उ ।
नीहासा य निराणन्दा सोगेण उ समुत्थया[7] ॥
२९—राईमई विचिन्तेइ धिरत्थु मम जीवियं ।
जा हं तेण परिच्चत्ता 'सेयं पव्वइउं'[8] मम ॥
३०—अह सा भमरसन्निभे[9] कुच्चफणगपसाहिए[10] ।
सयमेव लुंचई केसे धिइमन्ता ववस्सिया[11] ॥

१—सुगंधि ° (ऋ, बृ०) ।
२—मओए ° (अ) ।
३—पचउट्ठाहिं (बृ०) ।
४—पावसु (बृ०) ।
५—तवेण (सु) ।
६—मुत्तीए चेव (उ) ।
७—समुत्थिया (अ) ; समुच्छया (आ) ।
८—सेउं पव्वइउ (ऋ) ; से ओ पव्वइओ (उ) ; सेउं-पव्वइयं (अ) ।
९— ° संकासे (अ) ।
१०— ° फलगा ° (अ) ।
११—वि तवस्सिया (अ) ।

३१–वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
संसारसागरं घोरं तर कन्ने! लहुं लहुं ॥
३२–सा पव्वइया सन्ती पव्वावेसी[1] तहिं बहुं ।
सयणं परियणं चेव सीलवन्ता बहुस्सुया ॥
३३–गिरिं रेवययं[2] जन्ती वासेणुल्ला उ अन्तरा ।
वासन्ते अन्धयारंमि अन्तो लयणस्स सा ठिया ॥
३४–चीवराइं विसारन्ती जहा जाय त्ति पासिया ।
रहनेमी भग्गचित्तो पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥
३५–भीया य सा तहिं दट्ठुं एगन्ते संजयं तयं ।
बाहाहिं काउं संगोफं वेवमाणी निसीयई ॥
३६–अह सो वि रायपुत्तो समुद्दविजयंगओ ।
भीयं पवेवियं दट्ठुं इमं वक्कं उदाहरे ॥
३७–रहनेमी अहं भद्दे! सुरूवे! चारुभासिणि! ।
ममं[3] भयाहि सुयणू! न ते पीला भविस्सई ॥
३८–एहि ता भुंजिमो भोए माणुस्सं खु सुदुल्लहं ।
'भुत्तभोगा तओ'[4] पच्छा जिणमग्गं चरिस्सिमो ॥
३९–दट्ठूण रहनेमिं तं भग्गुज्जोयपराइयं ।
राईमई असम्भन्ता अप्पाणं संवरे तहिं ॥
४०–अह सा रायवरकन्ना सुट्ठिया नियमव्वए ।
जाई कुलं च सीलं च रक्खमाणी तयं वए ॥
४१–जइ सि रूवेण वेसमणो ललिएण नलकूबरो ।
तहा वि ते न इच्छामि जइ सि सक्खं पुरन्दरो ॥

१–पव्वावेती (अ) ।
२–रवेइय (अ) ।
३–मम (वृ० पा०) ।
४–भुत्तभोगी तओ (उ, ऋ) ; भुत्तभोगा पुणो (वृ०) ।

[पक्खंदे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छन्ति वंतयं भोत्तुं कुले जाया अगंधणे ॥][1]

४२—धिरत्थु ते जसोकामी! जो तं जीवियकारणा ।
वन्तं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥

४३—अहं च भोयरायस्स तं च सि अन्धगवण्हिणो ।
मा कुले गन्धणा होमो संजमं निहुओ चर ॥

४४—जइ तं काहिसि भावं जा जा दिच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हढो अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥

४५—गोवालो भण्डवालो[2] वा
जहा तद्दव्वऽणिस्सरो ।
एवं अणिस्सरो तं पि
सामण्णस्स भविस्ससि ॥

[कोहं माणं निगिण्हित्ता मायं लोभं च सव्वसो ।
इन्दियाइं वसे काउं अप्पाणं उवसंहरे ॥][3]

४६—तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥

४७—मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
सामण्णं निच्चलं फासे जावज्जीवं दढव्वओ ॥

४८—उग्गं तवं चरित्ताणं जाया दोण्णि वि केवली ।
सव्वं कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥

१—यह श्लोक चूर्णि और बृहद्द वृत्ति मे व्याख्यात नहीं है ।
२—दंडपाळो (बृ० पा०) ।
३—यह श्लोक चूर्णि और बृहद्द वृत्ति मे व्याख्यात नहीं है ।

निक्खेव-पदं

४९–एवं करेन्ति संबुद्धा पण्डिया पवियक्खणा।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा सो पुरिसोत्तमो ॥
—त्ति बेमि ॥

*

तेविंसइमं अज्झयणं

केसिगोयमिज्जं

उक्खेव-पदं

१—जिणे पासे त्ति नामेण 'अरहा लोगपूइओ ।
संबुद्धप्पा य सव्वन्नू धम्मतित्थयरे जिणे'[1] ॥
२—तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे ।
केसीकुमारसमणे विज्जाचरणपारगे ॥
३—ओहिनाणसुए बुद्धे सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते सावत्थिं नगरिमागए ॥
४—तिन्दुयं नाम उज्जाणं तम्मी नगरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥
५—अह तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे ।
भगवं वद्धमाणो त्ति सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥
६—तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे[2] ।
भगवं गोयमे नामं विज्जाचरणपारगे ॥
७—बारसंगविऊ बुद्धे सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते से वि सावत्थिमागए ॥
८—कोट्ठगं नाम उज्जाणं तम्मी नयरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥
९—केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ वि तत्थ विहरिंसु अल्लीणा[3] सुसमाहिया ॥

१—...... .... अरिहा लोगविस्सुए ।
सव्वन्नू सव्वदंस्सी य धम्मतित्थस्स देसए ॥ (वृ० पा०) ।
२—महिड्ढिए (अ) ।
३—अलीणा (वृ० पा०) ।

१०—उभओ सीससंघाणं संजयाणं तवस्सिणं ।
तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना गुणवन्ताण ताइणं ॥
११—केरिसो वा इमो धम्मो ? इमो धम्मो व केरिसो ?।
आयारधम्मपणिही इमा वा सा व केरिसी ? ॥
१२—चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥
१३—अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ? ॥
१४—अह ते तत्थ सीसाणं विन्नाय पवितक्कियं ।
समागमे कयमई उभओ केसिगोयमा ॥
१५—गोयमे पडिरूवन्नू सीससंघसमाउले ।
जेट्ठं कुलमवेक्खन्तो तिन्दुयं वणमागओ ॥
१६—केसीकुमारसमणे गोयमं दिस्समागयं ।
पडिरूवं पडिवत्तिं सम्मं संपडिवज्जई ॥
१७—पलालं फासुयं तत्थ पंचमं कुसतणाणि य ।
गोयमस्स निसेज्जाए खिप्पं संपणामए ॥
१८—केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ निसण्णा सोहन्ति चन्दसूरसमप्पभा ॥
१९—समागया बहू तत्थ पासण्डा 'कोउगा मिगा'[१] ।
गिहत्थाणं अणेगाओ साहस्सीओ समागया ॥
२०—देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा ।
अदिस्साणं च भूयाणं आसी तत्थ समागमो ॥
२१—पुच्छामि ते महाभाग ! केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

१—कोउगासिया (वृ०) ; कोउगा मिगा (वृ० पा०) ।

२२—पुच्छ भन्ते! जहिच्छं ते केसिं गोयममब्बवी।
तओ केसी अणुन्नाए गोयमं इणमब्बवी॥

चाउज्जाम-पद

२३—चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी॥

२४—एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं?।
धम्मे दुविहे मेहावि! कहं[1] विप्पच्चओ न ते?॥

२५—तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी।
पन्ना समिक्खए धम्मं तत्तं तत्तविणिच्छयं[2]॥

२६—पुरिमा उज्जुजडा[3] उ वंकजडा य पच्छिमा।
मज्झिमा 'उज्जुपन्ना य'[4] तेण धम्मे दुहा कए॥

२७—पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ
चरिमाणं दुरणुपालओ।
कप्पो मज्झिमगाणं तु
सुविसोज्झो सुपालओ॥

२८—साहु गोयम! 'पन्ना ते'[5]
छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं
तं मे कहसु गोयमा!॥

१—कहिं (अ)।
२—° विणिच्छियं (उ, ऋ)।
३—उज्जुकडा (अ)।
४—उज्जुपन्नाओ (उ, ऋ)।
५—पन्नाए (बृ० पा०)।

अचेलग-पदं

२९—अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महाजसा[1] ॥
३०—एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ? ।
लिंगे दुविहे मेहावि ! कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥
३१—केसिमेवं बुवाणं तु गोयमो इणमब्बवी ।
विन्नाणेण समागम्म धम्मसाहणमिच्छियं ॥
३२—पच्चयत्थं च लोगस्स नाणाविहविगप्पणं ।
जत्तत्थं गहणत्थं च लोगे लिंगप्पओयणं ॥
३३—अह भवे पइन्ना उ मोक्खसब्भूयसाहणे[2] ।
नाणं च दंसणं चेव चरित्तं चेव निच्छए ॥
३४—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

विजय-पद

३५—अणेगाणं सहस्साणं मज्झे चिट्ठसि गोयमा ! ।
ते य ते अहिगच्छन्ति कहं ते निज्जिया तुमे ? ॥
३६—एगे जिए जिया पंच पंच जिए जिया दस ।
दसहा उ जिणित्ताणं सव्वसत्तू जिणामहं ॥
३७—सत्तू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
३८—एगप्पा अजिए सत्तू कसाया इन्दियाणि य ।
ते जिणित्तु[3] जहानायं विहरामि अहं मुणी ! ॥

१—महामुणी (बृ०), महाजसा (बृ० पा०) ।
२—मुक्ख सभूय० (उ, ऋ), मोक्खे सब्भूय० (अ) ।
३—जहित्तु (अ) ।

३९—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

४०—दीसन्ति बहवे लोए पासबद्धा सरीरिणो ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ कहं तं विहरसी? मुणी! ॥

पास-पद

४१—ते पासे सव्वसो छित्ता निहन्तूण उवायओ ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ विहरामि अहं मुणी! ॥

४२—पासा य इइ के वुत्ता? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

४३—रागद्दोसादओ तिव्वा नेहपासा भयंकरा ।
ते छिन्दित्तु जहानायं विहरामि जहक्कमं ॥

४४—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

लया-पद

४५—अन्तोहियय संभूया लया चिट्ठइ गोयमा! ।
फलेइ विसभक्खीणि[1] सा उ उद्धरिया कहं? ॥

४६—तं लयं सव्वसो छित्ता उद्धरित्ता समूलियं ।
विहरामि जहानायं मुक्को मि विसभक्खणं ॥

४७—लया य इइ का वुत्ता? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

४८—भवतण्हा लया वुत्ता भीमा भीमफलोदया ।
तमुद्धरित्तु[2] जहानायं विहरामि महामुणी! ॥

१—विसभक्खीण (बृ०) ।
२—तमुच्छित्तु (उ, ऋ) ; तमुद्धरित्ता (आ) ।

४९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

अग्गी-पदं

५०—संपज्जलिया घोरा अग्गी चिट्ठइ गोयमा! ।
जे डहन्ति सरीरत्था[1] कहं विज्झाविया तुमे ? ॥
५१—महामेहप्पसूयाओ गिज्झ वारि जलुत्तमं ।
'सिंचामि सययं देहं'[2] सित्ता नो व डहन्ति मे ॥
५२—अग्गी य इइ के वुत्ता केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
५३—कसाया अग्गिणो वुत्ता सुयसीलतवो जलं ।
सुयधाराभिहया सन्ता भिन्ना हु न डहन्ति मे ॥
५४—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

दुट्ठस्स-पद

५५—अयं साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई ।
जंसि गोयम! आरूढो कहं तेण न हीरसि ? ॥
५६—पधावन्तं निगिण्हामि सुयरस्सीसमाहियं ।
न मे गच्छइ उम्मग्गं मग्गं च पडिवज्जई ॥
५७—अस्से य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं[3] बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
५८—मणो साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई ।
तं सम्मं निगिण्हामि धम्मसिक्खाए कन्थगं ॥

१—जा डहेति सरीरत्था (बृ० पा०) ।
२—सिंचामि सयय ते ओ,(ते उ) (उ, ऋ, बृ) ; सिंचामि सयय देहा, सिंचामि सयय त तु (बृ० पा०) ।
३—तओ केसिं (अ) ।

५९—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

कुप्पह-पदं

६०—कुप्पहा वहवो लोए जेहिं नासन्ति जंतवो।
अद्धाणे कह वट्टन्ते तं न नस्ससि? गोयमा!॥

६१—जे य मग्गेण गच्छन्ति 'जे य उम्मग्गपट्ठिया'[1]।
ते सव्वे विइया मज्झं तो न नस्सामहं[2] मुणी ॥

६२—मग्गे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

६३—कुप्पवयणपासण्डी सव्वे उम्मग्गपट्ठिया।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं एस मग्गे हि[3] उत्तमे ॥

६४—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

दीव-पदं

६५—महाउदगवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं।
सरणं गई पइट्ठा य दीवं 'कं मन्नसी?'[4] मुणी!॥

६६—अत्थि एगो महादीवो वारिमज्झे महालओ।
महाउदगवेगस्स गई तत्थ न विज्जई ॥

६७—दीवे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं वुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

१—जे उम्मग्ग पइट्ठिया (अ)।
२—नस्सामिहं (अ)।
३—हे (अ)।
४—कम्मुणसी (अ)।

६८—जरामरणवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं।
धम्मो दीवो 'पइट्ठा य'[1] गई सरणमुत्तमं॥
६९—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा!॥

नावा-पदं

७०—अण्णवंसि महोहंसि नावा विपरिधावई।
जंसि गोयममारूढो कहं पारं गमिस्ससि?॥
७१—जा उ अस्साविणी[2] नावा
न सा पारस्स गामिणी।
जा निरस्साविणी नावा
सा उ पारस्स गामिणी॥
७२—नावा य इइ का वुत्ता? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी॥
७३—सरीरमाहु नाव त्ति जीवो वुच्चइ नाविओ।
संसारो अण्णवो वुत्तो जं तरन्ति महेसिणो॥
७४—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा!॥

उज्जोय-पदं

७५—अन्धयारे तमे घोरे चिट्ठन्ति पाणिणो बहू।
को करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं?॥
७६—उग्गओ विमलो भाणू सव्वलोगप्पभंकरो।
सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं॥

१—पत्तिट्ठा णं (अ)।
२—सस्साविणी (वृ० पा०)।

७७—भाणू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

७८—उग्गओ खीणसंसारो सव्वन्नू जिणभक्खरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोयंमि पाणिणं ॥

७९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

ठाण-पदं

८०—सारीरमाणसे दुक्खे बज्झमाणाण[1] पाणिणं ।
खेमं सिवमणाबाहं ठाणं किं मन्नसी मुणी ? ॥

८१—अत्थि एगं धुवं ठाणं लोगग्गंमि दुरारुहं ।
जत्थ नत्थि जरा मच्चू वाहिणो वेयणा तहा ॥

८२—ठाणे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

८३—निव्वाणं ति अबाहं ति सिद्धी लोगग्गमेव य ।
खेमं सिवं अणाबाहं जं चरन्ति महेसिणो ॥

८४—तं ठाणं सासयंवासं लोगग्गंमि दुरारुहं ।
जं संपत्ता न सोयन्ति भवोहन्तकरा मुणी ॥

८५—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
नमो ते संसयाईय ! सव्वसुत्तमहोयही ! ॥

८६—एवं तु संसए छिन्ने केसी घोरपरक्कमे ।
'अभिवन्दित्ता सिरसा गोयमं तु महायसं'[2] ॥

१—पच्चमाणाण (बृ० पा०) ।
२—वंदित्तु पंजलिउडो गोत्तमं तु महामुणी (चू०) ।

८७—'पंचमहव्वयधम्मं पडिवज्जइ भावओ ।
पुरिमस्स पच्छिमंमी[1] मग्गे तत्थ सुहावहे ॥'[2]

निक्खेव-पदं

८८—केसीगोयमओ निच्चं तम्मि आसि समागमे ।
सुयसीलसमुक्करिसो महत्थऽत्थविणिच्छओ ॥
८९—तोसिया परिसा सव्वा 'सम्मग्गं [3]समुवट्ठिया'[4] ।
'संथुया ते पसीयन्तु'[5] भयवं केसिगोयमे ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—पच्छिमम्मी (अ) ।
२—पच महव्वय जुत्त भावतो पडिवज्जिया ।
धम्म पुरिमस्स पच्छिममि मग्गे सुहावहे ॥ (चू०) ।
३—पज्जुवट्ठिया (वृ० पा०) ।
४—सम्मत्ते पज्जुवत्थिया (चू०) ।
५—सजुता ते पदीसतु (चू०) ।

चउविंसइमं अज्झयणं

पवयण-माया

उक्खेव-पदं

१—अट्ठ पवयणमायाओ समिई गुत्ती तहेव य ।
पंचेव य समिईओ तओ गुत्तीओ आहिया ॥
२—इरियाभासेसणादाणे उच्चारे समिई इय ।
मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती य[1] अट्ठमा ॥
३—एयाओ अट्ठ समिईओ समासेण वियाहिया ।
दुवालसंगं जिणक्खायं मायं जत्थ उ पवयणं ॥

समिइ-पद

४—आलम्बणेण कालेण मग्गेण जयणाइ य ।
चउकारणपरिसुद्धं संजए इरियं रिए ॥
५—तत्थ आलंबणं नाणं दंसणं चरणं तहा ।
काले य दिवसे वुत्ते मग्गे उप्पहवज्जिए[2] ॥
६—दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा ।
जयणा[3] चउव्विहा वुत्ता तं मे कित्तयओ सुण ॥
७—दव्वओ चक्खुसा पेहे जुगमित्तं च खेत्तओ ।
कालओ जाव रीएज्जा उवउत्ते य भावओ ॥
८—इन्दियत्थे विवज्जित्ता सज्झायं चेव पंचहा ।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे उवउत्ते इरियं[4] रिए ॥

१—उ (अ) ।
२—दुप्पह वज्जिए (अ) ।
३—जायणा (ऋ) ।
४—रियं (ऋ) ।

९—'कोहे माणे य मायाए लोभे य उवउत्तया[1] ।
हासे भए मोहरिए विगहासु तहेव च ॥'[2]

१०—एयाइं अट्ठ ठाणाइं परिवज्जित्तु संजए ।
असावज्जं मियं काले भासं भासेज्ज पन्नवं ॥

११—'गवेसणाए गहणे य परिभोगेसणा य जा ।
आहारोवहिसेज्जाए एए तिन्नि विसोहए ॥'[3]

१२—उग्गमुप्पायणं पढमे बीए सोहेज्ज एसणं ।
परिभोयंमि चउक्कं विसोहेज्ज जयं जई ॥

१३—ओहोवहोवग्गहियं भण्डगं दुविहं मुणी ।
गिण्हन्तो निक्खिवन्तो य पउंजेज्ज इमं विहिं ॥

१४—चक्खुसा पडिलेहित्ता पमज्जेज्ज जयं जई ।
आइए निक्खिवेज्जा वा दुहओ वि समिए सया ॥

१५—उच्चारं पासवणं खेलं सिंघाणजल्लियं ।
आहारं उवहिं देहं अन्नं वावि तहाविहं ॥

१६—अणावायमसंलोए अणावाए चेव होइ संलोए ।
आवायमसंलोए आवाए चेय संलोए ॥

१७—अणावायमसंलोए परस्सऽणुवघाइए ।
समे अज्झुसिरे यावि अचिरकालकयंमि य ॥

१८—वित्थिण्णे दूरमोगाढे नासन्ने बिलवज्जिए ।
तसपाणबीयरहिए उच्चाराईणि वोसिरे ॥

१—उवउत्तओ (अ) ।
२—कोहे य माणे य माया य लोभे य तहेव य ।
हास भय मोहरीए विकहा य तहेव य ॥ (बृ० पा०) ।
३—गवेसणाए गहणेणं परिभोगेसणाणि य ।
आहारमुवहिं सेज्ज एए तिन्नि विसोहिय ॥ (बृ० पा०) ।

१९—एयाओ पंच समिईओ समासेण वियाहिया ।
एत्तो य तओ गुत्तीओ वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥

गुत्ति-पदं

२०—सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा मणगुत्ती चउव्विहा ॥
२१—संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
मणं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥
२२—सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा वइगुत्ती चउव्विहा ॥
२३—संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
वयं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥
२४—ठाणे निसीयणे चेव तहेव य तुयट्टणे ।
उल्लंघणपल्लंघणे इन्दियाण य जुंजणे ॥
२५—संरम्भसमारम्भे आरम्भम्मि तहेव य ।
कायं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥

निक्खेव-पद

२६—एयाओ पंच समिईओ चरणस्स य पवत्तणे ।
गुत्ती नियत्तणे वुत्ता असुभत्थेसु सव्वसो ॥
२७—एया पवयणमाया जे सम्मं आयरे मुणी ।
से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिए ॥

—त्ति बेमि ॥

*

पंचविंसइमं अज्झयणं

जन्नइज्जं

उक्खेव-पद

१—माहणकुलसंभूओ आसि विप्पो महायसो ।
जायाई जमजन्नंमि जयघोसे त्ति नामओ ॥
२—इन्दियग्गामनिग्गाही मग्गगामी महामुणी ।
गामाणुगामं रीयन्ते पत्ते वाणारसिं पुरिं ॥
३—वाणारसीए[1] बहिया उज्जाणंमि मणोरमे ।
फासुए सेज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥
४—अह तेणेव कालेणं पुरीए तत्थ माहणे ।
विजयघोसे त्ति नामेण जन्नं जयइ वेयवी ॥
५—अह से तत्थ अणगारे मासक्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स जन्नंमि भिक्खमट्ठा[2] उवट्ठिए ॥
६—समुवट्ठियं तहिं सन्तं जायगो पडिसेहए ।
न हु दाहामि ते भिक्खं भिक्खू जायाहि अन्नओ ॥
७—जे य वेयविऊ विप्पा जन्नट्ठा य 'जे दिया'[3] ।
जोइसंगविऊ जे य जे य धम्माण पारगा ॥
८—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
तेसिं अन्नमिणं देयं भो भिक्खू सव्वकामियं ॥
९—सो 'एवं तत्थ'[4] पडिसिद्धो जायगेण महामुणी ।
न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो उत्तमट्ठगवेसओ ॥

१—वाणारसीय (अ, वृ०) ।
२—भिक्खस्स अट्ठा (वृ० पा०) ।
३—जिइंदिया (आ) ।
४—तत्थ एव (वृ०) ।

१०—नऽन्नट्ठं पाणहेउं वा न वि निव्वाहणाय वा ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए इमं वयणमब्बवी ॥

मुख-पदं

११—नवि जाणसि वेयमुहं नवि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं जं च जं च धम्माण वा मुहं ।
१२—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
न ते तुमं वियाणासि अह जाणासि तो भण ॥
१३—तस्सऽक्खेवपमोक्खं च अचयन्तो तहिं दिओ ।
सपरिसो पंजली होउं पुच्छई तं महामुणिं ॥
१४—वेयाणं च मुहं बूहि बूहि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं बूहि बूहि धम्माण वा मुहं ॥
१५—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
एयं मे संसयं सव्वं साहू कहय[1] पुच्छिओ ॥
१६—अग्गिहोत्तमुहा वेया जन्नट्ठी वेयसां मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं चन्दो धम्माणं कासवो मुहं ॥
१७—'जहा चन्दं गहाईया चिट्ठन्ती पंजलीउडा ।
वन्दमाणा नमंसन्ता उत्तमं मणहारिणो ॥'[2]
१८—अजाणगा जन्नवाई विज्जामाहणसंपया ।
गूढा[3] सज्झायतवसा भासच्छन्ना इवऽग्गिणो ॥

माहण-पद

१९—जो लोए बम्भणो वुत्तो अग्गी वा महिओ जहा ।
सया कुसलसंदिट्ठं तं वयं बूम माहणं ॥

१—कहइ (अ) ।
२—जहा चन्दे गहाईये चिट्ठन्ती पजलीउडा ।
णमंसमाणा वदती उद्धत्तमणहारिणो [उद्धत्त मणगारिणो] ॥ (बृ० पा०) ।
३—मूढा (बृ०) ; गूढा (बृ० पा०) ।

२०–जो न सज्जइ आगन्तुं पव्वयन्तो न सोयई[1] ।
रमए अज्जवयणंमि तं वयं बूम माहणं ॥

२१–जायरूवं जहामट्ठं[2] निद्धन्तमलपावगं ।
रागद्दोसभयाईयं तं वयं बूम माहणं ॥

[तवस्सियं किसं दन्तं अवचियमंससोणियं ।
सुव्वयं पत्तनिव्वाणं तं वयं बूम माहणं ॥][3]

२२–तसपाणे वियाणेत्ता संगहेण 'य थावरे'[4] ।
जो न हिंसइ तिविहेणं[5] तं वयं बूम माहणं ॥

२३–कोहा वा जइ वा हासा लोहा वा जइ वा भया ।
मुसं न वयई जो उ तं वयं बूम माहणं ॥

२४–चित्तमन्तमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं ।
न गेण्हइ अदत्तं जो तं वयं बूम माहणं ॥

२५–दिव्वमाणुसतेरिच्छं जो न सेवइ मेहुणं ।
मणसा कायवक्केणं तं वयं बूम माहणं ॥

२६–जहा पोमं जले जायं नोवलिप्पइ वारिणा ।
एवं अलित्तो[6] कामेहिं तं वयं बूम माहणं ॥

२७–अलोलुयं मुहाजीवी[7] अणगारं अकिंचणं ।
असंसत्तं गिहत्थेसु तं वयं बूम माहणं ॥

१—सुव्वइ (उ) ।
२—महामट्ठं (वृ०) ; जहामट्ठं (वृ० पा०) ।
३—यह श्लोक बृहद् वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।
४—सथावरे (वृ० पा०) ।
५—एयं तु (वृ०) ; विविहेण (वृ० पा०) ।
६—अलित्तं (आ, इ, सु) ।
७—मुहाजीविं (वृ० पा०) ।

[जहित्ता पुव्वसंजोगं नाइसंगे[1] य बन्धवे ।
जो न सज्जइ एएहिं[2] तं वयं बूम माहणं ॥][3]

२८—पसुबन्धा[4] सव्ववेया[5] जट्ठं च पावकम्मुणा ।
न तं तायन्ति दुस्सीलं कम्माणि बलवन्ति ह ॥

२९—न वि मुण्डिएण समणो न ओंकारेण बम्भणो ।
न मुणी रण्णवासेणं कुसचीरेण न तावसो ॥

३०—समयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो ।
नाणेण य मुणी होइ तवेणं होइ तावसो ॥

३१—कम्मुणा बम्भणो होइ कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
वइस्सो कम्मुणा होइ सुद्दो हवइ[6] कम्मुणा ॥

३२—एए 'पाउकरे बुद्धे'[7] जेहिं होइ सिणायओ ।
सव्वकम्मविनिम्मुक्कं तं वयं बूम माहणं ॥

३३—एवं गुणसमाउत्ता जे भवन्ति दिउत्तमा ।
ते समत्था उ उद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ॥

वुइ-पदं

३४—एवं तु संसए छिन्ने विजयघोसे य माहणे[8] ।
'समुदाय लयं[9] तं तु'[10] जयघोसं महामुणिं ॥

१—नाइ सजोगे (ऋ) ।
२—भोगेसु (ऋ) ; एएसु (उ) ।
३—यह श्लोक बृहद वृत्ति में पाठान्तर रूप में स्वीकृत है ।
४—पसुवद्धा (बृ० पा०) ।
५—सव्व वेया य (अ) ।
६—होइय (अ) ; होइ उ (बृ०) ।
७—पाउकराधम्मा (बृ० पा०) ।
८—वमणे (बृ०) ; माहणे (बृ० पा०) ।
९—तओ (अ, सु, ऋ) ।
१०—सजाणंतो तओ तं तु (बृ० पा०) ; समादाय तयं तं व (उ) ।

३५—तुट्ठे य विजयघोसे इणमुदाहु कयंजली।
माहणत्तं जहाभूयं सुट्ठु मे उवदंसियं॥

३६—तुब्भे जइया जन्नाणं तुब्भे वेयविऊ विऊ।
जोइसंगविऊ तुब्भे तुब्भे धम्माण पारगा॥

३७—तुब्भे समत्था उद्धत्तु परं अप्पाणमेव य।
तमणुग्गहं करेहऽम्हं[1] भिक्खेणं[2] भिक्खुउत्तमा॥

संबोहि-पदं

३८—न कज्जं मज्झ भिक्खेण खिप्पं निक्खमसू दिया।
मा भमिहिसि भयावट्टे[3] घोरे[4] संसारसागरे॥

३९—उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई।
भोगी भमइ संसारे अभोगी विप्पमुच्चई॥

४०—उल्लो सुक्को य दो छूढा गोलया मट्टियामया।
दो वि आवडिया कुड्डे जो उल्लो सोतत्थ[5] लग्गई॥

४१—एवं लग्गन्ति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा।
विरत्ता उ न लग्गन्ति जहा सुक्को उ गोलओ॥

निक्खेव-पदं

४२—एवं से विजयघोसे जयघोसस्स अन्तिए।
अणगारस्स निक्खन्तो धम्मं सोच्चा अणुत्तरं[6]॥

१—करे अम्हं (अ, इ)।
२—भिक्खूनं (वृ०)।
३—भयावत्ते (वृ० पा०)।
४—दीहे (वृ० पा०)।
५—सोऽत्थ (वृ०, ऋ)।
६—सोचाण केवलं (वृ० पा०)।

४३–खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य।
जयघोसविजयघोसा सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं॥
—त्ति बेमि॥

*

छवीसइमं अज्झयणं

सामायारी

सामायारी-पदं

१—सामायारिं पवक्खामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
जं चरित्ताण निग्गन्था तिण्णा संसारसागरं ॥
२—पढमा आवस्सिया नाम बिइया य[1] निसीहिया ।
आपुच्छणा य तइया चउत्थी पडिपुच्छणा ॥
३—पंचमा छन्दणा नाम इच्छाकारो य छट्ठओ ।
सत्तमो मिच्छकारो य[2] तहक्कारो य अट्ठमो ॥
४—अब्भुट्ठाणं नवमं, दसमा उवसंपदा ।
एसा दसंगा साहूणं सामायारी पवेइया ॥
५—गमणे आवस्सियं कुज्जा ठाणे कुज्जा निसीहियं ।
आपुच्छणा सयंकरणे परकरणे पडिपुच्छणा ॥
६—छन्दणा दव्वजाएणं इच्छाकारो य सारणे ।
मिच्छाकारो य निन्दाए तहक्कारो य[3] पडिस्सुए ॥
७—अब्भुट्ठाणं गुरुपूया अच्छणे उवसंपदा ।
'एवं दुपंचसंजुत्ता'[4] सामायारी पवेइया ॥

चरिया-पदं

८—पुव्विल्लंमि चउब्भाए आइच्चंमि समुट्ठिए ।
भण्डयं पडिलेहित्ता वन्दित्ता य तओ गुरुं ॥

१—होइ (उ) ।
२—उ (आ, इ) ।
३—× (उ) ।
४—एसा दसंगा साहूण (वृ० पा०) ।

९—पुच्छेज्जा पंजलिउडो किं कायव्वं मए इहं ? ।
इच्छं निओइउं भन्ते ! वेयावच्चे व सज्झाए ॥
१०—वेयावच्चे निउत्तेणं कायव्वं अगिलायओ ।
सज्झाए वा निउत्तेण सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥

दिवसचरिया-पदं

११—दिवसस्स चउरो भागे कुज्जा भिक्खू वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा दिणभागेसु चउसु वि ॥
१२—पढमं पोरिसि सज्झायं बीयं झाणं झियायई ।
तइयाए भिक्खायरियं पुणो चउत्थीए सज्झायं ॥
१३—आसाढे मासे दुपया पोसे मासे चउप्पया ।
चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी ॥
१४—अंगुलं सत्तरत्तेणं पक्खेण य दुअंगुलं ।
वड्ढए हायए वावी मासेणं चउरंगुलं ॥
१५—आसाढबहुलपक्खे भद्दवए कत्तिए य पोसे य ।
फग्गुणवइसाहेसु य नायव्वा[1] अमोरत्ताओ ॥
१६—जेट्ठामूले आसाढसावणे छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा ।
अट्ठहिं बीयतियंमी तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥

रत्तिचरिया-पदं

१७—रत्तिं पि चउरो भागे भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा राइभाएसु चउसु वि ॥
१८—पढमं पोरिसि सज्झायं
बीयं झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु
चउत्थी भुज्जो[2] वि सज्झायं ॥

१—बोद्धव्वा (आ) ।
२—पुणो (अ) ।

१९–जं नेइ जया रत्तिं
नक्खत्तं तंमि नहचउब्भाए ।
संपत्ते विरमेज्जा
सज्झायं पओसकालम्मि ॥

पडिलेहण-पद

२०–तम्मेव य नक्खत्ते
गयणचउब्भागसावसेसंमि ।
वेरत्तियं पि कालं
पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥

२१–पुव्विल्लंमि चउब्भाए पडिलेहित्ताण भण्डयं ।
गुरुं वन्दित्तु सज्झायं कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥

२२–पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
अपडिक्कमित्ता कालस्स भायणं पडिलेहए ॥

पडिलेहणविहि-पद

२३–मुहपोत्तियं[1] पडिलेहित्ता पडिलेहिज्ज गोच्छगं ।
गोच्छगलइयंगुलिओ वत्थाइं पडिलेहए ॥

२४–उड्ढं थिरं अतुरियं पुव्वं वा वत्थमेव पडिलेहे ।
तो बिइयं पप्फोडे तइयं च पुणो पमज्जेज्जा ॥

२५–अणच्चावियं अवलियं
अणाणुबन्धि अमोसलिं[2] चेव ।
छप्पुरिमा नव खोडा
[3]पाणीपाणविसोहणं[4] ॥

१—मुहपत्तिं (आ, इ, उ, ऋ) ।
२—अमोसल (अ) ; आमोसलिं (वृ०) ।
३—पाणीपाणि० (वृ०) ।
४— ०पमज्जण (आ, वृ० पा०) ; ०पमज्जणया (ओघनिर्युक्ति ४२५)

२६—आरभडा सम्मद्दा
वज्जेयव्वा य मोसली तइया।
पप्फोडणा चउत्थी
विक्खित्ता वेइया छट्ठा॥

२७—पसिढिलपलम्बलोला
एगामोसा अणेगरूवधुणा[1]।
कुणइ पमाणि पमायं
संकिए गणणोवगं कुज्जा॥

२८—अणूणाइरित्तपडिलेहा
अविवच्चासा तहेव य।
पढमं पयं पसत्थं
सेसाणि उ अप्पसत्थाइं॥

२९—पडिलेहणं कुणन्तो
मिहोकहं कुणइ जणवयकहं वा॥
देइ व पच्चक्खाणं
वाएइ सयं पडिच्छइ वा॥

३०—पुढवीआउक्काए
तेऊवाऊवणस्सइतसाणं।
पडिलेहणापमत्तो
छण्हं पि विराहओ होइ॥

आहार-पदं

[पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइतसाणं।
पडिलेहणआउत्तो छण्हं आराहओ होइ॥][2]

१—अणेगरूवधुया (बृ० पा०)।
२—यह गाथा केवल (अ) प्रति में ही है।

३१—तइयाए पोरिसीए भत्तं पाणं गवेसए ।
छण्हं अन्नयरागम्मि कारणंमि समुट्ठिए ॥

३२—वेयणवेयावच्चे
इरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।
तह पाणवत्तियाए
छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥

अणाहार-पदं

३३—निग्गन्थो धिइमन्तो
निग्गन्थी वि न करेज्ज छहिं चेव ।
ठाणेहिं उ इमेहिं
अणइक्कमणा य से होइ ॥

३४—आयंके उवसग्गे[1]
तितिक्खया बम्भचेरगुत्तीसु ।
पाणिदया तवहेउं
सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥

विहार-पदं

३५—अवसेसं भण्डगं गिज्झा चक्खुसा पडिलेहए ।
परमद्धजोयणाओ विहारं विहरए मुणी ॥

३६—चउत्थीए पोरिसीए निक्खिवित्ताण भायणं ।
सज्झायं तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं[2] ॥

संझा-पदं

३७—पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
पडिक्कमित्ता कालस्स सेज्जं तु पडिलेहए ॥

१—उमग्गे (उ) ।
२—सव्वदुक्खविमोक्खण (बृ० पा०) ।

३८—पासवणुच्चारभूमिं च पडिलेहिज्ज जयं जई ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

पडिक्कमण-पदं

३९—देसियं च अईयारं चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणे[1] दंसणे चेव चरित्तम्मि तहेव य ॥
४०—पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
देसियं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥
४१—पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥
४२—पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
'थुइमंगलं च काऊण'[2] कालं संपडिलेहए ॥
४३—'पढमं पोरिसिं सज्झायं बीयं झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु सज्झायं तु चउत्थिए ॥'[3]
४४—'पोरिसीए चउत्थीए कालं तु पडिलेहिया ।
सज्झायं तओ कुज्जा अबोहेन्तो असंजए ॥'[4]
४५—पोरिसीए चउब्भाए 'वन्दिऊण तओ गुरुं'[5] ।
पडिक्कमित्तु कालस्स कालं तु पडिलेहए ॥
४६—आगए कायवोस्सग्गे सव्वदुक्खविमोक्खणे ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

१—नाणे य (अ) ; नाणंमि (उ) ।
२—सिद्धाणं संथवं किच्चा (बृ० पा०) ।
३—पढमा पोरिसि सज्झायं बीए झाणं झियायती ।
ततियाए निद्दमोक्खं च सज्झाए चउत्थए ॥ (बृ० पा०) ।
४—कालं तु पडिलेहित्ता अबोहिंतो असंजए ।
कुज्जा मुणी य सज्झायं सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ (बृ० पा०) ।
५—ते से वंदित्तु ते गुरुं (बृ० पा०) ।

४७—राइयं च अईयारं चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो।
नाणंमि दंसणंमी य चरित्तंमि तवंमि य॥
४८—पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं।
राइयं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं॥
४९—पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं॥
५०—किं तवं पडिवज्जामि एवं तत्थ विचिन्तए।
काउस्सग्ग तु पारित्ता वन्दई य तओ गुरुं॥
५१—पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं।
तवं संपडिवज्जेत्ता[1] करेज्ज सिद्धाण संथवं॥

निक्खेव-पदं

५२—एसा सामायारी समासेण वियाहिया।
जं चरित्ता वहू जीवा तिण्णा संसारसागरं॥
—त्ति वेमि॥

*

१—च पडिवज्जित्ता (अ)।

सत्तावीसइमं अज्झयणं

खलुंकिज्जं

१—थेरे गणहरे गग्गे मुणी आसि विसारए।
आइण्णे गणिभावम्मि समाहिं पडिसंधए॥

२—वहणे वहमाणस्स[1] कन्तारं अइवत्तई।
जोए वहमाणस्स संसारो अइवत्तई॥

३—खलुंके जो उ जोएइ विहम्माणो किलिस्सई[2]।
असमाहिं च वेएइ तोत्तओ य से भज्जई॥

४—एगं डसइ पुच्छंमि एगं विन्धइऽभिक्खणं।
एगो भंजइ समिलं एगो उप्पहपट्ठिओ॥

५—एगो पडइ पासेणं निवेसइ निवज्जई।
उक्कुद्दइ उप्फिडई सढे बालगवी वए॥

६—माई मुद्धेण पडइ कुद्धे गच्छइ पडिप्पहं।
'मयलक्खेण चिट्ठई'[3] वेगेण य पहावई॥

७—छिन्नाले छिन्दइ सेल्लिं दुद्दन्तो भंजए जुगं।
से वि य सुस्सुयाइत्ता[4] उज्जाहित्ता[5] पलायए॥

८—खलुंका जारिसा जोज्जा दुस्सीसा वि हु तारिसा।
जोइया धम्मजाणम्मि भज्जन्ति धिइदुब्बला॥

१—वाहयमाणस्स (अ. सु); वहणमाणस्स (ऋ)।
२—किलाम्मई (वृ०); किलिस्सई (वृ० पा०)।
३—पलयं (दलं) ते ण चिट्ठिया (वृ० पा०)।
४—सुस्सुयत्ता (उ)।
५—उज्जुहित्ता (आ. वृ०, सु)।

९–इड्ढीगारविए एगे एगेऽत्थ रसगारवे ।
सायागारविए एगे एगे सुचिरकोहणे ॥

१०–भिक्खालसिए एगे एगे ओमाणभीरुए थद्धे ।
एगं च[1] अणुसासम्मी हेऊहिं कारणेहि य ॥

११–सो वि अन्तरभासिल्लो दोसमेव पकुव्वई[2] ।
आयरियाणं तं वयणं पडिकूलेइ अभिक्खणं ॥

१२–न सा ममं वियाणाइ न वि[3] सा मज्झ दाहिई ।
निग्गया होहिई मन्ने साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ ॥

१३–पेसिया[4] पलिउंचन्ति ते परियन्ति समन्तओ ।
रायवेट्ठिं[5] व मन्नन्ता करेन्ति भिउडिं मुहे ॥

१४–वाइया संगहिया चेव 'भत्तपाणे य'[6] पोसिया ।
जायपक्खा जहा हंसा पक्कमन्ति दिसोदिसिं ॥

१५–अह सारही विचिन्तेइ[7] खलुंकेहिं समागओ ।
किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं अप्पा मे अवसीयई ॥

१६–जारिसा[8] मम सीसाउ तारिसा[9] गलिगद्दहा ।
गलिगद्दहे चइत्ताणं[10] दढं परिगिण्हइ[11] तवं ॥

१–× (अ)।
२–पभासए (वृ० पा०)।
३–य (उ)।
४–पोसिया (वृ० पा०)।
५–रायाविट्ठं (अ)।
६–भत्तपाणेण (अ, आ, इ)।
७–हि चिंतेइ (अ)।
८–तारिसा (अ)।
९–जारिसा (अ)।
१०–जहित्ताण (आ)।
११–परिगिण्हामि (वृ०) : परिगिण्हई (वृ० पा०)।

१७–मिउ महद्दवसंपन्ने गम्भीरे सुसमाहिए ।
विहरइ महिं महप्पा सीलभूएण अप्पणा ॥
—त्ति बेमि ॥

*

अट्ठावीसइमं अज्झयणं

मोक्खमग्गगई

१–मोक्खमग्गगइं तच्चं सुणेह जिणभासियं।
चउकारणसंजुत्तं नाणदंसणलक्खणं ॥

मग्ग-पद

२–नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा।
एस[1] मग्गो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं[2] ॥
३–नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा।
एयंमग्गमणुप्पत्ता[3] जीवा गच्छन्ति सोग्गइं॥

नाण-पदं

४–तत्थ पंचविहं नाणं सुयं आभिनिबोहियं।
ओहीनाणं तु तइयं मणनाणं च केवलं॥
५–एयं पंचविहं नाणं दव्वाण य गुणाण य।
पज्जवाणं च सव्वेसिं नाणं नाणीहि देसियं॥

दव्व-पदं

६–गुणाणमासओ दव्वं एगदव्वस्सिया गुणा।
लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ[4] अस्सिया भवे॥
७–धम्मो अहम्मो आगासं कालो पुग्गलजन्तवो।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं॥

१—एय (अ)।
२—सव्वदंसिहिं (अ)।
३—एव० (अ)।
४—दुहओ (अ)।

८—धम्मो अहम्मो आगासं दव्वं इक्किक्कमाहियं ।
अणन्ताणि य दव्वाणि कालो पुग्गलजन्तवो ॥

९—गइलक्खणो उ[1] धम्मो अहम्मो ठाणलक्खणो ।
भायणं सव्वदव्वाणं नहं ओगाहलक्खणं ॥

१०—वत्तणालक्खणो कालो जीवो उवओगलक्खणो ।
नाणेणं दंसणेणं च सुहेण य दुहेण य ॥

११—नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
वीरियं उवओगो य एयं जीवस्स लक्खणं ॥

१२—सद्दन्धयारउज्जोओ पहा 'छायातवे इ वा'[2] ।
वण्णरसगन्धफासा पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥

१३—एगत्तं च पुहत्तं[3] च संखा संठाणमेव य ।
संजोगा य विभागा य पज्जवाणं तु लक्खणं ॥

नवतहिय-पदं

१४—जीवाजीवा य बन्धो य पुण्णं पावासवो तहा ।
संवरो निज्जरा मोक्खो सन्तेए तहिया नव ॥

सम्मत्तरुई-पदं

१५—तहियाणं तु भावाणं 'सब्भावे उवएसणं ।
भावेणं सद्दहन्तस्स सम्मत्तं तं वियाहियं'[4] ॥

१—य (अ) ।
२—° तवेइ या (अ, ऋ) : ° तवुत्ति वा (बृ०) ।
३—दुहत्त (उ) ।
४— सब्भावो (वेणो) वएसणे ।
भावेण उ सद्दहणा सम्मत्त होति आहियं ॥ (बृ० पा०) ।

१६—निसग्गुवएसरुई
आणारुई सुत्तबीयरुइमेव ।
अभिगमवित्थाररुई
किरियासंखेवधम्मरुई ॥

१७—भूयत्थेणाहिगया
जीवाजीवा य पुण्णपावं च ।
सहसम्मुइयासवसंवरो य[1]
रोएइ उ निसग्गो ॥

१८—जो जिणदिट्ठे भावे
चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव ।
एमेव[2] नऽन्नह त्ति य
निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥

१९—एए चेव उ[3] भावे
उवइट्ठे जो परेण सद्दहई ।
छउमत्थेण जिणेण व[4]
उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥

२०—रागो दोसो मोहो
अन्नाणं जस्स अवगयं होइ ।
आणाए रीयंतो
सो खलु आणारुई नाम ॥

१—उ (अ)।
२—एमेय (अ, उ, वृ०)।
३—हु (ऋ)।
४—य (ऋ)।

२१—जो सुत्तमहिज्जन्तो
सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं ।
अंगेण बाहिरेण व[1]
सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥

२२—एगेण अणेगाइं
पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं ।
उदए व्व तेल्लबिन्दू
सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥

२३—सो होइ अभिगमरुई
सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं ।
'एकारस अंगाइं'[2]
पइण्णगं[3] दिट्ठिवाओ य ॥

२४—दव्वाण सव्वभावा
सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा ।
सव्वाहि नयविहीहि य
वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥

२५—दंसणनाणचरित्ते
तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु[4] ।
जो किरियाभावरुई
सो खलु किरियारुई नाम ॥

१—य (ऋ) ।
२—इक्कारसमगाइं (उ, ऋ) ।
३—पइण्णियं (अ) ।
४—सव्व० (अ) ।

२६—अणभिग्गहियकुदिट्ठी
संखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो।
अविसारओ पवयणे
अणभिग्गहिओ य सेसेसु॥

२७—जो अत्थिकायधम्मं
सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च।
सद्दहइ जिणाभिहियं
सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो॥

२८—परमत्थसंथवो वा
सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वा वि।
वावन्नकुदंसणवज्जणा
य सम्मत्तसद्दहणा॥

२९—नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं
दंसणे उ भइयव्वं।
सम्मत्तचरित्ताइं
जुगवं पुव्वं व[1] सम्मत्तं॥

३०—नादंसणिस्स नाणं
नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो
नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं॥

३१—निस्संकिय निक्कंखिय
निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य।
उववूह थिरीकरणे
वच्छल्ल पभावणे अट्ठ॥

१—च (अ, उ, ऋ)।

चारित्त-पदं

३२—सामाइयत्थ[1] पढमं छेओवट्ठावणं भवे बीयं।
परिहारविसुद्धीयं सुहुमं तह संपरायं च ॥

३३—अकसायं अहक्खायं छउमत्थस्स जिणस्स वा।
एयं चयरित्तकरं चारित्तं होइ आहियं ॥

तव-पदं

३४—तवो य दुविहो वुत्तो बाहिरब्भन्तरो तहा।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥

निक्खेव-पद

३५—नाणेण जाणई भावे दंसणेण य सद्दहे।
चरित्तेण निगिण्हाइ[2] तवेण परिसुज्झई ॥

३६—खवेत्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमन्ति महेसिणो ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—सामाइयं च (उ, ऋ)।

२—न गिण्हति (बृ० पा०)।

एगूणतीसइम अज्झयणं

सम्मत्तपरक्कमे

उक्खेव-पदं

सू० १–'सुयं मे आउस ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु सम्मत्त-परक्कमे 'नाम अज्झयणे'[1] समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तियाइत्ता रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता[2] तीरइत्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्तं करेन्ति। तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ तं जहा—संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६ गरहणया ७ सामाइए ८ चउव्वीसत्थए ९ वन्दणए[3] १० पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुइमंगले[4] १४ कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया[5] १९ पडिपुच्छणया २० परियट्टणया २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणसंनिवेसणया २५ संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडिबद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२ संभोग-पच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसाय-पच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहाय-

---

१—नाम मज्झयणे (अ, ऋ) ; नामज्झयणे (स, उ)।
२—पालइत्ता, पूरइत्ता (अ)।
३—वदणे (अ)।
४—थय थुइ मगले (अ, ऋ) , थण थुई मंगले (उ)।
५—वायणाए (ऋ) ; वायणा (उ)।

पच्चक्खाणे ३९ भत्तपच्चक्खाणे ४० सब्भावपच्चक्खाणे ४१ पडिरूवया[1] ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपण्णया[2] ४४ वीयरागया ४५ खन्ती ४६ मुत्ती ४७ अज्जवे[3] ४८ मद्दवे[4] ४९ भावसच्चे ५० करण-सच्चे ५१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया ५८ नाणसंपन्नया ५९ दंसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१ सोइन्दियनिग्गहे ६२ चक्खिन्दियनिग्गहे ६३ घाणिन्दियनिग्गहे ६४ जिब्भिन्दियनिग्गहे ६५ फासिन्दियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जदोसमिच्छा-दंसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ७३ ॥

संवेग-पदं

सू० २—संवेगेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ। अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ। अणन्ताणुबन्धिकोहमाणमायालोभे खवेइ। कम्मं[5] न बन्धइ। तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ। दंसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ। सोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥

निव्वेय-पद

सू० ३—निव्वेएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

निव्वेएणं दिव्वमाणुसतेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेयं हव्वमागच्छइ। सव्वविसएसु विरज्जइ सव्वविसएसु विरज्जमाणे

१—पडिरूवणया (ऋ)।
२—० संपुण्णया (अ, आ, इ. वृ०)।
३—मद्दवे (अ, सु, वृ०)।
४—अज्जवे (अ, सु. वृ०)।
५—नवं च कम्मं (अ. आ, इ)।

आरम्भपरिच्चायं[1] करेइ। आरम्भपरिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिन्दइ सिद्धिमग्गे पडिवन्ने य भवइ ॥

धम्मसद्धा-पद

सू० ४–धम्मसद्धाए णं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ?

धम्मसद्धाए णं सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ। अगारधम्मं च णं चयइ अणगारेए णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं छेयणभेयण-संजोगाईणं वोच्छेयं करेइ अव्वाबाहं च सुहं निव्वत्तेइ[2] ॥

सुस्सूसणा-पद

सू० ५–गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए णं विणयपडिवत्तिं जणयइ। 'विणय-पडिवन्ने य णं'[3] जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणिय-मणुस्सदेवदोग्गईओ निरुम्भइ। वण्णसंजलणभत्तिबहुमाणयाए मणुस्सदेवसोग्गईओ निबन्धइ सिद्धिं सोग्गइं च विसोहेइ। पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ। अन्ने य बहवे जीवे विणइत्ता भवइ ॥

आलोयणा-पद

सू० ६–आलोयणाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

आलोयणाए णं मायानियाणमिच्छादंसणसल्लाणं मोक्खमग्ग-विग्घाणं अणन्तसंसारवद्धणाणं[4] उद्धरणं करेइ। उज्जुभावं च[5] जणयइ। उज्जुभावपडिवन्ने[6] य णं जीवे अमाई इत्थीवेयनपुंसगवेयं च न बन्धइ। पुव्वबद्धं च णं निज्जरेइ ॥

१—आरम्भपरिग्गह° (अ)।
२—निव्वित्ते (ऋ)।
३—°पडिवन्नएण (ऋ)।
४—°वद्धमाणाण (अ)।
५—च ण (उ, ऋ, स)।
६—°पडिवन्नएण (ऋ)।

निंदण-पदं

सू० ७—निन्दणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

निन्दणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ। पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करणगुणसेढिं[1] पडिवज्जइ। करणगुणसेढिं 'पडिवन्ने य'[2] णं अणगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ॥

गरहण-पदं

सू० ८—गरहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयइ। अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ[3] पसत्थजोगपडिवन्ने य णं अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ॥

सामाइय-पदं

सू० ९—सामाइएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सामाइएणं सावज्जजोगविरइं जणयइ॥

चउव्वीसत्थव-पदं

सू० १०—चउव्वीसत्थएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चउव्वीसत्थएणं दंसणविसोहिं जणयइ॥

वन्दण-पदं

सू० ११—वन्दणएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वन्दणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ। उच्चागोयं निबन्धइ। सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ दाहिणभावं च णं जणयइ॥

१—°सेढीए (अ); °सेढी (बृ०)।
२—पडिवन्ने य (ऋ): पडिवन्ने (उ, अ)।
३—नियत्तेइ पसत्थे य पवत्तइ (उ, ऋ)।

पडिक्कमण-पदं

सू० १२—पडिक्कमणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिक्कमणेणं वयछिद्दाइं पिहेइ। पिहियवयछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते[1] सुप्पणिहिए[2] विहरइ।

काउस्सग-पदं

सू० १३—काउस्सग्गेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

काउस्सग्गेणं तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ। विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए 'ओहरियभारो व्व'[3] भारवहे पसत्थज्झाणोवगए[4] सुहंसुहेणं विहरइ।

पच्चक्खाण-पदं

सू० १४—पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरुम्भइ[5]।

थवथुइ-पदं

सू० १५—थवथुइमंगलेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

थवथुइमंगलेणं नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ। नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ने य णं जीवे अन्तकिरियं कप्पविमाणोववत्तिगं आराहणं आराहेइ।

कालपडिलेहण-पदं

सू० १६—कालपडिलेहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कालपडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।

१—अपमत्ते (वृ० पा०)।

२—सुप्पणिहिंदिए (वृ० पा०); सुप्पिणिहिए (अ, उ, ऋ)।

३—° भरुव्व (उ, ऋ)।

४—° ज्झाणज्झाइ (वृ० पा०)।

५—निरुम्भइ। पच्चक्खाणेण इच्छानिरोहं जणयइ। इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीइभूए विहरइ। (इ, उ)।

पायच्छित्त-पद

सू० १७—पायच्छित्तकरणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ निरइयारे यावि भवइ। सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ आयारं च आयारफलं च आराहेइ।

खमावण-पदं

सू० १८—खमावणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

खमावणयाए णं पल्हायणभावं[1] जणयइ। पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ। मित्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ।

सज्झाय-पदं

सू० १९—सज्झाएण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

सज्झाएण नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।

सू० २०—वायणाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

वायणाए णं निज्जरं जणयइ। सुयस्स य 'अणासायणाए वट्टए'[2]। सुयस्स अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ। तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ।

सू० २१—पडिपुच्छणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

पडिपुच्छणयाए णं सुत्तत्थतदुभयाइं विसोहेइ। कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिन्दइ।

सू० २२—परियट्टणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

परियट्टणाए णं वंजणाइं जणयइ वंजणलद्धिं च उप्पाएइ।

१—पल्हाएणंत भावं (बृ०) ; पल्हायणभावं (बृ० पा०)।
२—अणुसज्जणाए वट्टइ (बृ० पा०)।

सू० २३—अणुप्पेहाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

अणुप्पेहाए णं आउयवज्जाओ सत्तकम्मप्पगडीओ धणियबन्धणबद्धाओ सिढिलबन्धणबद्धाओ पकरेइ। दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ। तिव्वाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ। 'बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ'[1]। आउयं च णं कम्मं सिय बन्धइ सिय नो बन्धइ। 'असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ'[2] अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं खिप्पामेव वीइवयइ।

सू० २४—धम्मकहाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मकहाए णं 'निज्जरं जणयइ'[3]। 'धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ'[4]। पवयणपभावेणं जीवे आगमिसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबन्धइ।

सुय-पदं

सू० २५—सुयस्स आराहणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

सुयस्स आराहणयाएणं खवेइ न य संकिलिस्सइ।

एगग्गमण-पदं

सू० २६—एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ।

संजम-पदं

सू० २७—संजमेण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ।

१—बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ (वृ० पा०)।
२—साया वेयणिज्जं च ण कम्मं भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ (वृ० पा०)।
३—पवयण पभावेइ (वृ० पा०)।
४—X (वृ०)।

तव-पदं

सू० २८—तवेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

तवेणं वोदाणं जणयइ ।

वोदाण-पदं

सू० २९—वोदाणेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

वोदाणेणं अकिरियं जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ।

सुहसाय-पदं

सू० ३०—सुहसाएणं[1] भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सुहसाएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ । अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकम्पए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ।

अपडिबद्ध-पदं

सू० ३१—अप्पडिबद्धयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अप्पडिबद्धयाए णं निस्संगत्तं जणयइ । निस्संगत्तेणं[2] जीवे एगे एगग्गचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ।

विवित्त-पदं

सू० ३२—विवित्तसयणासणयाए[3] णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

विवित्तसयणासणयाए णं चरित्तगुत्तिं जणयइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपडिवन्ने अट्ठविहकम्मगण्ठिं निज्जरेइ ।

१—सुहसाइयाएण (बृ०) ; सुहसायाएण, सुहसाएणं (बृ० पा०) ; सुहसायाएणं (अ, आ, इ, उ, ऋ) ।

२—निस्संगत्त' गएणं (उ, ऋ) ।

३—० सयणासणसेवणयाए (आ, इ) ।

विनियट्टण-पदं

सू० ३३—विणियट्टणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

विणियट्टणयाए णं पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्टेइ। पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए तं नियत्तेइ तओ पच्छा चाउरन्तं संसारकन्तारं वीइवयइ।

पच्चक्खाण-पदं

सू० ३४—संभोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संभोगपच्चक्खाणेणं आलम्बणाइं खवेइ। निरालम्बणस्स य आययट्ठिया जोगा भवन्ति। सएणं लाभेणं संतुस्सइ[1], परलाभं 'नो आसाएइ'[2] नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्थेइ नो अभिलसइ। परलाभं अणासायमाणे[3] अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

सू० ३५—उवहिपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

उवहिपच्चक्खाणेणं अपलिमन्थं जणयइ। निरुवहिए णं जीवे निक्कंखे[4] उवहिमन्तरेण य न संकिलिस्सई।

सू० ३६—आहारपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

आहारपच्चक्खाणेणं 'जीवियासंसप्पओगं'[5] वोच्छिन्दइ[6]। जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न संकिलिस्सइ।

१—तुस्सइ (उ, ऋ)।
२—'नो आभाएइ' व्याख्यात नहीं है (वृ०)।
३—अणस्सायमाणे (वृ०)।
४—'नक्कखे' एतत्र पदं क्वचिदेव दृश्यते (वृ०)।
५—जीवियास विप्पओगं (वृ० पा०)।
६—वोच्छिंदिय (वृ० पा०)।

सू० ३७—कसायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कसायपच्चक्खाणेणं वीयरागभावं जणयइ। वीयरागभावपडिवन्ने वि य णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ।

सू० ३८—जोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगपच्चक्खाणेणं अजोगत्तं जणयइ। अजोगी[1] णं जीवे नवं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं निज्जरेइ।

सू० ३९—सरीरपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सरीरपच्चक्खाणेणं सिद्धाइसयगुणत्तणं[2] निव्वत्तेइ। सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य णं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही भवइ।

सू० ४०—सहायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सहायपच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ। एगीभावभूए वि[3] य णं[4] जीवे एगग्गं भावेमाणे अप्पसद्दे[5] अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ।

सू० ४१—भत्तपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भत्तपच्चक्खाणेणं अणेगाइं भवसयाइं निरुम्भइ।

सू० ४२—सब्भावपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सब्भावपच्चक्खाणेणं अनियट्टिं[6] जणयइ। अनियट्टिपडिवन्ने[7] य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ तं जहा वेयणिज्जं आउयं

१—अजोगीय (ऋ)।
२—०सयगुणत्तं (उ, ऋ)।
३—× (उ, ऋ)।
४—× (उ, ऋ)।
५—× (बृ०)।
६—नियट्टिं (बृ० पा०)।
७—नियट्टि० (बृ० पा०)।

नामं गोयं। तओ[1] पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ।

पडिरूव-पद

सू० ४३—पडिरूवयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

पडिरूवयाए णं लाघवियं जणयइ। लहुभूए णं[2] जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे[3] जिइन्दिए विउलतवसमिइसमन्नागए यावि भवइ।

वेयावच्च-पदं

सू० ४४—वेयावच्चेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

वेयावच्चेणं तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबन्धइ।

सव्वगुणसंपन्न-पदं

सू० ४५—सव्वगुणसंपन्नयाए[4] णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

सव्वगुणसंपन्नयाए णं अपुणरावत्तिं जणयइ। अपुणरावत्तिं पत्तए य[5] णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ।

वीयराग-पदं

सू० ४६—वीयरागयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

वीयरागयाए णं 'नेहाणुबन्धणाणि तण्हाणुबन्धणाणि'[6] य वोच्छिन्दइ मणुन्नेसु[7] सद्दफरिसरसरूवगन्धेसु चेव विरज्जइ।

१—× (उ ऋ)।
२—च ण (उ. ऋ)।
३—अप्पडिलेहे (बृ० पा०)।
४—०मणुव्वए (उ. ऋ)।
५—× (उ. ऋ)।
६—०बंधणाणि तण्हा बंधणाणि (बृ०); नेहाणुबंधणाणि तण्हाणुबंधणाणि (बृ० पा०)।
७—मणुन्नामणुन्नेसु (अ)।

खंति-पदं

सू० ४७—खन्तीए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

खन्तीए णं परीसहे जिणइ ।

मुत्ति-पदं

सू० ४८—मुत्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मुत्तीए णं अकिंचणं जणयइ। अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाणं[1] अपत्थणिज्जो भवइ ॥

अज्जव-पदं

सू० ४९—अज्जवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अज्जवयाए णं काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं अविसंवायणं जणयइ। अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ।

मद्दव-पदं

सू० ५०—मद्दवयाए णं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ?

मद्दवयाए णं 'अणुस्सियत्तं जणयइ। अणुस्सियत्ते णं जीवे मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठ मयट्ठाणाइं निट्ठवेइ'[2] ।

सच्च-पदं

सू० ५१—भावसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ। भावविसोहीए वट्टमाणे जीवे अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ।

१—अत्थलोलाण पुरिसाण (आ, इ, उ, ऋ, स) ।

२—अणुस्सुअत्तं जणइ। अणुसुअपत्तेण जीवे मद्दवयाएण मिउ० (अ) ; मद्दवयाए ण मिउ० (उ, बृ०, ऋ) ; मद्द० अणुसियत्तं जणेत्ति, अणुस्सियत्ते ण जीवे मिउ० (बृ० पा०) ।

अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए[1] अब्भुट्ठित्ता परलोगधम्मस्स[2] आराहए हवइ।

सू० ५२–करणसच्चेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

करणसच्चेणं करणसत्तिं जणयइ। करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ।

सू० ५३–जोगसच्चेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

जोगसच्चेणं जोगं विसोहेइ।

सू० ५४–मणगुत्तयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

मणगुत्तयाए णं जीवे एगग्गं जणयइ। एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ।

गुत्ति-पदं

सू० ५५–वयगुत्तयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

वयगुत्तयाए णं निव्वियारं[3] जणयइ। 'निव्वियारेणं जीवे'[4] वइगुत्ते अज्झप्पजोग'ज्झाणगुत्ते'[5] यावि भवइ।

सू० ५६–कायगुत्तयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

कायगुत्तयाए णं संवरं जणयइ। संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ।

समाहारण-पदं

सू० ५७–मणसमाहारणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

मणसमाहारणयाए णं एगग्गं जणयइ। एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ। नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेइ।

१—आराहणयाए ण (ऋ)।
२—परलोगाराहए (बृ० पा०)।
३—निव्वियारत्तं (अ, स)।
४—निव्वियारे णं जीवे वयगुत्तयं जणयइ (बृ० पा०)।
५—०साहणजुत्ते (उ, ऋ, बृ०)।

सू० ५८—वयसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वयसमाहारणयाए णं वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ। वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेत्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ दुल्लहबोहियत्तं निज्जरेइ।

सू० ५९—कायसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कायसमाहारणयाए णं चरित्तपज्जवे विसोहेइ। चरित्तपज्जवे विसोहेत्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ। अहक्खायचरित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ।

सपन्नया-पद

सू० ६०—नाणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

नाणसंपन्नयाए णं जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ। नाणसंपन्ने णं जीवे चाउरन्ते संसारकन्तारे न विणस्सइ।

जहा सूई ससुत्ता
पडिया वि न विणस्सइ।
तहा जीवे ससुत्ते
संसारे न विणस्सइ॥

नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ ससमयपरसमय[1] संघायणिज्जे भवइ।

सू० ६१—दंसणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

दसणसंपन्नयाए णं भवमिच्छत्तछेयणं करेइ परं न विज्झायइ[2]। 'अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ'[3]।

१—० समय विसारए य (अ)।

२—विज्झाइ (ऋ); वज्झाइ। पर आणाज्झायमाणे (अ)।

३—अप्पाण संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं विहरइ (अ); अनुत्तरेणं नाणदंसणेणं विहरइ (बृ० पा०)।

सू० ६२—चरित्तसंपन्नयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

चरित्तसंपन्नयाए णं सेलेसीभावं जणयइ। 'सेलेसिं पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ'[1]।

इन्दियनिग्गह-पदं

सू० ६३—सोइन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

सोइन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ६४—चक्खिन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

चक्खिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु[2] रागदोस-निग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ६५—घाणिन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

घाणिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ६६—जिब्भिन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

जिब्भिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ६७—फासिन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

फासिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

१—सेलेसी पडिवन्ने विहरइ (बृ०); सेलेसिं पडिवन्ने अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेति, ततो पच्छा सिज्झति .... (बृ० पा०)।

२—चक्खिदिएसु (अ)।

वरनाणदंसणं समुप्पाडेइ। जाव सजोगी भवइ ताव य इरियावहियं कम्मं बन्धइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं। तं पढमसमए बद्धं बिइयसमए वेइयं तइयसमए निज्जिण्णं[1] तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं सेयाले य अकम्मं चावि भवइ।

सू० ७३–अहाउयं पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्धावसेसाउए[2] जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइ सुक्कज्झाणं झायमाणे तप्पढमयाए 'मणजोगं निरुम्भइ २ त्ता वइजोगं निरुम्भइ २ त्ता आणापाणुनिरोहं'[3] करेइ २ त्ता ईसि पंचरहस्सक्खरुच्चारद्धाए य णं अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि वि[4] कम्मंसे जुगवं[5] खवेइ।

निक्खेव-पदं

सू० ७४–तओ ओरालियकम्माइं च सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ[6]।

१—निविण्ण (अ)।

२—अंतोमुहुत्तअद्धावसेसाए (बृ० पा०) ; अंतोमुहुत्तावसेसाउए। (उ, ऋ, बृ० पा०)।

३—मणजोग निरुम्भइ वइजोगं निरुम्भइ आणापाणुनिरोह करेइ (बृ०) ; मणजोगं निरुम्भइ, वइजोग निरुम्भइ, कायजोगं निरुम्भइ आणापाण ० (आ, इ)।

४—× (उ, ऋ)।

५—× (उ, ऋ)।

६—(क) इह च चूर्णिकृता—"सेलेसीए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ? अकम्मयं जणति, अकम्मयाए जीवा सिज्झंति" इति पाठः, पूर्वत्र च कचित्किञ्चित्पाठ-भेदेनाल्पा एव प्रश्ना आश्रिताः, अस्माभिस्तु भूयसीषु प्रतिषु यथाव्याख्यातपाठदर्शनादित्थमुन्नीतमिति (बृ० पा०)।

(ख) सेलेसीएण भन्ते! जीवे किं जणयइ? अकम्मयं जणति अकम्मयाए जीवा सिज्झंति बुज्झति मुच्च ति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति (चू०)।

एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए[1] उवदंसिए ।

—त्ति बेमि ॥

*

1—दंसिए निदंसिए (वृ) ।

तीसइमं अज्झयणं

तवमग्गगई

उक्खेव-पदं

१—जहा उ पावगं कम्मं रागदोससमज्जियं ।
खवेइ तवसा भिक्खू तमेगग्गमणो सुण ॥

२—पाणवहमुसावाया[1]
अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ ।
राईभोयणविरओ
जीवो भवइ अणासवो ॥

३—पंचसमिओ तिगुत्तो अकसाओ जिइन्दिओ ।
अगारवो य निस्सल्लो जीवो होइ अणासवो ॥

४—एएसिं तु विवच्चासे[2] रागद्दोससमज्जियं ।
जहा खवयइ भिक्खू[3] तं मे एगमणो[4] सुण ॥

५—जहा महातलायस्स सन्निरुद्धे जलागमे ।
उस्सिचणाए तवणाए कमेणं सोसणा भवे ॥

६—एवं तु[5] संजयस्सावि पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ ॥

तव-पदं

७—सो तवो दुविहो वुत्तो बाहिरब्भन्तरो तहा ।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥

१—पाणिवह मुसावाए (उ, ऋ) ।
२—विवज्जासे (बृ९) ।
३—खवेइ ज जहा कम्म (उ, ऋ) ; खवेइ तं जहा भिक्खु (बृ०.) ।
४—त मे एगमणा (स) ; तमेगग्गमणो (सु) ।
५—एमेव (अ) ।

बाहिरगतव-पदं

८—अणसणमूणोयरिया
भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ।
कायकिलेसो संलीणया य
बज्झो तवो होइ॥

९—इत्तिरिया मरणकाले[1] 'दुविहा अणसणा'[2] भवे।
इत्तिरिया सावकंखा निरवकंखा[3] बिइज्जिया॥

१०—जो सो इत्तरियतवो
सो समासेण छव्विहो।
सेढितवो पयरतवो
घणो य 'तह होइ वग्गो य'[4]॥

११—तत्तो य वग्गवग्गो उ- पंचमो छट्ठओ पइण्णतवो।
मणइच्छियचित्तत्थो नायव्वो होइ इत्तरिओ॥

१२—जा सा अणसणा मरणे दुविहा सा वियाहिया।
सवियारअवियारा[5] कायचिट्ठं पई भवे॥

१३—अहवा 'सपरिकम्मा अपरिकम्मा'[6] य आहिया।
नीहारिमणीहारी आहारच्छेओ य दोसु वि॥

१४—ओमोयरियं[7] पंचहा समासेण वियाहियं।
'दव्वओ खेत्तकालेणं'[8] भावेणं[9] पज्जवेहि य॥

१—° कालाय (उ, ऋ)।
२—अणसणा दुविहा (उ, ऋ, वृ०)।
३—निरकंखा उ (वृ०); निरवकंखा उ (सु); निरवकंखा (वृ० पा०)।
४—वग्गो चउत्थोउ (अ)।
५—सवियारमवियारा (उ, ऋ, वृ०, सु)।
६—सपडिकम्मा अपडिकम्मा (अ)।
७—ओमोयरणं (अ, वृ० पा०, ऋ)।
८—खित्तओ काले (ऋ); खेत्त काले य (अ)।
९—भावओ (अ)।

१५—जो जस्स उ आहारो तत्तो ओमं[1] तु जो करे ।
जहन्नेणेगसित्थाई एवं दव्वेण ऊ भवे ॥

१६—गामे नगरे तह रायहाणि- निगमे य आगरे पल्ली ।
खेडे कब्बडदोणमुह- पट्टणमडम्बसंबाहे ॥

१७—आसमपए विहारे सन्निवेसे समायघोसे य ॥
थलिसेणाखन्धारे सत्थे संवट्टकोट्टे य ॥

१८—वाडेसु व रच्छासु व घरेसु वा एवमित्तियं खेत्तं ।
कप्पइ उ एवमाई एवं खेत्तेण ऊ भवे ॥

१९—पेडा य अद्धपेडा
गोमुत्तिपयंगवीहिया चेव ।
सम्बुक्कावट्टाऽऽययगन्तुं
पच्चागया छट्ठा ॥

२०—दिवसस्स पोरुसीणं
चउण्हं पि उ जत्तिओ भवे कालो ।
एवं चरमाणो खलु
कालोमाणं मुणेयव्वो[2] ॥

२१—अहवा तइयाए पोरिसीए
ऊणाइ घासमेसन्तो ।
चउभागूणाए वा
एवं कालेण ऊ भवे ॥

२२—इत्थी वा पुरिसो वा
अलंकिओ वाऽणलंकिओ वा वि ।
अन्नयरवयत्थो वा
अन्नयरेणं व वत्थेणं ॥

१—ऊण (अ) ।
२—मुणेयव्वं (उ, ऋ) ।

२३—अन्नेण विसेसेणं
वण्णेणं भावमणुमुयन्ते उ ।
एवं चरमाणो खलु
भावोमाणं मुणेयव्वो[1] ॥

२४—दव्वे खेत्ते काले
भावम्मि य आहिया उ जे भावा ।
एएहि ओमचरओ
पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥

२५—अट्ठविहगोयरग्गं तु तहा सत्तेव एसणा ।
अभिग्गहा य जे अन्ने भिक्खायरियमाहिया ॥

२६—खीरदहिसप्पिमाई पणीयं पाणभोयणं ।
परिवज्जणं रसाणं तु भणियं रसविवज्जणं ॥

२७—ठाणा वीरासणाईया जीवस्स उ सुहावहा ।
उग्गा जहा धरिज्जन्ति कायकिलेसं तमाहियं ॥

२८—एगन्तमणावाए इत्थीपसुविवज्जिए ।
सयणासणसेवणया विवित्तसयणासणं ॥

२९—एसो बाहिरगतवो समासेण वियाहिओ ।
अब्भिन्तरं 'तवं एत्तो'[2] वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥

अब्भितरतव-पदं

३०—पायच्छित्तं विणओ
वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
'झाणं च विउस्सग्गो'[3]
'एसो अब्भिन्तरो तवो'[4] ॥

१—मुणेयव्व (उ, ऋ) ।
२—तवो इत्तो (उ, ऋ) ।
३—झाण उस्सग्गो वि य (उ, ऋ, स) ।
४—अब्भिन्तरओ तवो होइ (उ, ऋ, स) ।

३१–आलोयणारिहाईयं पायच्छित्तं तु दसविहं ।
जे भिक्खू वहई सम्मं पायच्छित्तं तमाहियं ॥
३२–अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं तहेवासणदायणं ।
गुरुभत्तिभावसुस्सूसा विणओ एस वियाहिओ ॥
३३–आयरियमाइयम्मि[1] य वेयावच्चम्मि दसविहे ।
आसेवणं जहाथामं वेयावच्चं तमाहियं ॥
३४–वायणा पुच्छणा चेव तहेव परियट्टणा ।
अणुप्पेहा धम्मकहा सज्झाओ पंचहा भवे ॥
३५–अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता झाएज्जा सुसमाहिए ।
धम्मसुक्काइं झाणाइं झाणं तं तु बुहा वए ॥
३६–सयणासणठाणे वा जे उ भिक्खू न वावरे ।
कायस्स विउस्सग्गो छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥

निक्खेव-पदं

३७–एवं तवं तु दुविहं जे सम्मं आयरे मुणी ।
'से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिए'[2] ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—आयरिमाईए (उ, ऋ) ।
२—सो खवेत्तु रय अरओ नीरय तु गइं गए (वृ० पा०) ।

एगतीसइमं अज्झयणं

चरणविही

१—चरणविहिं पवक्खामि जीवस्स उ सुहावहं ।
जं चरित्ता बहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥

२—एगओ विरइं कुज्जा एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियत्तिं च संजमे य पवत्तणं ॥

३—रागद्दोसे य दो पावे पावकम्मपवत्तणे ।
जे भिक्खू रुम्भई निच्चं से न अच्छइ[1] मण्डले ॥

४—दण्डाणं गारवाणं च सल्लाणं च तियं तियं ।
जे भिक्खू चयई निच्चं से न अच्छइ[2] मण्डले ॥

५—दिव्वे य जे[3] उवसग्गे तहा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहई निच्चं से न अच्छइ[4] मण्डले ॥

६—विगहाकसायसन्नाणं झाणाणं च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं से न अच्छइ[5] मण्डले ॥

७—वएसु इन्दियत्थेसु 'समिईसु किरियासु य'[6] ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

८—लेसासु छसु काएसु छक्के आहारकारणे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

९—पिण्डोग्गहपडिमासु भयट्ठाणेसु सत्तसु ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

१, २—गच्छइ (अ, वृ० पा०) ।
३—× (उ, ऋ) ।
४, ५—गच्छइ (अ, वृ० पा०) ।
६—समीतीसु य तहेव य (वृ० पा०) ।

१०–मयेसु बम्भगुत्तीसु भिक्खुधम्मंमि दसविहे।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥

११–उवासगाणं पडिमासु भिक्खूणं पडिमासु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥

१२–किरियासु भूयगामेसु परमाहम्मिएसु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥

१३–गाहासोलसएहिं तहा अस्संजमम्मि य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥

१४–बम्भम्मि नायज्झयणेसु ठाणेसु यऽ समाहिए।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥

१५–एगवीसाए सवलेसु बावीसाए परीसहे।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥

१६–तेवीसइ सूयगडे रूवाहिएसु सुरेसु[1] अ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥

१७–पणवीसणावणाहिं[2] उद्देसेसु दसाइणं।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥

१८–अणगारगुणेहिं च पकप्पम्मि तहेव य[3]।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥

१९–पावसुयपसगेसु मोहट्ठाणेसु चेव य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥

२०–सिद्धाइगुणजोगेसु तेत्तीसासायणासु[4] य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥

१—देवेसु (बृ० पा०)।
२—पणु° (अ)।
३—उ (उ, ऋ, वृ)।
४—°णाणि (अ)।

२१–इइ एएसु ठाणेसु जे भिक्खू जयई सया।
खिप्पं से सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥

—त्ति बेमि ॥

*

बत्तीसइमं अज्झयणं

पमायट्ठाणं

उक्खेव-पदं

१—अच्चन्तकालस्स समूलगस्स
सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता
सुणेह एगग्गहियं[1] हियत्थं ॥

२—नाणस्स सव्वस्स[2] पगासणाए
अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं
एगन्तसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥

३—तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा
विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
'सज्झायएगन्तनिसेवणा य'[3]
सुत्तत्थसंचिन्तणया धिई य ॥

४—आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं
सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं[4] ।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं
समाहिकामे समणे तवस्सी ॥

१—एगन्त° (वृ० पा०, सु) ।
२—सव्वस्स (वृ० पा०, सु, पा) ।
३—°निसेवणाए (वृ० पा०), °निवेसणा य (वृ०) ।
४—निउणेह° (वृ० पा०) ।

५—न वा लभेज्जा निउणं सहायं
गुणाहियं वा गुणओ समं वा।
एक्को वि पावाइ विवज्जयन्तो[1]
विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो॥

तण्हा-पदं

६—जहा य अण्डप्पभवा बलागा
अण्डं बलागप्पभवं जहा य।
एमेव मोहाययणं खु तण्हं[2]
मोहं च तण्हाययणं वयन्ति॥

७—रागो य दोसो वि य कम्मबीयं
कम्मं च मोहप्पभवं वयन्ति।
कम्मं च जाईमरणस्स मूलं
दुक्खं च जाईमरणं वयन्ति॥

८—दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो
मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो
लोहो हओ जस्स न किंचणाइं[3]॥

उवाय-पदं

९—रागं च दोसं च तहेव मोहं
उद्धत्तुकामेण समूलजालं।
जे जे 'उवाया पडिवज्जियव्वा'[4]
ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्वि॥

१—अणायरन्तो (वृ० पा०)।
२—तण्हा (अ)।
३—किंचनत्थि (वृ० पा०)।
४—अपाया परि० (वृ० पा०)।

१०—रसा पगामं न निसेवियव्वा
पायं रसा दित्तिकरा[1] नराणं।
दित्तं च कामा समभिद्दवन्ति
दुमं जहा साउफलं व पक्खी॥

११—जहा दवग्गी पउरिन्धणे वणे
समारुओ नोवसमं उवेइ।
एविन्दियग्गी वि पगामभोइणो
न बम्भयारिस्स हियाय कस्सई॥

१२—विवित्तसेज्जासणजन्तियाणं
ओमासणाणं[2] दमिइन्दियाणं।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं
पराइओ वाहिरिवोसहेहिं॥

१३—जहा बिरालावसहस्स मूले
न मूसगाणं वसही पसत्था।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे
न बम्भयारिस्स खमो निवासो॥

१४—न रूवलावण्णविलासहासं
न जंपियं इंगियपेहियं[3] वा।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता
दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी॥

१—दित्तकरा (वृ० पा०)।
२—ओमासणाए, ओमासणाई (वृ०, पा०)।
३—° वीहिय (वृ०, सु)।

१५—अदंसणं चेव अपत्थणं च
अचिन्तणं चेव अकित्तणं च ।
इत्थीजणस्सारियझाणजोग्गं
हियं सया बम्भवए[1] रयाणं ॥
१६—कामं तु देवीहि विभूसियाहिं
न चाइया खोभइउं तिगुत्ता ।
तहा वि एगन्तहियं ति नच्चा
विवित्तवासो[2] मुणिणं[3] पसत्थो ॥
१७—मोक्खाभिकंखिस्स वि माणवस्स
संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिसं[4] दुत्तरमत्थि लोए
जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥
१८—एए य संगे समइक्कमित्ता
सुहुत्तरा चेव भवन्ति सेसा ।
जहा महासागरमुत्तरित्ता
नई भवे अवि गंगासमाणा ॥

दुक्ख-पदं

१९—कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं
सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
जं काइयं माणसियं च किंचि
तस्सऽन्तगं गच्छइ वीयरागो ॥

१—बंभचेरे (उ, बृ० पा०, ऋ) ।
२—० भावो (उ, ऋ) ।
३—मुणिणो (अ) ।
४—न तारिसं (आ, इ, उ, ऋ) ।

२०—जहा य किंपागफला मणोरमा
रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा।
'ते खुड्डए जीविय'[1] पच्चमाणा
एओवमा कामगुणा विवागे॥

२१—जे इन्दियाण विसया मणुन्ना
न तेसु[2] भावं निसिरे कयाइ।
न याऽमणुन्नेसु मणं पि[3] कुज्जा
समाहिकामे समणे तवस्सी॥

२२—चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो॥

रूव-पद

२३—रूवस्स चक्खुं गहणं वयन्ति
चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु[4]
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु[5]॥

२४—रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[6]
अकालियं पावइ से विणासं[7]।
रागाउरे से जह वा पयंगे
आलोयलोले समुवेइ मच्चुं॥

१—ते जीविय खुड्डए (अ), ते जीविय खुदति (बृ० पा०); ते खुद्दए जीविय (सु)।
२—तेसि (अ)।
३—तु (अ)।
४—तमणुण्णमाहु (बृ० पा०)।
५—तऽमणुण्णमाहु (बृ० पा०)।
६—निच्चं (अ)।
७—किलेसं (बृ० पा०)।

२५–जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं[1]
तंसि क्खणे से 'उ उवेइ दुक्खं'[2]।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि रूवं अवरज्झई से ॥

२६–एगन्तरत्ते[3] रुइरंसि रूवे
अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

२७–रूवाणुगासाणुगए[4] य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

२८–रूवाणुवाएण[5] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे[6]।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[7] ॥

२९–रूवे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१–निच्च (वृ०, अ)।
२–समुवेंति सव्वं (वृ० पा०)।
३–०रत्तो (अ)।
४–०वायाणुगए (वृ० पा०)।
५–०वाए य (अ); ०रागेण (वृ० पा०); ०वाए ण (सु)।
६–०तन्निओगे (उ)।
७–अतित्त० (वृ०); अतित्ति० (वृ० पा०)।

३०—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थाऽवि दुक्खा न विमुच्चई से॥

३१—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो॥

३२—रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि?।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं॥

३३—एमेव रूवम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे॥

३४—रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं॥

सद्द-पदं

३५—सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो॥

१—उ (अ)।

३६—सद्दस्स सोयं गहणं वयन्ति
सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

३७—सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[1]
अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे हरिणमिगे व[2] मुद्धे[3]
सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥

३८—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं[4]
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि सद्दं अवरज्झई से ॥

३९—एगन्तरत्ते रुइरंसि सद्दे
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

४०—सद्दाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परियावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

१—निच्च (अ) ।
२—व्व (उ, ऋ) ।
३—बुद्धे (अ) ।
४—निच्च (अ, बृ०) ।

४१—सद्दाणुवाएण[1] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[2] ॥

४२—सद्दे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

४३—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

४४—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

४५—सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

१—°वाए य (अ) ; रागेण (वृ० पा०) ; वाए ण (सु)।
२—अतित्त (वृ) ; अतित्ति (वृ० पा०)।

४६—एमेव सद्दम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

४७—सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो[2]
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

गन्ध-पदं

४८—घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥

४९—गन्धस्स घाणं गहणं वयन्ति
घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

५०—गन्धेसु[3] जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[4]
अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे ओसहिगन्धगिद्धे
सप्पे बिलाओ विव निक्खमन्ते ॥

१—उ (अ)।
२—असोगो (अ)।
३—गंधस्स (अ, ऋ)।
४—निच्चं (अ)।

५१—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं[1]
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि गन्धं अवरज्झई से ॥

५२—एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

५३—गन्धाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

५४—गन्धाणुवाएण[2] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[3] ॥

५५—गन्धे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१—निच्च (बृ०, अ) ।
२—°वाए य (अ), °रागेण (बृ० पा०), °वाए ण (सु) ।
३—अतित्त° (बृ०); अतित्ति° (बृ० पा०) ।

५६—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

५७—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

५८—गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

५९—एमेव गन्धम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

६०—गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

रस-पदं

६१—जिहाए रसं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥

१—उ (अ)।

६२–रसस्स जिब्भं[1] गहणं वयन्ति
जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

६३–रसेसु[2] जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[3]
अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए
मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे[4] ॥

६४–जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं[5]
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
'रसं न किंचि'[6] अवरज्झई से ॥

६५–एगन्तरत्ते रुइरे रसम्मि
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

६६–रसाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

१—जीहा (उ, ऋ) ।
२—रसस्स (अ, ऋ) ।
३—निच्चं (अ) ।
४—० लोभगिद्धे (अ) ।
५—निच्च (वृ०, अ) ।
६—न किंचि रस्सं (अ) ।

६७—रसाणुवाए[1] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहिं सुहं से?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[2]॥

६८—रसे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं॥

६९—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
रसे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से॥

७०—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो॥

७१—रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि?।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कए ण दुक्खं?॥

१—°वाए य (अ); °रागेण (बृ० पा०); °वाए ण (सु)।
२—अतित्त° (बृ०); अतित्ति° (बृ० पा०)।

७२—एमेव रसम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥
७३—रसे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

फास-पदं

७४—कायस्स फासं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥
७५—फासस्स कायं गहणं वयन्ति
कायस्स फासं गहणं वयन्ति ।
'रागस्स हेउं समणुन्नमाहु'[2]
'दोसस्स हेउं'[3] अमणुन्नमाहु ॥
७६—फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[4]
अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे सीयजलावसन्ने
गाहग्गहीए महिसे व ऽरन्ने ॥

१—उ (अ) ।
२—त राग हेउ तु मणुन्नमाहु (अ) ।
३—त दोस हेउस्स (अ) ।
४—निच्च (अ) ।

७७–जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं[1]
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि फासं अवरज्झई से ॥

७८–एगन्तरत्ते रुइरंसि फासे
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

७९–फासाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

८०–फासाणुवाएण[2] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[3] ॥

८१–फासे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१—निच्चं (बृ०, अ) ।
२—°वाए य (अ) ; °रागेण (बृ० पा०) ; °वाए ण (सु) ।
३—अतित्त° (बृ०) ; अतित्ति° (बृ० पा०) ।

८२—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
फासे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

८३—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

८४—फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

८५—एमेव फासम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

८६—फासे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

भाव-पदं

८७—मणस्स भावं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥

१—उ (अ)।

८८—भावस्स मणं गहणं वयन्ति
मणस्स भावं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

८९—भावेसु[1] जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[2]
अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे
करेणुमग्गावहिए 'व नागे'[3] ॥

९०—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं[4]
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि भावं अवरज्झई से ॥

९१—एगन्तरत्ते रुइरंसि भावे
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

९२—भावाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

१—मणेण (अ) ; भावस्स (ऋ) ।
२—निच्च (अ) ।
३—गए व्व (अ) ।
४—निच्च (बृ०, अ) ।

९३—भावाणुवाएण[1] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[2] ॥

९४—भावे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

९५—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
भावे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

९६—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

९७—भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

१—°वाए य (अ); °रागेण (वृ० पा०); °वाए ण (सु)।
२—अतित्त° (बृ०); अतित्ति° (वृ० पा०)।

९८—एमेव भावम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥
९९—भावे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

निक्खेव-पदं

१००—एविन्दियत्था य मणस्स अत्था
दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो ।
ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं
न वीयरागस्स करेन्ति किंचि ॥
१०१—न कामभोगा समयं उवेन्ति
न यावि भोगा विगइं उवेन्ति ।
जे तप्पओसी य परिग्गही य
सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥
१०२—कोहं च माणं च तहेव मायं
लोहं दुगुंछं अरइं रइं च ।
हासं भयं सोगपुमित्थिवेयं
नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥
१०३—आवज्जई एवमणेगरूवे
एवंविहे कामगुणेसु सत्तो ।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे
कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥

१—उ (उ)।

१०४—कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू
पच्छाणुतावेय[1] तवप्पभावं ।
एवं वियारे अमियप्पयारे
आवज्जई इन्दियचोरवस्से ॥

१०५—तओ से जायन्ति पओयणाइं
निमज्जिउं मोहमहण्णवम्मि ।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा[2]
तप्पच्चयं[3] उज्जमए य रागी ॥

१०६—विरज्जमाणस्स य इन्दियत्था
सद्दाइया[4] तावइयप्पगारा ।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा
निव्वत्तयन्ती अमणुन्नयं वा ॥

१०७—एवं ससंकप्पविकप्पणासु[5]
संजायई समयमुवट्ठियस्स ।
'अत्थे य संकप्पयओ'[6] तओ से
पहीयए कामगुणेसु तण्हा ॥

१०८—स वीयरागो कयसव्वकिच्चो
खवेइ नाणावरणं खणेणं ।
तहेव जं दंसणमावरेइ
जं चऽन्तरायं पकरेइ कम्मं ॥

१—पच्छाणुतावेण (सु) ।
२—दुक्ख विमोयणाय (बृ० पा०) ।
३—तप्पचया (बृ० पा०) ।
४—वण्णाइया (बृ० पा०) ।
५— ° विकप्पणासो (बृ० पा०) ।
६—अत्थे असकप्पयतो (बृ० पा०) ।

१०९—सव्वं तओ जाणइ पासए य
अमोहणे होइ निरन्तराए।
अणासवे झाणसमाहिजुत्ते
आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥

११०—सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को
जं बाहई सययं जन्तुमेयं।
दीहामयविप्पमुक्को पसत्थो
तो होइ अच्चन्तसुही कयत्थो ॥

१११—अणाइकालप्पभवस्स एसो
'सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो'[1]।
वियाहिओ जं समुविच्च सत्ता
कमेण अच्चन्तसुही भवन्ति ॥

—त्ति बेमि ॥

*

1—संसार चक्कस्स विमोक्खमग्गो (बृ० पा०)।

तेतीसइमं अज्झयणं

कम्मपयडी

उक्खेव-पदं

१—अट्ठ कम्माइं वोच्छामि आणुपुव्विं जहक्कमं[1] ।
जेहिं बद्धो अयं जीवो संसारे परिवत्तए[2] ॥

कम्म-पदं

२—नाणस्सावरणिज्जं दंसणावरणं तहा ।
वेयणिज्जं तहा मोहं आउकम्मं तहेव य ॥
३—नामकम्मं च गोयं च अन्तरायं तहेव य ।
एवमेयाइ कम्माइं अट्ठेव उ समासओ ॥

पयडि-पदं

४—नाणावरणं पंचविहं सुयं आभिणिबोहियं ।
ओहिनाणं तइयं मणनाणं च केवलं ॥
५—निद्दा तहेव पयला
निद्दानिद्दा य पयलपयला य ।
तत्तो य थीणगिद्धी उ
पंचमा होइ नायव्वा ॥
६—चक्खुमचक्खुओहिस्स
दंसणे केवले य आवरणे ।
एवं[3] तु नवविगप्पं
नायव्वं दंसणावरणं ॥

१—सुणेह मे (बृ० पा०) ।
२—परिभम्मए (बृ० पा०) ।
३—एय (अ) ।

७—वेयणीयं पि य[1] दुविहं
सायमसायं च आहियं।
सायस्स उ बहू भेया
एमेव असायस्स वि ॥
८—मोहणिज्जं पि दुविहं दंसणे चरणे तहा।
दंसणे तिविहं वुत्तं चरणे दुविहं भवे ॥
९—सम्मत्तं चेव मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तमेव य।
एयाओ तिन्नि पयडीओ मोहणिज्जस्स दंसणे ॥
१०—'चरित्तमोहणं कम्मं दुविहं तु वियाहियं'[2]।
'कसायमोहणिज्जं'[3] तु नोकसायं तहेव य ॥
११—सोलसविहभेएणं कम्मं तु कसायजं।
सत्तविहं नवविहं वा कम्मं नोकसायजं ॥
१२—नेरइयतिरिक्खाउ मणुस्साउ तहेव य।
देवाउयं चउत्थं तु[4] आउकम्मं चउव्विहं ॥
१३—नामं कम्मं तु[5] दुविहं सुहमसुहं 'च आहियं'[6]।
सुहस्स उ[7] बहू भेया एमेव असुहस्स वि ॥
१४—गोयं कम्मं दुविहं उच्चं नीयं च आहियं।
उच्चं अट्ठविहं होइ एवं नीयं पि आहियं ॥
१५—दाणे लाभे य भोगे य उवभोगे वीरिए तहा।
पंचविहमन्तरायं समासेण वियाहियं ॥

१—इ (ऋ)।
२—चरित्त मोहणिज्ज दुविहं वोच्छामि अणुपुव्वसो (बृ० पा०)।
३—° वेयणिज्ज य (बृ०)।
४, ५—× (उ, ऋ)।
६—वियाहियं (उ, ऋ)।
७—य (उ, ऋ)।

१६—एयाओ मूलपयडीओ उत्तराओ य आहिया ।
पएसग्गं खेत्तकाले य भावं चादुत्तरं सुण ॥

पएस-पदं

१७—सव्वेसिं चेव कम्माणं पएसग्गमणन्तगं ।
गण्ठियसत्ताईयं[1] अन्तो सिद्धाण आहियं ॥

१८—सव्वजीवाण कम्मं तु संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥

ठिइय-पदं

१९—उदहीसरिनामाणं तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

२०—आवरणिज्जाण दुण्हं पि वेयणिज्जे तहेव य ।
अन्तराए य कम्मम्मि ठिई एसा वियाहिया ॥

२१—उदहीसरिनामाणं सत्तरिं कोडिकोडिओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

२२—तेत्तीस सागरोवमा उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

२३—उदहीसरिनामाणं वीसई कोडिकोडिओ ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा अट्ठ मुहुत्ता जहन्निया ॥

अणुभाग-पदं

२४—सिद्धाणऽणन्तभागो य[2] अणुभागा हवन्ति उ ।
सव्वेसु वि पएसग्गं सव्वजीवेसु ऽइच्छियं[3] ॥

१—गण्ठि सत्ताणाइ (वृ० पा०) ।
२—× (उ, ऋ) ।
३—स इच्छिय (उ, सु) ; अहिच्छिय (स) ।

निक्खेव-पदं

२५–तम्हा एएसि कम्माण अणुभागे वियाणिया।
एएसि संवरे चेव खवणे य जए बुहे ॥

—त्ति बेमि ॥

चउतीसइमं अज्झयणं

लेसज्झयणं

उक्खेव-पदं

१—लेसज्झयणं पवक्खामि आणुपुव्विं जहक्कमं।
छण्हं पि कम्मलेसाणं अणुभावे सुणेह मे॥

२—नामाइं वण्णरसगन्ध- फासपरिणामलक्खणं।
ठाणं ठिइं गइं चाउं लेसाणं तु सुणेह मे॥

लेसा-पदं

३—किण्हा नीला य काऊ य तेऊ पम्हा तहेव य।
सुक्कलेसा य छट्ठा उ[1] नामाइं तु जहक्कमं॥

वण्ण-पदं

४—जीमूयनिद्धसंकासा गवलरिट्ठगसन्निभा।
खंजणंजणनयणनिभा किण्हलेसा उ वण्णओ॥

५—नीलाऽसोगसंकासा चासपिच्छसमप्पभा।
वेरुलियनिद्धसंकासा नीललेसा उ वण्णओ॥

६—अयसीपुप्फसंकासा कोइलच्छदसन्निभा।
पारेवयगीवनिभा काउलेसा उ वण्णओ॥

७—हिंगुलुयधाउसंकासा तरुणाइच्चसन्निभा[2]।
सुयतुण्डपईवनिभा[3] तेउलेसा उ वण्णओ॥

८—हरियालभेयसंकासा हलिद्दाभेयसंनिभा[4]।
सणासणकुसुमनिभा पम्हलेसा उ[5] वण्णओ॥

१—य (उ, ऋ)।
२—°च्छावि° (वृ० पा०)।
३—सुयतुण्डगसंकासा, सुयतुण्डालत्तदीवाभा (वृ० पा०)।
४—°सप्पभा (अ, आ, इ)।
५—य (ऋ)।

९—संखंककुन्दसंकासा खीरपूरसमप्पभा[1] ।
रययहारसंकासा सुक्कलेसा उ[2] वण्णओ ॥

रस-पदं

१०—जह कडुयतुम्बगरसो
निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ[3] किण्हाए नायव्वो ॥

११—जह तिगडुयस्स य रसो
तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ नीलाए नायव्वो ॥

१२—जह तरुणअम्बगरसो
तुवरकविट्ठस्स[4] वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ काऊए नायव्वो ॥

१३—जहपरिणयम्बगरसो
पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ[5] तेऊए नायव्वो ॥

१—खीरतूल° (वृ०) ; खीरधार°, खीरपूर° (वृ० पा०) ।
२, ३—य (ऋ) ।
४—तुंवर° (अ) ; तुंवरु° (उ) : अट्ट° (वृ० पा०) ।
५—य (ऋ) ।

१४—वरवारुणीए व रसो
विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
'महुमेरगस्स व रसो
एत्तो पम्हाए[1] परएणं'[2] ॥

१५—खज्जूरमुद्दियरसो
खीररसो खण्डसक्कररसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ[3] सुक्काए नायव्वो ॥

गन्ध-पदं

१६—जह गोमडस्स गन्धो
सुणगमडगस्स[4] व जहा अहिमडस्स ।
'एत्तो वि'[5] अणन्तगुणो
लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥

१७—जह सुरहिकुसुमगन्धो
गन्धवासाण[6] पिस्समाणाणं[7] ।
'एत्तो वि'[8] अणन्तगुणो
पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥

१—पम्हाउ (अ)।
२—एत्तो वि अणंत गुणो रसो उ पम्हाए नायव्वो (बृ० पा०)।
३—य (ऋ)।
४—° मडस्स (उ, ऋ)।
५—एत्तोउ (अ); इत्तो वि (उ, ऋ)।
६—गंधाण य (बृ० पा०)।
७—पिस्समाणेणं (अ)।
८—एत्तोउ (अ); इत्तो वि (उ, ऋ)।

फास-पदं

१८—जह करगयस्स फासो
गोजिब्भाए व सागपत्ताणं।
एत्तो वि अणन्तगुणो
लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥

१९—जह बूरस्स व फासो
नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं।
एत्तो वि अणन्तगुणो
पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥

परिणाम-पद

विहो वा
१२—जह तरुणबावीसइविहेक्कसीओ वा।
तुवरकः वा
एत्तो वि अणन्तगुणो होइ परिणामो ॥
रसो उ

१३—जहपरिणयम्बगरसो छसु अविरओ य।
पक्ककविट्ठस्स व।
एत्तो वि अणन्तगुणो ने नरो[२] ॥
रसो उ तेऊए इन्दिओ[३]।

१—खीरतूल० (बृ०); खीरधार०, खीरपूर० (बृ० पा०) रिणमे ॥
२, ३—य (ऋ)।
४—तुंदर० (अ); तुवरु० (उ); अद्द० (बृ० पा०)।
५—य (ऋ)।

२३—इस्साअमरिसअतवो अविज्जमाया 'अहीरिया य'[1]।
गेद्धी पओसे य सढे पमत्ते[2] रसलोलुए साय गवेसए य ॥

२४—आरम्भाओ[3] अविरओ खुद्दो साहस्सिओ नरो।
एयजोगसमाउत्तो नीललेसं तु परिणमे ॥

२५—वंके वंकसमायारे नियडिल्ले अणुज्जुए।
पलिउंचग ओवहिए मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥

२६—उप्फालगदुट्ठवाई[4] य तेणे यावि य मच्छरी।
एयजोगसमाउत्तो काउलेसं तु परिणमे ॥

२७—नीयावित्ती अचवले अमाई अकुऊहले।
विणीयविणए दन्ते जोगवं उवहाणवं ॥

२८—पियधम्मे दढधम्मे वज्जभीरू हिएसए[5]।
एयजोगसमाउत्तो तेउलेसं तु परिणमे ॥

२९—पयणुकोहमाणे य मायालोभे य पयणुए।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा जोगवं उवहाणवं ॥

३०—तहा पयणुवाई[6] य उवसन्ते जिइन्दिए।
एयजोगसमाउत्तो पम्हलेसं तु परिणमे ॥

३१—अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता धम्मसुक्काणि झायए[7]।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा समिए गुत्ते य गुत्तिहिं ॥

१—अहीरियगयाय (अ)।
२—य मत्ते (वृ० पा०)।
३—आरम्भओ (अ), आरम्भा (उ, ऋ)।
४—उफालदुट्ठवाई (अ), उप्फालग° (उ); उप्फाडग° (ऋ)।
५—हियासए, अणासए (वृ० पा०)।
६—°याइ (अ)।
७—साहए (वृ०, सु) झायए (वृ० पा०)।

३२—सरागे वीयरागे वा[1] उवसन्ते[2] जिइन्दिए।
एयजोगसमाउत्तो सुक्कलेसं तु परिणमे॥

ठाण-पदं

३३—असंखिज्जाणोसप्पिणीण[3]
उस्सप्पिणीण जे समया।
संखाईया[4] लोगा
लेसाण हुन्ति ठाणाइं॥

ठिइ-पद

३४—'मुहुत्तद्धं तु'[5] जहन्ना
तेत्तीसं सागरा मुहुत्तऽहिया।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा किण्हलेसाए॥

३५—'मुहुत्तद्धं तु'[6] जहन्ना
दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा नीललेसाए॥

३६—'मुहुत्तद्धं तु'[7] जहन्ना
तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा काउलेसाए॥

१—य (अ)।
२—सुद्धजोगे (बृ० पा०)।
३—असखेज्जाणओ उसप्पिणीण (अ)।
४—असखेया (बृ० पा०)।
५—मुहुत्तद्धा उ (बृ० पा०)।
६—मुहुत्तद्धा उ (बृ० पा०)।
७—मुहुत्तद्धा उ (बृ० पा०)।

३७–'मुहुत्तद्धं तु'[1] जहन्ना
दोउदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा तेउलेसाए ॥

३८–'मुहुत्तद्धं तु'[2] जहन्ना
दस 'होन्ति सागरा मुहुत्ताहिया'[3]।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा पम्हलेसाए ॥

३९–'मुहुत्तद्धं तु'[4] जहन्ना
तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा सुक्कलेसाए ॥

४०–एसा खलु लेसाणं
ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ ।
चउसु वि गईसु एत्तो
लेसाण ठिइं तु वोच्छामि ॥

४१–दस वाससहस्साइं
काऊए ठिई जहन्निया होइ ।
'तिण्णुदही 'पलिओवम
असंखभागं'[5] च उक्कोसा'[6] ॥

१—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।
२—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।
३—उदही हुंति मुहुत्तमब्भहिया (उ, ऋ) ।
४—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।
५—पलियमसंख भाग (सु), पलियमसंखेज्ज भाग (वृ०) ।
६—उक्कोसा तिन्नुदही पलियमसंखेज्जभागाहिय (वृ० पा०) ।

४२—तिण्णुदही पलिय-
मसंखभागा जहन्नेण नीलठिई ।
दस उदही 'पलिओवम
असंखभागं'[1] च उक्कोसा ॥

४३—'दस उदही 'पलिय-
मसंखभागं'[2] जहन्निया होइ ।
तेत्तीससागराइं उक्कोसा
होइ किण्हाए ॥'[3]

४४—एसा नेरइयाणं
लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि
तिरियमणुस्साण देवाणं ॥

४५—अन्तोमुहुत्तमद्धं
लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ ।
तिरियाण नराणं वा[4]
वज्जित्ता केवलं लेसं ॥

४६—मुहुत्तद्धं तु जहन्ना
उक्कोसा होइ पुव्वकोडी उ ।
नवहि वरिसेहि ऊणा
नायव्वा सुक्कलेसाए ॥

१—पलिअ असक्खभाग (उ, ऋ) ।
२—पलियमसखं भाग च (उ) ।
३—दस उदही पलियपसख भाग च जहन्नेण कण्ह लेसाए ।
तेत्तीस सागराइ मुहुत्त अहिया उ उक्कोसा ॥ (अ) ॥
४—तु (बृ०) ; च (उ, ऋ) ।

४७—एसा तिरियनराणं
लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि
लेसाण ठिई उ देवाणं ॥

४८—दस वाससहस्साइं
किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
पलियमसंखिज्जइमो
उक्कोसा होइ किण्हाए ॥

४९—जा किण्हाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं नीलाए
'पलियमसंखं तु'[1] उक्कोसा ॥

५०—जा नीलाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं काऊए
पलियमसंखं च उक्कोसा ॥

५१—तेण परं वोच्छामि
तेउलेसा जहा सुरगणाणं ।
भवणवइवाणमन्तर-
जोइसवेमाणियाणं च ॥

१—पलियमसखं च (उ, ऋ) ; पलियमसखिज्ज (वृ०) ।

५२–पलिओवमं[1] जहन्ना
उक्कोसा सागरा उ दुण्हऽहिया[2] ।
पलियमसंखेज्जेणं
होई भागेण[3] तेऊए ॥
५३–दस वाससहस्साइं
तेऊए ठिई जहन्निया होइ ।
दुण्णुदही पलिओवम
असंखभागं च उक्कोसा ॥
५४–जा तेऊए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं पम्हाए दसउ
मुहुत्तऽहियाइं च उक्कोसा ॥
५५–जा पम्हाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं सुक्काए
तेत्तीसमुहुत्तमब्भहिया ॥

अहम्मलेसा-पद

५६–किण्हा नीला काऊ
तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ[4] ।
एयाहि तिहि वि जीवो
दुग्गइं उववज्जई बहुसो[5] ॥

१—पलिओवम च (अ) ।
२—दुन्निहिया (उ, ऋ) ।
३—तिभागेण (अ) ।
४—अहम० (अ, बृ० पा०) ।
५—× (उ, ऋ) ।

धम्मलेसा-पदं

५७—तेऊ पम्हा सुक्का
तिन्नि वि एयाओ धम्मलेसाओ।
एयाहि तिहि वि जीवो
सुग्गइं उववज्जई बहुसो[1] ॥

उववात-पद

५८—लेसाहिं सव्वाहिं
पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु।
'न वि कस्सवि उववाओ'[2]
परे भवे अत्थि[3] जीवस्स ॥

५९—लेसाहिं सव्वाहिं
चरमे समयम्मि परिणयाहिं तु।
'न वि कस्सवि उववाओ'[4]
परे भवे अत्थि[5] जीवस्स ॥

६०—अन्तमुहुत्तम्मि गए
अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेव।
लेसाहिं परिणयाहिं
जीवा गच्छन्ति परलोयं ॥

१—× (उ, ऋ)।
२—न हु कस्सवि उववत्ति (वृ०)।
न वि° ...(वृ० पा०); न हु°...... .. (उ, ऋ, सु)।
३—भवइ (वृ०, सु)।
४—न हु कस्सवि उववत्ति (वृ०)।
५—भवइ (वृ०, सु)।

निक्खेव-पदं

६१—तम्हा एयाण[1] लेसाणं
अणुभागे वियाणिया ।
अप्पसत्थाओ वज्जित्ता
पसत्थाओ अहिट्ठेज्जासि[2] ॥

—त्ति बेमि ॥

१—एयासि (उ, ऋ) ।
२—अहिट्ठिए (उ, ऋ) ।

पणतीसइमं अज्झयणं

अणगारमग्गगई

१—सुणेह 'मे एगग्गमणा'[1] मग्गं बुद्धेहि देसियं ।
जमायरन्तो भिक्खू दुक्खाणन्तकरो भवे ॥

२—गिहवासं परिच्चज्ज पवज्जंअस्सिओ[2] मुणी ।
इमे संगे वियाणिज्जा[3] जेहि सज्जन्ति माणवा ॥

३—तहेव हिंसं अलियं चोज्जं अबम्भसेवणं ।
इच्छाकामं च लोभं च संजओ परिवज्जए ॥

४—मणोहरं चित्तहरं मल्लधूवेण वासियं ।
सकवाडं पण्डुरुल्लोयं मणसा वि न पत्थए ॥

५—इन्दियाणि उ भिक्खुस्स तारिसम्मि उवस्सए ।
दुक्कराइं निवारेउं[4] कामरागविवड्ढणे ॥

६—सुसाणे सुन्नगारे वा रुक्खमूले व एक्कओ[5] ।
पइरिक्के[6] परकडे वा वासं तत्थऽभिरोयए ॥

७—फासुयम्मि अणाबाहे इत्थीहिं अणभिद्दुए ।
तत्थ संकप्पए वासं भिक्खू परमसंजए ॥

८—न सयं गिहाइं कुज्जा णेव अन्नेहिं कारए ।
गिहकम्मसमारम्भे भूयाणं दीसई वहो ॥

१—मे एगग्गमणा (उ, ऋ) ।
२—पवज्जामस्सिए (उ, ऋ) ।
३—वियाणेत्ता (अ) ।
४—उ धारेउ (वृ०) : निवारेउ (वृ० पा०) ।
५—एगओ (उ, ऋ) . एगया (वृ०) ; एक्कतो (वृ० पा०) ।
६—परक्के (वृ०) , पइरिक्के (वृ० पा०) ।

९—तसाणं थावराणं च सुहुमाणं बायराण य ।
तम्हा गिहसमारम्भं संजओ परिवज्जए ॥
१०—तहेव भत्तपाणेसु पयण[1] पयावणेसु य ।
पाणभूयदयट्ठाए न पये न पयावए ॥
११—जलधन्ननिस्सिया जीवा[2] पुढवीकट्ठनिस्सिया[3] ।
हम्मन्ति भत्तपाणेसु तम्हा भिक्खू न पायए ॥
१२—विसप्पे सव्वओधारे बहुपाणविणासणे ।
नत्थि जोइसमे सत्थे तम्हा जोइं न दीवए ॥
१३—हिरण्णं जायरूवं च मणसा वि न पत्थए ।
समलेट्ठुकंचणे भिक्खू विरए कयविक्कए ॥
१४—किणन्तो कइओ होइ विक्किणन्तो य वाणिओ ।
कयविक्कयम्मि वट्टन्तो भिक्खू न भवइ तारिसो ॥
१५—भिक्खियव्वं न केयव्वं भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा ।
कयविक्कओ महादोसो भिक्खावत्ती[4] सुहावहा ॥
१६—समुयाणं उंछमेसिज्जा जहासुत्तमणिन्दियं ।
लाभालाभम्मि संतुट्ठे पिण्डवायं 'चरे मुणी'[5] ॥
१७—अलोले न रसे गिद्धे जिब्भादन्ते अमुच्छिए ।
न रसट्ठाए भुंजिज्जा जवणट्ठाए महामुणी ॥
१८—अच्चणं रयणं चेव वन्दणं पूयणं तहा ।
इड्ढीसक्कारसम्माणं मणसा वि न पत्थए ॥

१—पयणेसु (ऋ) ; पयणे य (अ) ।
२—पाणा (अ) ।
३—°काय° (उ) ।
४—भिक्खू वित्ती (उ, ऋ) ।
५—गवेसए (बृ० पा०) ।

१९–सुक्कझाणं झियाएज्जा अणियाणे अकिंचणे ।
वोसट्ठकाए विहरेज्जा जाव कालस्स पज्जओ ॥
२०–निज्जूहिऊण आहारं कालधम्मे उवट्ठिए ।
जहिऊण[1] माणुसं बोन्दि पहू दुक्खे विमुच्चई ॥
२१–निम्ममो निरहंकारो वीयरागो अणासवो[2] ।
संपत्तो केवलं नाणं सासयं परिणिव्वुए ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१–चइऊण (उ, ऋ) ।
२–निरासवे (चू०) ।

छत्तीसइम अज्झयणं

जीवाजीवविभत्ती

उक्खेव-पद

१—जीवाजीवविभत्तिं 'सुणेह मे'[1] एगमणा इओ।
जं जाणिऊण समणे[2] सम्मं जयइ संजमे॥

लोकालोक-पदं

२—जीवा चेव अजीवा य एस लोए वियाहिए।
अजीवदेसमागासे अलोए से वियाहिए॥
३—दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा।
परूवणा तेसि भवे जीवाणमजीवाण य॥
४—रूविणो चेवऽरूवी य अजीवा दुविहा भवे।
अरूवी दसहा वुत्ता रूविणो वि चउव्विहा॥

अरूवि-अजीव-पदं

५—धम्मत्थिकाए तद्देसे तप्पएसे य आहिए।
अहम्मे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए॥
६—आगासे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए।
अद्धासमए चेव अरूवी दसहा भवे॥
७—धम्माधम्मे य दोऽवेए[3] लोगमित्ता वियाहिया।
लोगालोगे य आगासे समए समयखेत्तिए॥
८—धम्माधम्मागासा तिन्नि वि एए अणाइया।
अपज्जवसिया चेव सव्वद्धं तु वियाहिया॥

१—मे सुणेह (बृ०)।
२—भिक्खू (उ, ऋ, बृ०) ; समणे (बृ० पा०)।
३—दोएए (उ) ; दोवे य (ऋ)।

९—'समए वि सन्तइं पप्प एवमेव'[1] वियाहिए।
आएसं पप्प साईए सपज्जवसिए वि य ॥

रूवि अजीव-पदं

१०—खन्धा य खन्धदेसा य तप्पएसा तहेव य।
परमाणुणो य बोद्धव्वा रूविणो य चउव्विहा ॥
११—एगत्तेण पुहत्तेण खन्धा य परमाणुणो।
लोएगदेसे लोए य भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥
१२—संतइं पप्प तेऽणाई अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
१३—असंखकालमुक्कोसं 'एगं समयं जहन्निया'[2]।
अजीवाण[3] य रूवीणं ठिई एसा वियाहिया ॥
१४—अणन्तकालमुक्कोसं एगं समयं जहन्नयं।
अजीवाण[3] य रूवीण अन्तरेयं वियाहियं ॥
१५—वण्णओ गन्धओ चेव रसओ फासओ तहा।
संठाणओ य विन्नेओ परिणामो तेसि पंचहा ॥
१६—वण्णओ परिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया।
किण्हा नीला य लोहिया हालिद्दा सुक्किला तहा ॥
१७—गन्धओ परिणया जे उ दुविहा ते वियाहिया।
सुब्भिगन्धपरिणामा दुब्भिगन्धा तहेव य ॥
१८—रसओ परिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया।
तित्तकडुयकसाया अम्बिला महुरा तहा ॥

१—एमेव सतइं पप्प समए वि (बृ० पा०)।
२—एगो समओ जहन्नय (ऋ), इक्को समओ जहन्निया (उ)।
३—अजीवाण (उ)।

१९—फासओ परिणया जे उ अट्ठहा ते पकित्तिया।
कक्खडा मउया चेव गरुया लहुया तहा॥
२०—सीया उण्हा य निद्धा य तहा लुक्खा य आहिया।
इइ फासपरिणया एए पुग्गला समुदाहिया॥
२१—संठाणपरिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया।
परिमण्डला 'य वट्टा'[1] तंसा चउरंसमायया॥
२२—वण्णओ जे भवे किण्हे भइए से उ गन्धओ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य॥
२३—वण्णओ जे भवे नीले भइए से उ गन्धओ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य॥
२४—वण्णओ लोहिए जे उ भइए से उ गन्धओ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य॥
२५—वण्णओ पीयए जे उ भइए से उ गन्धओ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य॥
२६—वण्णओ सुक्किले जे उ भइए से उ गन्धओ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य॥
२७—गन्धओ जे भवे सुब्भी भइए से उ वण्णओ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य॥
२८—गन्धओ जे भवे दुब्भी भइए से उ वण्णओ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य॥
२९—रसओ तित्तए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य॥

१—वट्टा य (ऋ)।

३०—रसओ कडुए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य॥

३१—रसओ कसाए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य॥

३२—रसओ अम्बिले जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य॥

३३—रसओ महुरए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य॥

३४—फासओ कक्खडे जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य॥

३५—फासओ मउए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य॥

३६—फासओ गुरुए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य॥

३७—फासओ लहुए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य॥

३८—फासओ सीयए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य॥

३९—फासओ उण्हए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य॥

४०—फासओ निद्धए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य॥

४१—फासओ लुक्खए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य॥

४२—परिमंडलसंठाणे भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव भइए फासओ वि य॥
४३—संठाणओ भवे वट्टे भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव भइए फासओ वि य॥
४४—संठाणओ भवे तंसे भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव भइए फासओ वि य॥
४५—संठाणओ य चउरंसे भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव भइए फासओ वि य॥
४६—जे आययसंठाणे भइए से उ वण्णओ।
गंधओ रसओ चेव भइए फासओ वि य॥
४७—एसा अजीवविभत्ती समासेण वियाहिया।
इत्तो जीवविभत्तिं वुच्छामि अणुपुव्वसो॥

जीवविभत्ती

४८—संसारत्था य सिद्धा य दुविहा जीवा वियाहिया[1]।
सिद्धा णेगविहा वुत्ता[2] तं मे कित्तयओ सुण॥

सिद्धजीवे

४९—इत्थी पुरिससिद्धा य तहेव य नपुंसगा।
सलिंगे अन्नलिंगे य गिहिलिंगे तहेव य॥
५०—उक्कोसोगाहणाए य जहन्नमज्झिमाइ य।
उड्ढं अहे य तिरियं च समुद्दम्मि जलम्मि य॥
५१—दस चेव नपुंसेसु[3] वीसं इत्थियासु य।
पुरिसेसु य अट्ठसयं समएणेगेण सिज्झई॥

१—जीवे ते (बृ० पा०)।
२—णेगे बहु सिद्धा (बृ० पा०)।
३—नपुंसएसु (बृ०)।

५२—चत्तारि य गिहिलिंगे अन्नलिंगे दसेव य।
सलिंगेण य अट्ठसयं समएणेगेण सिज्झई॥

५३—उक्कोसोगाहणाए य सिज्झन्ते जुगवं दुवे।
चत्तारि जहन्नाए जवमज्झऽट्ठुत्तरं[1] सयं॥

५४—'चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे
तओ जले वीसमहे तहेव[2]।
सयं च अट्ठुत्तर तिरियलोए
समएणेगेण उ 'सिज्झई उ'[3]॥'[4]

५५—कहिं पडिहया सिद्धा? कहिं सिद्धा पइट्ठिया?।
कहिं बोन्दिं चइत्ताणं? कत्थ गन्तूण सिज्झई?॥

५६—अलोए पडिहया सिद्धा लोयग्गे य पइट्ठिया।
इहं बोन्दिं चइत्ताणं तत्थ गन्तूण सिज्झई॥

५७—बारसहिं जोयणेहिं सव्वट्ठस्सुवरिं भवे।
ईसीपब्भारनामा उ[5] पुढवी छत्तसंठिया॥

५८—पणयालसयसहस्सा जोयणाणं तु आयया।
तावइयं चेव विच्छिण्णा 'तिगुणो तस्सेव परिरओ'[6]॥

५९—अट्ठजोयणबाहल्ला सा मज्झम्मि वियाहिया।
परिहायन्ती चरिमन्ते मच्छियपत्ता तणुयरी॥

१—मज्झे अट्ठुत्तर (अ)।
२—तहेव य (अ)।
३—सिज्झइ ध्रुव (उ, ऋ)।
४—चउरो उड्ढलोगम्मि वीसपहुत्त अहे भवे।
सय अट्ठोत्तर तिरिए एग समएण सिज्झइ॥
दुवे समुद्दे सिज्झति सेस जलेसु ततो जणा।
एसा हु सिज्झणा भणिया पुव्वभावं पडुच्च उ॥ (वृ० पा०)।
५—× (उ, ऋ)।
६—तिउण साहिय परिरय (वृ० पा०)।

६०—अज्जुणसुवण्णगमई
सा पुढवी निम्मला सहावेणं।
उत्ताणगछत्तगसंठिया य
भणिया जिणवरेहि॥

६१—संखंककुन्दसंकासा पण्डुरा निम्मला सुहा।
सीयाए जोयणे तत्तो लोयन्तो उ वियाहिओ॥

६२—जोयणस्स उ जो तस्स[1] कोसो उवरिमो भवे।
'तस्स कोसस्स छब्भाए सिद्धाणोगाहणा भवे'[2]॥

६३—तत्थ सिद्धा महाभागा लोयग्गम्मि पइट्ठिया[3]।
भवप्पवंच उम्मुक्का सिद्धिं वरगइं गया॥

६४—उस्सेहो जस्स जो होइ भवम्मि चरिमम्मि उ[4]।
तिभागहीणा तत्तो य सिद्धाणोगाहणा भवे॥

६५—एगत्तेण साईया अपज्जवसिया वि य।
पुहुत्तेण अणाईया अपज्जवसिया वि य॥

६६—अरूविणो जीवघणा नाणदंसणसन्निया।
अउलं सुहं संपत्ता उवमा जस्स नत्थि उ॥

६७—लोएगदेसे[5] ते सव्वे नाणदंसणसन्निया।
संसारपारनिच्छिन्ना सिद्धिं वरगइं गया॥

संसारत्थजीव-पद

६८—संसारत्था उ जे जीवा दुविहा ते वियाहिया।
तसा य थावरा चेव थावरा तिविहा तहिं॥

१—तत्थ (बृ०) ; तस्स (बृ० पा०)।
२—कोसस्सवि य जो तत्थ छब्भागो उवरिमो भवे (बृ० पा०)।
३—य सट्ठिया (अ)।
४—य (ऋ)।
५—लोगग्ग० (बृ० पा०)।

६९—पुढवी आउजीवा य तहेव य वणस्सई।
इच्चेए थावरा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे॥

पुढवि-पदं

७०—दुविहा पुढवीजीवा उ सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए[1] दुहा पुणो॥

७१—बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया।
सण्हा खरा य बोद्धव्वा सण्हा सत्तविहा तहिं॥

७२—किण्हा नीला य रुहिरा य[2]
हालिद्दा सुक्किला तहा।
पण्डुपणगमट्टिया
खरा छत्तीसईविहा॥

७३—पुढवी य सक्करा वालुया य
उवले सिला य लोणूसे।
'अयतम्बतउय'[3]-सीसग-
रुप्पसुवण्णे य वइरे य॥

७४—हरियाले हिंगुलुए
मणोसिला सासगंजणपवाले।
अब्भपडलऽब्भवालुय
बायरकाए मणिविहाणा॥

१—एगमेगे (वृ० पा०)।
२—× (अ)।
३—अयव तओ य (अ); अय तउय तम्ब (उ, ऋ)।

७५—गोमेज्जए य रुयगे
अंके फलिहे य लोहियक्खे य ।
मरगयमसारगल्ले
भुयमोयगइन्दनीले य ॥

७६—चन्दणगेरुयहंसगब्भ
पुलए सोगन्धिए य बोद्धव्वे ।
चन्दप्पहवेरुलिए
जलकन्ते सूरकन्ते य ॥

७७—एए खरपुढवीए भेया छत्तीसमाहिया ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥

७८—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥

७९—संतइं पप्पऽणाईया[1] अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

८०—बावीससहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई पुढवीणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया[2] ॥

८१—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई पुढवीणं तं कायं तु अमुंचओ ॥

८२—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए पुढवीजीवाण अन्तरं ॥

८३—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१—° तेणाई (अ) ।
२—जहन्नगं (अ) ।

आउ-पदं

८४—दुविहा आउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥
८५—बायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया ।
सुद्धोदए य उस्से हरतणू महिया हिमे ॥
८६—एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा ॥
८७—सन्तइं पप्पऽणाईया[1] अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
८८—सत्तेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउट्ठिई आऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया[2] ॥
८९—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायट्ठिई आऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥
९०—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए आऊजीवाण अन्तरं ॥
९१—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

वणस्सई-पदं

९२—दुविहा वणस्सईजीवा सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए[3] दुहा पुणो ॥
९३—बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया ।
साहारणसरीरा य पत्तेगा य तहेव य ॥

१—°तेणाईं (अ)।
२—जहन्नगा (अ)।
३—एवमेव (अ)।

९४—'पत्तेगसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया'[1]।
रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य लया वल्ली तणा तहा ॥

९५—लयावलया[2] पव्वगा[3] कुहुणा
जलरुहा ओसहीतिणा[4]।
हरियकाया य बोद्धव्वा
पत्तेया इति आहिया ॥

९६—साहारणसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया।
आलुए मूलए चेव सिंगबेरे तहेव य ॥

९७—हिरिली सिरिली सिस्सिरिली
जावई केदकन्दली[5]।
पलंदूलसणकन्दे य
कन्दली य कुडुंबए[6] ॥

९८—लोहि णीहू य थिहू य कुहगा य तहेव य।
कण्हे य वज्जकन्दे य कन्दे सूरणए[7] तहा ॥

९९—अस्सकण्णी य बोद्धव्वा सीहकण्णी तहेव य।
मुसुण्ढी य हलिद्दा य ऽणेगहा एवमायओ ॥

१००—एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा ॥

१—बारसविह भेएण पत्तेया उ वियाहिय (बृ० पा०)।
२—वलया य (अ)।
३—पव्वया (बृ०) ; पव्वगा (बृ० पा०)।
४—०तहा (अ, आ, इ, उ, सु)।
५—केलि० (उ)।
६—कुडुव्वए (उ, ऋ) ; कुहव्वए (स)।
७—पुसूरणे (उ)।

१०१—संतइं पप्पऽणाईया[1] अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥

१०२—दस चेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे।
वणप्फईण[2] आउं तु अन्तोमुहुत्तं जहन्नगं॥

१०३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायठिई पणगाणं तं कायं तु अमुंचओ॥

१०४—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए पणगजीवाण अन्तरं॥

१०५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो॥

१०६—इच्चेए थावरा तिविहा समासेण वियाहिया।
इत्तो उ तसे तिविहे वुच्छामि अणुपुव्वसो॥

१०७—तेऊ वाऊ य बोद्धव्वा उराला य तसा तहा।
इच्चेए तसा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे॥

तेउ-पदं

१०८—दुविहा तेउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो॥

१०९—बायरा जे उ पज्जत्ता णेगहा ते वियाहिया।
इंगाले मुम्मुरे अगणी अच्चि जाला तहेव य॥

११०—उक्का विज्जू य बोद्धव्वा णेगहा एवमायओ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया॥

१११—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे[3] य बायरा।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं॥

१—°तेणाइ (अ)।
२—वणस्सईण (उ, ऋ, वृ०); वणप्फईण (वृ० पा०)।
३—एगदेसे (अ)।

११२—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥
११३—तिण्णेव अहोरत्ता उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई तेऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥
११४—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायट्ठिई तेऊणं तं कायं तु अमुंचओ॥
११५—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए तेउजीवाण अन्तरं॥
११६—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो॥

वाउ-पदं

११७—दुविहा वाउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो॥
११८—बायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया।
उक्कलियामण्डलिया- घणगुंजा सुद्धवाया य॥
११९—संवट्टगवाते य ऽणेगविहा[1] एवमायओ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया॥
१२०—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे[2] य बायरा।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं॥
१२१—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥
१२२—तिण्णेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे।
आउट्ठिई वाऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

१—ऽणेगहा (उ, ऋ)।
२—एगदेसे (अ)।

१२३—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई वाऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥

१२४—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए वाउजीवाण अन्तरं ॥

१२५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१२६—ओराला तसा जे उ चउहा[1] ते पकित्तिया ।
बेइन्दियतेइन्दिय- चउरोपंचिन्दिया चेव ॥

बेइन्दिय-पदं

१२७—बेइन्दिया उ[2] जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥

१२८—किमिणो सोमंगला चेव अलसा माइवाहया ।
वासीमुहा य सिप्पीया[3] संखा संखणगा[4] तहा ॥

१२९—पल्लोयाणुल्लया[5] चेव, तहेव य वराडगा ।
जलूगा जालगा चेव चन्दणा य तहेव य ॥

१३०—इइ बेइन्दिया एए णेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥[6]

१३१—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१—चउव्विहा (ऋ) ।
२—य (अ, ऋ) ।
३—सप्पीया (आ, इ, ऋ) ।
४—सखलगा (अ) ; संखाणगा (उ) ।
५—गल्लोया° (आ) ; अल्लोया° (ऋ) ।
६—इस श्लोक के बाद इतना और है :—
एत्तो काल विभाग तु तेसिं वुच्छ चउव्विहं ॥ (उ) ।

१३२—वासाइं बारसे व उ उक्कोसेण वियाहिया।
बेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥
१३३—संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं[1]।
बेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ॥
१३४—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
बेइन्दियजीवाणं अन्तरेयं[2] वियाहियं॥
१३५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो॥

तेइन्दिय-पदं

१३६—तेइन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे॥
१३७—कुन्थुपिवीलिउड्डंसा उक्कलुद्देहिया तहा।
तणहारकट्ठहारा मालुगा पत्तहारगा॥
१३८—कप्पासऽट्ठिमिंजा य तिंदुगा तउसमिंजगा।
सदावरी य गुम्मी य बोद्धव्वा इन्दकाइया॥
१३९—इन्दगोवगमाईया णेगहा एवमायओ।
लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया॥
१४०—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥
१४१—एगूणपण्णऽहोरत्ता[3] उक्कोसेण वियाहिया।
तेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

१—जहन्निया (अ)।
२—°णं (अ)।
३—एगूणवण्ण° (उ, ऋ)।

१४२—संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं[1] ।
तेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥

१४३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
तेइन्दियजीवाणं अन्तरेयं वियाहियं ॥

१४४—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

चउरिन्दिय-पदं

१४५—चउरिन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥

१४६—अन्धिया पोत्तिया चेव मच्छिया मसगा तहा ।
भमरे कीडपयंगे य ढिंकुणे कुंकुणे तहा ॥

१४७—कुक्कुडे सिंगिरीडी य नन्दावत्ते य विंछिए ।
डोले भिंगारी[2] य विरली अच्छिवेहए ॥

१४८—अच्छिले माहए[3] अच्छि-
रोडए विचित्ते चित्तपत्तए ।
ओहिंजलिया जलकारी य
नीया तन्तवगाविय[4] ॥

१४९—इइ चउरिन्दिया एए ऽणेगहा एवमायओ ।
लोगस्स एग देसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया ॥[5]

१—जहन्निया (अ) ।
२—भिंगिरीडी (उ, ऋ, स) ।
३—साहिए (अ) ।
४—तवगाइया (उ, ऋ) ।
५—इस श्लोक के पश्चात् इतना और है :—
एत्तो काल विभाग तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ (उ) ।

१५०—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
१५१—'छच्चेव य'[1] मासा उ उक्कोसेण वियाहिया ।
चउरिन्दियआउठिई[2] अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
१५२—संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं[3] ।
चउरिन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥
१५३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं[4] ।
'विजढंमि सए काए'[5] अन्तरेयं वियाहियं ॥
१५४—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
'संठाणादेसओ वावि'[6] विहाणाइं सहस्ससो ॥

पचिन्दिय-पदं

१५५—पंचिन्दिया उ जे जीवा चउव्विहा ते वियाहिया ।
नेरइयतिरिक्खा य मणुया देवा य आहिया ॥

नेरइय-पदं

१५६—नेरइया सत्तविहा पुढवीसु सत्तसू भवे ।
रयणाभ सक्कराभा वालुयाभा य आहिया ॥
१५७—पंकाभा धूमाभा तमा तमतमा तहा ।
इइ नेरइया एए सत्तहा परिकित्तिया ॥
१५८—लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे उ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥

१—छच्चेविउ (अ) ।
२—चउरिंदिया य आउठिई (अ) ।
३—जहन्निया (अ) ।
४—जहन्निया (अ) ।
५—चउरिन्दियजीवाणं (उ) ।
६—संठाण भेयओ या वि (अ) ।

१५९—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥

१६०—सागरोवममेगं तु उक्कोसेण वियाहिया।
पढमाए जहन्नेणं दसवाससहस्सिया॥

१६१—तिण्णेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया।
दोच्चाए जहन्नेणं एगं तु सागरोवमं॥

१६२—सत्तेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया।
तइयाए जहन्नेणं तिण्णेव उ सागरोवमा॥

१६३—दस सागरोवमा ऊ उक्कोसेण वियाहिया।
चउत्थीए जहन्नेणं सत्तेव उ सागरोवमा॥

१६४—सत्तरस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया।
पंचमाए जहन्नेणं दस चेव उ सागरोवमा॥

१६५—बावीस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया।
छट्ठीए जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा॥

१६६—तेत्तीस सागरा[1] ऊ उक्कोसेण वियाहिया।
सत्तमाए जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा॥

१६७—जा चेव उ आउठिई नेरइयाण वियाहिया।
सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया भवे॥

१६८—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए नेरइयाणं तु अन्तरं॥

१६९—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
'संठाणादेसओ वावि'[2] विहाणाइं सहस्ससो॥

१—सागराइ (ऋ)।
२—सठाण भेयओ या वि (अ)।

तिरिक्खजोणिय-पदं

१७०–पंचिन्दियतिरिक्खाओ दुविहा ते वियाहिया।
सम्मुच्छिमतिरिक्खाओ[1] गब्भवक्कन्तिया तहा॥

१७१–दुविहावि ते भवे तिविहा
जलयरा थलयरा तहा।
खहयरा य बोद्धव्वा
तेसिं भेए सुणेह मे॥

१७२–मच्छा य कच्छभा य गाहा य मगरा तहा।
सुंसुमारा य बोद्धव्वा पंचहा[2] जलयराहिया॥

१७३–लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया।
एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं॥

१७४–संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥

१७५–एगा य पुव्वकोडीओ उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

१७६–पुव्वकोडीपुहत्तं तु उक्कोसेण वियाहिया।
कायट्ठिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

१७७–अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए जलयराणं तु अन्तरं॥

१७८–'एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो॥'[3]

१— ° तिरिक्खा य (उ)।
२—पचविहा (अ)।
३—× (अ, ऋ)।

१७९–चउप्पया य परिसप्पा दुविहा थलयरा भवे ।
चउप्पया चउविहा ते मे कित्तयओ सुण ॥

१८०–एगखुरा दुखुरा चेव गण्डीपयसणप्पया ।
हयमाइगोणमाइ- गयमाइसीहमाइणो ॥

१८१–भुओरगपरिसप्पा य परिसप्पा दुविहा भवे ।
गोहाई अहिमाई य एक्केका णेगहा भवे ॥

१८२–लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥

१८३–संतइ पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१८४–पलिओवमाउ[1] तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्ठिई थलयराणं अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥

१८५–पलिओवमाउ तिण्णि उ[2] उक्कोसेण तु साहिया ।
पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१८६–कायट्ठिई थलयराण अन्तरं तेसिमं भवे ।
कालमणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥

१८७–एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१८८–चम्मे उ लोमपक्खी य तइया समुग्गपक्खिया ।
विययपक्खी य बोद्धव्वा पक्खिणो य चउव्विहा ॥

१–०ई (उ)।
२–य (अ)।

१८९—लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥[1]

१९०—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१९१—पलिओवमस्स भागो असंखेज्जइमो भवे ।
आउट्ठिई खहयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१९२—असंखभागो पलियस्स उक्कोसेण उ साहिओ ।
पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१९३—कायठिई खहयराणं अन्तरं तेसिमं भवे ।
कालं अणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥

१९४—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
'संठाणादेसओ वावि'[2] विहाणाइं सहस्ससो ॥

मणुय-पद

१९५—मणुया दुविहभेया उ ते मे कित्तयओ सुण ।
संमुच्छिमा य मणुया गब्भवक्कन्तिया तहा ॥

१—श्लोक क्रमांक १८७ से १८९ के स्थान पर निम्न श्लोक है :—
विजढंमि सए काए थलयराणं तु अंतरं ।
चम्मेय लोम पक्खीय तइया समुग्ग पक्खिया ॥
विततपक्खी उ (य) वोधव्वा पक्खिणो उ चउव्विहा ।
लोएग देसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥ (अ, ऋ) ।
विजढंमि सए काए थलयराण तु अंतर ।
एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ ॥
सठाण देसओ वावि विहाणाइ सहस्सओ ।
चम्मे उ लोम पक्खाअ तइया समुग्ग पक्खिया ॥
वियय‌पक्खी य वोधव्वा पक्खिणो य चउव्विहा ।
लोएग देसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥ (उ) ।
२—संठाण भेयओ या वि (अ) ।

१९६—गब्भवक्कन्तिया जे उ तिविहा ते वियाहिया।
अकम्मकम्मभूमा य अन्तरद्दीवया तहा॥

१९७—'पन्नरस तीसइ विहा'[1] भेया अट्ठवीसइं।
संखा उ कमसो तेसिं इइ एसा वियाहिया॥

१९८—संमुच्छिमाण एसेव भेओ होइ आहिओ।
लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे वि[2] वियाहिया॥

१९९—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥

२००—पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई मणुयाणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

२०१—पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया[3]।
पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया[4]॥

२०२—कायट्ठिई मणुयाणं अन्तरं तेसिमं भवे।
अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं॥

२०३—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
'संठाणादेसओ वावि'[5] विहाणाइं सहस्ससो॥

देव-पदं

२०४—देवा चउव्विहा वुत्ता ते मे कित्तयओ सुण।
भोमिज्जवाणमन्तर- जोइसवेमाणिया तहा॥

२०५—दसहा उ भवणवासी अट्ठहा वणचारिणो।
पंचविहा जोइसिया दुविहा वेमाणिया तहा॥

१—तीस पन्नरस विहा (वृ० पा०)।
२—य (अ); × (उ)।
३—तु साहिया (ऋ)।
४—जहन्नग (अ)।
५—सठाण भेयओ या वि (अ)।

२०६—असुरा नागसुवण्णा विज्जू अग्गी य आहिया ।
दीवोदहिदिसा वाया थणिया भवणवासिणो ॥

२०७—पिसायभूय जक्खा य
रक्खसा किन्नरा य किंपुरिसा ।
महोरगा य गन्धव्वा
अट्ठविहा वाणमन्तरा ॥

२०८—चन्दा सूरा य नक्खत्ता गहा तारागणा तहा ।
दिसाविचारिणो[1] चेव पंचहा[2] जोइसालया ॥

२०९—वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगा य बोद्धव्वा कप्पाईया तहेव य ॥

२१०—कप्पोवगा बारसहा सोहम्मीसाणगा तहा ।
सणंकुमारमाहिन्दा बम्भलोगा य लन्तगा ॥

२११—महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा ।
आरणा अच्चुया चेव इइ कप्पोवगा सुरा ॥

२१२—कप्पाईया उ[3] जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जाऽणुत्तरा चेव गेविज्जा नवविहा तहिं[4] ॥

२१३—हेट्ठिमाहेट्ठिमा चेव हेट्ठिमामज्झिमा तहा ।
हेट्ठिमा उवरिमा चेव मज्झिमाहेट्ठिमा तहा ॥

२१४—मज्झिमामज्झिमा चेव मज्झिमाउवरिमा तहा ।
उवरिमाहेट्ठिमा चेव उवरिमामज्झिमा तहा ॥

१—ठिया० (आ, उ, ऋ) ।
२—पंचविहा (उ) ।
३—य (ऋ) ।
४—तहा (ऋ) ।

२१५–उवरिमाउवरिमा चेव इय गेविज्जगा सुरा।
विजया वेजयन्ता य[1] जयन्ता अपराजिया॥

२१६–सव्वट्ठसिद्धगा[2] चेव पंचहाऽणुत्तरा सुरा।
इइ वेमाणिया देवा[3] णेगहा एवमायओ॥

२१७–लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया।
इत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसि चउव्विहं॥

२१८–संतइं पप्पाऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥

२१९–साहियं सागरं एक्कं उक्कोसेण ठिई भवे।
भोमेज्जाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया॥

२२०–पलिओवममेगं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
वन्तराणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया॥

२२१–पलिओवमं एगं तु वासलक्खेण साहियं।
पलिओवमऽट्ठभागो जोइसेसु जहन्निया॥

२२२–दो चेव सागराइं उक्कोसेण वियाहिया[4]।
सोहम्मंमि जहन्नेणं एगं च पलिओवमं॥

२२३–सागरा साहिया दुन्नि उक्कोसेण वियाहिया[5]।
ईसाणम्मि जहन्नेणं साहियं पलिओवमं॥

२२४–सागराणि य सत्तेव उक्कोसेण ठिई भवे।
सणकुमारे जहन्नेणं दुन्नि ऊ सागरोवमा॥

१—× (अ)।
२—° सिद्धिगा (अ)।
३—एए (उ, ऋ)।
४—ठिई भवे (आ, स)।
५—ठिई भवे (आ, स)।

२२५–साहिया सागरा सत्त उक्कोसेण ठिई भवे।
माहिन्दम्मि जहन्नेणं साहिया दुन्नि सागरा ॥
२२६–दस चेव सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
बम्भलोए जहन्नेणं सत्त ऊ सागरोवमा ॥
२२७–चउद्दस[1] सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
लन्तगम्मि जहन्नेणं दस ऊ सागरोवमा ॥
२२८–सत्तरस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
महासुक्के जहन्नेणं चउद्दस सागरोवमा ॥
२२९–अट्ठारस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
सहस्सारे जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥
२३०–सागरा अउणवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
आणयम्मि जहन्नेणं अट्ठारस सागरोवमा ॥
२३१–वीसं तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
पाणयम्मि जहन्नेणं सागरा अउणवीसई ॥
२३२–सागरा इक्कवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
आरणम्मि जहन्नेणं वीसई सागरोवमा ॥
२३३–बावीसं सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
अच्चुयम्मि जहन्नेणं सागरा इक्कवीसई ॥
२३४–तेवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
पढमम्मि जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा ॥
२३५–चउवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
बिइयम्मि जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमा ॥
२३६–पणवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
तइयम्मि जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमा ॥

१—चोद्दसओ (अ)।

२३७—छव्वीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
चउत्थम्मि जहन्नेणं सागरा पणुवीसई॥
२३८—सागरा सत्तवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
पंचमम्मि जहन्नेणं सागरा उ छवीसई॥
२३९—सागरा अट्ठवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
छट्ठम्मि जहन्नेणं सागरा सत्तवीसई॥
२४०—सागरा अउणतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
सत्तमम्मि जहन्नेणं सागरा अट्ठवीसई॥
२४१—तीसं तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
अट्ठमम्मि जहन्नेणं सागरा अउणतीसई॥
२४२—सागरा इक्कतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
नवमम्मि जहन्नेणं तीसई सागरोवमा॥
२४३—तेत्तीस सागराउ उक्कोसेण ठिई भवे।
चउसुं पि विजयाईसुं जहन्नेणेक्कतीसई[1]॥
२४४—अजहन्नमणुक्कोसा[2] तेत्तीसं सागरोवमा।
महाविमाण सव्वट्ठे ठिई एसा वियाहिया॥
२४५—जा चेव उ[3] आउठिई देवाणं तु वियाहिया।
सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया[4] भवे॥
२४६—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए देवाणं हुज्ज अन्तरं॥[5]

१—जहन्ना इक्कतीसई (उ, ऋ)। २—°मणुक्कोसं (अ, ऋ)।
३—य (अ)। ४—जहन्नमु° (ऋ. बृ०)।
५—इस श्लोक के बाद दो श्लोक और हैं :—
अणंतकालमुक्कोसं वासपुहत्तं जहन्नगं।
आणयादीण-कप्पाणं गेविज्जाणं तु अंतरं॥
संखिज्जसागरुक्कोसं वासपुहत्तं जहन्नगं।
अणुत्तराण देवाणं अंतरं तु वियाहियं॥ (उ)।

२४७—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
'संठाणादेसओ वावि'[1] विहाणाइं सहस्सओ॥

२४८—संसारत्था य सिद्धा य इइ जीवा वियाहिया।
रूविणो चेव ऽरूवी य अजीवा दुविहा वि य॥

२४९—इइ जीवमजीवे य सोच्चा सद्दहिऊण य।
सव्वनयाण अणुमए रमेज्जा संजमे मुणी॥[2]

सलेहणा-पदं

२५०—तओ बहूणि वासाणि सामण्णमणुपालिया।
इमेण कमजोगेण अप्पाणं संलिहे मुणी॥

२५१—बारसेव उ वासाइं संलेहुक्कोसिया[3] भवे।
संवच्छरं मज्झिमिया[4] छम्मासा[5] य जहन्निया[6]॥

२५२—पढमे वासचउक्कम्मि विगईनिज्जूहणं[7] करे।
बिइए वासचउक्कम्मि विचित्तं तु तवं चरे॥

२५३—एगन्तरमायामं कट्टु संवच्छरे दुवे।
तओ संवच्छरद्धं तु नाइविगिट्ठं तवं चरे॥

१—सठाण भेयओ या वि (अ)।
२—श्लोक क्रमाक २४८, २४९ के स्थान पर चूर्णि मे निम्न दो श्लोक हैं :—
जीवमजीवे एते णच्चा सद्दहिऊण य।
सव्वन्नूसमतमी जएज्जा सजमे विदू॥
पसत्थसज्झाणोवगए कालं किच्चा ण सजए।
सिद्धे वा सासए भवत्ति देवे वावि महड्ढिए॥
३—सलेहुक्कोसतो (बृ० पा०)।
४—मज्झिमतो (बृ० पा०), मज्झमिया (ऋ)।
५—छम्मासे (अ)।
६—जहन्नतो (बृ० पा०)।
७—वित्ति° (बृ०), विगई° (बृ० पा०)।

२५४—'तओ संवच्छरद्धं तु विगिट्ठं तु तवं चरे।
परिमियं चेव आयामं तंमि संवच्छरे करे॥'[1]

२५५—कोडीसहियमायामं कट्टु संवच्छरे मुणी।
'मासद्धमासिएणं तु आहारेण'[2] तवं चरे॥

२५६—कन्दप्पमाभिओगं[3]
किब्बिसियं मोहमासुरत्तं च।
एयाओ दुग्गईओ
मरणम्मि विराहिया होन्ति॥

भावणा-पद

२५७—मिच्छादंसणरत्ता सनियाणा हु हिंसगा।
इय जे मरन्ति जीवा तेसिं पुण दुलहा बोही॥

२५८—सम्मद्दंसणरत्ता
अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा।
इय जे मरन्ति जीवा
सुलहा तेसिं भवे बोही॥

२५९—मिच्छादंसणरत्ता
सनियाणा कण्हलेसमोगाढा।
इय जे मरन्ति जीवा
तेसिं पुण दुलहा बोही॥

१—परिमियं चेव आयामं गुणुक्कस्सा मुणी चरे।
तत्तो संवच्छरद्धेण्ण विगिट्ठं तु तवं चरे॥ (बृ० पा०)।
२—खमणेणं (बृ० पा०)।
३—कदप्पमाभिओगं च (अ)।

२६०—जिणवयणे अणुरत्ता
जिणवयणं जे करेन्ति भावेण।
अमला असंकिलिट्ठा
ते होन्ति परित्तसंसारी॥

२६१—बालमरणाणि बहुसो
अकाममरणाणि चेव य बहूणि[1]।
मरिहिन्ति[2] ते वराया
जिणवयणं जे न जाणन्ति॥

२६२—बहुआगमविन्नाणा
समाहिउप्पायगा[3] य गुणगाही।
एएण कारणेणं
अरिहा आलोयणं सोउं॥

२६३—कन्दप्पकोक्कुइयाइं[4] तह
सीलसहावहासविगहाहिं[5]।
विम्हावेन्तो य परं
कन्दप्पं भावणं कुणइ॥

२६४—मन्ताजोगं[6] काउं
भूईकम्मं च जे पउंजन्ति।
सायरसइड्ढिहेउं
अभिओगं भावणं कुणइ॥

१—बहुयाणि (इ, उ, ऋ, स)।
२—मरहंति (उ); मरिहति (ऋ)।
३—०मुपायगा (अ)।
४—०कोक्कुयाइ (बृ०, सु०)।
५—०हसण० (बृ०, सु)।
६—मंतं० (अ)।

२६५—नाणस्स केवलीणं
धम्मायरियस्स संघसाहूणं ।
माई अवण्णवाई
किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥

२६६—अणुबद्धरोसपसरो
तह य निमित्तंमि होइ पडिसेवि ।
एएहि कारणेहि
आसुरियं भावणं कुणइ ॥

२६७—सत्थग्गहणं विसभक्खणं च
जलणं च जलप्पवेसो य ।
अणायारभण्डसेवा
जम्मणमरणाणि बन्धन्ति ॥

निक्खेव-पदं

२६८—इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुए ।
छत्तीसं उत्तरज्झाए भवसिद्धीयसंमए[1] ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—°सवुडे (वृ० पा०) ।

परिशिष्ट-१

दसवेआलिय शब्दसूची

दसवेआलिय शब्द-सूची

[१—*अव्यय और सर्वनाम के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्राय: एक बार किया गया है।*

२—*रूपान्तरों को एक साथ लिया है। जैसे—लोअ(ग, य), चंद(न्द)।*

३—*तारांकित शब्द धातुएँ है। उनके रूप उनके नीचे निर्देशचिह्न (डैश) के बाद है।*

४—*संस्कृत छाया केवल समान शब्दो की ही दी गई है।*]

अ		
अ	[1]९(४)	१
अइउक्कस	५(२)	४२
अइक्कमित्तु	५(२)	११
अइक्कम्म	५(२)	२५
अइदूर	५(१)	२३
अइभूमि	५(१)	२४
अइयार	५(१)	८९
अइलाभ	९(२)	५
अइवत्त *		
-अइवत्तए	९(२)	१६
अइवाय *		
-अइवाएज्जा	४	सू० ११
-अइवायावेज्जा	४	सू० ११
अइवायत *		
-अइवायते	४	सू० ११
अइहील *		
-अइहीलेज्जा	५(१)	९९
अईअ	७	८ से १०
अउल	७	४३
	९(३)	१५
अओमय	९(३)	६,७
अंकुस	२	१०
	१ चू०	सू० १
अंग	८	५७
	१ चू०	१५
अंगुलिया	४	सू० १८
अंजण	३	९
	५(१)	३३
अंजली	९(२)	१७
अंड	८	१५
अंडय	४	सू० ९
अंतरा	८	४६
अंतलिक्ख	७	५३
अंतिय	८	४५
	९(१)	१२
अंधगवण्हि	२	८

१—शब्द के सामने दी हुई पहली सख्या अध्ययन और अध्ययन-सख्या के बाद कोष्ठगत सख्या उद्देश्य का द्योतन करती है। बाद की सख्या श्लोक की द्योतक है। 'सू०' सूत्र के लिए प्रयुक्त है। 'चू०' चूलिका का संकेत है।

दसवेआलिय शब्द-सूची

अहिज्जिउं	४	सू० १ से ३
अहिज्जित्ता	९(४)	३
अहिट्ठ*		
-अहिट्ठए	८	६१
	९(४)	२
-अहिट्ठेज्जा	९(४)	सू० ६,७
-अहिट्ठिज्जासि	१ चू०	१८
अहिट्ठग	६	५४,६२
अहिय (अहित)	९(१)	४
अहिय (अधिक)	२ चू०	१०
अहियगामिणी	८	४७
अहियास*		
-अहियासए	५(२)	६
	८	२६
-अहियासे	८	२७
अहुणाधोय	५(१)	७५
अहुणोवलित्त	५(१)	२१
अहे	६	३३
अहो	५(१)	९२
	६	२२

आ

आ	१ चू०	९
आइ	६	४६
	७	७
आइक्ख*		
-आइक्खइ	६	३
-आइक्खेज्ज	८	१४
-आइक्खे	८	५०
आइन्न	८	२८
आइद्ध	२	९
आइण्ण	२ चू०	६
आइन्नअ	२ चू०	१४
आउ (अप्)	४	सू० ५
आउ (आयुस्)	८	३४
आउकाइय	४	सू० ३
आउकाय	६	२९ से ३१
आउरस्सरण	३	६
आउलग	४	२६
आउस	४	सू० १
	९(४)	सू० १
आगअ	५(१)	८८
आगइ	४	सू० ९
आगम	६	१
	७	११
आगमण	५(१)	८९
आगम्म	५(१)	८६
आगाहइत्ता	५(१)	३१
आघाअ	६	३४
आजीववित्तिया	३	६

खण *		
-खणावए	१०	२
-खणे	१०	२
खत्तिय	६	२
खम *		
-खमेह	६(२)	१८
खल्लिय	२ चूं०	१३
खलीण	२ चूं०	१४
खलु	४	सू० १ से ३,६
	७	१
	६(४)	सू० १ से ७
	१ चूं०	सू० १
	२ चूं०	१६
खव *		
-खवेंति	६	६७
खवित्ता	३	१५
खवित्ताणं	४	२४,२५
खवित्तु	६(२)	२३
खाअ *		
-खाएज्जा	८	४६
-खायइ	६(१)	६
खाइम	४	सू० १६
	५(१)	४७,४६,५१, ५३,५७,५६, ६१
	५(२)	२७
	१०	८,६
खाणु	५(१)	४
खिस *		
-खिसए	८	२६
-खिसएज्जा	६(३)	१२
खिप्प	८	३१
	२ चूं०	१४
खु	२	५
खु	६(२)	८
खुड्डग	६	६
खुड्डियायारकहा	३	
खुहा	८	२७
खेम	७	५१
	६(४)	६
खेल	८	१८

ग

गअ(य)	२	१
	४	सू० १८ से २३
	५(१)	२,२४,८१
	५(२)	६
	६(२)	३,२३
	२ चूं०	७
गड	४	सू० ६
	४	१४,१५
	६(२)	१७

छज्जीवणिया	४	सू० १ से ३
	४	२८
छट्ठ	४	सू० ६,१६,१७
छड्ड *		
-छड्डुए	५(१)	८५
	५(२)	१
छड्डुण	६	५१
छण *		
-छनति	६	५१
छत्त	३	४
छमा	१ चू०	२
छविहय	७	३४
छाय	९(२)	७
छारिय	५(१)	७
छिंद *		
-छिंदावए	१०	३
-छिंदाहि	२	५
-छिंदे	१०	३
-छिंदेज्जा	८	१०
छिंदित्तु	१०	२१
छिन्न	४	सू० २२
	५(१)	७०
	७	४२
छिवाडी (दे०)	५(२)	२०
छूढ	१ चू०	५
छेय	४	१०,११

ज

ज	१	१
जअ	७	५०
जइ (यदि)	२	९
	५(१)	९४,९५,९८
	५(२)	२
	६	११,१३
	८	२१
	१ चू०	९
जइ (यति)	२ चू०	६
जओ	७	११
	२ चू०	९
जंतलट्ठि	७	२८
जंतु	१ चू०	१५,१६
जक्ख	९(२)	१०,११
जग (दे०)	५(१)	६८
जग (जगत्)	८	१२
जगनिस्सिय	८	२९
जढ	६	६०
जण *		
-जणंति	९(३)	८
जण	२ चू०	२
जत्त	९(३)	१३
जत्थ	५(१)	२०,२१
	५(२)	४८
	७	९

जाइ	८	३०
	९(४)	७
	१०	१४,२१
जाइत्ता	८	५
जाइपह	९(१)	४
	१०	१४
	२ चू०	१६
जाइमंत	७	३१
जागरमाण	४	सू० १८ से २३
जाण *		
-जाणइ	४	११, २२, २३
-जाणई	४	११
-जाणंति	५(२)	४०,४५
-जाणंतु	५(२)	३४
-जाणेज्ज	५(१)	४७,७६
-जाणेज्जा	७	८
जाण (जानत्)	६	९
	८	३१
जाण (यान)	७	२९
जाणिऊण	५(१)	६९
जाणित्ता	५(१)	२४
	८	१६
जाणित्तु	८	१३
जाणिय	१०	१८
	१ चू०	११
जाणिया	५(२)	२४
	७	५६

जाय	२	६
	४	सू० २२,२३
जाय *		
-जाएज्जा	५(२)	२९
जायतेय	६	३२
जाला	४	सू० २०
जाव	७	२१
	८	३५
जावंत	६	९
जावज्जीव	४	सू० १० से १६, १८ से २३
	६	२८,३१,३५, ३९,४२,४५, ६२
जिइंदिय	३	१३
	८	३२,४४,६३
	९(३)	८,१३
	९(४)	१
	२ चू०	१५
जिण	४	२२,२३
	५(१)	९२
जिण *		
-जिणे	८	३८
जिणंत	४	२७
जिणदेसिय	१ चू०	९

झ

विरेयण	३	६
विलिह*		
-विलिहावेज्जा	४	सू० १८
-विलिहेज्जा	४	सू० १८
विलिहंत	४	सू० १८
विवज्ज*		
-विवज्जए	५(१)	१५,७५
	५(२)	४६
	७	४,७
	८	४१,४६,५५
-विवज्जयामि	२ चू०	१३
-विवज्जेज्जा	५(१)	३६
	६	२४
विवज्जअ	५(२)	४१,४३
विवज्जइत्ता	१०	१६
विवज्जंत	६	४६
विवज्जण	२ चू०	५,६
विवज्जयंत	१०	३
	२ चू०	१०
विवज्जिय	६	५५
	८	५१
विवज्जेत्ता	५(२)	४
विवड्ढण	८	५७
विवण्ण	५(२)	३३
विवण्णछंद	६(२)	८
विवत्ति	६	५७
	६(२)	२१
विवित्त	८	५२
विवित्तचरिया	२ चू०	
विविह	५(१)	३६
	५(२)	२७,३३
	६	२७,३०,४१,४४
	८	१०,१२
	६(४)	४
	१०	८,६,१२
	१ चू०	१८
विस	८	५६
	६(१)	६
	१ चू०	१२
विसम	५(१)	४
विसय	८	५८
विसीअ*		
-विसीएज्ज	५(२)	२६
विसोदंत	२	१
विसुज्झ*		
-विसुज्झई	८	६२
विसुद्ध	६(३)	४
विसोत्तिया	५(१)	६
विसोहिठाण	६(१)	१३
विह	६(४)	सू० ४
विहगम	१	३

सुरुट्ठ	९(१)	५
सुलट्ठ	७	४१
सुलभ	१ चू०	१४
सुलह	४	२७
सुविक्कीय	७	४५
सुविणीय	९(२)	६,९,११
सुविसुद्ध	९(४)	९
सुविहिय	२ चू०	३
सुसंतुट्ठ	८	२५
सुसंवुड	१०	७
सुसमाउत्त	६	३
सुसमाहिइंदिय	७	५७
सुसमाहिय	३	१२
	५(१)	६
	६	२६,२९,४०,
		४३
	८	४
	९(४)	६
	१०	१५
	२ चू०	१६
सुस्सूस #		
-सुस्सूसइ	९(४)	२
-सुस्सूसए	९(१)	१७
सुस्सूसमाण	९(३)	१,२
सुस्सूसा	९(२)	१२
सुह	४	२६
सुह	९(१)	१०
	९(२)	६,९,११
	१०	११
	२ चू०	३
सुहड	७	४१
सुहर	८	२५
सुहावह	६	३
	९(४)	९
सुहि	२	५
सुहुम	४	सू० ११
	६	२३,६१
	८	१३ से १५
सूइय	५(१)	९८
सूइया	५(१)	१२
सूर	८	६१
से (दे०)	४	सू० ९,११ से १६,
		सू० १८ से २३
सेज्जा	४	सू० २३
	५(१)	८७
	५(२)	२
	६	४७
	८	१७,५२
	९(२)	१७
	९(३)	५
	२ चू०	८
सेज्जायरपिंड	३	५

*

परिशिष्ट-२

उत्तरज्झयण शब्द-सूची

उत्तरज्झयण शब्द-सूची

[१—अव्यय और सर्वनाम के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्राय: एक बार किया गया है ।

२—रूपान्तरो को एक साथ लिया है । जैसे—लोअ(ग, य), चंद(न्द) ।

३—तारांकित शब्द धातुएँ है । उनके रूप उनके नीचे निर्देशचिह्न (डैश) के बाद है ।

४—संस्कृत छाया केवल समान शब्दो की ही दी गई है ।]

१—इस कोष्ठक की सख्याएँ अध्ययन की सूचक हैं ।

२—इस कोष्ठक का सख्याएँ श्लोक अथवा 'सू०' सूत्र की सूचक हैं ।

५८A

ख

जल	१९	५९
	२३	५१,५३
	२५	२६
	३२	३४,४७,६०,७३,७६,८६,९९
	३५	११
	३६	५०,५४,२६७
जलंत	११	२३
	१९	४९,५६,५७,७०
जलकंत	३६	७६
जलकारि	३६	१४८
जलण	३६	२६७
जलयर	३६	१७१,१७२,१७५ से १७७
जलरुह	३६	९५
जलागम	३०	५
जलूग	३६	१२९
जल्ल (दे०)	२	सू० ३
	२	३७
	१९	३१
जल्लिय (दे०)	२४	१५
जव (यव)	९	४९
	१९	३८
जव (जव)	११	१६

जवण	८	१२
	३५	१७
जवमज्झ	३६	५३
जवस	७	१
जवोदग	१५	१३
जवोदण	१५	१३
जस (यशस्)	३	१३,१८
	७	२७
जससि	५	२६
	२१	२३
जसा	१४	३
जसोकामी	२२	४२
जह	१०	२,३३
	१९	५६
	२०	४२,४४
जह *		
-जहाइ	१४	३२
	१५	६
	१९	८४
-जहासि	१२	४५
-जहिज्ज	१५	१
जहक्कम	१४	११
	२२	१२
	२३	४३
	२६	४०,४८
	३३	१
	३४	१,३

जिब्भा	२	सू० १ से ३
जिण *		
-जिए-	२३	३६
-जिणह	२९	सू० ४७
जिण	२	४५
	१०	३१
	१६	१७
	१८	४३
	२०	५०,५५
	२१	१२
	२२	२८
	२३	१,५,६३, ७८
	२४	३
	२८	१,२,७, १८,१९,२७, ३३
जिणमग्ग	२२	३८
जिणवयण	३६	२६०,२६१
जिणवर	३६	६०
जिणसासण	२	६,१८,१९, ३२,४६
जिणिंद	१४	२
जिणित्ताण	२३	३६
जिणित्तु	२३	३८
जिब्भा	१०	२४

जिब्भा	३२	६२
	३४	१८
	३५	१७
जिब्भिंदिय	२९	सू० १,६६
जिय (जित)	५	१६
	७	१७ से १९
	९	३६
	२३	३६
जिय (जीव)	२२	१८,१९
जीमूय	३४	४
जीव	२	२७
	३	७
	७	१६
	८	३
	१०	५ से १४
	१२	४४
	२३	७३
	२६	५२
	२८	३,१०,११, १४,१७
	२९	सू० १ से ७२
	३०	२,३,२७
	३१	१
	३२	२७,४०,५३, ६६,७९,९२
	३३	१,१८,२४

प

हो■■

*

परिशिष्ट-३

नामानुक्रम

व्यक्तियों के नाम

१–इस कोष्ठक की संख्याएं अध्ययन की सूचक है।

२–इस कोष्ठक की संख्याएं श्लोक अथवा सूत्र (सू०) की सूचक है।

प्राणि

दंस	१६	३१	मूसग	३२	१३
नंदावत्त	३६	१४७	रोहियमच्छ	१४	३५
नाग	१४	४८	रोज्झ	१६	५६
नीय	३६	१४८	लोमपक्खि	३६	१८८
पत्तहारग	३६	१३७	वराडग	३६	१२६
पयंग	३२	२४	वसह	११	१६
पल्लोय	३६	१२६	वासीमुह	३६	१२८
पारेवय	३४	६	विचित्त	३६	१४८
पिवीलि	३६	१३७	विच्छिअ	३६	१४७
पोत्तिय	३६	१४६	वियय‌पक्खि	३६	१८८
बलागा	३२	६	विग्ली	३६	१४७
बिराल	३२	१३	वीदसअ	१६	६५
ममर	३६	४६	सख	३६	१२८
भारुंड	४	६	सखणग	३६	१२८
भिंगारी	३६	१४७	सदावरी	३६	१३८
भुजंग	१४	३४	समुग्गपक्खि	३६	१८८
मगर	३६	१७२	सिगिरिडी	३६	१४७
मच्छ	३६	१७२	सिप्पी	३६	१२८
मच्छिय	३६	१४६	सीह	३६	१८०
मसग	३६	१४६	सुंसुमार	३६	१७२
महिस	३२	७६	सुणग	३४	१६
माइवाहय	३६	१२८	सुय	३४	७
मालुग	३६	१३७	सुवण्ण	१४	४७
माहअ	३६	१४८	सोमगल	३६	१२८
मिग	३२	१३७	हस	१४	३३

*

शुद्धि और आपूरक पत्र-१

मूल पाठ

दशवैकालिक

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
१४	५।३	कमं	कम्मं
१५	११।२	पावगं ?	पावगं
२१	३१	(एवं …३४॥)	(एवं)
२४	६३	(एवं …६३॥)	(एवं)
२७	८६।४	पडिक्कम्मे	पडिक्कमे
३३	४७।४	ईमं	इमं
३८	३८।२	कंवल	कंवलं
४६	२८।३	नाभो	नाभी
४७	४३।३	अवक्किय °	अविक्किय °
५०	१।१	अयार °	आयार °
५०	४।१	भिति	भित्ति
५०	८।२	व	वा
५७	१।१	सिक्ख	सिक्खे
६१	४।३	° मेज्जंति	° मेज्जंति
७५	२०।३	निक्खम्मं	निक्खम्म
८२	७।२	गया	गओ
८३	१२।३	कि	किं

उत्तराध्ययन

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
८८	६।३	मंसग्गि	संसग्गिं
१०२	१६।४	वोहिं	वोहि
१२२	३।१	से	सो
१२३	१७।३	रायरिसि	रायरिसिं
१२६	४८।१	° रूपस्स	° रुप्पस्स
१२७	५८।१	उत्तुमो	उत्तमो
१३४	३०।१	अवउज्भियं	अवउज्भिय

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
१४२	१५।१	भावघरा	भारधरा
१४२	१६।४	दहामु	दाहामु
१५२	२३।४	° मेव	° मेवं
१५८	१८।२	तैंल्लामहा तिलेसु	तेल्ल महातिलेसु
१७०	पं ८	कुडुन्तंसि	कुडुन्तरंसि
१७३	१३।१	गत °	गत्त' °
१७५	१।२	सुणिता	सुणित्ता
१७९	१०।१	अहम्मीति	अहमस्सीति
१८२	४०।२	भरह	भरहं
१८३	४७।१	सवीर °	सोवीर °
१८९	४१।३	निहुय	निहुयं
१९०	५०।२	° वालुए	° वालुए
१९३	७७।२	मिगे	मिगो
२०६	४।१	धरणी	घरणी
२३२	१३।४	महानुणि	महामुणि
२३४	३४।३	लयं	तयं
२३८	१०।३	निउत्तेण	निउत्तेणं
२३९	२४।२	वा	ता
२४३	४७।३	य	×
२४४	७।४	उज्जाहित्ता	उज्जहित्ता
२४७	४।३	तु	×
२४९	२०।३	रीयंतो	रोयन्तो
२५५	पं ६	अणगारेए	अणगारे
२५९	सू०२४	पभावेणं	पभावे णं
२५९	सू०२५	खवेड	अन्नाणं खवेइ
२६६	सू०६०	विणुस्सड	विणस्सइ
२६९	सू०७४	कम्माइ	कम्माइं
२७५	३७।१	एवं	एयं
२७७	१७।१	° णावणाहिं	° भावणाहि
३०५	४।३	खंजणंण °	खंजणंजण °

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
३०६	१०।१	कड्डुय	कडुय
३१७	१	'मे एगग्गमणा'	मेगग्गमणा
३३०	६५।१	लयावलया	लयावलय
३४९	२६६।३	कारणेहि	कारणेहिं

शुद्धि और आपूरक पत्र-२

पाठान्तर

दशवैकालिक

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
२	पा० १	कइज्हं	कइज्हं
३	पा० ६	संपन्ना (अ,ज)	संपन्ना (अ,ज), संवुद्धा (आ)
४	पा० १	(अ)	(आ)
५	पा० ८	(क,ख,···)	(क,ग···)
७	पा० ४	(जिचू पा०, जिचू पा०)	(अचू पा० जिचू पा०)
७	सू० ९	एसो[1] खलु	एसो खलु[1]
८	पा० १	(अचू)	(अचू सू० १०-२२)
१०	सू० १५	'गामे वा'[1] नगरे वा रण्णे[2] वा	'गामे वा नगरे वा रण्णे[1] वा'[2]
१०	पा० १	×(क,ख,ग,घ, हाटी०)	अरण्णे (अचू)
१०	पा० २	अरण्णे (अचू)	×(क,ख,ग,घ, हाटी०)
११	सू० १८	सलागाए वा'[3]	सलागाए वा सलागहत्थेण वा'[3]
१२	पा० ३	उज्जावेज्जा	उज्जालावेज्जा
१४	पा० १	इंडगंसि वा	डंडगंसि वा
१८	पा० ६	कट्ट	कट्ठं
२१	पा० ४	६—हारताल °	६—हरिताल °
		७—हिंगोलए °	७—हिंगोलुय °
		१४—सोरट्ठिय °	१४—सोरट्ठिय °
२३	पा०२	(अ,ज)	(अ)
२७	८४।३	वा वि	'वा वि'[1]
२७	८४।४	'वा वि'[1]	वा वि
३१	पा०२	(आ,जा,ह)	(आ,जा,हा)
३६	पा०२	(आ,ज)	(अ,ज)

शुद्धि और आपूरक पत्र-२

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
३७	१८।१	लोभस्सेसो अणुफासो	'लोभस्सेसो अणुफासो'[२]
३७	१८।३	सन्निहीकामे	सन्निहीकामे[३]
३७	२२।३	य[२]	य[४]
३७	पा० २	२—व (अ)	२—लोभस्सेसणुफासे (क,घ); लोभस्से सणुफासे (ख); लोभस्सेसणफासो (ग) ३—सन्निहिं कामे (हाटी०) ४—व (अ)
३८	पा०३	ना	नो
४०	पा०३	जिनदास' 'व्याख्यात नही है	×
४४	पा०२ गा०८,९	तहेवऽ °	तहेवाऽ °
		व धारिय···अइयंमि	वधारियं ··अईयंमि
४८	५४।३	भयसा[२]	'भयसा व'[२]
४९	पा०१	सुव्वक्क ° (ख,ग)	सुवक्क (ख,ग)
५१	१९।४	ण[५]	'ण य'[५]
५२	पा०३	(क,ख,घ)	(क,ग,घ)
५५	पा०२	पणीयं रसं	पणीयं
५६	६३।३	कम्मघणम्मि[४]	'कम्मघणम्मि अवगए'[४]
५६	पा०	२—	१—
		३—	२—
		१—	३—
		२—	४—
५६	पा०२	पुव्व °	४—पुव्व °
५७	५।२	° नामाओ[२]	° नामाओ[३]
६२	पा०७	[illegible]	समाणेंनि
	४।४	[illegible]	'नो त्ति पा'[८]
७६	सू०१ पा०२०	[illegible]	'खलु भो'[१]
३६	पा०४	(अ, आ)	(अ, अ)
८४	पा०८	[illegible]	° [illegible] (आ,अ), ° [illegible] (आ)

उत्तराध्ययन

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
८७	पा०२	जाहित्ताणं (बृ०,चू०)	जहित्ताणं (बृ०,चू०); चइत्ताणं (बृ०पा०)
८८	पा०७	(बृ०,चू०)।	(बृ०,चू०); अप्पाचेव दमेयव्वो (बृ०पा०)।
८९	पा०१	(अ,उ,म,)	(अ,उ,ऋ)
९२	पा०१,२	(चू०पा०)	(चू०)
९२	पा०३	(अ,उ,ऋ), कित्ती ति(ऋ)।	(अ,उ); कित्ती य(बृ०)।
१०३	पा०२	(बृ०पा०,चू०पा०)।	(ऋ,बृ०पा०,चू०पा०)
१०३	पा०७	पीहाति	पीहति
१०९	पा०२	आधा °	आघा °
११०	पा०२	(चू०,बृ०पा०)	(चू०पा०,बृ०)
१११	पा०१	(··सु)	(···स(
११९	पा०१ पं०४	(चू०)	(चू०पा०)
११९	पा०२	···सेवए···णिसेवए	···सेवए···णिसेवए
१३२	पा०३	(उ,म,बृ०);	(उ,ऋ,बृ०),
१३६	अ०११	बहुस्सुयपुज्जा	बहुस्सुयपुज्जं
१३७	१५।२	'निहियं दुहओ'[२]	'निहियं दुहओ वि'[२]
१४७	पा०२	सुसंवुडा	सुसंवुडा
१४७	पा०४	वोसट्ठ °	वोसट्ठ °
१५०	पा०५	वित्तघण °	मित्तघण °
१८२	पा०८		× (आ,इ,स)
१८३	४७।२	चेच्चा[३]	'चेच्चा रज्जं'[३]
१८५	पा०३		× (आ,इ,सु,चू०)
१८८	३४।४	° पालिउं	° पालिउं[३]
१८८	३७।१	वालुयाकवले[३]	वालुयाकवले[४]
१८८	३७।२	उ[४]	उ[५]
			३—पालिया (अ,आ,इ,उ,सु)
१८८	पा०	३—	४—
१८८	पा०	४—	५—
१९९	पा०१२	पा० टि० ७	पा० टि० ८

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२००	पा०४	अणुत्तरमणुव्वया (उ, ऋ,वृ०पा०)	अणुरत्तमणुव्वया(उ,ऋ), अणुत्तरमणुव्वया (वृ० पा०)
२०७	पा०४	जहिज्ज सगंथ(वृ०), जहित्तुऽसंगंथ (चू०); जहित्तु सगंथ ° (सु)	जहित्तु समंथ (वृ०), जहित्तुऽसगंथ (चू०); जहित्तु संगंथ (सु)
२१४	पा०८	से ओ	सेओ
२१६	पा०१,३		× (अ,इ,ऋ,स,सु)
२४२	पा०५	से से···गुरू	सेसे गुरु
२४८	पा०२	° तवेइ या	तवे इ या
२५५	सू०६ पं०४	उज्जुभावपडिवन्ने[१]	'उज्जुभाव पडिवन्ने य णं'[१]
२५६	सू०७ पं०३	'पडिवन्ने य'[२]	'पडिवन्ने य णं'[२]
२६१	सू०३४ प०५	अणासायमाणे[३]	अणासायमाणे
२६१	सू०३५ पं०३	निक्कंखे[४]	निक्कंखे[३]
२६१	सू०३६ पं०२	जीवियासंसप्पओग[५]	जीवियासंसप्पओगं[४]
२६१	सू०३६ पं०२	वोच्छिन्दइ[६]	वोच्छिन्दइ
२६१	सू०३६ पं०३	वोच्छिन्दित्ता	वोच्छिन्दित्ता[५]
२६१	पा०	२—'नो आभाएइ'···(वृ०)	२—× (उ,ऋ,वृ०)
		३—	×
		४—	३—
		५—	४—
		६—	५—
२६३	पा०६	वन्थाणि	वन्थणाणि
२६५	सू०५१ पं०५	परलोगधम्मस्स[२]	'परलोगधम्मस्स आराहए'[२]
२६५	सू०५५ पं०२	'निव्वियारेणं जीवे'[४]	'निव्वियारे···[४]ज्झाणगुत्ते'[५]
	पा०	४—	५—
	पा०	५—	४—
२६६	पा०६	(वृ० पा०)	(वृ०)
२७२	१४।३	'दव्वओ खेत्तकालेणं'[८]	खेत्तकालेणं[८]
२७२	पा०१	° कालाय	° काला य
२७२	पा०४	चउत्थोउ	चउत्थो उ

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२८४	२५।२	'उ उवेइ दुक्खं'[२]	'उवेइ दुक्खं'[२]
३०२	१०।३	'कसायमोहणिज्जं'[3]	'कसायमोहणिज्जं तु'[3]
३०३	२४।४	जीवेसु ऽइच्छियं[3]	जीवेसुऽइच्छियं[3]
३०३	पा०	३-स इच्छियं (उ,सु); अहिच्छिय (स)	३-जीवे स इच्छियं (अ,सु); जीवे अहिच्छियं (स)
३०५	६।२	कोइलच्छदसन्निभा	कोइलच्छदसन्निभा[२]
३०५	७।२	तरुणाइच्चसन्निभा[२]	तरुणाइच्चसन्निभा
३०५	पा०२	° च्छावि °	° च्छवि °
३०६	९।४	उ[२]	उ
३०६	१०।४	उ[3]	उ[२]
३०६	१२।२	तुवरकविट्ठस्स[४]	तुवरकविट्ठस्स[३]
३०६	पा०२		×
३०६	पा०	२,३—	२—
३०६	पा०	४—	३—
३०६	पा०	५—	४—
३०९	२६।१	उप्फालगदुट्ठवाई[४]	'उप्फालगदुट्ठवाई य'[४]
३१२	पा०३	पलियमसंख	पलियअसंख
३१५	पा०४		न हु कस्सवि उववत्ति (बृ०)। न वि०···(बृ० पा०), न हु ° ···(उ,ऋ,सु)।
३४५	पा०५ पं०४	वियाहियं	वियाहिया
३४६	पा०२	२४८,२४९	२४८ से २६८
३४८	२६१।२	बहुणि[१]	'य बहूणि'[१]

शुद्धि और आपूरक पत्र-२
उत्तराध्ययन शब्द-सूची

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
९३		अइमत्त	अइमन्त
९४	अंत	२८।४१,५८,६१,७२, २९।सू०१	२९।सू०१,२८,४१, ५८,६१,७३
९५		अंतरमासिल्ल	अंतरभासिल्ल
९६	अकिंचण	१४।१५	×
९६			अकिंच १४।१५
९७	अगारि	२७।२२	७।२२
९७		अग्ग *	अग्घ *
९८		अजाणमाग	अजाणमाण
१०४	अणुभाग	३४।१	३४।६१
१०४		अणुरत्त	अणूरत्त
१०६		अतिति	अतित्ति
१०६	अत्थ (अर्थ)	२९।सू०२,४८	२९।सू०२१,४८
१०७	अदत्त	३२।४२ से ४४,	३२।४२,४४
१०९	अप्प(आत्मन्)	१४।४९	१४।४८
१११		अबंभचरि	अबंभचारि
१११		अब्भाइय	अब्भाहय
१११		-अब्भट्ठेइ	-अब्भुट्ठेइ
१११		अब्भुट्ठिच्चा	अब्भुट्ठित्ता
११२		अभिगमरुइ	अभिगमरुइ
११२	अभिभूय (अभिभूय)	१५।३	१५।२
११४		अलित	अलित्त
११७	असण (अशन)	२।३०	२।३
११८	असायावेयणिज्ज	२०।४२	×
११८			असार १९।१४,२२ , २०।४२
११८		अस्सविली	अस्साविणी
११९		अहिसया	अहिंसया

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१२०		अहुणेववन्न	अहुणोववन्न
१२०	आइ	(दे०)	(दि)
		२९।सू०३	२९।सू०४
१२१	आउकम्म	३२।२,	३३।२
१२१	आउट्ठिइ	३६।१३२ से १४१	३६।१३२,१४१
१२१		आगन्तु	आगन्तु
१२३		-आमन्नयामो	-आमन्तयामो
१२३		आमीस	आमोस
१२३	आयय *		-आययन्ति ३।७
१२३	-आयरे	२४।७	२४।२७
१२३	आयहिअ	२१।१२	२१।२१
१२४	आराहणया	२९।सू०४९	२९।सू०५१
१२४		आरूह *	आरुह *
१२४		-आरूहइ	-आरुहइ
१२७		-अहारेज्जा	-आहारेज्जा
१२८		इक्कत्तीसइ	इक्कतीसइ
१२९	ईसाणग	३६।२१	३६।२१०
१३०	उक्कोस	३४।४६ से ५०	३४।४६,४८ से ५०
१३०	उग्ग	१८।५०	१५।९,१८।५०
१३१	उज्जाण	१८।३४	१८।३,४
१३१			उज्जुपन्न २३।५६
१३१	उज्जुभाव	२९।सू०६,	२९।सू०१,
१३१		उज्जेय (उद्योत)	उज्जोय (उद्योत)
१३२	उत्तम	१८।४१	१८।४०
१३२	उदग(क,अ)	८।८	८।९
१३२	उदहि		३६।२०६
१३३		उद्धत्तुकाम	उद्धत्तुकाम
१३३	उरग	१४।४७,३६,१८१	१४।४७;३६।१८१
१३४		उल्लंघन	उल्लंघण
१३४	उवट्ठिअ(य)	२०।२२	२०।८,२२
१३५	-उवलिप्पई	२५।३९	२५।२६,३९

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१३७	एक्क	१।३।३	१।३।३,२३
१३७	एग	१।२६,३३	१।२६,३३;२।१८;५।१,५,२०, ६।८;७।१४,१५,८।७,६।३४,४६, १४।१,१६।८३
१३७	एगत	१६।३८	×
१३७	एगमा	२६। सू० ३१,	२६।सू० ३६,
१४३	कम्म	३३।१,	३३।१,३,
१४३			कम्मगण्ठि २६।सू० ३२,७२
१४३	कम्मपयडि	२६।सू०२३	२६।सू० ३३ ३३
१४३	कर	१३।२७	१३।२७,१४।८
१४७	काय	३२।८१,८२,८६ ३६।६०,१०३	३६।८१,८२,८६,६०,१०३
१४७	कारण	६।२६, से ३३ ४४,	६।२६,३१,३३ ४५,
१४८	काल	२६।३७,	२६।३७,४२,३३।१६
१४६	कासी	१८।४८	×
१४६			कासीराय १८।४८
१४६	किन्नर	१६।६	१६।१६
१५१	कुदंसण	२८।१८	२८।२८
१५१	कुदिट्ठि	२८।३६	२८।३६
१५१	कुल	२०।४०,४२	२०।४०,४३
१५६	गल	६।३,१०,३६,३७	६।३,१०।३६,३७
१६८		चिट्टमाण	चिट्ठमाण
१६६	छत्त	१८।४२	×
१७५	जाणित्ता	१।३४	१।४३
१७८		जीवाजीवविभक्ति	जीवाजीवविभत्ति
१६८	देविंद	६।२३,२७,	६।२३,२५,२७,
२०२		घारेह	-घारेह
२०७		-नासइ	-नासेइ
२०७		निक्खमे	-निक्खमे
२०८	-निज्जरेइ	२६।सू०३७,	२६।सू०३८,

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२०६		निद्दहे *	निद्दह *
२१६	-पगरेह	१२।३६	×
२२०		पडिसविक्ख *	पडिसंविक्ख
२२२		पन्मवय	पन्नवय
२४१		-फ से	-फासे
२४६		-अब्बवी	-अब्बवि
२५३		भुज	भुज *
२५३	-भुजिज्जा	३५।१५	३५।१७
२५४		जभुयि‍ा	भुजिया
२६०	मल	२५।११	२५।२१
२६८	मोह	२०	२०।६०
२७३	रेवयय	२२।२२,२३	२२।३३
२८६	विमोयणया	२६।सू०७१	२६।सू०७२
२६१		विवज्ज त	विवज्जयंत
२६२		विस	विसम
२६४		वुककस	वुक्कस
२६६		सजअ (संजय)-	संजअ (संजय)
३०१		-सतसन्ति	-संतसन्ति
३०५	सत्त (सत्व)	१४।१८,४३	१४।१८,४२
३१७	-सिज्झन्ति	२६।सू०१	×
३२७	हरिएस	१-।२७	१२।३७